अनुवाद-चन्द्रिका

[SANSKRIT TRANSLATION & COMPOSITION]

(लेखक)

आचार्य उमाशङ्कर 'जानकार' शास्त्री

एम० ए०, साहित्य-व्याकरणाचार्य, 'साहित्यरत्न'

मूल्य : चार रुपये पचास पैसे (४-५०) मात्र

प्रकाशन केन्द्र

न्यु बिल्डिंग्स अमीनाबाद, लखनऊ।

प्राक्कथन

इस पुस्तक में सन्धि, कारक, अव्यय, समास, तद्धित, कृदन्त, स्त्री प्रत्यय आदि व्याकरण सम्बन्धी नियमों के साथ-साथ प्रचलित एवं प्रसिद्ध शब्द-रूप और धातु-रूप आदि का बहुत ही सुगम ढंग से उल्लेख किया गया है। सर्वप्रथम, सूत्रों द्वारा नियमों का निर्देश किया गया है, तत्पश्चात् हिन्दी भाषा के माध्यम से संस्कृत भाषा के दुरूह नियमों के समझाने का प्रयत्न किया गया है। अनुवाद के लिये जो अभ्यास दिये गये हैं, उनमें अनुवाद की विधियों पर यथेष्ट प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अन्त में शुद्धाशुद्ध वाक्यों का उदाहरण तथा शुद्ध करने के लिए कुछ अशुद्ध वाक्य भी दिये गये हैं, जिससे छात्रों को संस्कृत में सफल अनुवाद करने की क्षमता प्राप्त हो। पुस्तक के अन्त में भ्वादिगण से लेकर चुरादिगण तक के प्रसिद्ध धातुओं के केवल प्रथम पुरुष के रूप तथा प्रसिद्ध प्रत्ययों के उदाहरण दिये गये हैं।

प्रकाशन-केन्द्र लखनऊ के संचालक बन्धु श्री रविशङ्कर मालवीय तथा श्री पद्मधर मालवीय ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर मुझे विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया है। आशा है, **प्रस्तुत संस्करण छात्रों के लिये** अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—लेखक

विषय-सूची

विषय-प्रवेश

संस्कृत वर्णमाला

स्वर

अ	इ	उ	ऋ	लृ	—ह्रस्व
आ	ई	ऊ	ॠ		—दीर्घ
ए	ऐ	ओ	औ		—मिश्रित

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ	—कवर्ग (कु)	स्पर्श
च	छ	ज	झ	ञ	—चवर्ग (चु)	
ट	ठ	ड	ढ	ण	—टवर्ग (टु)	
त	थ	द	ध	न	—तवर्ग (तु)	
प	फ	ब	भ	म	—पवर्ग (पु)	
	य	र	ल	व	—अन्तःस्थ	
	श	ष	स	ह	—ऊष्म	
		(ं)			—अनुस्वार	
		(ँ)			—अनुनासिक	
		(:)			—विसर्ग	

सूचना—क से ग तक के वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। कवर्ग से लेकर पवर्ग तक के पहले और तीसरे वर्ण अल्पप्राण कहे जाते हैं। उनके नाम हैं—क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब। वर्गों के दूसरे और चौथे वर्ण महाप्राण कहे जाते हैं। उनके नाम हैं—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ।

वर्गों के पंचम वर्ण अनुनासिक कहे जाते हैं उनके नाम हैं—
ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

उच्चारण की दृष्टि से वर्णों का स्थान—

१—अकार, कवर्ग, हकार और विसर्ग का स्थान— कण्ठ।
२—इकार, चवर्ग यकार और शकार का स्थान— तालु।

३—ऋकार, टवर्ग, रकार और षकार का स्थान—	मूर्धा।
४—लृकार, तवर्ग, लकार और सकार का स्थान—	दन्त।
५—उकार, पवर्ग और उपध्मानीय का स्थान—	ओष्ठ।
६—ञ्, म्, ङ्, ण्, न् का स्थान—	नासिका।
७—ए ऐ का स्थान—	कण्ठ-तालु।
८—ओ, औ का स्थान—	कण्ठ-ओष्ठ।
९—वकार का स्थान—	दन्त-ओष्ठ।
१०—जिह्वामूलीय का स्थान—	जिह्वामूल।
११—अनुस्वार का स्थान—	नासिका।

शब्दों के भेद

१. संज्ञा २. सर्वनाम ३. विशेषण ४. क्रिया ५. अव्यय।

संज्ञा—किसी वस्तु' व्यक्ति अथवा स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे—कृष्णः, वासुदेवः, सागरः।

सर्वनाम—संज्ञा के स्थान में जिसका प्रयोग होता है वह सर्वनाम कहलाता है। जैसे, सः (वह)। तौ (वे दोनों)। ते (वे सब)। त्वम् (तुम)। युवाम् (तुम दोनों)। यूयम् (तुम सब)। अहम् (मैं)। आवाम् (हम दोनों)। वयम् (हम सब)।

विशेषण—जो संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करता है उसे विशेषण कहते हैं। जैसे, पीतं वस्त्रम्, रक्तं कमलम्, नीलो घटः।

क्रिया—जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे, अस्ति, भवति, पठति, गच्छति, करोति इत्यादि।

अव्यय—जिसका रूप तीनों लिंगों वचनों और सभी विभक्तियों में एक समान रहता है, उसे अव्यय कहते हैं। जैसे, अत्र, अद्य, इह, अधुना, उच्चैः, नीचैः इत्यादि।

लिङ्ग

संस्कृत मे तीन लिंग होते हैं :—

१—पुँल्लिङ्ग २—स्त्रीलिङ्ग ३—नपुंसकलिङ्ग।

पुंल्लिङ्ग—इससे पुरुष जाति का बोध होता है जैसे, रामः, पुरुषः।

स्त्रीलिङ्ग—जिससे स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे, गङ्गा, गतिः, बुद्धिः इत्यादि।

नपुंसकलिङ्ग—जिससे न पुरुष का न स्त्री का बोध हो उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं। जैसे, पुस्तकम् , फलम्।

सूचना (क) कुछ शब्द नित्य पुंल्लिङ्ग, नित्य स्त्रीलिङ्ग तथा नित्य नपुंसक-लिङ्ग होते हैं जैसे, रामः (नि० पुं०) सीता (नि० स्त्री०) फलम् (नि० नपुं०)।

(ख) कुछ शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे, तटः (पुं०) तटी (स्त्री०) तटम्·(नपुं०)।

(ग) विशेषण शब्दों के लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे, मधुरः शब्दः, मधुरा वाणी, मधुरं वचनम्।

(घ) युष्मद् और अस्मद् के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। जैसे, त्वं पुरुषः, त्वं स्त्री, त्वं मनः इत्यादि।

(ङ) युष्मद्, अस्मद् को छोड़कर शेष सभी सार्वनामिक विशेषण शब्दों के लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे, सः बालकः, सा बालिका, तत् फलम्।

(च) अर्थ भेद से लिङ्ग बदल जाते हैं। सूर्यवाची 'मित्र' शब्द पुंल्लिङ्ग होता है और मित्रवाची 'मित्र' शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है। जैसे, मित्रः उदेति (सूर्य निकलता है) मित्रम् आयाति (दोस्त आता है)।

वचन

संस्कृत में वचन तीन प्रकार के होते हैं—

१—एक वचन २—द्विवचन और ३—बहुवचन।

एकवचन—जिससे किसी एक वस्तु, व्यक्ति तथा स्थान का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—बालकः (पुं०) बालिका (स्त्री०) पुस्तकम् (नपुं०)।

द्विवचन—जिससे किन्हीं दो वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थानों का बोध हो, उसे द्विवचन कहते हैं जैसे—बालकौ (पुं०), बालिके (स्त्री०), पुस्तके (नपुं०)।

बहुवचन—जिससे दो से अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थानों का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं जैसे—बालकाः (पुं०), बालिकाः (स्त्री०), पुस्तकानि (नपुं०)।

सूचना—(क) कुछ शब्द केवल एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—एकः (पुं०), एका (स्त्री०), एकम् (नपुं०)।

(ख) कुछ शब्द केवल द्विवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—द्वौ, हस्तौ, पादौ, करौ (पुं०), द्वे (स्त्री० और नपुं०)।

(ग) दो से अधिक संख्याओं के वाचक शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है। त्रयः (पुं०) तिस्रः (स्त्री०) त्रीणि (नपुं०)।

(घ) 'एक' से 'चतुर' तक संख्यावाचक शब्दों के लिङ्ग विशेष्य के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे, एकः बालकः, (पुं०), द्वे बालिके (स्त्री०), त्रीणि फलानि (नपुं०) चत्वारः पुरुषाः (पुं०)।

(ङ) 'पञ्च' संख्यावाचक शब्द तथा उसके बाद के सभी संख्यावाचक शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। जैसे, पञ्च बालकाः, पञ्च बालिकाः, पञ्च फलानि।

(च) 'त्रि' से अष्टादशन् तक बहुवचनान्त होते हैं और एकोनविंशति से नवविंशति तक के शब्द सदा एक वचन में होते हैं। इनके रूप इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के समान होते हैं। इनका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग विशेष्यों के साथ होता है। जैसे, विंशतिः वृक्षाः (पुं०), विंशतिः लताः (स्त्री०), विंशतिः फलानि (नपुं०)।

(छ) विंशति, षष्ठि, सप्तति, अशीति तथा नवति के रूप इकरान्त स्त्रीलिङ्ग के समान होंगे। जैसे—सप्ततिः, बालकाः, षष्टिः, बालिकाः, नवतिः, पुष्पाणि।

(ज) त्रिंशन् तथा चत्वारिंशन् के रूप 'सरित्' के समान होंगे। जैसे विंशता छात्रैः पुस्तकं पठितव्यम्।

(झ) शतं, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्—ये शब्द नित्य एकवचन तथा नित्य नपुंसक लिङ्ग होते हैं। किन्तु ये पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग विशेष्यों के साथ भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे—शतं ब्राह्मणाः (एक सौ ब्राह्मण), सहस्रं स्त्रियः (एक हजार स्त्रियाँ), अयुतं पुस्तकानि (दस हजार पुस्तकें)।

(ञ) संख्या वाचक पदों का अन्य पदों के साथ समास नहीं होता।

जैसे, 'विंशतिः वृत्ताः' में समास करने पर त्रिंशतिवृत्ताः प्रयोग होने लगेगा, जो अशुद्ध माना जाता है।

पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं १—प्रथम पुरुष २—मध्यम पुरुष ३—उत्तम पुरुष।

प्रथम पुरुष—जिसके विषय में कुछ कहा जाय या सुना जाय उसे प्रथम पुरुष कहते हैं। जैसे बालकः बालकौ बालकाः, सः तौ ते इत्यादि।

मध्यम पुरुष—जिससे बात की जाती है उसे मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे त्वम्, युवाम्, यूयम्।

उत्तम पुरुष—जो बात करता है वह उत्तम पुरुष कहलाता है। जैसे, अहम्, आवाम्, वयम्।

विभक्ति

संस्कृत में कुल सात विभक्तियां होती हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं :—
१—प्रथमा २—द्वितीया ३—तृतीया ४—चतुर्थी ५—पंचमी ६—षष्ठी ७—सप्तमी।

सभी विभक्तियों के रूप तीनों वचनों में होते है। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि शब्दों के रूप विभक्तियों में प्रयुक्त होते हैं।

विभक्तियां दो प्रकार की होती है :—

(१) कारक विभक्ति—कारक अर्थों में प्रयुक्त होने वाली विभक्तियों को कारक विभक्ति कहते हैं। जैसे—तस्मै देहि (उसे दो)।

(२) उपपद विभक्ति—कारक से भिन्न पद के योग में जो विभक्तियां आती है, वे उपपद विभक्तियां कहलाती हैं। जैसे तस्मै नमः (उसे नमस्कार है) यहां 'नमः' पद कारक से भिन्न पद है। 'नमः' पद के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

कारक

संस्कृत में कुल छः कारक होते हैं। हिन्दी में सम्बन्ध और सम्बोधन को मिलाकर कुल आठ कारक माने जाते हैं। यहां पर उन कारकों का उल्लेख किया जाता है :—

कर्त्ता कारक—क्रिया के पहले 'कः' लगा कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है, वह कर्त्ता कारक होता है। जैसे—रामः फलम् खादति। प्र०-कः खादति ? (कौन खाता है ?) उ०—'रामः'। अतः यहाँ 'रामः'। कर्त्ता कारक है।

कर्म कारक—क्रिया के पहले 'किम्' या 'कम्' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे—रामः फलं खादति। प्र०-किं खादति ? (क्या खाता है ? उ०—'फलम्')। अतः यहाँ पर 'फलम्' कर्म कारक है।

करण कारक—क्रिया के पहले 'केन' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वह करण कारक होता है। जैसे, रामः हस्ताभ्यां बाणेन रावणं हन्ति। प्र०—रामः रावणं केन हन्ति ? उ०—'बाणेन' (बाण से या बाण के द्वारा) अतः यहाँ पर 'बाणेन' करण कारक है।

सम्प्रदान कारक—क्रिया के पहले 'कस्मै' जोड़ कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है, वह सम्प्रदान कारक होता है। जैसे रामः भोजनाय आगच्छति। प्र०-रामः कस्मै आगच्छति ? उ०-'भोजनाय'। अतः यहाँ पर 'भोजनाय' सम्प्रदान कारक है।

अपादान कारक—क्रिया के पहले 'कस्मात्' जोड़ कर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है, उसे अपादान कारक करते हैं। जैसे—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। प्र०-कस्मात् पतन्ति ? उ० 'वृक्षात्'। अतः 'वृक्षात्' अपादान कारक है।

सम्बन्ध कारक—संस्कृत में कारकों का सम्बन्ध क्रिया से होता है। हिन्दी में जिसे हम सम्बन्ध कारक कहते हैं उसका क्रिया से साक्षात् सम्बन्ध न होकर परम्परया होता है। क्रिया से जिसका साक्षात् सम्बन्ध होता है उससे जो सम्बद्ध होता है, वह सम्बन्ध कारक कहलाता है। इसमें दो संज्ञाओं का सम्बन्ध होता है। संज्ञा के साथ 'कस्य' लगाकर प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वह सम्बन्ध कारक होता है। जैसे—'रामस्य' पुस्तकम्। प्र०—कस्य पुस्तकम् ? (किसकी पुस्तक) उ०—'रामस्य' (राम की)। अतः यहाँ पर 'रामस्य' सम्बन्ध कारक है।

अधिकरण कारक—इस कारक में क्रिया के पहले 'कस्मिन्' जोड़ कर प्रश्न

करने से जो उत्तर आता है, वह अधिकरण कारक कहलाता है। जैसे स: आसने तिष्ठति। प्र०—कस्मिन् तिष्ठति (किस पर बैठता है)? उ०—'आसने' (आसन पर)। अत: यहाँ पर 'आसने' अधिकरण कारक है।

छात्रों को निम्नांकित तालिका में दिये गये कारकों, विभक्तियों और चिह्नों को कंठस्थ कर लेना चाहिये।

कारक	विभक्ति	चिह्न
कर्त्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितीया	को
करण	तृतीया	से (द्वारा)
सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिये
अपादान	पंचमी	से (अलग)
सम्बन्ध	षष्ठी	का
अधिकरण	सप्तमी	में, पर
सम्बोधन	प्रथमा	हे, भो, रे

निम्नांकित पुरुषवाचक सर्वनामों का अध्ययन करना आवश्यक है—

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	स: (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे लोग)
मध्यम	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम लोग)
उत्तम	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम लोग)

वर्ण समाम्नाय

(प्रत्याहार सूत्र)

अइउण् १। ऋलृक् २। एओङ् ३। ऐऔच् ४। हयवरट् ५। लण् ६। ञमङणनम् ७। झभञ् ८। घढधष् ९। जबगडदश् १०। खफछठथचटतव् ११। कपय् १२। शषसर् १३। हल् १४।

ये १४ सूत्र प्रत्याहार सूत्र कहे जाते हैं। 'प्रत्याह्रियन्ते वर्णा यत्र स प्रत्याहारः'। अक्षरों के संक्षेप को प्रत्याहार कहते हैं। ऊपर लिखे हुए १४ सूत्रों के आदि और अन्त के वर्णों के योग से प्रत्याहार बनता है। जैसे, 'अइउण्' सूत्र का आदि वर्ण 'अ' है और अन्त का वर्ण 'ण्' है। दोनों के मिलाने से अण् प्रत्याहार बनता है। इसी प्रकार 'एओङ' से एङ् तथा ऐऔच से ऐच् आदि अनेक प्रत्याहार बन सकते हैं।

किसी भी प्रत्याहार का उच्चारण करने पर, दोनों वर्णों के बीच के वर्णों का बोध होता है और आदि वर्ण का भी। अन्तिम वर्ण का बोध नहीं होता। जैसे, 'अण्' प्रत्याहार से केवल अ इ उ वर्णों का ज्ञान होता है, अन्तिम वर्ण 'ण्' का बोध नहीं होता।

प्रत्याहारों द्वारा वर्णज्ञान

अण् = अ इ उ।
अक् = अ इ उ ऋ लृ।
अच् = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ।
अट् = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र।
अण् = (लण सूत्र के णकार तक) अट् प्रत्याहार के वर्ण तथा ल।
अम् = 'अट्' प्रत्याहार गत वर्ण तथा ञ म ङ ण न ल।
अश् = 'अम्' प्रत्याहारगत वर्ण तथा झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
अल् = 'अश्' प्रत्याहार गत वर्ण तथा ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
इक् = इ उ ऋ लृ।
इच् = 'इक्' प्रत्याहार गत वर्ण तथा ए ओ ऐ औ।
इण् – 'इक्' तथा 'इच्' प्रत्याहारों के वर्ण और ह य व र ल।

उक्=उ ऋ ऌ ।
एङ्=ए ओ ।
ऐच्=ऐ औ ।
एच्='एङ्' तथा 'ऐच्' प्रत्याहारों के वर्ण ।
हश्=ह् य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ।
हल्='अच्' प्रत्याहारगत वर्णों को छोड़ कर अन्य सभी प्रत्याहारों के वर्ण ।
यण्=य व र ल ।
यम्=य व र ल ञ म ङ ण न ।
यञ्='यम्' प्रत्याहार गतवर्ण, झ और भ ।
यय्='यञ्' प्रत्याहार गत वर्ण तथा घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
यर्='यय्' प्रत्याहारगत वर्ण तथा श ष स ।
वश्=व र ल ञ म ङ ण न झ भ ध द ध ज ब ग ड द ।
वल्='यर्' प्रत्याहारगत वर्ण तथा ह ।
रल्='य' को छोड़ कर वल् प्रत्याहार के सभी वर्ण ।
जश्=ज ब ग ड द ।
झष्=झ भ घ ढ ध ।
झश्='जश्' तथा 'झष्' प्रत्याहारों के वर्ण ।
खय्=ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
झय्='झश्' तथा 'खय्' प्रत्याहारों के वर्ण ।
शर्—श ष स ।
झर्='झय्' तथा 'शर्' प्रत्याहारों के वर्ण ।
झल्='झर्' के वर्ण और हकार ।
भष्=भ घ ढ ध ।
बश्=ब ग द ड ।
खर्=ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ।
छव्=छ ठ थ च ट त ।
चय्=च ट त क प ।
चर्='चय्' के वर्ण तथा श ष, स ।
शल्=श ष स ह ।
मय्=म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ।
ङम्=ञ म ङ ण न ।

कारक-विभक्तियों का प्रत्याहार

विभक्तियों का आरम्भ 'सु' से होता है और सुप् पर समाप्त होता है। इनमें पहला वर्ण 'सु' और अन्तिम वर्ण 'प्' है। दोनों वर्णों को मिलाने से समस्त विभक्तियों का बोध होता है।

कारक-विभक्तियों की तालिका

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स्)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि (अस्)	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस् (अस)	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस्	सुप् (सु)
सम्बोधन	सु (स्)	औ	जस् (अस्)

लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं:—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् इत्यादि। इनमें लेट् लकार का प्रयोग वेद में किया जाता है, लौकिक शब्दों में नहीं। इनमें से पहले छः लकारों को टित् और अन्तिम चार लकारों को ङित् कहते हैं। इन लकारों का प्रयोग धातुओं के आगे होता है।

लकारों का अर्थ

लट् (वर्तमान काल), लिट् (परोक्ष अनद्यतन भूतकाल), लुट् (अनद्यतन भविष्यत् काल), लृट् (सामान्य भविष्यत् काल) लेट् (संशय अर्थ

में), लोट् (प्रेरणा तथा आज्ञा), लङ् (अनद्यतन भूतक लाल),लिङ्—[क] विधिलिङ् (चाहिये) [ख] आशिष लिङ् (आशीर्वाद), लुङ् (सामान्य भूत), लृङ् (हेतुहेतुमद् भाव)।

काल

काल एक है किन्तु क्रिया-भेद से काल तीन माने जाते हैं।

वर्तमान काल—इस काल में क्रिया प्रारम्भ होती है पर समाप्त नहीं होती। जैसे, रामः पठति (राम पढ़ता है)।

भविष्यत् काल—जो क्रिया आगे आने वाले काल में की जाती है उस क्रिया का काल भविष्यत् काल कहलाता है। जैसे, श्यामः पठिष्यति (श्याम पढ़ेगा)।

भूतकाल—जिसमें क्रिया का आरम्भ होता है और उसकी समाप्ति भी हो जाती है, उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे, रामः फलं अखादत् (राम ने फल खाया)।

अनद्यतन—जो समय आज का न हो उसे अनद्यतन कहते हैं। प्रातःकाल से लेकर रात तक के समय को आज कहा जाता है। इस समय में जो क्रिया नहीं की जाती है उसे अनद्यतन काल कहते हैं।
अनद्यतन का प्रयोग भूत और भविष्यत् दो कालों में होता है।

परोक्ष—जिस क्रिया के कर्त्ता का साक्षात्कार न हो, उसे परोक्ष कहते हैं। जैसे, रामः वनं जगाम (राम वन को गया)। परोक्ष का सम्बन्ध केवल भूतकाल से होता है। भूतकाल परोक्ष और अपरोक्ष दोनों में प्रयुक्त होता है।

लकारों के आदेश

लकारों के स्थान में अट्ठारह आदेश होते हैं। उनके नाम हैं तिप्, तस्, झि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्, त, आताम्, झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इड्, वहि, महिङ्।

तिङ्—यह लकारों के आदेशों का प्रत्याहार है। सबसे पहला प्रत्यय तिप् है, उसका पहला वर्ण 'ति' है और इन आदेशों का अन्तिम

वर्ण 'ङ्' है। आदि और अन्त के वर्णों को मिलाकर तिङ् प्रत्याहार बनता है। तिङ् कहने से इन अट्ठारह आदेशों का बोध होता है।

सूचना—(क) इन अट्ठारह आदेशों में प्रथम नौ आदेश परस्मैपदी धातुओं में प्रयुक्त होते हैं और शेष नौ आदेश आत्मनेपदी धातुओं में प्रयुक्त होते हैं।

(ख) तङ्—इन आदेशों में उत्तरार्द्ध नौ आदेशों का बोध तङ् प्रत्याहार से होता है क्योंकि वे 'त' से आरम्भ होकर 'ङ्' पर समाप्त होते हैं।

(ग) तङ् शानच् और कानच् आत्मनेपद होते हैं और इनसे अतिरिक्त परस्मैपद होते हैं।

परस्मैपदी धातुओं के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	तिप्	तस्	झि
मध्यम	सिप्	थस्	थ
उत्तम	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी धातुओं के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	त	आताम्	झ
मध्यम	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम	इड्	वहि	महिङ्

नोट—परस्मैपदी तथा आत्मनेपदी धातुओं के प्रत्यय भिन्न-भिन्न लकारों में भिन्न-भिन्न होते हैं।

सन्धि प्रकरण

(स्वर) सन्धि

इको यणचि (इकः यण् अचि)—इक् के स्थान में यण् होता है यदि उसके आगे कोई अच् (स्वर) हो। इक् प्रत्याहार के अन्तर्गत इ उ ऋ लृ वर्ण आते हैं। 'यण्' प्रत्याहार के अन्तर्गत य र ल व वर्ण आते हैं। अर्थात् इ उ ऋ लृ के आगे यदि इन स्वरों के अतिरिक्त कोई भी स्वर आवे तो इ उ ऋ लृ के स्थान में क्रमशः य र ल व आदेश होते हैं। उदाहरण—सुधी+उपास्यः=सुध्युपास्यः। मधु+अरिः=मध्वरिः। धातृ+अंशः=धात्रंशः। लृ+आकृतिः=लाकृतिः।

एचोऽयवायावः (एचः, अय्, अव्, आय्, आव्)—यदि एच् (ए ओ ऐ औ) के आगे कोई भी अच् (स्वर) हो तो इनके स्थान में क्रमशः अय्, अव्, आय् और आव् आदेश हो जाते हैं। उदाहरण—हरि+ए=हरये। विष्णु+ए=विष्णवे। नै+अकः=नायकः। पौ+अकः=पावकः।

वान्तो यि प्रत्यये—यकारादि प्रत्यय (जिन प्रत्ययों के आदि में यकार हो) परे होने पर ओ और औ के स्थान में क्रम से अव् और आव् आदेश होते हैं। उदाहरण—गो+यम्=गव्यम्। नौ+यम्=नाव्यम्। चे+अनम्=चयनम्। भो+अनम=भवनम्।

अदेङ् गुणः (अत्, एङ्, गुणः)—अत् (ह्रस्व अकार) तथा एङ् (ए, ओ) को गुण कहते हैं।

आद्गुणः—अवर्ण (अकार) के आगे अच् (स्वर) होने पर पहले शब्द के अन्तिम स्वर और दूसरे शब्द के आदि स्वर, दोनों के स्थान में एक गुण आदेश हो। अ+इ=ए। अ+उ=ओ। अ+ऋ=अर्। अ+लृ=अल्। उदाहरण—उप+इन्द्र=उपेन्द्रः। गंगा+उदकम्=गङ्गोदकम्। कृष्ण+ऋद्धिः=कृष्णर्द्धिः। तव+लृकारः=तवल्कारः।

लोपः शाकल्यस्य—यदि अवर्ण पूर्वक पदान्त यकार और वकार के आगे अश् प्रत्याहार के कोई वर्ण हों तो विकल्प से य् और व् का लोप हो जाता है। जिस शब्द के अन्त में सुप् (सु, औ, जस्) तथा तिङ् (ति तस्, झि) हो उसे पद कहते हैं जैसे, रामः रामौ रामाः तथा पठति पठतः पठन्ति। ये शब्द पद कहे जाते हैं क्यों कि इनके अन्त में सुप् और तिङ् विभक्तियाँ जुड़ी हुई हैं। उदाहरण—हरे+इह=हर इह, हरयिह। विष्णो+इह=विष्ण इह, विष्णविह।

वृद्धिरेचि (वृद्धिः एचि)—यदि अवर्ण के आगे एच् (ए ओ ऐ औ) हो तो पूर्व और पर के स्थान में वृद्धि आदेश हो। अ+ए=ऐ। अ+ओ=औ।

उदाहरण—कृष्ण+एकत्वम=कृष्णैकत्वम्। गङ्गा+ओघः=गङ्गौघः।

एत्येधत्यूठ्सु (एति एधति ऊठ्सु)—यदि अवर्ण के आगे एजादि (जिनके आदि में एच्=ए ओ ऐ औ) इण् एध् तथा ऊठ् हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। उदाहरण—उप+एति=उपैति। उप+एधते=उपैधते। प्रष्ठ+ऊहः=प्रष्ठौहः।

अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् (अक्षात्, ऊहिन्याम्, उपसंख्यानम्)—अक्ष शब्द के आगे ऊहिनी शब्द हो तो दोनों के स्थान में वृद्धि एकादेश हो जाता है। अक्ष+ऊहिनी=अक्षौहिणी।

प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु (प्रात्, ऊह, ऊढ, ऊढि, एष, एष्येषु)—'प्र' उपसर्ग से परे ऊह, ऊढ, उढि, एष और एष्य होने पर पूर्व और पर दोनों स्वरों के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। उदाहरण—प्र+ऊहः=प्रौहः। प्र+ऊढः=प्रौढः। प्र+उढिः=प्रौढिः। प्र+एषः=प्रैषः। प्र+एष्यः=प्रैष्यः।

ऋते च तृतीयासमासे—जहां पर तृतीया समास किया गया हो वहाँ यदि अकार से परे ऋत शब्द हो तो पूर्व और पर स्वरों के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। उदाहरण—सुखेन ऋतः इति, सुख+ऋतः सुखार्तः।

उपसर्गादृति धातौ (उपसर्गात्, ऋति, धातौ)—अकारान्त (जिसके अन्त में अ वर्ण हो) उपसर्ग से परे ऋकारादि (जिसके आदि में ऋकार हो) धातु हो तो पूर्व पर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। उदाहरण—प्र+ऋच्छति=प्रार्च्छति।

एङि पररूपम्—अकारान्त (जिसके अन्त में अ वर्ण हो) उपसर्ग के आगे यदि एङादि (जिसके आगे एङ्=ए ओ) धातु हो तो पूर्व पर के स्थान में पर रूप एकादेश होता है। उदाहरण—प्र+एजते=प्रेजते। उप+ओषति =उपोषति।

अचोऽन्त्यादि टि (अचः अन्त्य आदि टि)—अन्तिम अच् (स्वर) जिसके आदि में होता है, उस वर्णसमुदाय की टि संज्ञा होती है। उदाहरणः मनस् शब्द में कुल दो अच् (स्वर) है, पहला मकार गत अकार, दूसरा नकार गत अकार। इन दोनों में नकार गत अकार अन्तिम अच् (स्वर) है। यह अकार 'अस्' वर्ण समुदाय के आदि में है। इसलिये मनस् शब्द में जो अस् वर्ण समुदाय है उसकी टि संज्ञा हुई।

शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्—शकन्धु आदि शब्दों में 'टि' को पररूप एकादेश होता है। उदाहरण शक+अन्धुः=शकन्धुः।

यहां 'शक्' शब्द में क वाले अकार को टि संज्ञा हुई है। इस टि 'अ' को पररूप अर्थात् जो रूप अन्धुः शब्द के अ का है वही हुआ है। इसी प्रकार इस वार्तिक के आधार पर जहाँ-जहाँ टि संज्ञा होगी, वहाँ-वहाँ टि को पररूप हो जायगा। इस प्रकार के और भी उदाहरण हैं। कर्क+अन्धुः= कर्कन्धुः। मनस्+ईषा=मनीषा।

ओमाङोश्च (ओम्, आङोः च)—अकार से परे यदि ओम् और आङ् शब्द हो तो पर रूप एकादेश होता है। उदाहरण—शिवाय+ओं नमः=शिवायों नमः। शिव+आ+इहि। यहां पर एक ओर शिव+आ में 'अकः सवर्णे-दीर्घः' से सवर्णदीर्घ की प्राप्ति होती है और दूसरी ओर आ+इहि में गुण सन्धि प्राप्त होती है। 'असिद्धं बहिरङ्गमन्तरंगे' अर्थात् अन्तरंग की कर्तव्यता में बहिरंग कार्य असिद्ध होता है। यहां पर गुण सन्धि अन्तरंग कार्य है और सवर्णदीर्घ सन्धि बहिरंग कार्य है। इसलिये सबसे

पहले अन्तरंग गुण सन्धि होगी। जैसे, शिव+(आ+इहि) एहि= 'शिवेहि'।

अकः सवर्णे दीर्घः—यदि अक् (अ इ उ ऋ ऌ) से परे (आगे) सवर्ण अच् (स्वर) हो तो पूर्व पर के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है। सवर्ण अच् (स्वर) का अर्थ होता है सजातीय अच्। अर्थात् अ इ उ ऋ ऌ के सजातीय वर्ण अ इ उ ऋ ऌ ही हैं। अ+अ=आ। इ+इ=ई। उ+उ=ऊ। ऋ+ऋ=ॠ उदाहरण—दैत्य+अरिः=दैत्यारिः। श्री+ईशः=श्रीशः विष्णु+उदयः=विष्णूदयः। होतृ+ऋकारः=होतॄकारः।

एङः पदान्तादति (एङः, पदान्तात्, अति)—पदान्त एङ् (ए ओ) से परे यदि ह्रस्व अकार हो तो पूर्व पर के स्थान में पूर्व रूप एकादेश होता है। अर्थात् पहले शब्द के अन्त में वर्ण का जो स्वरूप रहता है वही स्वरूप हो जाता है और दूसरे शब्द के अकार के स्थान में अवग्रह (ऽ) लगा दिया जाता है। उदाहरण हरे+अव=हरेऽव। विष्णो+अव= विष्णोऽव।

सर्वत्र विभाषा गोः– लोक और वेद में एङन्त (जिसके अन्त में ए और ओ हो) गो शब्द से परे (आगे) यदि ह्रस्व अकार हो तो विकल्प से प्रकृति भाव हो जाता है पदान्त में। प्रकृति भाव का अर्थ है ज्यों का त्यों रह जाना। पूर्व और पर के स्वरों में कोई परिवर्तन न होगा। उदाहरण— गो+अग्रम्=गो अग्रम्, गोऽग्रम्।

अवङ् स्फोटायनस्य—पदान्त में यदि एङन्त गो शब्द से परे अच् (स्वर) हो तो गो शब्द को विकल्प से अवङ् आदेश होता है। उदाहरण— गो+अग्रम्—गवाग्रम् गो अग्रम, गोऽग्रम्।

इन्द्रे च—यदि गो शब्द से परे (आगे) इन्द्र शब्द हो तो गो शब्द को अवङ् आदेश होता है। उदाहरण—गो+इन्द्रः=गवेन्द्रः। **दूराद्धूते च**—दूर से बुलाने में प्रयोग किये गये वाक्य में टि को विकल्प से प्लुत होता है।

प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्—जिन शब्दों की प्लुत और प्रगृह्य संज्ञा होती है उनसे परे यदि कोई अच् (स्वर) हो तो वहाँ प्रकृतिभाव होता है।

उदाहरण—आगच्छ कृष्ण३अत्र । यहाँ पर कृष्ण+अत्र='कृष्णात्र' सवर्ण दीर्घ सन्धि नहीं होगी। दूर से पुकारने के कारण कृष्ण शब्द के टि (अ) को प्लुत संज्ञा हुई है। जिसकी प्लुत और प्रगृह्य संज्ञा होती है उसको प्रकृतिभाव हो जाता है। इसलिये यहाँ पर आगच्छ कृष्ण३अत्र में प्रकृति-भाव होगा अर्थात् ज्यों का त्यों रह जायगा कोई परिवर्तन नहीं होगा।

ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्—ईकारान्त ऊकारान्त और एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। जहाँ प्रगृह्य संज्ञा होती है, वहाँ प्रकृतभाव हो जाता है। उदाहरण हरी+एतौ=हरी एतौ। विष्णू+इमौ=विष्णू इमौ।

अदसो मात्—मकारान्त अदस् शब्द से परे ईकार ऊकार की प्रगृह्य संज्ञा होती है। प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृत भाव हो जाता है। अमी+ईशाः=अमी ईशाः। अमू+आसाते=अमू आसाते।

निपात एकाजनाङ् (निपात+एक+अच्+अन्+आङ्)—आङ् को छोड़ कर एक अच् (स्वर) वाले जितने निपात हैं उनकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। उदाहरण—इ+इन्द्रः=इ इन्द्रः। उ+उमेश=उ उमेशः।

ओत्—जिस निपात के अन्त में ओ होता है उसकी प्रगृह्य संज्ञा होती है। उदाहरण—अहो+ईशाः=अहो ईशाः।

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे (सम्बुद्धौ, शाकल्यस्य, इतौ अनार्षे)—सम्बुद्धि निमित्तक ओकार से इति शब्द परे होने पर विकल्प से प्रगृह्य संज्ञा होती है। उदाहरण—विष्णो+इति=विष्णो इति, विष्ण इति, विष्णविति।

मय उञो वो वा—मय से परे उञ् के उकार के स्थान में वकार आदेश विकल्प होता है यदि उकार के परे कोई अच् (स्वर) हो। उदाहरण—किम्+उ+उक्तम्। यहाँ किम् का मकार मय्-प्रत्याहार के अन्तर्गत आता है। उससे परे उकार निपात है, और इस उकार से परे 'उक्तम्' का 'उकार' अच् है। इस लिए उकार के स्थान में वकार आदेश होने पर 'किम्वुक्तम्' रूप विकल्प से होगा। वकाराभाव में किमु+ उक्तम्=किमु उक्तम् प्रकृतभाव ही होगा। प्रकृतभाव होने पर यहाँ यण् सन्धि नहीं होगी।

इकोऽसवर्णेशाकल्यस्य ह्रस्वश्च—पदान्त इक् (इ उ ऋ लृ) को असमान अच् (स्वर) परे होने पर विकल्प से ह्रस्व होता है। उदाहरण—चक्री+अत्र=चक्रि अत्र। इस स्थिति में ह्रस्व विधान सामर्थ्य से यण् नही होगा। ह्रस्वाभाव पक्ष में चक्री+अत्र=चक्र्यत्र।

न समासे—पदान्त इक् को असमान अच् (स्वर) परे रहते ह्रस्व नहीं होता। वाप्यामश्वः इति वाप्यश्वः। वापी+ अश्वः=वाप्यश्वः।

अचो रहाभ्यां द्वे। अच् (स्वर) से परे यदि रकार और हकार हो और उनसे परे यर् हो तो उस यर् को द्वित्व होता है। उदाहरण—हरि+अनुभवः। इस प्रयोग में यण् करने पर हर्य्+अनुभवः रूप उत्पन्न होता है। इस दशा में हर्य् के ह में जो अकार रूप अच् (स्वर) है, उससे परे रकार है और उस रकार से परे यर् प्रत्याहार का वर्ण य् है। अतः इस यर् को विकल्प से द्वित्व होगा। अतः हर्य्येनुभवः' रूप होगा।

अनचि च—अच् से परे यर् को विकल्प से द्वित्व होता है, जब यर मे परे कोई अच् होता है, तो 'यर्' को द्वित्व नहीं होता। उदाहरण—धातृ+अंशः में यण् करने पर धात्र्+अंश रूप बना। अब धा के अकार रूप अच् से परे तकार रूप यर् है। इस यर् से परे कोई अच् नहीं। इसलिए यहाँ पर द्वित्व होकर 'धात्त्रंशः' रूप सिद्ध हुआ। द्वित्वाभाव पक्ष में 'धात्रंशः' रूप होगा।

ऋत्यकः—पदान्त अक् (अ इ उ ऋ लृ) को ऋत् परे होने पर विकल्प से ह्रस्व होता है। उदाहरण—ब्रह्मा+ऋषिः=ब्रह्म ऋषिः। ह्रस्वाभाव पक्ष में 'आद्गुणः' सूत्र से गुण एकादेश होने पर 'ब्रह्मर्षिः' रूप बनेगा।

हल्सन्धि

स्तोःश्चुनाश्चुः—यदि सकार और तवर्ग के योग में शकार और चवर्ग हो, तो सकार तवर्ग के स्थान में शकार और चवर्ग हो जाता हैं। उदाहरण—रामस्+शेते=रामश्शेते। रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति। सत्+चित्=सच्चित्। शार्ङ्गिन्+जय=शार्ङ्गिञ्जय।

ष्टुनाष्टुः—यदि सकार और तवर्ग के योग में मूर्धन्य षिकार या टवर्ग हो, तो सकार और तवर्ग के स्थान में मूर्धन्य षकार और टवर्ग हो जायगा। उदाहरण—रामस्+षष्ठः रामष्षष्ठः। रामस्+टीकते+रामष्टीकते। पेष्+ता=पेष्टा। तत्+टीका=तट्टीका। चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे।

न पदान्ताट्टोरनाम् (न पदान्तात् टोः अनाम्)—पदान्त टवर्ग से परे नाम् से भिन्न पद के सकार और तवर्ग के स्थान में मूर्धन्य षकार और टवर्ग नहीं होगा। उदाहरण—षट्+सन्तः=षट् सन्तः। षट्+ते=षट् ते।

अनाम्नवति नगरीणामिति वाच्यम्—नाम्, नवति और नगरी इन शब्दों में ष्टुत्व सन्धि होती है और इनसे भिन्न शब्दों में ष्टुत्व का निषेध होता है। उदाहरण—'षड्+नाम्' इस प्रयोग में पदान्त टवर्ग (डकार) से परे तवर्ग (नकार) है। इसलिये 'न पदान्ताट्टोरनाम्' सूत्र से यहाँ पर ष्टुत्व नहीं होना चाहिये किन्तु अनाम्नवति०' सूत्र के द्वारा न पदान्तात्० सूत्र का निषेध हो जाता है। तत् पश्चात् ष्टुनाष्टुः सूत्र के द्वारा नकार के स्थान में णकार हो जाने पर षड्णाम् रूप बना। इसके बाद 'प्रत्ययेभाषायां नित्यम्' वार्तिक के बल पर डकार से परे णकार होने पर ड के स्थान में ण हो गया जिससे षण्णाम् रूप निष्पन्न होता है। इसी प्रकार अन्य रूप भी बनते हैं जैसे—षड्+नवतिः=षण्णवतिः। षड्+नगर्यः=षण्णगर्यः।

तोः षि—तवर्ग से परे मूर्धन्य षकार होने पर तवर्ग को ष्टुत्व नहीं होता उदाहरण—सन्+षष्ठः=सन् षष्ठः।

झलां जशोऽन्ते—पदान्त में झलों के स्थान में जश् आदेश होता है जैसे—वाक्+ईश=वागीशः।

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा—पदान्त यर् से परे यदि कोई अनुनासिक हो तो उस यर् के स्थान में अनुनासिक विकल्प से हो जायगा। उदाहरण—एतत्+मुरारिः=एतन्मुरारिः। अभाव पक्ष में एतद् मुरारिः, होगा।

प्रत्यये भाषायां नित्यम्—पदान्त यर् से परे अनुनासिक प्रत्यय होने पर उस यर् के स्थान में अनुनासिक आदेश नित्य होता है। उदाहरण—तत्+मात्रम्=तन्मात्रम्। चित्+मयम्=चिन्मयम्। मृड्+मयम्=मृण्मयम्। वाग्+मयम्=वाङ्मयम्।

तोर्लि—तवर्ग से परे यदि लकार हो तो तवर्ग के स्थान में पर सवर्ण अर्थात् लकार आदेश हो जायगा। उदाहरण—तत्+लय=तल्लयः।

विद्वान्+लिखति=विद्वाल्लिँखति। यहाँ पर नकार के स्थान में अनुनासिक 'ल' हो गया।

उदःस्थास्तम्भोःपूर्वस्य—यदि उद् उपसर्ग से परे स्था और स्तम्भ धातुयें हो तो इन धातुओं के सकार को पूर्व सवर्ण आदेश हो जाता है। अर्थात् पूर्वपद उद् का अन्तिम वर्ण जो दकार उसका सवर्ण थकार हो जायगा। इस दशा में उद् थ् थानम् तथा उद् थ् तम्भनम् ये रूप बने।

झरो झरि सवर्णे—हल से परे झर् का विकल्प से लोप हो जाता है यदि उससे परे सवर्ण झर् हो। उदाहरण—उद् थ थानम् उद्थ् तम्भनम् के पूर्व थकार का लोप इस सूत्र के द्वारा हो जाने पर उद्थानम् उद् तम्भनम् रूप बने।

खरि च—यदि झल् से पर खर् हो तो झल् के स्थान में चर् आदेश होता है। इसलिये उद् के दकार 'झल्' के स्थान में तकार (चर्) आदेश हो जाने से उत्थानम्, उत्तम्भनम् रुप बने। लोप के अभाव में दकार और पूर्व थकार को तकार हो जाने पर उत्त्थानम् उत्तम्भनम् रूप बनेंगे।

झयो होऽन्यतरस्याम्—यदि झय् से परे हकार हो तो उस हकार को पूर्व सवर्ण आदेश विकल्प से हो जाता है। उदाहरण वाक्+हरिः=वाग्घरिः। पक्ष में वाग्हरि' होगा।

शश्छोऽटि—यदि झय् से परे शकार हो और, शकार से परे अट् हो, तो शकार के स्थान में विकल्प से छकार आदेश हो जाता है। उदाहरण—तद्+शिवः तच्छिवः। छत्वाभाव में तच्शिवः।

मोऽनुस्वारः—मान्त पद से परे यदि हल् हो तो उस पद के स्थान में अनुस्वार आदेश होता है। उदाहरण—हरिम्+वन्दे=हरिंवन्दे।

नश्चाऽपदान्तस्य झलि—अपदान्त नकार और मकार से परे यदि झल् हो तो उनके स्थान में अनुस्वार आदेश हो जायगा। उदाहरण—यशान्+सि=यशांसि। आक्रम्+स्यते=आक्रंस्यते।

अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः—यदि अनुस्वार से परे यय् हो तो अनुस्वार के स्थान में पर सवर्ण आदेश हो जायगा। उदाहरण शां+तः= शान्तः। कां+तः=कान्तः।

वा पदान्तस्य—पदान्त अनुस्वार से परे यदि यय् हो तो उस अनुसार के स्थान में पर सवर्ण आदेश विकल्प से होगा। उदाहरण— त्वं+करोपि=त्वङ्करोषि। पर सवर्णाभाव में त्वं करोषि होगा।

शि तुक्—यदि पदान्त नकार से परे शकार हो तो नकार को तुक् का आगम विकल्प से होगा। सन्+शम्भुः इस प्रयोग में 'शि तुक्' सूत्र से नकार को तुक् का आगम हुआ। तुक् के उकार और ककार का लोप हो जाने से त् शेप रह जाता है। अब सन्+त्+ शम्भुः बना। 'स्तोःश्चुनाश्चुः' सूत्र से 'त्' को चकार हो गया और चकार के योग में नकार को भी इसी सूत्र से ञकार हो गया तब सञ्च् शम्भुः बना। शश्छोटि सूत्र से झय् (चकार) से परे शकार और इस शकार से परे अट् होने से शकार को विकल्प से चकार हो गया। तब सञ्च् छम्भुः इस दशा में झरो झरि सवर्ण सूत्र से चकार का विकल्प से लोप हो जाने से 'सञ् छम्भुः' रुप बना। लोपाभाव पक्ष में 'सञ्च् छम्भु' और और छत्व के अभाव में 'सञ्च् शम्भुः' और तुक् के अभाव में 'सञ् शम्भुः' रूप बनेंगे।

समःसुटि—यदि सम् से परे सुट् हो तो सम् के मकार के स्थान में रु आदेश हो जाता है। उदाहरण—सम्+स्कर्ता। इस प्रयोग में समः सुटि सूत्र से सम् के मकार से परे स्कर्ता शब्द में कर्ता के पहले सुट् का सकार है। इसलिये मकार के स्थान में रु आदेश हो गया। अब स+रु+ स्कर्ता बना।

अत्रानुनासिकाःपूर्वस्य तु वा—यहाँ रु के प्रकरण में रु से पूर्व वर्ण को विकल्प से अनुनासिक होने पर सँ रु+स्कर्ता बना।

अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः—अनुनासिक को छोड़ कर रु से पूर्व वर्ण को अनुस्वार का आगम होता है विकल्प से। इसलिये स रु+स्कर्ता में सं रु+बना। रु के उकार का लोप हो जाने से अनुस्वार और अनुनासिक दोनों पक्षों में सँ र् +स्कर्ता तथा सं र्+स्कर्ता बने।

खरवसानयोर्विसर्जनीयः—अवसान में पदान्त रकार से परे खर् होने पर रकार को विसर्ग हो जाता है। इसलिये सँः+स्कर्ता और संः+स्कर्ता रूप बने।

सम्पुंकानां सो वक्तव्यः—सम् पुम् कान् शब्दों के विसर्ग के स्थान में सकार आदेश होना चाहिये। इस वार्तिक के बल पर 'सँस्स्कर्ता' और 'संस्स्कर्ता' दोनों प्रयोग सिद्ध हुये।

पुमः खय्यम्परे—यदि पुम् से परे खय् हो और उससे परे अम् हो, तो पुम् के मकार के स्थान में रु आदेश हो जाता है। उदाहरण—पुम्+कोकिलः, पुँः कोकिलः, पुंः कोकिलः, पुंस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः, रूप सिद्ध हुये।

नश्छव्यप्रशान्—यदि नान्त पद से परे छव् हो और छव् से परे अम् हो तो नान्त पद के स्थान में रु आदेश हो जाता है प्रशान् नान्त पद को छोड़कर। उदाहरण चक्रिन्+त्रायस्व=चक्रि रु त्रायस्व बना। इसके बाद संस्कर्त्ता औरपुंस्कोकिलः की भांति 'चक्रिँस्त्रायस्व और चक्रिंस्त्रायस्व रूप बनेंगे।

तस्य परमाम्रेडितम्—एक ही पद को दोहराने पर उत्तर पद की आम्रेडित संज्ञा होती है।

कानाम्रेडिते—आम्रेडित परे होने पर कान् शब्द के नकार को रु आदेश हो जाता है। कान्+कान् इस प्रयोग में कान् शब्द दुहराया गया है, अतः दूसरे कान् शब्द की आम्रेडित संज्ञा होती है। उदाहरण—कान् रु कान् (कानाम्रेडिते) अनुनासिक और अनुस्वार दोनों पक्षों में क्रमशः काँ र् कान् (अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तुवा) कांर् कान् (अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः)। काँस्कान् और कांस्कान् (सम्पुंकानांसो वक्तव्यः) बने।

छे च—छकार होने पर ह्रस्व को तुक् (त्) का आगम होता है। उदाहरण—शिव+छाया=शिव त्+छाया, शिव द्+छाया शिव ज्+छाया, शिव च्+छाया='शिवच्छाया' रूप सिद्ध हुआ।

पदान्ताद्वा—यदि पदान्त दीर्घ से परे छकार हो तो पदान्त दीर्घ को विकल्प से तुक् (त्) आगम होता है। लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया। तुक् के अभाव में लक्ष्मी छाया।

विसर्ग सन्धि

विसर्जनीयस्य सः—विसर्ग से परे यदि खर् हो तो विसर्ग के स्थान में सकार आदेश हो जाता है। उदाहरण—विष्णुः+त्राता=विष्णु-स्त्राता।

वा शरि—विसर्ग से परे यदि शर् हो, तो विसर्ग के स्थान में विसर्ग ही होगा। उदाहरण—हरिः+शेते=हरिः शेते। विसर्गाभाव में 'हरिश्शेते'।

ससजुषोरुः—पदान्त सकार और सजुष् शब्द के सकार को रु आदेश होता है। उदाहरण—शिवस्+अर्च्यः, में इस सूत्र से सकार को रु हो जाने से शिव रु अर्च्यः रूप बना।

अतो रोरप्लुतादप्लुते—अप्लुत अकार से परे यदि रु हो और रु से परे अप्लुत अकार हो तो 'रु' के स्थान में 'उ' हो जाता। शिव उ अर्च्यः इस स्थिति में शिव उ में गुण एकादेश होने से 'शिवोऽर्च्यः रूप सिद्ध हुआ।

हशि च—यदि अप्लुत अकार से परे रु हो और रु से परे हश् हो तो 'रु' को 'उ' हो जाता है। उदाहरण—शिवस्+वन्द्यः, शिव रु वन्द्यः, शिव उ वन्द्यः, के बाद 'शिवोवन्द्यः' रूप सिद्ध हुआ।

भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि—भोस् भगोस् अघोस् तथा अवर्ण से परे यदि रु हो और उससे पर अश् हो तो रु के स्थान में य आदेश होता है। उदाहरण+देवास्+इह में ससजुषोरुः से रु होने पर देवा रु इह बना, 'भोभगो, इस सूत्र से रु के स्थान में यकार आदेश होने पर देवाय् इह बना। 'लोपः शाकल्यस्य' से य् का विकल्प से लोप हो जाने पर देवा इह रूप बना। लोपाभाव में देवायिह रूप बनेगा। इस प्रकार इसके दो रूप हुए—देवा इह, देवायिह।

हलि सर्वेषाम्—भोस् भगोस् अघोस तथा अवर्ण से परे यदि यकार हो और यकार से परे हल् हो तो सभी आचार्यों के मत में यकार का लोप हो जायगा। उदाहरण—भोस्+देवाः, भो रु देवाः, भो य् देवाः भो देवाः रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार भगोस्=नमस्ते=भगो नमस्ते। अघोस्+याहि=अघो याहि।

रोऽसुपि—अहन् शब्द के स्थान में रेफ आदेश होता है यदि रेफ से परे सप्तमी विभक्ति का प्रत्यय सुप् न हो। उदाहरण—अहन्+अहः= अहरहः। अहन् +गण=अहर्गणः

रोरि—रेफ से परे रेफ होने पर रेफ का लोप हो जाता है। उदाहरण—पुनस्+रमते, हरिस्+रम्यः। इस सूत्र से पुनर्+रमते, हरिर् +रम्यः रूप बने।

ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः—ढकार और रेफ के लोप करने वाले ढकार और रेफ यदि पर में हो तो उनसे पूर्व में स्थित अण् को दीर्घ हो जाता है। इस सूत्र से दीर्घ आदेश हो जाने पर पुना रमते, हरी रम्यः आदि रूप सिद्ध हुए। उदाहरण—'मनस्+रथः' में 'ससजुषोरुः से 'रु' होने पर 'मन रु रथः' उत्पन्न हुआ।' हशि च' सूत्र से रु के स्थान में उ होने से मन उ रथः उत्पन्न हुआ। मन उ में गुण हो जाने से 'मनोरथः' रूप सिद्ध हुआ।

एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि—यदि ककार रहित एतद् और तद् शब्द से परे सु हो और 'सु' से परे हल् हो तो 'सु का लोप हो जाता है, किन्तु यह काम नञ् समास में नहीं होता। उदाहरण—एष सु+विष्णु में सु का लोप हो जाने से एष विष्णुः रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार स सु+शम्भुः से स शम्भु रूप सिद्ध हुआ। ककार सहित एतद् शब्द के सु का लोप नहीं होगा। उदाहरण—एषक सु रुद्रः, एषक स् रुद्रः=एषको रुद्रः' रूप सिद्ध हुआ। यहाँ 'ससजुषोरुः' से रुत्व 'हशि च' से उत्व आद्गुणः से गुण होने पर एषको रुद्रः रूप निष्पन्न हुआ।

नञ् समास में सु का लोप नहीं होता—उदाहरण, असस्+ शिवः=असः शिवः।

यदि एतद् और तद् से परे सु और उससे परे हल् न हो तो 'सु' का लोप नहीं होगा। उदाहरण—एषस्+अत्र, इसलिये यहाँ पर एष रु अत्र, एष उ अत्र, एषो अत्र, 'एषोऽत्र' रूप सिद्ध हुआ।

सोऽचिलोपे चेत्पाद पूरणम्—'सः' पद से परे अच् होने पर सु का लोप हो जाता है। यदि पाद की पूर्ति लोप होने पर होती हो। उदाहरण—स सु+इमाम्, में सु के लोप होने तथा गुण होने से 'सेमाम्' रूप सिद्ध हुआ। स सु+एष में सु का लोप हो जाने तथा वृद्धि हो जाने से सैष शब्द

सिद्ध होता है इस शब्द का प्रयोग 'सैष दाशरथी रामः' वाक्य में हुआ है। एक पाद में आठ वर्ण होते हैं उसी की पूर्ति के लिये यहां पर सु का लोप किया गया। यदि 'सु' का लोप न किया जाता तो इस पाद में ८ अक्षरों के स्थान में ९ अक्षर हो जाते।

अभ्यास

१—सन्धि करो :—

सति+अपि, दधि+ओदनम्, नारि+आसीत्, अभि+उत्थानम्, पितृ+आदेः, भ्रातृ+आज्ञा, इति+उक्तम्, वधू+आयाति, नेतृ+आगमनम्। वस्तु+इति।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

अत्याचारः, वध्वागमः, कव्युक्तिः, धात्रंशः, सुध्युक्तम्, प्रत्येकम्, अन्वयः, अन्वाख्यानम्।

अयादि सन्धि

(१) सन्धि करो :—

शे+अनम्, गै+अनम्, चे+अनम्, पौ+अकः, नै+अकः, भो+अनम्+पो+अनः,पौ+अनम्। रामौ+इति, भो+ अति।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

कवये, भानवे, गुरवे, नयनम्, गविति, असाविति, गायकः, कारयति बालकावति, वागर्थाविव।

गुण सन्धि

(१) सन्धि करो :—

गज+इन्द्रः, गण+ईशः, देव+ईशः, रमा+ईशः, चन्द्र+उदयः, ज्ञान+उपलब्धिः, आत्मा+उन्नतिः, हित+उपदेशः, सप्त+ऋषयः, नव+लृकारः।

(२) सन्धि-विच्छेद करो :—

चमत्कारः, महर्षिः, धर्मोपदेशः, ज्ञानोपार्जनम्, महेशः, रमेशः, राजेन्द्रः, पवित्रोदकम् परोपकारः, वसन्तर्तुः।

वृद्धि-सन्धि

(१) सन्धि करो :—

तथा + एव, एक + एकम्, वन + ओषधम्, सदा + एव, मम + औत्सुक्यम्, तव + औदार्यम्, प्र + ऊढिः, प्र + एष्यः, पक्व + ओदनम्, जल + ओकसः ।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

प्रौष्ठः, प्रार्च्छति, तदैव, तेनैव, वनौकसः, सिद्धौदनम्, महौषधम्, जनौत्सुक्यम्, तवौत्कंठ्यम्, तवैश्वर्यम् ।

पररूप सन्धि

(१) सन्धि करो :—

उप + एजते, प्र + ओषति, प्र + एषणीयम् हल + ईषा, लाङ्गल + ईषा, सार + अङ्गः, मनस् + ईशा, कर्क + अन्धुः, सीम + अन्तः, शिव + एहि ।

(२) सन्धि विच्छेद करो—

शिवायोंनमः, अवेहि, उपेहि, पतञ्जलिः, मार्तण्डः, अवोषति, प्रेषयति, अवेजते, उपेषते, कुलटा ।

पूर्वरूप तथा अन्यान्य सन्धि

(१) सन्धि करो :—

गृहे + अत्र, गते + अयि, रामो + अयि, प्रभो + अज, अत्र, कवे + अव, भानो + अव, गो + अग्रम्, गो + इन्द्रः, आगच्छ राम ३ इह सीता, कवी + एतौ, चक्रि + अत्र ।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

काननेऽत्र, कृष्णोऽपि गवेन्द्रः, कृतेऽपि, गोऽग्रम्, गंगे अमू, अहो ईशाः, उ उमेशः, विष्ण इति, किमु उक्तम् । ब्रह्म ऋषिः ।

श्चुत्व सन्धि

(१) सन्धि करो :—

सन् + चिन्, कश्चिद् + जनाः, कृष्णस् + चिनोति, रामस् + शेते,

निस्+चयः, सत्+जनः, उत्+चारणम्, हरिस्+चन्द्रः, एतत्+चरित्रम्, निस्+चिन्तः, जगत्+ जालम्।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

कश्चलति, तच्च, तच्छविः, जगज्जननी, मनश्शङ्का, तज्जलम् दुश्चरित्रम्, तच्छरीरम् कृष्णश्चलति।

ष्टुत्व सन्धि

(१) सन्धि करो :—

इष्+तम्, तत्+टीका, अधिष+थानम्, धनुस्+टङ्कारः, इष्+तम्, निविष्+तः, उत्+डीयते, तत्+टकारः, स्रष्+ता, कृष्णस्+षष्ठः।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

मट्टीका, उड्डीनम्, कष्टीकते, परिमृष्टम्, दृष्टवान्, चक्रिण्ढौकसे, षण्णाम्, षण्णवति षण्णगर्यः।

जश्त्व तथा अनुनासिक, सन्धि

(१) सन्धि करो :—

जगत्+ईशः, दिक्+ईशः, चित्+अचित्, सत+असत्, वाक्+अर्थौ, एतत्+मनोहरम्, एतत्+माधवः, धिक्+मूर्खम्, वाक्+मयम्, सत्+मार्गः।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

एतन्मयम्, एतन्मात्रम्, मन्मार्गः, मधुलिड् गुञ्जति, जगदाधारः, अजन्तः, चिदानन्दः, सुवन्तः, तदन्तः, षडाननम्।

परसवर्ण, पूर्वसवर्ण, छत्व सन्धि

(१) सन्धि करो :—

एतत्+लिखितम्, भगवत्+लीला, तत्+लीनः, वणिक्+हसति, दिक्+हस्ती, तच्+शिवः, जगत्+शान्तिः, एतत्+शरीरम्, शां+तः, कुं+ठितः।

(२) सन्धि विच्छेद करोः—

कुशाल्लाँति, बुद्धिमाल्लिँखति, उत्थानम् , उत्तम्भनम् , तद्धकारः, तच्छ्रुत्वा, अस्मच्छङ्का, हसल्लिखति, तल्लुनाति, उत्थापकः ।

अनुस्वार, तुगागम, सत्व, उत्व सन्धि

(१) सन्धि करो :—

विद्यालयम् + गच्छति, पत्रम् + लिखति, पयान् + सि, सन् - शम्भुः, सम् + स्कर्ता, लक्ष्मी + छाया, शिव + छाया, पुम् + चरित्रम् , विद्वान् + चलति, कान् + कान् ।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

वृत्तच्छाया, स्वच्छात्रः, भास्वांश्चरति पुमाँश्चलति, सञ्च्छम्भुः, त्वङ्करोषि, आक्रंस्यते, संगंस्यते, शत्रुं जयति, शिवंभजति ।

विसर्ग-सन्धि (सत्व, उत्व, यत्व, रत्व, सुलोपविधान)

(१) सन्धि करो :—

भानुः + मता, कविः + शेते, रामस् + अर्च्यः, कृष्णः + चरति, देवा + इह, अहन् + गण, कविर् + रचयति, मनस् + रथः, एषस् + रामः ।

(२) सन्धि विच्छेद करो :—

अस विष्णुः, स शम्भुः, मनोबलम् , शम्भूराजते, अहर्गणः, छात्रा हसन्ति, बालका नमन्ति, भो जनाः, अघो याहि, देवायिह ।

शब्द-रूप

अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

'बालक'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वि०	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृ०	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
च०	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पं०	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
ष०	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
स०	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सं०	हे बालक	हे बालकौ	हे बालकाः

नोट—इसी प्रकार राम, कृष्ण, देव, ब्राह्मण, सुर, असुर वृक्ष इत्यादि अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

'हरि'

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	हरी	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पं०	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
ष०	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	हर्योः	हरिषु
सं०	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

नोट—इसी प्रकार कवि, रवि, मुनि, गिरि इत्यादि इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द

भानु

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	भानुः	भानू	भानवः
द्वि०	भानुम्	भानू	भानून्
तृ०	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
च०	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पं०	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
ष०	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
स०	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सं०	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

नोट—इसी प्रकार गुरु, शिशु, पशु, वायु, तरु इत्यादि उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

सखि = मित्र

प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि०	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं०	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
स०	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सं०	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रमा (लक्ष्मी)

प्र०	रमा	रमे	रमाः
द्वि०	रमाम्	रमे	रमाः

तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च०	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पं०	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
स०	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सं०	हे रमे	हे रमे	हे रमाः

नोट—इसी प्रकार गङ्गा, यमुना, लता, सरला, प्रतिभा, क्षमा आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मति=बुद्धि।

प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः

नोट—इसी प्रकार गति रति, क्षति, रुचि, जाति इत्यादि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी

प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदी	हे नद्यौ	हे नद्यः

नोट—इसी प्रकार नारी, गौरी, देवी जननी, पद्मिनी, पृथ्वी भगिनी आदि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होगें।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

धेनु = गाय

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

नोट—इसी प्रकार रेणु, चञ्चु, तनु आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होगें।

अकारान्त नपुसंक लिङ्ग शब्द

पुष्प = फूल

प्र०	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि
द्वि०	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि

नोट—नपुंसक लिङ्ग में तृतीया से लेकर सप्तमी तक के रूप पुंल्लिङ्ग के समान होते हैं।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं०	हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

दधि = दही

प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि०	दधि	दधिनी	दधीनि
तृ०	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
च०	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
ष०	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
स०	दध्नि, दधिनि	दध्नोः	दधिषु
सं०	हे दधि, दधे	हे दधिनी	हे दधीनि

उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

मधु = शहद

प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पं०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
ष०	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सं०	हे मधु, हे मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

नोट—इसी प्रकार वस्तु, आदि शब्दों रूप होंगे।

सर्वनाम शब्द

तद् = वह (पुँल्लिङ्ग)

प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पं०	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् = वह (स्त्रीलिंग)

प्र०	सा	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्याः	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् = वह (नपुंसकलिङ्ग)

प्र०	तत्	ते	तानि
द्वि०	तत्	ते	तानि

नोट—शेष रूप तृ० से लेकर सप्तमी तक पुंल्लिङ्ग के समान होंगे ।

युष्मद् = तुम

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम् , त्वा	युवाम् , वाम्	युष्मान् , वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम् , ते	युवाभ्याम् , वाम्	युष्मभ्यम् , वः
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम् , वः
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् = मैं

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्, मा	आवाम् , नौ	अस्मान् , नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम् , मे	आवाभ्याम् , नौ	अस्मभ्यम्, नः
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु, नः

किम्=कौन, क्या

पुँल्लिङ्ग

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पं०	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	के	काः
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पं०	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
ष०	कस्याः	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

नोट—शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होगें।

इदम्=यह

पुँल्लिङ्ग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः

ष०	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयोः एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृ०	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि

नोट—शेष रूप पुँल्लिङ्ग के समान होंगें।

धातु प्रकरण

परस्मैपदी धातुओं के आगे भिन्न-भिन्न प्रत्ययों के जोड़ने से भिन्न-भिन्न लकारों के रूप बनते हैं। यहाँ पर पहले लकारों के प्रत्यय दिये गये हैं और बाद में 'भू' धातु के अन्त में उन प्रत्ययों को जोड़ कर उनके रूप दिखाये गये हैं। इसी प्रकार भू, पठ्, गम्, दृश् आदि सभी परस्मैपदी धातुओं के आगे प्रत्यय जोड़ कर रूपों को बनाना चाहिये।

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

प्र० पु०	ति	तः	अन्ति
म० पु०	सि	थः	थ
उ० पु०	आमि	आवः	आमः

उदाहरणः—भू = होना।

प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

लिट् (परोक्ष भूत) के प्रत्यय

प्र० पु०	णल् (अ)	अतुस् (अतुः)	उस् (उः)
म० पु०	थल् (थ)	अथुस् (अथुः)	अ
उ० पु०	णल् (अ)	व	म

उदाहरणः—

प्र० पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म० पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ० पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम

लङ् (अनद्यतन भूत)

नोट—धातु के पहले 'अ' जोड़ने के बाद धातु के अन्त में निम्नाङ्कित प्रत्ययों को लगाना चाहिए।

प्र० पु०	अत्	ताम्	अन्
म० पु०	अः	तम्	त
उ० पु०	अम्	आव	आम

उदाहरण :—

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लुङ् (सामान्यभूत) के प्रत्यय

प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० पु०	अः	तम्	त
उ० पु०	अम्	व	म

उदाहरण :—

प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

लुट् (अनद्यतन भविष्य) के प्रत्यय

प्र० पु०	ता	तारौ	तारः
म० पु०	तासि	तास्थः	तास्थ
उ० पु०	तास्मि	तास्वः	तास्मः

उदाहरण :—

प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

लृट् (सामान्यभविष्यत्)

धातुओं में स्य अथवा इष्य जोड़ने के बाद, लट् लकार के प्रत्ययों को लगाने से लृट् के रूप बनते हैं।

उदाहरण :—

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् (आज्ञा) प्रत्यय

प्र० पु०	तु	ताम्	अन्तु
म० पु०	अ	तम्	त
उ० पु०	आनि	आव	आम

उदाहरण :—

प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् (चाहिए) प्रत्यय

प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
म० पु०	एः	एतम्	एत
उ० पु०	एयम्	एव	एम

उदाहरण :—

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
म० पु०	भवे:	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

आशीर्लिङ् (आशीर्वाद) के प्रत्यय

प्र० पु०	यात्	यास्ताम्	यासु:
म० पु०	या:	यास्तम्	यास्त
उ० पु०	यासम्	यास्व	यास्म

उदाहरण :—

प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासु:
म० पु०	भूया:	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

लृङ् (हेतुहेतुमद् भाव) के प्रत्यय

धातु के पहले अकार और अन्त में इष्य या स्य जोड़ने के बाद लङ् के प्रत्यय जोड़ने से लृङ् के रूप बनते हैं। जैसे, भू के रूप लृङ् में बनाने के लिए उसके पहले अ जोड़ दिया गया तो अभू बना। इसके बाद अन्त में 'इष्य' जोड़ा गया तो अभविष्य बना। अब लङ् के प्रत्यय जोड़ने पर निम्नांकित रूप बनेगें।

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० पु०	अविभष्य:	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

परस्मैपदी

पठ्—पढ़ना

	लट्			लुट्		
प्र० पु०	पठति	पठत:	पठन्ति	पठिता	पठितारौ	पठितार:
म० पु०	पठसि	पठथ:	पठथ	पठितासि	पठितास्थ:	पठितास्थ
उ० पु०	पठामि	पठाव:	पठाम:	पठितास्मि	पठितास्व:	पठितास्म:

लङ्

प्र० पु०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम	अपठाव	अपठाम

लोट्

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

लुङ्

प्र० पु०	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
म० पु०	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
उ० पु०	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

विधिलिङ्

पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट्

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

आ० लिङ्

पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
पठ्याः	पठ्यास्तम्	पठ्यास्त
पठ्यासम्	पठ्यास्व	पठ्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्
म० पु०	अपठिष्यः	अपठिष्यतम्	अपठिष्यत
उ० पु०	अपठिष्यम्	अपठिष्याव	अपठिष्याम

लिट्

पपाठ	पेठतुः	पेठुः
पेठिथ	पेठथुः	पेठ
पपाठ,पपठ	पेठिव	पेठिम

गम्—जाना

लट्

प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लुट्

गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

लङ्

प्र० उ०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम	अगच्छाव	अगच्छाम

लोट्

गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

	लुङ्			विधिलिङ्		
प्र० पु०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० पु०	अगमः	अगमतम्	अगमत	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	अगमम्	अगमाव	अगमाम	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

	लृट्			आ० लिङ्		
प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ	गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म

लृङ्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० पु०	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम्

लिट्

प्र० पु०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
म० पु०	जगामिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म
उ० पु०	जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम

अनुवाद के सामान्य नियम

१—अनुवाद करते समय सबसे पहले क्रिया का ज्ञान करना चाहिए। वाक्य में क्रिया प्रधान होती है। क्रिया का सम्बन्ध सभी कारकों से होता है।

२—क्रिया जान लेने के बाद उसके आधार पर कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, तथा अधिकरण आदि कारकों का ज्ञान करना चाहिए। पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि क्रिया के पहले कौन, किसको, किसके द्वारा, किसके लिए, किससे, किसमें या किस पर लगाकर प्रश्न करने से उत्तर में क्रमशः कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण आदि कारक आयेंगे।

३—कारकों का ज्ञान होने के बाद विभक्तियों का ज्ञान करना चाहिए। किस कारक में कौन-सी विभक्ति होती है यह पिछले अध्याय में

बताया जा चुका है। यदि कर्त्ता का निश्चय हो जाता है तो कर्त्ता का प्रयोग प्रथमाविभक्ति में करना चाहिए।

४ - वाक्य में मुख्यतः दो ही प्रकार के पद पाये जाते हैं। १—क्रिया २—कारक। इनके अतिरिक्त जो शब्द होते हैं वे या तो कारकों के विशेषण होते हैं या क्रिया के।

५—जहां संज्ञा या सर्वनाम के द्वारा किन्हीं दो वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थानों में सम्बन्ध प्रकट होता है वहां सम्बन्ध कारक होता है उसका प्रयोग षष्ठी विभक्ति में होता है।

६—कर्त्ता का ज्ञान होने पर उसके पुरुष, लिङ्ग और वचन का पता लगाना चाहिए।

७—कर्त्ता और क्रिया के पुरुष और वचन समान होते हैं। पुरुष और वचन की समानता में वाक्य शुद्ध होगा। पुरुष और वचन समान न होने पर वाक्य अशुद्ध हो जायगा।

'राम पढ़ता है'—इस वाक्य का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए निम्नाङ्कित बातों पर क्रमशः विचार करना चाहिये।

प्र०—वाक्य में क्रिया शब्द कौन-सा है :

उ०—पढ़ता है।

प्र०—कौन पढ़ता है ?

उ०—'राम'। 'राम' कर्त्ता कारक है।

प्र०—कर्त्ता का प्रयोग किस विभक्ति में होता है ?

उ०—प्रथमा विभक्ति में।

प्र०—राम शब्द प्रथमा विभक्ति के किस वचन में है ?

उ०—एक वचन में।

प्र०—'राम' शब्द कौन-सा पुरुष है ?

उ०—प्रथम पुरुष। अब 'राम' जिस पुरुष और वचन का है, उसी पुरुष और वचन की क्रिया का प्रयोग उसके साथ होगा। 'पठ्' धातु का अर्थ होता है पढ़ना। पठ् का लट् लकार वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एक वचन में 'पठति' रूप होता है। इसलिए, 'राम पढ़ता है' का संस्कृत में अनुवाद होगा—'रामः पठति'।

कारक प्रकरण

प्रथमा विभक्ति

प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा—प्रातिपदिकार्थ मात्र लिङ्ग मात्र की अधिकता में परिमाण मात्र और वचन मात्र में प्रथमा होती है।

नियतोपस्थितिकः प्रातिपदिकार्थः—जिस प्रातिपदिक के उच्चारण में अर्थ की उपस्थिति नियत रूप से होती है उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं। प्रातिपदिकार्थ पाँच प्रकार के होते हैं उनके नाम हैं स्वार्थ (जाति), द्रव्य (व्यक्ति), लिङ्ग, संख्या और कारक।

लिङ्ग आदि की उपस्थिति नियत रूप से नहीं होती। कभी पुल्लिङ्ग कभी स्त्रीलिङ्ग और कभी नपुंसकलिङ्ग की उपस्थिति होती है। संख्या और कारक की भी उपस्थिति नियत रूप से नहीं होती कहीं एकत्व है तो कहीं द्वित्व कहीं कर्त्ता कारक है तो कहीं कर्म।

प्रातिपदिकार्थ मात्र—प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा होती है जैसे उच्चैः (ऊँचा), नीचैः (नीचा), कृष्णः (कृष्ण), श्रीः (लक्ष्मी), तथा ज्ञानम् (ज्ञान) यहाँ प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा विभक्ति हुई है।

लिङ्ग मात्र—जहाँ जाति और द्रव्य से अधिक लिङ्ग मात्र का अर्थ प्रकट होता है वहाँ प्रथमा होती है। तट शब्द अनियत लिङ्ग है। यह प्राति-पदिकार्थ मात्र के अन्तर्गत नहीं आता। इसलिये लिंङ्ग मात्राधिक्य अर्थ में तटः (पुं०), तटी (स्त्री०), तटम् (नपुं०) प्रथमा विभक्ति हुई है।

परिमाण मात्र—परिमाण मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—द्रोणों-व्रीहिः।

सम्बोधने च—सम्बोधन अर्थ में प्रातिपदिक का प्रयोग प्रथमा विभक्ति में होता है। जैसे हे राम!

स्वतन्त्रः कर्त्ता—क्रिया करने में जो स्वतन्त्र होता है वह कर्त्ता कहलाता है।

कर्त्तरि प्रथमा—कर्त्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है जैसे बालकः (बालक ने), बालकौ (दो बालकों ने), बालकाः (सब बालकों ने)।

प्रथमा, लट् (वर्त्तमानकाल)

शब्द-कोष

अस्=होना। भू=होना। कृ=करना। लिख्=लिखना। पठ्=पढ़ना। क्रीड्=खेलना। स्था=बैठना। गम्=जाना। आगम्=आना। कुत्र=कहाँ। क्व=कहाँ। अत्र=यहाँ। तत्र=वहाँ। यत्र=जहाँ। भवान्=आप। भवती (स्त्री०)=आप। शिशु=बच्चा। सः=वह। तौ=वे दोनों। ते=वे सब। त्वम्=तुम। युवाम्=तुम दोनों। यूयम्=तुम सब। अहम्=मैं। आवाम्=हम दोनों। वयम्=हम सब।

अभ्यास १

(क) उदाहरण :—१. वह कहाँ है ?—सः कुत्र अस्ति ? २. वे दोनों वहाँ हैं—तौ तत्र स्तः ३. वे सब वहाँ हैं—ते तत्र सन्ति ४. जहाँ राम है वहाँ श्याम है—यत्र रामः अस्ति तत्र श्यामः अस्ति ५. आप लिखते हैं—भवान् लिखति ६. तुम पाठशाला जाते हो—त्वं पाठशालां गच्छसि ७. बच्चा खेलता है—शिशुः क्रीडति ८. राम वन जाता है—रामः वनं गच्छति ९. तुम लोग भोजन करते हो—यूयं भोजनं कुरुथ १०. आप लोग कहाँ जाते हैं—भवन्तः कुत्र गच्छन्ति ?

(ख) संस्कृत बनाओ:—१. छात्र पढ़ते हैं। २ मैं आसन पर बैठता हूँ। ३. बच्चे गेंद खेलते हैं। ४. लड़के आते हैं। ५. हम लोग यहाँ हैं। ६. तुम दोनों कहाँ हो ? ७. हम दोनों विद्यालय जाते हैं। ८. आप दोनों कहाँ जाती हैं ? ९. आप लोग क्या करते हैं ? १०. बालक स्नान करते हैं।

(ग) शुद्धा-शुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१. भवान् कुत्र गच्छसि।	भवान् कुत्र गच्छति।
२. ते अत्र स्मः।	ते अत्र सन्ति।
३. यूयं कुत्र गच्छति।	यूयं कुत्र गच्छथ।
४. शिशुः क्रीडतः।	शिशुः क्रीडति।
५. बालकाः आगच्छथ।	बालकाः आगच्छन्ति।

६. अहं अत्र स्मः।	अहं अत्र अस्मि।
७. भवन्तः किं कुरुथ।	भवन्तः किं कुर्वन्ति।
८. भवत्यौ अत्र आगच्छथः।	भवत्यौ अत्र आगच्छतः।
९. यत्र भवान् असि तत्र सः असि।	यत्र भवान् अस्ति तत्र सः अस्ति।
१० आवां क्रीडतः।	आवां क्रीडावः।

(घ) शुद्ध करो—१. वयं भोजनं कुर्वन्ति २. ते गृहं गच्छामः ३. आवां तत्र तिष्ठतः ४, भवान् लिखसि ५. भवत्यः किं कुरुथ ६. बालकौ तिष्ठति ७. शिशवः क्रीडतः ८. त्वं आगच्छति ९. मनुष्याः तत्र तिष्ठथ १०. शिशवः क्रीडामः।

(ङ) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति करोः—१. ते····गच्छन्ति २. सा··· लिखति ३. रामः पाठशालां····४. त्वं कुत्र····५. भवत्यः किं····६. ते····सन्ति ७. वयं····भवामः ८ श्यामः क्व····९ भवती तत्र····१०. आवां अत्र····।

(च) स्था, भू, अस्, गम् और क्रीड् धातुओं के रूप लट् लकार के तीनों पुरुषों में लिखो। भवत् शब्द के रूप पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में लिखो।

पुरुष वाचक सर्वनाम

(१. यदि किसी वाक्य में च अथवा वा के योग में एक ही क्रिया के अनेक कर्त्ता भिन्न-भिन्न पुरुष के हों तो उस क्रिया के पुरुषों प्रयोग का निम्नांकित नियम के अनुसार होगा :—

क—यदि एक ही क्रिया के अनेक कर्त्ता 'वा' से युक्त हों तो क्रिया के पुरुष और वचन अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होंगें। उदाहरण—त्वम् वा अहं वा पठामि (तुम या मैं पढ़ता हूँ), अहं वा ते वा लिखन्ति (मैं अथवा वे लिखते हैं), स वा त्वं वा अहं वा गमिष्यामि (वह या तुम या मैं जाऊँगा)।

ख—किसी वाक्य में प्रथम और मध्यम पुरुष के कर्त्ता के योग में यदि उत्तम पुरुष का कर्त्ता हो तो उसके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होगा। उदाहरण—सः त्वं अहं च वाराणसीं गमिष्यामः (वह तुम और मैं वाराणसी जायेंगे), रामः अहं च खादावः (राम और मैं खाते हैं)।

ग—किसी वाक्य में यदि केवल प्रथम और मध्यम पुरुष के ही कर्त्ता हों तो उनके साथ मध्यम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होगा। उदाहरण—युवां ते च पश्यथ (तुम दोनों और वे देखते हो)।

घ—यदि किसी वाक्य में एक ही पुरुष या भिन्न-भिन्न पुरुषों के एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया का वचन कर्त्ताओं की संख्या के अनुसार होगा। जैसे, रामः श्यामश्च क्रीडतः (राम और श्याम खेलते हैं) बालिकाः बालकाश्च क्रीडन्ति (लड़कियां और लड़के खेलते हैं)।

शब्द-कोष

क्रीड् = खेलना। दृश् = देखना। हस् = हसना। वस् = रहना। खाद् = खाना। गा = गाना। रक्ष् = रक्षा करना।

अभ्यास २

क—उदाहरण वाक्य—(१) अहं दिनेशश्च तत्र गच्छावः (मैं और दिनेश वहाँ जाते हैं), (२) युवां रमेशः च क्रीडथ (तुम दोनों और रमेश खेलते हो), (३) वयं ते च अत्र पठिष्यामः (हम लोग और वे यहां पढ़ेंगे), (४) रामः कृष्णश्च गच्छतः (राम और कृष्ण जाते हैं), (५) त्वं अहं देवदत्तश्च पश्यामः (मैं तुम और देवदत्त देखते हैं), (६) अहं वा त्वं वा गमिष्यसि (मैं या तुम जाओगे), (७) त्वं वा कृष्णः वा खादति (तुम या कृष्ण खाते हो), (८) आवां युवां ते च लिखामः (हम दोनों तुम दोनों और वे सब लिखते हैं), (९) शिष्याः गुरवश्च विद्यालयं गच्छन्ति (शिष्य और गुरु लोग विद्यालय जाते हैं), (१०) ते यूयं च हसथ (वे और तुम सब हंसते हो)।

ख—संस्कृत बनाओ—(१) मैं तुम और श्याम खेलते हैं। (२) तुम लोग और वे सब पढ़ते हैं। (३) तुम या श्याम लिखते हो। (४) वे और तुम लोग जाते हो। (५) तुम और केशव क्या पूँछते हो। (६) हम लोग और वे सब यहाँ रहते है। (७) तुम या वे कहाँ रहते हैं ? (८) राम या कृष्ण खेलता है। (९) वे और मैं नहीं पढ़ते हैं। (१०) पुरुष और स्त्रियाँ खेलती हैं।

शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
अहं त्वं ते च खादन्ति।	अहं त्वं ते च खादामः।
ते युवां च पठथः।	ते युवां च पठथ।
रामः त्वं च कुत्र गच्छसि।	रामः त्वं च कुत्र गच्छथः।
सः अहं वा गायति।	सः अहं वा गायामि।
कृष्णः बालकौ च लिखतः।	कृष्णः बालकौ च लिखन्ति।
त्वं वा केशवः वा पश्यतः।	त्वं वा केशवः वा पश्यति।
अहं वा त्वं वा हसामि।	अहं वा त्वं वा हससि।
पुरुषौ स्त्रियौ च खादतः।	पुरुषौ स्त्रियौ च खादन्ति।

घ—शुद्ध करो (१) देवदत्तः शिवदत्तश्च गच्छति। (२) शिष्याः गुरुश्च क्रीडतः। (३) सः त्वं अहं च अत्र पठन्ति। (४) गोविन्दः अहं च पश्यमि। (५) त्वं वा अहं वा रक्षसि। (६) युवां ते च क्रीडन्ति। (७) अहं वा ते वा गमिष्यामि। (८) स वा त्वं वा अहं वा पठिष्यन्ति।

द्वितीया विभक्ति

कर्तुरीप्सिततमं कर्म—कर्त्ता क्रिया के द्वारा जिसे अत्यधिक चाहता है उसकी कर्म संज्ञा होती है।

कर्मणि द्वितीया—अनुक्त कर्म में द्वितीया होती है। जिस अर्थ में प्रत्यय होता है वह उक्त होता है और उससे अन्य अनुक्त होता है। कर्त्ता के उक्त होने पर कर्म अनुक्त हो जाता है कर्म के उक्त होने पर कर्त्ता अनुक्त हो जाता है। तात्पर्य यह है कि किसी एक कारक के उक्त होने पर अन्य कारक अनुक्त हो जाते हैं। उदाहरण—मुनिः हरिं भजति। यहाँ पर 'भजति' क्रिया में ति प्रत्यय कर्त्ता अर्थ में हुआ है। इसलिये कर्त्ता 'मुनिः' उक्त है और कर्म 'हरिं' अनुक्त है। 'अनुक्त कर्म में द्वितीया होती है' इस नियम से हरि शब्द का प्रयोग द्वितीया में हुआ है।

अकथितं च—अपादान आदि कारक जब किसी विशेष परिस्थिति में अविवक्षित हो जाते हैं तो उनकी कर्म संज्ञा होती है और कर्म हो जाने पर द्वितीया विभक्ति होती है। यह नियम प्रायः द्विकर्मक धातुओं के प्रयोग में गृहीत होता है। द्विकर्मक धातुयें इस प्रकार हैं—दुह् = दुहना, याच् =

मांगना, पच् = पकाना, दण्ड् = सजा देना, रुध् = रोकना, प्रच्छ् = प्रश्न करना, चि = चुनना, ब्रू = बोलना, शास् = शासन करना, जि = जीतना, मथ् = मथना, मुष् = चुराना, नी = ले जाना, हृ = हरण करना, कृष् = खींचना, वह् = ढोना।

तथायुक्तं चानीप्सितम्—कर्त्ता द्वारा अनीप्सित को भी इप्सित की भांति कर्म संज्ञा होती है। उदाहरण—ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति (गाँव में जाता हुआ तृण को स्पर्श करता है)। इस वाक्य में ग्राम इप्सिततम है इसमें 'कर्त्तुरीप्सिततमं' सूत्र से कर्म हुआ है और 'तृण' अनीप्सित है इसलिये इसमें भी तथा युक्तं चानीप्सितं सूत्र कर्म संज्ञा हुई है।

अधिशीङ्स्थासां कर्म—'अधि' उपसर्ग पूर्वक शी, स्था और आस् आदि क्रियाओं का आधार कर्म होता है। उदाहरण—मुनिः आसनम् अधितिष्ठति (मुनि आसन पर बैठता है), छात्रः भूमिम् अधिशेते (छात्र भूमि पर सोता है)।

अभिनिविशश्च—अभि और नि उपसर्ग पूर्वक विश् क्रिया का आधार कर्म होता है। उदाहरण—शिष्यः सन्मार्गम् अभिनिविशते (शिष्य अच्छे मार्ग का अनुसरण करता है।)

उपान्वध्याङ्वस—उप, अनु, अधि और आ उपसर्ग पूर्वक वस् क्रिया का आधार कर्म होता है। उदाहरण—हरिः वैकुण्ठम् उपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति (हरि वैकुण्ठ में वास करते हैं)।

यदि वस् धातु उप अनु अधि आ उपसर्ग पूर्वक न हो तो इस क्रिया का आधार कर्म न होकर अधिकरण होगा। उदाहरण—हरिः वैकुण्ठे वसति (हरि वैकुण्ठ में वास करते हैं)।

अभुक्त्यर्थस्य न—उप पूर्वक वस् धातु का अर्थ जब निवास करना न होकर भोजन परित्याग होता है तो क्रिया का आधार कर्म न होकर अधिकरण ही होता है। उदाहरण—देवदत्तः वने उपवसति (देवदत्त वन में उपवास करता है)।

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः, अध्यधि के योग में द्वितीया होती है। उदाहरण—उभयतः कृष्णं गोपाः सन्ति (कृष्ण के दोनों

ओर गोप हैं)।........धिक् पापिनम् (पापी को धिक्कार है) उपर्युपरि लोकं हरिः (हरि लोक के ऊपर हैं)। अधोऽधो लोकं राजा बली—लोक के नीचे राजा बलि हैं) अध्यधिलोकम् देवाः (संसार के ठीक ऊपर देव हैं)।

अभितः परितः समयानिकषाहा प्रति योगेऽपि--अभितः परितः समया निकषा हा और प्रति के योग में द्वितीया होती है। उदाहरण—उपवनम् अभितः वृक्षाः सन्ति (उपवन के चारों ओर पेड़ हैं)। विद्यालयं परितः उद्यानानि सन्ति (विद्यालय के चारों ओर उद्यान हैं)।

ग्रामं समया निकषा वा सरो विद्यते (गांव के पास तालाब है)। हा दुष्टम् (हाय दुष्ट)।

राजा दीनं प्रति दयालुः (राजा दीन के प्रति दयालु है)।

अन्तराऽन्तरेणयुक्ते—अन्तरा तथा अन्तरेण के योग में द्वितीया होती है। अन्तरा=बीच में। अन्तरेण=विना, विषय में। अन्तरा त्वां मां गोविन्दः (तुम्हारे और हमारे बीच गोविन्द है)। श्यामम् अन्तरेण न किंचिद् वक्तुं शक्नोमि (राम के विषय में कुछ नहीं कह सकता हूँ)। सीताम् अन्तरेण रामः वनं न अगच्छत् (सीता के विना राम वन नहीं गये)।

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे—समयवाचक तथा मार्ग वाचक शब्द के योग में द्वितीया होती है, अत्यन्त संयोग (लगातार) अर्थ में। उदाहरण-शिष्यः त्रीणि वर्षाणि वेदान् अपठत् (शिष्य ने तीन वर्षों तक वेदों को पढ़ा) क्रोशं कुटिला नदी (नदी कोस भर टेढ़ी है)।

एनपा द्वितीया—एनप् प्रत्ययान्त शब्द के योग में द्वितीया होती है। उदाहरण—विद्यालयं दक्षिणेन (विद्यालय के दक्षिण)। गृहम् उत्तरेण (घर के उत्तर)। इन वाक्यों में दक्षिणेन (दक्षिण+एन) उत्तरेण (उत्तर+एन) शब्द एनप् प्रत्ययान्त हैं। इसीलिए इनके योग में द्वितीया हुई है।

दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च—दूर तथा अन्तिक वाचक शब्दों के योग में द्वितीया होती है। उदाहरण—ग्रामाद् ग्रामस्य वा दूरं, दूरेण, दूराद् दूरे वा (गांव से दूर)

गृहस्य गृहाद् अन्तिकम्, अन्तिकेन, अन्तिकात्, अन्तिके वा। विद्यालयस्य, विद्यालयाद् वा निकटं, निकटेन, निकटात् निकटे वा (विद्यालय के निकट)।

गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता स णौ कर्म—गत्यर्थक, बुद्ध्यर्थक भक्षणार्थक शब्दकर्मक तथा अकर्मक धातुओं के कर्त्ता प्रेरणार्थक (णिजन्त) धातुओं में कर्म हो जाते हैं। उदाहरण—

अणिजन्त धातु	णिजन्त धातु
भक्ताः स्वर्गम् अगच्छन्।	हरिः भक्तान् स्वर्गम् अगमयत्।
शिष्याः वेदार्थम् अविदुः।	आचार्यः शिष्यान् वेदार्थम् अवेदयत्।
देवाः अमृतम् आश्नन्।	हरिः देवान् अमृतम् आशयत्।
विधिः वेदम् अध्यैत।	हरिः विधिं वेदमध्यापयत्।
पृथ्वी सलिले आस्त।	हरिः पृथ्वीं सलिले आसयत्।

हृक्रोरन्यतरस्याम्—हृ तथा कृ अणिजन्त धातुओं के कर्त्ता विकल्प से णिजन्त में कर्म हो जाते हैं। उदाहरण—अणिजन्त—भृत्यः कटं हरति। णिजन्त— स्वामी भृत्यं भृत्येन वा कटं हारयति।

जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम्—जल्प इत्यादि अणिजन्त धातु का कर्त्ता णिजन्त में कर्म हो जाता है। जैसे, अणिजन्त—शिष्यो धर्मं जल्पति। णिजन्त—उपाध्यायः शिष्यं धर्मं जल्पति।

आदिखाद्योर्न—अद् और खाद् अणिजन्त धातुओं के कर्त्ता णिजन्त में कर्म न होकर करण हो जाते हैं। जैसे, अणिजन्त—छात्रः अन्नम् अत्ति खादति वा। णिजन्त—अध्यापकः छात्रेण अन्नम् आदयति खादयति वा।

णिजन्त—जिन धातुओं के अन्त में णिच् प्रत्यय होता है वह णिजन्त धातु होती हैं।

अणिजन्त—जिस धातु में णिच् प्रत्यय नहीं होता, वह अणिजन्त धातु होती है।

णिजन्त धातु का प्रयोग प्रेरणा अर्थ में होता है। अणिजन्त—सः पठति (वह पढ़ता है) णिजन्त—सः पाठयति (वह पढ़ाता है)।

उदाहरण:—

धातु	अणिजन्त	णिजन्त
पठ्	पठति (पढ़ता है)	पाठयति—(पढ़ाता है)
लिख्	लिखति (लिखता है)	लेखयति (लिखाता है)
श्रु	शृणोति (सुनता है)	श्रावयति (सुनाता है)
दृश्	पश्यति (देखता है)	दर्शयति (दिखाता है)
गम्	गच्छति (जाता है)	गमयति (जवाता है)
खाद्	खादति (खाता है)	खादयति (खिलाता है)
घ्रा	जिघ्रति (सूँघता है)	घ्रापयति (सुंघाता है)
ज्ञा	जानाति (जानता है)	ज्ञापयति (जनाता है)
स्था	तिष्ठति (स्थित होता है)	स्थापयति (स्थापित करता है)
पच्	पचति (पकाता है)	पाचयति (पकाता है)
स्ना	स्नाति (नहाता है)	स्नापयति (नहलाता है)
नी	नयति (ले जाता है)	नाययति (लिवा जाता है)
हन्	हन्ति (मारता है)	घातयति (मरवाता है)
प्री	प्रीणाति (प्रसन्न होता है)	प्रीणयति (प्रसन्न करता है)
स्मृ	स्मरति (याद करता है)	स्मारयति (याद कराता है)
जागृ	जागर्ति (जागता है)	जागरयति (जगाता है)

शब्द कोष

याच्=मागना। दुह्=दुहना। रुध्=रोकना। स्मृ=स्मरण। नी—ले जाना। अध:=नीचे। उपरि=ऊपर। पच्=पकाना। गम्=जाना। पठ=पढ़ना। चि=चुनना। आचार्य:=गुरु। स्पृश्=छूना।

अभ्यास ३

(प्रथमा, द्वितीया, लट्, लृट्)

(क) उदाहरण—१. वह जायगा—स: गमिष्यति। २. तू पढ़ेगा—त्वं पठिष्यसि। ३. मैं लिखूँगा—अहं लेखिष्यामि। ४. वह गाय का दूध दुहता है—स: गां दोग्धि पय:। ५. याचक राजा से धन माँगता है—याचक: राजानं-धनं याचते। ६. देवदत्त यज्ञदत्त से सौ रुपये दण्ड लेता है—देवदत्त: यज्ञदत्तं शतं दण्डयति। ७. वह व्रज में गाय को रोकता है—स: व्रजम् अवरुणद्धि गाम्। ८. शिष्य आचार्य से प्रश्न पूछता है—शिष्य: आचार्यं प्रश्नं पृच्छति। ९. बालक फूल के पौधे से फूल तोड़ते हैं—बालका:

पुष्पवृक्षान् कुसुमानि चिन्वन्ति। १०. गुरु शिष्य को धर्म बतलाता है—गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति। ११. गोविन्द दिनेश से सौ रुपये जीतता है—गोविन्दः दिनेशं शतं जयति। १२. हरि ने समुद्र से अमृत मथा—हरिः समुद्रम् अमृतं ममन्थ। १३. गोपाल श्याम के सौ रुपये चुराता है—गोपालः श्यामं शतं मुष्णाति। १४. वह बैल को गाँव ले जाता है—सः वृषभं ग्रामं नयति।

(ख) अनुवाद करो:—

१—वह देखेगा। २—तुम रोओगे। ३—श्याम हँसेगा। ४—तुम ऊपर बैठेगा। ५—मैं नीचे बैठूँगा। ६—तुम फल खाओगे। ७—मैं जल पीऊँगा। ८—वह मुझे स्मरण करेगा। ९—श्याम पुस्तक नहीं चुरायेगा। १०—पथिक राम से रास्ता पूछेगा। ११—मैं फल खाऊँगा। १२—तुम पुस्तक छूओगे। १२—वह अन्न से भोजन पकायेगा। १३—वह विद्यालय में छात्र को ले जायगा। १४—श्याम राम से पुस्तक माँगता है। १५—राजा अपराधी पर सौ रुपया दण्ड लगाता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः जलं पिबिष्यति।	सः जल पास्यति।
२—त्वं दृर्श्यसि।	त्वं द्रक्ष्यसि।
३—सः वृक्षात् फलानि चिनोति।	सः वृक्षं फलानि चिनोति।
४—भिक्षुकः राज्ञः भिक्षां याचते।	भिक्षुकः राजानं भिक्षां याचते।

(घ) शुद्ध करो :—

१—त्वं जलं पास्यति। २—अहं फलं खादामः। ३—श्यामः गुरोः प्रश्नं पृच्छति। ४—याचक रामात् धनं याचते। ५—सः उपाध्यायान् धर्मं पृच्छति। ६—मोहनः गोविन्दात् शतं जयति। ७—गोपः गोः दोग्धि पयः। ८—सः तण्डुलेन ओदनं पचति। ९—कृष्णः व्रजे गाम् अवरुणद्धि। १०—सुरेशः दिनेशात् शतं मुष्णाति। ११—भृत्यः ग्रामं भारं वहति। १२—चौरः राज्ञः धनं मुष्णाति। १३—कमलेशः सुरेन्द्रस्य शतं दण्डयति। १४—अपराधी राज्ञः क्षमां याचते। १५—भगवान् विष्णुः सागरात् सुधां मथ्नाति १६—ते लतायाः कुसुमानि चिन्वन्ति।

शब्द कोष

उभयतः=दोनों ओर। सर्वतः=चारों ओर। धिक्=धिक्कार। उपर्युपरि=ऊपर। अधोऽधः=नीचे। अध्यधि=ऊपर। अभितः=चारों ओर। परितः=चारों ओर समया, निकषा=समीप। हा=खेद। प्रति=लिए। अन्तरा=बीच में। अन्तरेण=बिना।

अभ्यास ४

द्वितीया, लट् (वर्तमान काल) लोट् (आज्ञा) ।

(क) उदाहरण—१—विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं—विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति । २—तुम्हारे और हमारे बीच में राम है—त्वां माम् अन्तरा रामः अस्ति। ३—विद्या बिना मनुष्य शोभा नहीं देता—विद्यां बिना मनुष्याः न शोभन्ते। ४—छात्र पांच वर्षों तक अध्ययन करता है—छात्रः पञ्च वर्षाणि अधीते। ५—पाठशाला के निकट जलाशय है—पाठशालां निकषा, समया वा जलाशयः अस्ति। ६—श्याम कोस भर जाता है—श्यामः क्रोशं गच्छति। ७—परिश्रम के बिना सुख नहीं मिलता—परिश्रमम् अन्तरेण सुखं नास्ति। ८—राम आसन पर बैठे। ९—(रामः आसनम् अधिनिष्ठतु)। १०—छात्र भूमि पर सोता है—छात्रः भूमिम् अधि शेते। ११—वह शिला पर बैठता है—सः शिलाम् अध्यास्ते। १२—वह वन में रहता है—सः वनम् उपवसति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—तू घर जाओ। २—मैं पुस्तक पढ़ूँ। ३—वे आसन पर बैठें। ४—घर के चारों ओर लतायें हैं। ५—पहाड़ के पास वन है। ६—विद्यालय और पुस्तकालय के बीच में उद्यान है। ७—दुर्जन को धिक्कार है। ८—वह राम के प्रति दयालु है। ९—तुम लोग पृथ्वी पर सोओ। १०—मैं कोस भर जाता हूँ। ११—वह सात वर्षों तक अध्ययन करता है। १२—मैं घर जाऊँ। १३—पर्वत के ऊपर-ऊपर जंगल है। १४—पृथ्वी के नीचे-नीचे जल है। १५—हरि वैकुण्ठ में वास करते हैं।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

शुद्ध	अशुद्ध
१—सः फलं पश्य।	सः फलं पश्यतु।
२—ग्रामस्य परितः वृक्षाः।	ग्रामं परितः वृक्षाः।
३—ज्ञानस्य अन्तरेण सुखं नास्ति।	ज्ञानम् अन्तरेण सुखं नस्ति।

४—रामः आसने अधितिष्ठति।	रामः आसनम् अधितिष्ठति।
५—श्यामः भूमिः शेते।	श्यामः भूमिम् अधिशेते।
६—त्वं पुस्तकं पठतु।	त्वं पुस्तकं पठ।
७—तव मम अन्तरा शिशुः।	त्वां मांम् अन्तरा शिशुः।
८—पर्वतस्य उपर्युपरि वनम्।	पर्वतम् उपर्युपरि वनम्।

(घ) शुद्ध करो :—

१—ते पश्यतु। २—यूयं हसन्तु। ३—वयं खादत। ४ युवां जलं पिबताम्। ५—तौ दुग्धं पिबतम्। ६—रामस्य उभयतः शिशवः सन्ति। ७—श्यामस्य कृष्णस्य अन्तरा गोपालः अस्ति। ८—धनस्य अन्तरेण सुखं नास्ति। ९—हा दुर्जनस्य। १०—तव प्रति रामः दयालुः अस्ति। ११—श्यामा गृहे अधिशेते। वालकः आसने अधितिष्ठति। १२—सः भूमौ अधितिष्ठतु। १३—त्वं पुस्तकं पठतु। १४—गोपालः शिलायाम् अध्यास्ते। १५—विद्यालयस्य सर्वतः तरवः सन्ति।

तृतीया विभक्ति

१—**साधकतमं करणम्**—कर्त्ता अपनी क्रिया के लिये जिस उत्कृष्ट-तम साधन की अपेक्षा करता है, वह करण कहलाता है।

२—**कर्तृ करणयोस्तृतीया**—अनुक्त कर्त्ता और करण में तृतीया होती है। क्रिया में जिस कारक के अर्थ में प्रत्यय होता है वह कारक उक्त कहा जाता है और जिस कारक के अर्थ में क्रिया में प्रत्यय नहीं होता वह कारक अनुक्त होता है। भाव वाच्य और कर्म वाच्य में क्रिया में भाव और कर्म अर्थ वाले प्रत्यय को प्रत्यय जोड़ने से भाव और कर्म तो उक्त हो जाता है, किन्तु कर्त्ता और करण अनुक्त हो जाता है।

उदाहरण—रामः वाणेन रावणम् अहन्। (राम ने रावण को वाण से मारा) यहां पर कर्त्ता 'राम' उक्त है और करण 'वाण' अनुक्त है। इस लिये 'वाण' का प्रयोग तृतीया में हुआ है।

'रामेण सुप्यते'—इस वाक्य में कर्त्ता 'राम' अनुक्त है। इसलिए वह तृतीया में प्रयुक्त हुआ है।

प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्—प्रकृति आदि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, रामः प्रकृत्या दयालुः। (राम स्वभावतः दयालु है) श्यामः सरलतया गच्छति। (श्याम सरलता पूर्वक जाता है)।

अपवर्गे तृतीया—फल प्राप्ति अर्थ में तृतीया होती है। जैसे, सः मासेन व्याकरणम् अधीतवान् (उसने मास भर में व्याकरण पढ़ लिया)।

सह युक्तेऽप्रधाने—'सह' से युक्त अप्रधान में तृतीया होती है, जैसे, रामेण सह कृष्णः आगच्छति (राम के साथ कृष्ण आता है) यहां 'आगच्छति' क्रिया का कर्त्ता 'कृष्णः' प्रधान है और 'राम' अप्रधान। अप्रधान 'राम' का प्रयोग 'सह' के योग में हुआ है, इसलिए, उसमें तृतीया हुई है।

पृथग्विनानानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्—पृथक्, विना, नाना के योग में तृतीया विकल्प से होती है। अभाव पक्ष में द्वितीया और पञ्चमी भी होती है। जैसे, रामेण, रामं, रामाद् वा विना दशरथः प्राणान् अत्यजत्। (राम के बिना दशरथ ने प्राण छोड़ दिया) अयम् अस्मात् पृथक् अस्ति (यह इससे अलग है)। नाना विद्यां जीवनम् निष्फलम् (बिना विद्या के जीवन निष्फल है)।

येनाङ्गविकारः—जिनके द्वारा अङ्ग-विकार प्रकट होता है, उसमें तृतीया होती है। जैसे, दिनेशः अक्ष्णा काणः (दिनेश आंख का काना है) सुरेशः कर्णेन बधिरः (सुरेश कान का बहरा है) महेशः पादेन खञ्जः (महेश पैर का लंगड़ा है)।

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्—तुल्य और उपमा वाचक शब्दों के योग में तृतीया या षष्ठी होती है, तुला और उपमा इन शब्दों को छोड़ कर। रामः देवदत्तस्य देवदत्तेन वा तुल्यः कुशलः अस्ति (राम देवदत्त के समान कुशल है)।

तुला और उपमा के योग में तृतीया न होकर षष्ठी ही होती है। उदाहरण—रामस्य तुला उपमा वा नास्ति (राम की सामनता नहीं है)।

हेतौ—हेतु अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। उदाहरण—पुण्येन दृष्टो हरिः (हरि पुण्य से दिखाई दिये), अध्ययनेन वसति (अध्ययन के कारण रहता है)।

व्यर्थ वाचक 'अलं' तथा 'किम्' के योग में तृतीया होती है। उदाहरण—अलं विवादेन (विवाद करने से क्या)। किम् अनेन (इससे क्या)।

इत्थंभूतलक्षणे—जिस चिह्न विशेष के द्वारा कोई लक्षण प्रकट हो तो उसमें तृतीया विभक्ति होती है। उदाहरण—अयं जटाभिस्तापसः (यह जटाओं से तपस्वी ज्ञात होता है)।

समं, साकं, सार्धं के योग में तृतीया विभक्ति होती है। उदाहरण—रामेण सार्धं समं, साकं वा सीता वनं गच्छति (राम के साथ सीता वन जाती है)।

शब्द कोष

गै = गाना। दह् = जलाना। लिख् = लिखना। पठ् = पढ़ना। तप् = तपना। वस् = वसना। काननम् = जंगल। कपि = वन्दर। तापसः = सन्यासी। सह = साथ। हरि = विष्णु। सार्धम् = साथ। रक्ष् = रक्षा करना। समम् = साथ।

अभ्यास ५

(तृतीया, लङ् लकार)

(क) उदाहरण—(१) राम ने लिखा—रामः अलिखत्। (२) तूने पढ़ा—त्वं अपठः। (३) मैं गया—अहम् अगच्छम्। (४) रामेण सह सीता वनम् अगच्छत्। (५) राज्ञा सार्धं कविः गच्छति। (६) गायकाः गायन्ति। (७) दिवाकरः किरणैः अतपत्। (८) पावकः काननम् अदहत्। (९) काननं निकषा वापी अस्ति। (१०) छात्रः अत्र अध्ययनेन वसति। (११) विद्यया मोहो नश्यति। (१२) राजा युद्धेन शत्रून् जयति। (१३) जलदाः वर्षन्ति। (१४) रामः प्रकृत्या साधुः। (१५) शिवः स्वभावतया दयालुः।

(ख) अनुवाद करो—(१) कुम्हार दण्ड से घड़ा बनाता है। (२) गायक ने गाया। (३) श्याम कन्दुक से खेला। (४) हनुमान जी ने लङ्का को जलाया। (५) राम श्याम के साथ घूमा। (६) मुनिने यहां तप किया। (७) स्वामी के साथ सेवक यहां आया। (८) चन्दन से ब्राह्मण ज्ञात होता है। (९) देवदत्त यज्ञदत्त के साथ आया। (१०) श्याम राम

के साथ खेला। (११) गोपाल और गोविन्द ने पुस्तकें पढ़ीं। (१२) श्यामा ने पत्र लिखा। (१३) राजा ने प्रजा की रक्षा की। (१४) शिष्य ने गुरु को नमस्कार किया। (१५) अध्यापक छात्रों के साथ खेले। (१६) राम के बिना श्याम नहीं खेला।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
(१) रामेण अपठत्।	रामः अपठत्।
(२) श्यामः कृष्णस्य सह लिखति।	श्यामः कृष्णेन सह लिखति।
(३) कपिना अक्रीडत्।	कपिः अक्रीडत्।
(४) रामस्य सार्धं सीता अगच्छत्।	रामेण सार्धं सीता अगच्छत्।
(५) सः अध्ययनस्य वसति।	सः अध्ययनेन वसति।
(६) धर्मस्य व्याधिः नश्यति।	धर्मेण व्याधिः नश्यति।
(७) जटाभ्यस्तापसः।	जटाभिस्तापसः।
(८) श्यामः कन्दुकम् अक्रीडत्।	श्यामः कन्दुकेन अक्रीडत्।

(घ) शुद्ध करो :—(१) तेन अपठत्। (२) त्वया अलिखत्। (३) मया अकथयम्। (४) श्यामस्य सार्धं रामः पठति। (५) कपिभिः अक्रीडन्। (६) चन्दनेभ्यः विप्रः। (७) मुनिः हरेः साकम् आश्रमम् अगच्छत्। (८) बालकः बालिकाभ्यः सार्धम् अगायन्। (९) मन्त्री राज्ञः समम् आगच्छत्। (१०) हरिहरौ तत्र अगच्छत्। (११) यूयं पुस्तकं पठथः। (१२) वयं गुरुम् अनमन्। (१३) ते आचार्यम् अनमाम। (१४) त्वं शिवेन समम् अक्रीडत्। (१५) आवाम् अगायताम्। (१६) युवाम् अलिखाव।

शब्द कोष

दृश्=देखना। प्रच्छ=पूछना। नम्=प्रणाम करना। मरीचिः=किरण। दिनकरः=सूर्य। खञ्जः=लंगड़ा। बधिरः=बहरा। काणः=काना। क्रीड्=खेलना। स्था=बैठना। पा=पीना। पाद्=पैर। चक्षुः=नेत्र। जीव्=जीना।

अभ्यास ६

(तृतीया, लोट्=आज्ञा। विधिलिङ्=चाहिए)

(क) उदाहरण—(१) उसे देखना चाहिये—सः पश्येत्। (२) तुम्हें पढ़ना चाहिये—त्वं पठेः। (३) विवाद करने से क्या लाभ—किं विवादेन। (४) श्रम करने से क्या लाभ—अलं श्रमेण। (५) वह कान का बहरा है—सः कर्णेन वधिरः अस्ति। (६) दिनेश आँख का काना है—दिनेशः अक्ष्णा काणः अस्ति। (७) शिष्य आचर्य को नमस्कार करे—शिष्यः आचार्यं नमेत्। (८) अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछे—अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छेत्। (६) छात्र विद्यालय जांय—छात्राः विद्यालयं गच्छन्तु। (१०) मैं पुस्तक पढ़ूँ—अहं पुस्तकं पठानि।

(ख) अनुवाद करो—(१) तुम विद्यालय जाओ। (२) वे खेल के मैदान में खेलें। (३) छात्र कक्षा में बैठें। (४) छात्रायें पुस्तकें पढ़ें। (५) हम लोग गाना गायें। (६) देखने से क्या लाभ। (७) सुरेश पैर का लंगड़ा है। (८) मोहन आंख का काना है। (६) रमेश कान का बहरा है। (१०) वह अध्ययन के लिये यहां रहता है। (११) वे उद्यान को देखें। (१२) तुम्हें पढ़ना चाहिये। (१३) बालकों को दूध पीना चाहिये। (१४) तुम आचार्य को प्रणाम करो (१५) ज्ञानेश रमेश के साथ विद्यालय जाये।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
(१) अध्ययनात् वसति।	अध्ययनेन वसति।
(२) अलं विवादस्य।	अलं विवादेन।
(३) कर्णस्य वधिरः।	कर्णेन वधिरः।
(४) चक्षुषः काणः।	चक्षुषा काणः।
(५) सुखात् जीवति।	सुखेन जीवति।
(६) पादस्य खञ्जः।	पादेन खञ्जः।
(७) त्वं पश्येत्।	त्वं पश्येः।
(८) वयं पश्येयुः।	वयं पश्येम।

(घ) शुद्ध करो—(१) सः पठेः। (२) तौ पठेतम्। (३) ते पठेत् (४) अहं लिखेत्। (५) आवां गच्छेताम्। (६) वयं गच्छेयुः। (७) सः पश्येयम्। (८) तौ पश्येव (६) ते पश्येम। (१०) बालकौ

गच्छन्तु। (११) शिशवः धावताम्। (१२) सः प्रकृतेः दयालुः। (१३) वृक्षः पुष्पेभ्यः शोभते। (१४) दिवाकरः मरीचिभ्यः तपेत्। (१५) आचार्यः छात्राणां प्रश्नं पृच्छेत्।

चतुर्थी विभक्ति

कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्—कर्त्ता जिसको दान करता है। उसे सम्प्रदान कहते हैं। 'चतुर्थी सम्प्रदाने'—सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। उदाहरण—सः विप्राय गां ददाति (वह विप्र को गाय देता है) यहां क्रिया है 'ददाति'। यह विप्र के लिए की जाती है, इस लिए विप्र में चतुर्थी हुई है।

क्रियया यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्—जिसके लिए क्रिया की जाती है, उसे भी सम्प्रदान कहते हैं। जैसे, पत्ये शेते (पति के लिए सोती है)।

रुच्यर्थानां प्रीयमाणः—रुच्यर्थक धातु के योग में रुचि रखने वाले को सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। जैसे, हरये रोचते भक्तिः (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)।

धारेरुत्तमर्णः—प्रेरणार्थक धृ धातु के योग में कर्ज देने वाले को सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। जैसे, रामः श्यामाय शतं धारयति (राम श्याम से सौ रुपये कर्ज लेता है)।

क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः—क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, तथा असूय धातुओं के योग में जिसके प्रति ये क्रियायें की जाती हैं, उन्हें सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। जैसे, गुरुः शिष्याय क्रुध्यति (गुरु शिष्य पर क्रोध करता है)। दुर्जनाः सर्वेभ्यो द्रुह्यन्ति (दुर्जन सभी से द्रोह करते हैं)। दरिद्रः धनिने ईर्ष्यति (दरिद्र धनी से ईर्ष्या करता है)। दुष्टः साधुभ्यः असूयति (दुष्ट साधुओं की निन्दा करता है)।

क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म—उपसर्ग से युक्त क्रुध् और द्रुह् के योग में सम्प्रदान न होकर कर्म होता है। जैसे, सीता रावणम् अभिक्रुध्यति। सुरेशः दिनेशं संद्रुह्यति।

प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्त्ता—प्रति और आ पूर्वक श्रु धातु के योग में कृतपूर्व प्रार्थना क्रिया के कर्त्ता को सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। उदाहरण यजमानः ब्राह्मणाय गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा (यजमान ब्राह्मण को गाय देकर उसकी प्रार्थना सुनता है)।

परिक्रयणेसम्प्रदानमन्यतरस्याम्—वेतन देकर किसी से काम लेने को परिक्रयण कहते हैं। परिक्रयण के करण को सम्प्रदान होता है। उदाहरण—शतेन शताय वा परिक्रीतः (सो रुपये पर रखा गया)।

तुमुर्थाच्च भाव वचनात्—तुमुन् अर्थ प्रकट करने के लिये भाव वाचक पद में चतुर्थी होती है। उदाहरण—यागाय याति (यज्ञ के लिये जाता है) 'यष्टुम् याति' इस वाक्य में भी यज्ञ करने के लिये जाता है'—यह अर्थ प्रकट होता है। इस वाक्य में तुमुन् के द्वारा और पहले वाक्य में भाव वाचक के द्वारा उपर्युक्त एक ही अर्थ प्रकट होता है।

स्पृहेरीप्सितः—स्पृह् 'धातु के योग में जो अभीष्ट होता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है। उदाहरण—बालकः फलेभ्यः स्पृहयति (बालक फल को चाहता है)।

तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या—जिस प्रयोजन के लिये क्रिया की जाती है उसमें चतुर्थी होती है। उदाहरण—मुनिः मुक्तये हरिं भजति (मुनि मुक्ति के लिये हरि को भजता है)।

क्लृपिसम्पद्यमाने च—यदि कोई क्रिया किसी फल की प्राप्ति के लिये की जाती है तो उस फल में चतुर्थी होती है। उदाहरण—भक्तिः ज्ञानाय कल्पते (भक्ति ज्ञान के लिये होती है)।

हित योगे च—हित के योग में चतुर्थी होती है। उदाहरण—ब्राह्मणाय हितम् (ब्राह्मण के हित के लिये)।

क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः—तुमुन् प्रत्ययान्त का प्रयोग जब परोक्ष में होता है तो उसके कर्म में चतुर्थी होती है। उदाहरण—फलेभ्यो याति (फलों के लिये जाता है)। पहला वाक्या था—'फलानि आहर्तुं याति (फल लाने के लिये जाता है) यहां तुमुन् प्रत्ययान्त

धातु है 'आहर्तुं' इसका कर्म है 'फलानि'। इसलिये इसके स्थान में चतुर्थी होकर फलेभ्यो याति ऐसा वाक्य बना।

नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च—नमः, स्वति, स्वाहा स्वधा, अलं तथा वषट् के योग में चतुर्थी होती है। उदाहरण—गुरवे नमः (गुरु को नमस्कार है)। स्वस्ति तुभ्यम् (तुम्हारा कल्याण हो)। प्रजायै स्वस्ति (प्रजाका कल्याण हो)। देवाय स्वाहा (देव को यह आहुति हो)। पितृभ्यः स्वधा (पतिरों के लिये यह हवि है)। इन्द्राय वषट् (इन्द्र के लिये यह हवि है)। दैत्येभ्यो हरिः अलम् (हरि दैत्यों के लिये काफी हैं)।

शब्द-कोष

नमः = नमस्कार। स्वस्ति = आशीर्वचन। स्वाहा = आहुति देना। स्वधा = पितरों को पिण्ड देना। अलम् = पर्याप्त। वषट् = आहुति देना। दा – देना। शिशुः = बच्चा। विप्रः = ब्राह्मण। धाव् = दौड़ना। आगम् = आना। उपाध्यायः = गुरु।

अभ्यास ७

चतुर्थी (के लिए) लट् (वर्तमान) लोट् (आज्ञा)।

(क) उदाहरण :—१. वह ब्राह्मण को गाय देता है—सः विप्राय गां ददाति। २. बच्चे को आशीर्वाद—शिशवे स्वस्ति। ३. आचार्य को नमस्कार है—आचार्याय नमः। ४. इस लड़की को पुस्तक दो—अस्यै बालिकायै पुस्तकं देहि। ५. विष्णु दैत्यों के लिए पर्याप्त हैं—विष्णुः दैत्येभ्यः अलम्। ६. एक दौड़ता है दूसरा देखता हैं—एकः धावति अन्यः पश्यति। ७. बच्चे खेलें—शिशवः क्रीडन्तु। ८. किस बालक को पुस्तक देते हो—कस्मै बालकाय पुस्तकं ददासि। ९. इन फलों को मुझे दो—इमानि फलानि मह्यं देहि। १०. वह भोजन के लिए आता है—सः भोजनाय आगच्छति। ११. इन्द्र को अर्पित है—इन्द्राय वषट्। १२. पितरों को पिण्ड समर्पित है—पितृभ्यः स्वधाः। १३. अग्नि को समर्पित है—अग्नये स्वाहा।

(ख) अनुवाद करो—१. इस बच्चे को फल दो। २. उस ब्राह्मण को फूल दो। ३. उस छात्र को पुस्तक दो। ४. वह दरिद्र को धन देता है। उस बन्दर को फल दो। ६. जिस मनुष्य को भोजन देते हो उसे जल

भी दो ७. उपाध्याय को नमस्कार। ८. तुम्हारे लिये मैं पर्याप्त हूँ। ६. पुत्र को आशीर्वाद। १०. वह आचार्य के पास विद्यमान है। १४. विष्णु के लिये स्वाहा। १२. भिक्षुकों को भोजन दो। १३. जो छात्र पाठशाला में जाता हैं उसको अध्यापक पढ़ाता है। १४. मनोरंजन के लिये इस उद्यान को देखो। १५. इस लड़की को कक्षा में ले जाओ। १६. छात्र गुरु से प्रश्न पूंछे।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
(१) तं मनुष्यं फलं देहि।	तस्मै मनुष्याय फलं देहि।
(२) इमं छात्रं पुस्तकं देहि।	अस्मै छात्राय पुस्तकं देहि।
(३) पितृन् नमः।	पितृभ्यो नमः।
(४) दुर्जनस्य अहम् अलम्।	दुर्जनाय अहम् अलम्।
(५) कस्मै बालकाय प्रश्नं पृच्छसि।	कं बालकं प्रश्नं पृच्छसि।

(घ) शुद्ध करो :— १. सः ब्राह्मणं धनं ददाति। २. गुरुं नमः। ३. शिशुं स्वस्ति। ४. अग्निं स्वाहा। ५. कं छात्रं पुस्तकं ददासि। ६. सर्वान् छात्रान् मिष्टान्नं वितर। ७. त्वं गच्छतु। ८. ते धावत। ६. वयं पृच्छन्तु। १०. इमान् भिक्षुकान् भोजनं देहि। ११. यां छात्रां पुस्तकं ददासि तां लेखनीम् अपि देहि। १२. रामं मिष्टान्नं पक्वान्नं च देहि। १३. वयं पठनाय विद्यालयं गच्छन्तु। १४. छात्राः गृहं न गच्छाम। १५. तं भिक्षुकं धनं वस्त्रं च देहि। १६. इन्द्रं वषट्।

शब्द कोष

रुच्=अच्छा लगना। निवेदन=कहना। असूय=निन्दा करना। स्पृह्=इच्छा करना। कल्प=होना। रुद्=रोना। मुक्ति=मोक्ष। भज्=भजना। शतं धारयति=कर्ज लेता है। प्रतिशृणोति=प्रार्थना स्वीकार करता है।

अभ्यास ८

चतुर्थी—लट् (वर्तमान काल), लङ् (भूतकाल), लृट् (भविष्य काल)।

(क) उदाहरण—१. हरि को भक्ति अच्छी लगती है—हरये रोचते भक्तिः। २. मन्त्री राजा से कहता है—मन्त्री राज्ञे निवेदयति। शिक्षक छात्र

पर क्रोध करता है—शिक्षकः छात्राय क्रुद्ध्यति। ४. असज्जन लोग सज्जनो से द्रोह और ईर्ष्या करते हैं—असज्जनाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति ईर्ष्यन्ति च। ५. निन्दक सदा दूसरों की निन्दा करता है—निन्दकाः सदा 'अन्येभ्यः असूयन्ति'। ६. सन्यासी लोग धन की स्पृहा नहीं करते—सन्यासिनः धनाय न स्पृहयन्ति। ७. भक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है—भक्तिः ज्ञानाय कल्पते। ८. बच्चा मोदक के लिये रोता है—शिशुः मोदकाय रोदिति। ९. ये फल तुम्हारे लिये हैं—इमानि फलानि तुभ्यम् सन्ति। १०. वह भोजन के लिये जाता हैं—सः भोजनाय गच्छति। ११. मुनि मुक्ति के लिये हरि को भजता है—मुनिः मुक्तये हरिं भजति। १२. वह फलों के लिये जाता है। सः फलेभ्यः याति।

(ख) अनुवाद करोः—१. इस छात्र को यह पुस्तक अच्छी लगती है। २. उस बालक को मिष्टान्न अच्छा लगता है। ३. वह किसी पर भी क्रोध नहीं करेगा। ४. उस राजा से शत्रु द्रोह करते हैं। ५. दरिद्र लोग धनियों से ईर्ष्या करते हैं। ६. मन्त्री राजा से निवेदन करेगा। ७. द्वार पाल ने राजा से कहा। ८. श्याम ने अतिथि से भोजन के लिये निवेदन किया। ९. वे फलों के लिये वन में जायेगें। १० हम लोग छात्र की स्पृहा नहीं करते ११. तुम्हारा हित हो। १२. मैंने देवदत्त से सौ रुपये का ऋण लिया है। १३. श्यामा को यह उद्यान अच्छा लगता है। १४. बच्चा मिठाई के लिये रोता है। १५. बच्चे खेलने के लिये खेल के मैदान में जायगें।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
(१) इमं शिशुं मिष्टान्नं रोचते।	अस्मै शिशवे मिष्टान्नं रोचते।
(२) सः मां क्रुद्ध्यति।	सः मह्यं क्रुद्ध्यति।
(३) दुर्जनः सज्जनान् द्रुह्यति।	दुर्जनः सज्जनेभ्यः द्रुह्यति।
(४) मन्त्री राजानं न्यवेदयत्।	मन्त्री राज्ञे न्यवेदयत।
(५) गुरुः शिष्यम् उपदिशति।	गुरुः शिष्याय उपदिशति।

(घ) शुद्ध करो :—१. सः रामाय 'अभिक्रुद्ध्यति। २. गुरुजनः तस्मै मनुष्याय अभिद्रुह्यति। (३) अध्यापकः शिष्यं क्रुद्ध्यति। ४. बालकं मिष्टान्नं रोचते। ५. त्वां पुस्तकं न रोचते। ६. सः फलानि स्पृहयति। ७. रामः त्वां न ईर्ष्यति। ८. द्वारपालः नरेशम् अकथयत्। ९. शिशुः मोदकं रोदिति। १०. धनं सुखस्य कल्पते। ११. ब्राह्मणस्य हितं भविष्यति। १२.

रामः श्यामं शतं धारयति। १३. यजमान ब्राह्मणं गां प्रतिश्रृणोति। १४. सुरेशः दिनेशाय सन्द्रुह्यति। १५. सीता रावणाय अभिक्रुद्ध्यति।

पञ्चमी विभक्ति

ध्रुवमपायेऽपादानम्—दो वस्तुओं के अलग होने पर जो ध्रुव (स्थिर) रहता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है।

अपादाने पञ्चमी—अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।

उदाहरणः—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं) छात्रः विद्यालयाद् आगच्छति (छात्र विद्यालय से आता है)।

जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्—जुगुप्सा (घृणा) विराम (रुकना) प्रमाद (आलस्य करना) आदि अर्थों के वाचक शब्दों के योग में पञ्चमी होती है। उदाहरण—सज्जनः पापाद् जुगुप्सते (अच्छा मनुष्य पाप से घृणा करता है) पापाद् विरम (पाप से दूर रहो) साधुः धर्मात् न प्रमाद्यति (साधु धर्म से आलस्य नहीं करता)।

भीत्रार्थानां भयहेतुः—भयार्थक तथा रक्षार्थक शब्दों के योग में पञ्चमी होती हैं। उदाहरणः—सः चौराद् बिभेति (वह चोर से डरता है) त्राहि मां दुर्जनात् (मुझे दुर्जन से बचाओ)।

पराजेरसोढः—परा पूर्वक जि धातु के योग में जो असह्य होता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है। उदाहरण—छात्रः अध्ययनात् पराजयते। (छात्र अध्ययन से जी चुराता है)।

वारणार्थानामीप्सितः—जिससे किसी वस्तु या व्यक्ति को दूर किया जाता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है। उदाहरणः—कृषकः यवेभ्यो गां वारयति (किसान जौ से गाय को हटाता है)। सत्सङ्गतिः जनान् पापात् निवारयति (अच्छी सङ्गति लोगों को पाप से हटाती है)।

अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति—जिससे अपने को छिपाने का प्रयत्न किया जाता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है।

उदाहरणः—मातुर्निलीयते कृष्णः (कृष्ण माता से छिपते हैं)। यहाँ 'माता' से छिपने का कार्य हो रहा है, इसलिये 'मातृ' का प्रयोग पञ्चमी में हुआ है।

आख्यातोपयोगे—जिससे नियमपूर्वक अध्ययन किया जाता है, उसकी अपादान संज्ञा होती है। उदाहरण:—शिष्यः उपाध्यायाद् अधीते (शिष्य उपाध्याय से पढ़ता है)।

जनिकर्तुः प्रकृतिः—जन् धातु के कर्त्ता के मूल कारण को अपादान कहते हैं। उदाहरण:—भक्तेर्ज्ञानं जायते (भक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है)।

भुवः प्रभवश्च—उत्पन्न वस्तु के उत्पत्ति स्थान की अपादान संज्ञा होती है। उदाहरण—हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति (हिमालय से गङ्गा निकलती है)।

ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च—त्वा या ल्यप् (य) प्रत्ययान्त धातु के लोप होने पर क्रिया के कर्म और अधिकरण में पञ्चमी होती है। उदाहरण—सः आसनात्प्रेक्षते (वह आसन पर बैठकर देखता है)।

इस वाक्य का पूर्वरूप इस प्रकार था:—आसने उपविश्य प्रेक्षते (आसन पर बैठकर देखता है) उप पूर्वक विश् धातु में ल्यप् (य) प्रत्यय लगाने से उपविश्य बना है। इसका अधिकरण है 'आसन'। यहाँ ल्यप् प्रत्ययान्त धातु 'उपविश्य' का लोप करके, उसके अधिकरण 'आसने' में पञ्चमी करने से "आसनात् प्रेक्षते" उपर्युक्त वाक्य बनाया गया है। इसी प्रकार 'श्वशुराज्जिह्रेति' (श्वसुरं वीक्ष्य जिह्रेति=श्वशुर को देखकर लजाती है) वाक्य में 'वीक्ष्य' का लोप कर उसके कर्म 'श्वशुर' में पञ्चमी का प्रयोग किया गया है।

यतश्चाध्वकाल निर्माणं तत्र पञ्चमी—जिससे किसी देश या काल की दूरी प्रकट की जाती है, उसमें पञ्चमी होती है।

तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यौ—देशवाचक और काल वाचक शब्द का प्रयोग प्रथमा और सप्तमी में होता है। उदाहरण:—मम नगरात् सागरः योजनद्वयम् योजनद्वये वा। (मेरे नगर से समुद्र दो योजन पर है)। उपर्युक्त वाक्य में 'नगर' से स्थान की दूरी प्रकट होती हैं, इसलिए 'नगर' में पञ्चमी होकर 'नगरात्' बना। 'योजद द्वयम्, योजन द्वये' ये स्थान वाचक शब्द हैं। इसलिए, इनमें प्रथमा या सप्तमी दोनों में से किसी एक का प्रयोग हो सकता है।

कालात् सप्तमी च वक्तव्या—जिन काल वाचक शब्दों से काल की दूरी प्रकट की जाती हैं, उसमें सप्तमी होती है।

उदाहरण :—कार्तिक्याः आग्रहायणी मासे—कार्तकी पूर्णिमा से मार्ग शीर्ष की पूर्णिमा एक मास पर होती है।

पञ्चमी विभक्ते—ईयसुन् तथा तरप् प्रत्ययान्त के योग में पञ्चमी होती है। उदाहरण :—जन्म भूमिः स्वर्गादपि गरीयसी (जन्म-भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है) यहाँ "गरीयसी" ईयसुन् प्रत्ययान्त शब्द है। इसके योग में 'स्वर्ग' शब्द है। अतः उसमें पञ्चमी हुई है।

अन्यादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते—अन्य, आरात्, इतर, ऋते, अञ्चूत्तरपद, आच्, आहि से युक्त दिग् वाचक शब्द के योग में पञ्चमी होती है। उदाहरण :—अयम् अस्माद् अन्यः, इतरः वा (यह इससे अन्य है)। आराद् वनात् सरोवरम् अस्ति (वन के निकट सरोवर है)। ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः (ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती)। माघात् पूर्व पौषः (माघ से पहले पौष होता है)। विद्यालयात् प्राक् प्रत्यक् वा उद्यानम् अस्ति (विद्यालय से पहले उद्यान है)। ग्रामाद् दक्षिणाहि जलाशयः (गावं से दक्षिण जलाशय है)। विद्यालयात् दक्षिणाहि वृक्षाः सन्ति (विद्यालय से दक्षिण की ओर वृक्ष हैं)।

बहिः अनन्तरं, ऊर्ध्वं, परं के योग में पञ्चमी होती है। उदाहरण :—नगराद् बहिः जलाशयः (नगर से बाहर तालाब है)। रामाद् अनन्तरं कृष्णः अस्ति (राम के बाद कृष्ण है)। सत्यात् परं नान्यो धर्मः (सत्य से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं है)।

प्रतिनिधि प्रतिदाने च यस्मात्—प्रतिनिधि तथा प्रतिदान (बदले में देना) इन अर्थों में प्रति के योग में पञ्चमी होती है।

उदाहरण :—

कृष्णः अर्जुनात् प्रति (कृष्ण अर्जुन के प्रतिनिधि हैं) सः तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् (वह तिलों के बदले उड़द देता है)।

शब्द-कोष

पत्=गिरना। भी=डरना। ऋते=बिना। उपरि=ऊपर। इदानीम्=इस समय। त्रै=रक्षा करना। इतर=दूसरा। जलाशयः=तालाब। उत्तराहि=उत्तर की ओर। दक्षिणाहि=दक्षिण की ओर।

अभ्यास ६

(लट्, लङ्, लोट्)

(क) उदाहरण :—१—वह विद्यालय से आता है—सः विद्यालयात् आगच्छति। २—वृक्ष से पत्ते गिरते हैं—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। ३—वृक्ष से फल गिरे—वृक्षात् फलानि अपतन्। ४—छात्र अध्यापक से पढ़ता है—छात्रः अध्यापकाद् अधीते। ५—श्याम सांप से डरता है—श्यामः सर्पाद् बिभेति। ६—यह वस्तु उससे भिन्न है—इदं वस्तु तस्माद् भिन्नम्। ७—कृष्ण से अन्य बालक पढ़ें—कृष्णाद् अन्यः बालकः पठतु। ८—ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती—ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः। ९—इस समय वृक्ष से फूल गिरते हैं—इदानीं वृक्षात् कुसुमानि पतन्ति। १०—वह पर्वत के ऊपर बैठता है—सः पर्वतस्य उपरि तिष्ठति। ११—सेनापति शत्रुओं से बचाता है—सेनापतिः शत्रुभ्यः त्रायते। १२—इससे अन्य फल लाओ=अस्माद् इतरं फलम् आनय।

(ख) अनुवाद करो : १—वह प्रयाग से वाराणसी गया। २—उस पेड़ से यह फल गिरा ३—बच्चा मकान से गिरा। ४ श्याम जहां से आया, वहां चला गया। ५—सरला अपने घर से यहाँ आयी। ६—छात्र शिक्षक से पढ़े। ७—मैं हिंसक जन्तुओं से डरता हूँ। ८—सेनापति राजा को शत्रुओं से बचाता है। ९—श्याम दुष्टों से डरता है। १०—मैं किसी से भी नहीं डरता हूँ। ११—सन्यासी के लिए जङ्गल से फल लाओ। १२—हे भगवन् मुझे दुःख से बचाओ। १३—परिश्रम के बिना धन नहीं मिलता। १४—वन के पास जलाशय है। १५—नगर के उत्तर की ओर विद्यालय, दक्षिण की ओर उद्यान, पूर्व की ओर पुस्तकालय और पश्चिम की ओर खेल का मैदान है। १६—मैं बचपन से गाता हूँ।

शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
(१) अनेन वृक्षेण पत्राणि पतन्ति।	अस्माद् वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
(२) अहं चौरेण बिभेमि।	अहं चौराद् बिभेमि।
(३) सः गुरुणा अधीते।	सः गुरोः अधीते।
(४) इदं वस्तु तस्य अन्यम्।	इदं वस्तु तस्माद् अन्यम्।
(५) नगरस्य दक्षिणाहि वनम्।	नगराद् दक्षिणाहि वनम्।

(६) अहं शैशवेन पठामि।	अहं शैशवात् प्रभृति; पठामि।
(७) नगरस्य पूर्वं जलाशयः।	नगराद् पूर्वं जलाशयः।
(८) विद्यालयस्य प्राग् उद्यानम्।	विद्यालयात् प्राग् उद्यानम्।

(घ) शुद्ध करो :—

१—अयं प्रासादात् शिशुः अपतत्। २—इदं स्थानात् तत स्थानं गच्छ। ३—सः चौरेण बिभेति। ४—गोपालः अध्यापकेन पठति। ५—राजा शत्रुभिः मां रक्षतु। ६—नगरस्य प्राक् उपवनम् अस्ति। ७—श्यामः विद्यालयेन गृहं आयाति। ८—गोपालः इदं विद्यालयाद् गृहं गच्छतु। ९—अहं शैशवस्य प्रभृति गायामि। १०—त्वं ग्रामस्य उत्तराहि गच्छ। ११—ऋते ज्ञानस्य मुक्तिः नास्ति। १२—पर्वतम् उपरि वृक्षाः सन्ति। पर्वतस्य उपर्युपरि वृक्षाः सन्ति। १३—इदानीं त्वं केन स्थानेन आगच्छसि।

शब्द-कोष

प्रतियच्छति = बदले में देता है। जुगुप्सते = घृणा करता है। विरमति = रुकता है। वारयति = हटाता है। मृदुतर = कोमल। प्रभवति = निकलती है। निलीयते = छिपता है। न रोचते = अच्छी नहीं लगती। पराजयते = भागता है, जी चुराता है। गरीयसी = बढ़कर। ऊर्ध्वं = ऊपर। प्रति = प्रतिनिधि। जिह्रेति = लजाता है।

अभ्यास १०

लट्, लङ्, लृट्, लोट् (वर्तमान, भूत, भविष्यत्, आज्ञा)

(क) उदाहरण—१. मुनि पाप से घृणा करता है :—मुनिः पापाद् जुगुप्सते। २. वह अधर्म से दूर रहता है—सः अधर्माद् विरमति। ३. किसान् खेत से गाय को हटाता है—कृषकः क्षेत्रेभ्यो गां वारयति। ४. गोविन्द इन चावलों के बदले में यव देता है—गोविन्दः एभ्यः तण्डुलेभ्यः यवान् प्रतियच्छति। ५. इस वस्तु से वह वस्तु दृढ़तर है—अस्मात् वस्तुनः तद् वस्तु दृढ़तरम् अस्ति। ६. सीता के विना राम वन नहीं जायगे—सीतायाः विना रामो वनं न गमिष्यति। ७. वह गुरु के पास से आता है—सः गुरोः निकटाद् आगच्छति। ८. राम श्याम से पृथक् बैठता है—रामः श्यामात् पृथक् तिष्ठति। ९. अच्छी संगति पाप से दूर

करती है—सत्सङ्गतिः पापात् निवारयति। १०. मुझे पाप से दूर करो—मां पापात् निवारय। ११. इन फलों के बदले मुझे पुस्तकें दो—एभ्यः फलेभ्यः मह्यं पुस्तकानि प्रतियच्छ। १२. उस बालक से यह बालक कोमलतर है—तस्मात् बालकाद् अदुयं बालकः मृतरः अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—श्याम अध्ययन से आलस्य करता है। २—गोपाल अधर्म बन्द करता है। ३—तुम किसी से घृणा मत करो। ४—धर्म मनुष्यों को पाप से हटाता है। ५—धर्म से अधर्म का निवारण होता है। ६—किसान खेत से पशुओं को हटाता है। ७—वह आचार्य से वेद पढ़ता है। ८—गाँव के बाहर जलाशय है। ९—श्याम के अनन्तर राम पढ़ेगा। १०—पढ़ने के बाद लड़के घर जाय। ११—नदियां पर्वत से निकलती हैं। १२—मैं काशी से प्रयाग आया। १३—श्रीकृष्ण यशोदा से छिपता है। १४—काम से क्रोध उत्पन्न होता है। १५—मैं तुम्हें फूलों के बदले फल दूँगा। १६—राम श्याम से पटुतर है। १७—इससे दूसरी वस्तु मुझे अच्छी नहीं लगती है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—श्यामः पापेन जुगुप्सते।	श्यामः पापाद् जुगुप्सते।
२—रामः धर्मेण न विरमति।	रामः धर्मात् न विरमति।
३—त्वं तिलान् माषान् प्रतियच्छ।	त्वं तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छ।
४—रामः श्यामस्य पृथक् निवसति।	रामः श्यामात् पृथक् निवसति।
५—गोपालः गुरुम् अधीते।	गोपालः गुरोः अधीते।
६—कृष्णस्य विना रामः न क्रीडति।	कृष्णाद् विना रामः न क्रीडति।
७—कृषकः यवानां गां वारयति।	कृषकः यवेभ्यो गां वारयति।
८—त्वम् आचार्यं वेदान् पठ।	त्वम् आचार्याद् वेदान् पठ।

(घ) शुद्ध करो :—

१—छात्रः अध्ययनं पराजयते। २—दुर्जनेन मां त्राहि। ३—क्षेत्रेषु कृषकः पशून् वारयतु। ४—कृष्णः मातरं निलीयते। ५—सः आसनं प्रेक्षते। ६—सा श्वशुरं जिह्रेति। ७—मम नगरेण सागरः योजन द्वयम्। ८—जन्मभूमिः स्वर्गेणापि गरीयसी। ९—आराद् वनस्य जलाशयः अस्ति।

१०—विद्यालयस्य दक्षिणाहि उद्यानम् अस्ति। ११—नगरस्य बहिः उपवनम् अस्ति। १२—रामस्य अनन्तरं श्यामः तिष्ठति। १३—पर्वतस्य ऊर्ध्वं वृक्षाः सन्ति। १४—कृष्णः अर्जुनस्य प्रति।

षष्ठी विभक्ति

षष्ठी शेषे—जो स्व स्वामिभाव सम्बन्ध, कारक तथा प्रातिपदिकार्थ से भिन्न होता है, उसमें षष्ठी होती है। दो पदार्थों का सम्बन्ध जिसके द्वारा प्रकट होता है, उसे षष्ठी कहते हैं। उदाहरण—कृष्णस्य गृहम् (कृष्ण का घर) नद्याः जलम् (नदी का जल) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)।

षष्ठी हेतुप्रयोगे—हेतु के योग में षष्ठी होती है। उदाहरण—अध्ययनस्य हेतोः वसति (पढ़ने के हेतु रहता है)।

सर्वनाम्नस्तृतीया च—हेतु के योग में सर्वनाम का प्रयोग होने से हेतु तथा सर्वनाम दोनों में तृतीया, पञ्चमी तथा षष्ठी होती है। उदाहरण—कस्य हेतोः, कस्मात् हेतोः, केन हेतुना वा अत्र वसति (किस लिये यहाँ रहता है)।

निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्—निमित्तार्थक शब्दों के योग में सभी विभक्तियां होती हैं। जैसे, किं निमित्तं, केन कारणेन, कस्मै प्रयोजनाय, कस्मात् कारणात्, कस्य हेतोः, कस्मिन् निमित्ते वा वसति (किस लिए रहता है)।

अधीगर्थदयेशां कर्मणि—स्मरण, दय्, ईश् अर्थों में प्रयुक्त धातुओं के योग में षष्ठी होती है। उदाहरण—मातुः स्मरति (माता का स्मरण करता है)।

षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन—अतसुच् प्रत्ययान्त (उत्तरतः दक्षिणतः) शब्द तथा उपरि, उपरिष्टात्, अधः, अधस्तात्, पुरः, पुरस्तात्, पश्चात्, अग्रे आदि शब्दों के योग में षष्ठी होती है। उदाहरण—नगरस्य उत्तरतः (नगर के उत्तर) विद्यालयस्य दक्षिणतः (विद्यालय के दक्षिण) पर्वतस्य उपरि (पर्वत के ऊपर)।

यतश्च निर्धारणम्—जिससे किसी का निर्धारण किया जाता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी दोनों होती है। जैसे, कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)।

कर्तृकर्मणोः कृतिः—जिनके अन्त में तृच्, क्तिन, अच्, ल्युट्, घञ् आदि कृत् प्रत्यय होते हैं, उनके कर्त्ता और कर्म में षष्ठी होती है। उदाहरण—शिवस्य कृतिः (शिव की कृति)। शिशोः रोदनम् (बच्चे का रोना)।

अन्तः, अन्तरे, मध्ये, समक्षम् तथा कृते के योग में षष्ठी होती है। उदाहरण :—काननस्य अन्तः अन्तरे वा—(जंगल के भीतर) शिशूनां मध्ये (बच्चों के बीच में) अध्यापकस्य समक्षम् (अध्यापक के सामने)।

दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्—दूर और अन्तिक (निकट) वाचक पदों के योग में षष्ठी होती है। उदाहरण :—गृहस्य, गृहाद् वा दूरं, निकटं, अन्तिकं, समीपं वा (घर के पास)।

तुल्यार्थक शब्दों के योग में तृतीया तथा षष्ठी विभक्ति होती है। उदाहरण:—रामस्य, रामेण वा सदृशः, रामस्य तुल्यो वा (राम के तुल्य)।

चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः—आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ तथा हित आदि आशीर्वादात्मक शब्दों के योग में चतुर्थी अथवा षष्ठी होती है। उदाहरण :—देवदत्तस्य देवदत्ताय वा भद्रम् कुशलम्, सुखम् वा भूयात् (देवदत्त का कल्याण हो)।

शब्द कोष

शुच्=शोक करना। जीवति=जीता है। भज्=सेवा करना। पुरस्तात्=सामने। उपरिष्टात्=ऊपर। अधस्तात्=नीचे। उत्तरतः=उत्तर की ओर। स्मृ=स्मरण करना।

अभ्यास ११

(क) उदाहरण:—१. यह राम का घर है—इदं रामस्य गृहम् अस्ति। २. मेरी पुस्तक देखो—मम पुस्तकं पश्य। ३. वह पढ़ने के लिए रहता है—स अध्ययनस्य हेतोः वसति। ४. बालक किस लिए शोक करता है?—बालकः कस्य हेतोः शोचति। ५. कृष्ण माता का स्मरण करता है—कृष्णः

मातुः स्मरति। ६. विद्यालय के सामने उद्यान है—विद्यालयस्य पुरस्तात् उद्यानम् अस्ति। ७. मेरे घर के आगे जलाशय है—मम गृहस्य अग्रे जलाशयः अस्ति। ८. छात्रों में श्याम श्रेष्ठ है—छात्राणां श्यामः श्रेष्ठः अस्ति। ९. ऋतुओं में वसन्त श्रेष्ठ है—ऋतूनां कुसुमाकरः श्रेष्ठः अस्ति। १०. भक्त लोग भगवान् को भजते हैं—भक्ताः भगवन्तं भजन्ति। ११. पुस्तकालय के बाद पाठशाला है—पुस्तकालयस्य पश्चात् पाठशाला अस्ति। १२. असाधु लोग साधुओं की निन्दा करते हैं—असाधवः साधून् निन्दन्ति। १३—राम श्याम से बात करता है—रामः श्यामम् आलपति। १४—नाविक नदी को पार करते हैं—नाविकाः नदीं तरन्ति। १५—यह मेरे मित्र का घर है—इदं मम मित्रस्य गृहम्।

(ख) अनुवाद करो :—१—यह सीता की पुस्तक है। २—यह मेरे मित्र का घर है। ३—तुम यहाँ किसलिए रहते हो? ४—मेरे उद्यान में लतायें हैं। ५—यह समुद्र का पानी है। ६—गोपाल माता का स्मरण करता है। ७—विद्यालय के दक्षिण उद्यान हैं। ८—मेरे घर के उत्तर जलाशय है। ९—वृक्ष के ऊपर पत्तियां हैं। १०—फूलों में कमल श्रेष्ठ है। ११—तुम किस लिए शोक करते हो। १२—मेरे घर के सामने राम का घर है। १३—गोपाल गोविन्द से बात करता है। १४—मुनि लोग ईश्वर का ध्यान करते हैं। १५—पापी साधुओं की निन्दा करते हैं।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः ईश्वरस्य ध्यायति।	सः ईश्वरं ध्यायति।
२—रामः मातरं स्मरति।	रामः मातुः स्मरति।
३—ते साधूनां निन्दन्ति।	ते साधून् निन्दन्ति।
४—भक्तः रामस्य भजति।	भक्तः रामं भजति।
५—अहम् अध्ययनाय हेतोः निवासमि।	अहम् अध्ययनस्य हेतोः निवसामि।

(ख) शुद्ध करो :—

१—अयं नद्याः जलम् अस्ति। २—अस्मान् वृक्षान् इमे पुष्पाणि सन्ति। ३—अयं कस्य वस्तु अस्ति ४—इदं कस्य ग्रन्थः अस्ति। ५—त्वं कस्मै हेतोः शोचसि। ६—पर्वतात् उपरिष्टात् वनानि सन्ति। ७—सः अध्यापकस्य निन्दति ८—स्त्रीणां सरला श्रेष्ठः अस्ति। ९—कवीनां कालि-

दास: श्रेष्ठम् अस्ति। १०—सर्वेषां वस्तूनां इदं श्रेष्ठः अस्ति। ११—रामात् अग्रे श्यामः अस्ति। १२—पर्वताद् अधस्तात् इमानि वृक्षाः सन्ति १३—इदं नदी अस्ति।

शब्द-कोष

रुद्=रोना। श्रु=सुनना। अन्तः, अन्तरे=भीतर। उपविश्=बैठना। समक्ष= सामने। उत्तरतः=उत्तर की ओर। दक्षिणतः=दक्षिण की ओर।

अभ्यास १२

लट् (वर्तमान काल) लङ् (भूतकाल) आशीर्लिङ् (आशीर्वाद)

(क) उदाहरण :—१. उसने बालक का रोना सुना—सः बालकस्य रोदनम् अशृणोत्। २. वह ईश्वर का दर्शन चाहता है—सः ईश्वरस्य दर्शनम् इच्छति। ३. हरि-कथा का श्रवण अत्यन्त आवश्यक है—राम कथायाः श्रवणम् अत्यन्तम् आवश्यकम्। ४. मैं राम के लिए श्रम करता हूँ—अहं रामस्य कृते श्रमं करोमि। ५. राजा महल के भीतर रहता है—राजा प्रासादस्य अन्तः अन्तरे वा निवसति। ६. शिष्य गुरु के सामने बैठता है—शिष्यः गुरोः समक्षम् उपविशति ७. गोपाल नगर से दूर चला गया—गोपालः नगरस्य दूराद् अगच्छत्। ८. पुत्र पिता के समीप पढ़ता है—पुत्रः पितुः समीपे, पार्श्वे वा पठति। ९. पुत्र का कुशल हो—पुत्रस्य कुशलं भूयात्। १०. राम श्याम के समान है—रामः श्यामस्य तुल्यः अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—१—इस बच्चे का रोना मुझे अच्छा नहीं लगता। २—इस छात्र का यहाँ रहना उचित नहीं है। ३—राम के आगमन से अयोध्यावासी प्रसन्न हो गये। ४—उस छात्र का पढ़ना देखो। ५—तुम्हारे अध्यापक का स्वाभाव कैसा है। ६—मैंने श्याम के लिए श्रम किया। ७—तुम पिता के सामने जाओ। ८—राजा सोने के लिए महल में जाता है। ९—नगर के निकट से मेरे लिए फल लाओ। १०—केशव कृष्ण के समान है। ११—इस छात्र का कुशल हो। १२—ये फल उस वृक्ष के हैं। १३—वह उपाध्याय के सामने जाता है। १४—मेरे घर के उत्तर की ओर विद्यालय है। १५—महा कवि कालिदास की कृति मनोहर है। १६—मेरा विद्यालय घर से दूर है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—अहं रामाय कृते गच्छामि ।	अहं रामस्य कृते गच्छामि ।
२—त्वं शिशुं रोदनं पश्य ।	त्वं शिशोः रोदनं पश्य ।
३—पुत्रः कुशलं भूयात् ।	पुत्रस्य कुशलं भूयात् ।
४—ग्रामाद् दूरात् जलाशयः ।	ग्रामस्य दूरात् जलाशयः ।
५—अध्ययनाय कृते गुरुं गच्छ ।	अध्ययनस्य कृते गुरुं गच्छ ।
६—पिता पुत्रस्य पालयति ।	पिता पुत्रं पालयति ।

(घ) शुद्ध करो :—

१—अस्याः बालकस्य हसनं पश्य। २—अस्य बालिकायाः पठनं सुन्दरम् अस्ति। ३—त्वं मातरं स्मर। ४—राजा प्रजानां पालयति। ५—तस्मै कृते अहं वाराणसीं गमिष्यामि। ६—अयं बालकः तस्मात् बालकात् सदृशः। ७—पर्वतात् समीपात् वनम् अस्ति। ८—गोपालः भद्रं भूयात्। ९—अध्ययनाय गुरुं समक्षं गच्छ। १०—रामः कृष्णं समक्षं तिष्ठति। ११—राजा गृहं मध्ये निवसति। १२—सरला गृहं अन्तः अन्तरे वा तिष्ठति। १३—इमे पुस्तके रामस्य सन्ति। १४—इमानि ग्रंथाः सीतायाः सन्ति। १५—इदं अस्य कन्यायाः गृहम् अस्ति। १६—अयं तस्य बालकस्य पुस्तकम् अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

आधारोऽधिकरणम्—क्रिया का आधार अधिकरण कारक कहलाता है।

सप्तम्यधिकरणे च—अधिकरण कारक में सप्तमी का प्रयोग होता है। उदाहरण :—सः गृहे निवसति (वह घर में रहता है)।

विषय (बारे) अर्थ में सप्तमी होती है। उदाहरण—रामस्य विद्यायाम् अनुरागः अस्ति (राम का विद्या में अनुराग है)।

कालवाचक शब्दों के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण :—रामः रात्रौ पठति (राम रात में पढ़ता है) श्यामः प्रातः काले ईश्वरं भजति (श्याम प्रातः काल ईश्वर का भजन करता है)।

अनुराग, आदर तथा स्नेह अर्थों के वाचक शब्दों के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण—सीतायाः स्नेहः रामे आसीत् (सीता का राम में स्नेह था)। प्रजायाम् राज्ञः अनुरागः अस्ति (राजा का प्रजा में अनुराग है)। सभायां विदुषामादरो भवति (सभा में विद्वानों का आदर होता है)।

साध्वसाधु प्रयोगे च—साधु और असाधु इन शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। उदाहरण :—साधुः रामः पितरि (राम पिता के लिए अच्छे हैं)। अयं शिष्यः असाधुः गुरौ (यह शिष्य गुरू के लिए बुरा है)।

यतश्च निर्धारणम्—जिस समूह से किसी एक का निर्धारण किया जाता है, उसमें सप्तमी और षष्ठी दोनों होती है। उदाहरण :—छात्रेषु छात्राणां वा गोविन्दः श्रेष्ठः (छात्रों में गोविन्द श्रेष्ठ है)।

व्यवहारार्थक तथा आचारार्थक शब्दों के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण :—गुरुजनेषु सद्व्यवहारः कर्त्तव्यः (गुरु जनों के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए)। पितरि तस्य आचरणं प्रशंसनीयम् अस्ति (पिता के साथ उसका आचरण प्रशंसनीय है)।

कार्य कारण सम्बन्ध प्रकट करने में कार्य वाचक शब्दों में सप्तमी होती है। उदाहरण :—स्वास्थ्यवर्धने पयः कारणम् (स्वास्थ्यवर्धन में दूध कारण है)।

युज् धातु के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण :—कण्व ऋषिः शकुन्तलाम् आश्रमधर्मे अयुङ्क्त (कण्व ऋषि ने शकुन्तला को आश्रमधर्म में नियुक्त किया)।

अस्, मुच् क्षिप् तथा णिजन्त पत् आदि धातुओं में सप्तमी होती है। उदाहरण :—कानने रामः मृगेषु बाणान् मुमोच (जंगल में राम ने हिरणों पर बाण छोड़ा)। रामः भरते सकलं राज्य-भारं न्यस्तवान् (राम ने भरत पर सकल राज्य-भार छोड़ दिया) अस्मिन् आश्रममृगे बाणः न सन्निपात्यः (इस आश्रममृग पर बाण नहीं छोड़ा जाना चाहिए)।

प्रवीण, निपुण, कुशल, पर, तत्पर, व्यग्र, व्यापृत, आसक्त तथा शौण्ड के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण : देवदत्तः कृषि कर्मणि व्यापृतो, व्यग्रः तत्परो वा (देवदत्त खेती के काम मे लगा है)। श्यामः

क्रीडायां शौण्डः, प्रवीणः, निपुणः कुशलो वा (श्याम खेल में चतुर है)।

यस्य च भावेन भावलक्षणम्—जहाँ एक ही वाक्य में दो क्रियायें होती हैं, वहाँ प्रथम क्रिया बोधक शब्द तथा उसके कर्त्ता में सप्तमी होती है। उदाहरण—भानौ अस्तं गते मुनिः सन्ध्यां कर्तुमारभत (सूर्य के अस्त होने पर मुनि ने सन्ध्या करना आरम्भ किया)। रामे गच्छति श्यामः अपठत्। (राम के जाने पर श्याम ने पढ़ा)।

आस्था, निष्ठा, श्रद्धा, तथा विश्वास आदि शब्दों के योग में सप्तमी होती है। उदाहरण :—अस्य शिष्यस्य गुरौ आस्था, श्रद्धा, विश्वासश्च। (शिष्य का गुरु में आस्था श्रद्धा और विश्वास है)।

शब्द-कोष

प्रासाद—महल। वृत्—होना। भ्रम्—घूमना। शी—सोना। दुह्—दुहना। क्रीड्—खेलना। क्षेम्—खेत। शुभ्—शोभित होना। स्वप्—सोना।

अभ्यास १३

(क) उदाहरण :—१. वृक्ष पर पक्षियां हैं—वृक्षे पक्षिणः सन्ति। २. प्रासादे राजा अस्ति—महल में राजा है। ३. वन में जन्तु हैं—वने जन्तवः सन्ति। ४. विद्यालय में छात्र हैं—विद्यालये छात्राः वर्तन्ते। ५. शिष्य अपने आसन पर है—शिष्यः स्वासने वर्तते। ६. जानवर जंगल में घूमते हैं—जन्तवः कानने भ्रमन्ति। ७. वह धन में आसक्त है—सः धने आसक्तः। ८. मुनि लोग प्रातः काल सन्ध्या करते हैं—मुनयः प्रातःकाले सन्ध्यां कुर्वन्ति। ९. गोप सायंकाल दूध दुहता है—गोपः सायंकाले पयः दोग्धि। १०. तुम्हारे में बहुत गुण हैं—त्वयि बहवो गुणाः वर्तन्ते।

(ख) अनुवाद करो :—

१—राजा महल में है। २—शिशु घर में है। ३—तुम दिन में क्यों सोते हो ? ४—मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ। ५—वह सायंकाल खेलता है। ६—उसकी विद्या में आसक्ति है। ७—कृषक मार्ग में खेतों को देखता है। ८—ज्ञानी मोक्ष में इच्छा रखते हैं। ९—उत्तम छात्र विद्या में अनुराग

रखते हैं। १०—विद्वान् सभा में शोभा पाते हैं। ११—मोहन घर में अधिक पढ़ता है। १२—ऋतुओं में वसन्त श्रेष्ठ है। १३—वह दोपहर में सोता है। १४—वह वृद्धावस्था में भी परिश्रम करता है। १५—राम में दृढ़ता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार:—

अशुद्ध	शुद्ध
१—स: दिनं शेते।	स: दिने शेते
२—राम: प्रात:कालं पठति।	राम: प्रात:काले पठति।
३—मुनि: सन्ध्याकालं सन्ध्यां करोति।	मुनि: सन्ध्याकाले सन्ध्यां करोति
४—मोहन: व्यवहारस्य कुशल:।	मोहन: व्यवहारे कुशल:।
५—श्याम: गृहं वर्तते।	श्याम: गृहे वर्तते।
६—केशव: क्रीडाया: निपुण:।	केशव: क्रीडायां निपुण:।
७—छात्रा: राम: श्रेष्ठ:।	छात्रेषु राम: श्रेष्ठ:।
८—तव सौन्दर्यं वर्तते।	त्वयि सौन्दर्यं वर्तते।

(घ) शुद्ध करो :—

१—स: मध्याह्नं क्रीडति (२) राम: रात्रिं जागर्ति (३) स: मार्गात् पक्षिणं पश्यति (४) रामस्य वियां अनुराग: अस्ति (५) केशव: गायनस्य निपुण: (६) स: विद्यालयम् अस्ति (७) बुद्धिमन्त: सभां शोभन्ते (८) स: शैशवम् अधीतवान् (९) जन्तव: काननं भ्रमन्ति (१०) अस्यां विद्यालये बहव: छात्रा: सन्ति (११) तस्मिन् पाठशालायां बहव: कन्या: पठन्ति (१२) स: प्रतिदिने क्रीडति (१३) तस्य ईश्वरस्य विश्वासो नास्ति (१४) त्वं मध्याह्नं किं करोषि ? (१५) बालक: आसनं वर्तते।

शब्द कोष

आखेटक:—शिकारी। वाण:—बाण। अस्—फेंकना। संलग्न:—लगा हुआ। विश्वस्—विश्वास करना। हस्—हंसना शिशु:—बच्चा। शी—सोना।

अभ्यास १४

उदाहरण : (१) शिकारी हिरण पर बाण छोड़ता है—आखेटक: मृगे शरान् अस्यति। (२) वह पढ़ने में लगा है—स: पठने संलग्न: अस्ति। (३) वह अध्यापक के पद पर नियुक्त हो गया—स: अध्यापकपदे

नियुक्तः आसीत्। (४) पिता पुत्र से स्नेह करता है—पिता पुत्रे स्निह्यति। (५) शिष्य में गुरू का स्नेह है—गुरोः स्नेहः शिष्ये वर्तते। (६) अध्ययन में छात्र की अभिलाषा हो—अध्ययने छात्रस्य अभिलाषः वर्तताम्। (७) वह ईश्वर में विश्वास करता है—सः ईश्वरे विश्वसिति। (८) गुरू में शिष्य की श्रद्धा है—गुरौ शिष्यस्य श्रद्धा वर्तते। (९) अध्ययन करने पर मैं खेला—अध्ययने कृते सति अहम् अक्रीडम्। (१०) दिनेश के गाने पर रमेश हँस पड़ा। दिनेशे गायति रमेशः अहसत्।

(ख) अनुवाद करो —

(१) राम श्याम से स्नेह करता है। (२) देवदत्त धर्म में विश्वास करता है। (३) विद्वान समाज में सम्मान पाता है। (४) शिष्य गुरू में श्रद्धा करे। (५) लोगों की धर्म में अनुरक्ति हो। (६) सूर्य के अस्त होने होने पर सन्ध्या करो। (७) माता ने शिशु के सो जाने पप घर का काम किया। (८) इस समय मैं खेलने में लगा हूँ। (९) राम सीता पर अनुरक्त थे। (१०) छात्रों को खेल में कुशल होना चाहिये। (११) तुम मृगों पर बाण मत चलाओ। (१२) केशव माता के लिए साधु है, किन्तु पिता के लिए असाधु है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
(१) भानोः अस्तं गते रामः क्रीडति।	भानौ अस्तं गते रामः क्रीडति।
(२) आखेटकः मृगान् बाणान् अक्षिपत्।	आखेटकः मृगेषु बाणान् अक्षिपत्।
(३) रामस्य गते सति श्यामः अपठत्।	रामे गते सति श्यामः अपठत्।
(४) रामस्य भोजने कृते श्यामः अखादत्।	रामेण भोजने कृते सति श्यामः अखादत्।

(घ) शुद्ध करो :—

(१) सः पठनस्य संलग्नः अस्ति। (२) त्वं विद्याम् आसक्तः असि। (३) केशवः संगीतस्य कुशलः अस्ति। (४) गुरुः शिष्यस्य विश्वसिति। धर्मस्य तव श्रद्धा वर्तते (६) ईश्वरस्य तव विश्वासः अस्ति। (७) भूपतिः प्रजायाः विश्वसिति। (८) गुरुजनानां श्रद्धा कर्त्तव्या। (९) धर्मस्य तव अभिलाषः नास्ति। (१०) सः स्वकर्त्तव्य पालनेन तत्परः (११) श्यामः गुरुं विश्वसेत्। (१२) गोपालस्य भोजने कृते अहं विद्यालयम् अगच्छम्। (१३) दिवाकरस्य उदिते श्यामः पठितुम् आरभत् (१४) सुरेशस्य गच्छति महेशः अशेत्। (१५) गोविन्दः मात्रे साधुः पित्रे असाधुश्च।

सर्वनाम प्रकरण

इदमस्तु सन्निकृष्टे समीपतरवर्ति चेत्तदोरूपम् ।
अदसस्तु विप्रकृष्टे तदातिपरोक्षे विजानीयात् ॥

अर्थात् इदम् शब्द का प्रयोग निकट वस्तु या व्यक्ति के लिए, 'एतद्' का प्रयोग अत्यन्त निकट वस्तु या व्यक्ति के लिए, अदस् का प्रयोग प्रत्यक्ष (सामने) वस्तु या व्यक्ति के लिए तथा तद् शब्द का प्रयोग परोक्ष (जो सामने न हो) व्यक्ति या वस्तु के लिए करना चाहिये।

उदाहरण—एषः मम पुत्रः (यह मेरा पुत्र है)। अयं मम भ्रातुः सुतः (यह मेरे भाई का लड़का है)। असौ गच्छति (वह जाता है)। सः अपठत् (उसने पढ़ा)।

इदम् और एतद् के आदेश

इदम् और एतद् को द्वितीया विभक्ति के तीनों वचनों में क्रमशः एनम् एनौ एनान्, तृतीया के एक वचन में एनेन, षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में एनयोः, नपुंसक लिंग के प्र० और द्वि० के तीनों वचनों में क्रमशः एनत् एने एनानि आदेश होते हैं।

जब इदम् और एतद् के रूपों का प्रयोग वाक्य में एक बार हो जाता है और फिर उनके प्रयोग की आवश्यता पड़ती है, तो उनका प्रयोग न करके उनके स्थान में होने वाले आदेशों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण—अनेन पुस्तकम् अधीतम्, एनं प्रश्नं पृच्छ (इसने पुस्तक पढ़ लिया है, इससे प्रश्न पूछो)। अनयोः प्रभूतं धनम्, एनयोः महान्, आदरो भवति (इन दोनों के पास बहुत सा धन है, इनका महान् आदर होता है)।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अनेन' तथा अनयोः के प्रयोग के बाद पुनः अनेन अनयोः का प्रयोग न करके उनके स्थान में होने वाले आदेश 'एनेन' एनयोः का ही प्रयोग किया गया है।

युष्मद् और अस्मद् के रूप-लिङ्ग भेद होने पर भी बदलते नहीं हैं। पुरुष और स्त्री दोनों के लिए 'अहम्' और 'त्वम्' का प्रयोग किया जाता है।

युष्मद् और अस्मद् के आदेश

३—'युष्मद्' शब्द की द्वितीया विभक्ति के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन में त्वाम् युवाम् युष्मान् के स्थान पर क्रमशः त्वा वाम् वः आदेश होते हैं। चतुर्थी विभक्ति के एक वचन, द्विवचन और बहुवचन में तुभ्यम् युवाभ्याम् युष्मभ्यम् के स्थान पर क्रमशः ते वाम् वः आदेश होते हैं।

षष्ठी विभक्ति के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन में तव युवयोः युष्माकम् के स्थान में क्रमशः ते वाम् वः आदेश होते हैं।

'अस्मद्' शब्द के द्वितोया चतुर्थी तथा षष्ठी विभक्ति के एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन में माम् आवाम् अस्मान् के स्थान पर क्रमशः मा नौ नः, मह्यम् आवाभ्याम् अस्मभ्यम् के स्थान पर क्रमशः मे नौ नः, तथा मम आवयोः अस्माकम् के स्थान में क्रमशः मे नौ नः आदेश होते हैं।

उदाहरण—

इह श्रीशः त्वा अवतु (इस संसार में भगवान् विष्णु तुम्हें पाले)। मापि (मुझे भी)। सः ते मेऽपि शर्म (वह तेरे लिए और मेरे लिए कल्याण करे)। सः हरिः ते मेऽपि स्वामी (वह हरि तुम्हारा और मेरा भी स्वामी है)। सः विभुः वां नौ अपि पातु (वह विभु तुम दोनों की हम दोनों की भी रक्षा करे)। ईशः वां नौ सुखं ददातु (ईश्वर तुम दोनों को हम दोनों को सुख देवे)। हरिः नौ अपि पतिः (हरि तुम दोनों का, हम दोनों का भी स्वामी है)। सः हरिः वः नः अव्यात् (वह हरि तुम सब की, हम सब की रक्षा करे)। सः वः नः शिवं दद्यात् (वह तुम सब को, हम सब को कल्याण देवे। अत्र सः हरिः वः नः सेव्यः (इस संसार में वह भगवान् तुम सब का, हम सब का सेव्य है)।

उपर्युक्त आदेशों के नियम

१—एक वाक्ये युष्मदस्मदादेशा वक्तव्याः—एक ही वाक्य में युष्मद् और अस्मद् के आदेशों का प्रयोग होना चाहिये।

एक तिङ् वाक्यम्—जिस वाक्य में केवल एक तिङन्त पद रहता है, उसे एक वाक्य कहते हैं। अर्थात् जिस वाक्य में केवल एक क्रिया-पद होता है, उसे एक वाक्य कहते हैं। उदाहरण, 'रामः पुस्तकं पठति,' इस वाक्य में केवल एक क्रिया-पद "पठति" है। इसलिए यह एक वाक्य हुआ।

'सः पठति लिखति च' यह एक वाक्य नहीं है क्योंकि इससे 'पठति' और 'लिखति' दो 'तिङन्त-पद' (क्रिया-पद) हैं।

'शालीनां ते ओदनं दास्यामि'—(तुम्हें चावलों का भात दूंगा)। यह एक वाक्य है। इसीलिए यहां 'तुभ्यम्' के स्थान में 'ते' आदेश का प्रयोग किया गया है। 'ओदनं पच, तव भविष्यति' (भात पकाओ, तुम्हारा हो जायगा)। यह एक वाक्य नहीं है। इसलिए 'तव' के स्थान में 'तव' का ही प्रयोग हुआ है।

एते वांनावादयो ऽन्वादेशे वा वक्तव्या :—वां और नौ आदेश अन्वादेश में नित्य होते हैं और अनन्वादेश में विकल्प से होते हैं। किसी व्यक्ति या वस्तु के विषय में एक बार कह चुकने के बाद फिर कहने को अन्वादेश कहते हैं, उससे भिन्न को अनन्वादेश कहते हैं। अनन्वादेश का उदाहरण—'धाता ते भक्तोऽस्ति'। इस वाक्य में विकल्प से 'ते' आदेश हुआ है। 'ते' के अभाव में 'तव' होगा—'धाता तव भक्तो ऽस्ति'।

अन्वादेश का उदाहरण :—'तस्मै ते नमः' यह अन्वादेश है, क्योंकि 'धाता ते भक्तोऽस्ति' वाक्य में इसके विषय में बात की जा चुकी है। अब 'तस्मै ते नमः' में उसकी पुनरावृत्ति की गई है। यहां नित्य ही ते' आदेश होगा।

निम्नाङ्कित दशाओं में 'युष्मद्' 'अस्मद्' आदेशों का प्रयोग नहीं किया जाता :—

(क) सम्बोधन से परे—सखे, तव पुस्तकं पठिष्यामि (हे मित्र, तुम्हारी पुस्तक पढ़ूंगा)। यहाँ 'तव' शब्द सम्बोधन से परे है इसलिए 'तव' के स्थान में 'ते' आदेश का प्रयोग नहीं हुआ।

(ख) एव, च, वा, हा इन अव्ययों के साथ—इदं गृहं ममैव अस्ति (यह मेरा ही घर है)। यहाँ पर 'मम' का प्रयोग 'एव' अव्यय के योग में हुआ है। अतः यहां 'मम' के स्थान में 'मे' आदेश नहीं हुआ।

हा तव मन्दभाग्यम् (हाय तुम्हारा मन्द भाग्य है)। यहाँ 'हा' अव्यय के योग में 'तव' का प्रयोग हुआ है। अतः इसके स्थान में 'ते' आदेश नहीं हुआ। रामः त्वां मां च पश्यति। यहां 'च' अव्यय का योग होने से क्रमशः 'त्वा' 'मा' आदेश नहीं होंगे।

(ग) वाक्य के आरम्भ में—मम पुस्तकं पठ (मेरी पुस्तक पढ़ो)। वाक्यारम्भ के कारण यहाँ 'मम' के स्थान में 'मे' आदेश नहीं होगा।

(घ) आदर प्रकट करने में 'युष्मद' (तुम) शब्द के स्थान में 'भवत्' (आप) का प्रयोग होता है। किन्तु 'भवत्' शब्द के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। उदाहरण, युष्मद्'—त्वं गच्छसि। 'भवत्'—भवान् गच्छति।

(घ) अधिक आदर व्यक्त करने के लिए 'भवत्' शब्द के पहले 'अत्र' और तत्र अव्यय पद जोड़े जाते हैं। प्रत्यक्ष (सामने) सम्मानित व्यक्ति के लिए अत्रभवान् तथा परोक्ष सम्मानित व्यक्ति के लिए तत्रभवान् का प्रयोग होता हैं। उदाहरण—प्रत्यक्ष (सामने)—अत्रभवान् देवदत्तो तिष्ठति (पूज्य देवदत्त बैठते हैं) तत्रभवान् विश्वामित्रोऽगच्छत् (पूज्य विश्वामित्र गये)।

अभ्यास १५

(इदम्, एतद्, युष्मद्, अस्मद्)

(क) उदाहरण :—१ यह मेरा सम्बन्धी है—एषः मम सम्बन्धी अस्ति। २—यह मेरा शिष्य है—अयं मम शिष्यः अस्ति। ३ वह मेरे मित्र का लड़का है—असौ मम मित्रस्य पुत्रः अस्ति। ४ उसने उपवन को देखा—सः उपवनम् अपश्यत्। ५ इन दोनोंका व्यवहार प्रशंसनीय है, इन दोनों का सर्वत्र आदर होता है—अनयोः व्यवहारः प्रशंसनीयः अस्ति, एनयोः सर्वत्र आदरः भवति। ६ मैं इस शिशु को देखता हूँ, तुम भी इसे देखो—अहम् एतं शिशुं पश्यामि, त्वमपि एनं पश्य। ७. यह तुम्हारे और मेरे भी मान्य हैं—एषः ते मे ऽपि मान्यः। ८ गुरु तुम दोनो और हम दोनों को उपदेश दें—गुरुः वां नौ उपदिशतु। ९ विद्यालय में गुरु जी उपस्थित हैं—विद्यालये अत्रभवान् गुरुः उपस्थितः। १० श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट में रहने लगे—तत्रभवान् श्रीरामः सीतया लक्ष्मणेन च सह चित्रकूटे वस्तुमारभत।

(ख) अनुवाद करो :—

१—यह नदी को पार करता है। २—वह किसी पर क्रोध नहीं करता। ३—इस बालक को देखो, इससे मार्ग पूछो। ४—वह मेरा भाई

है और यह मेरा लड़का है। ५—ये दोनों श्याम की बहनें हैं, ये तीनों राम के भाई हैं। ६—यह मनुष्य मूर्ख है किन्तु वह मनुष्य विद्वान् है। ७—ईश्वर हमारा और तुम्हारा कल्याण करे। ८—मैं इस मार्ग से जाऊँगा इस मार्ग के द्वारा मैं शीघ्र विद्यालय पहुँच जाऊँगा ९—गुरु हमें और तुम्हें आदेश देता है। १०—अध्यापक हम दोनों को और तुम दोनों को पढ़ायें। ११—ईश्वर तुम दोनों का और हम लोगों का कल्याण करे। १२—गुरु जी आज विद्यालय नहीं जायंगे। १३—श्री कृष्ण गोपियों के साथ विहार करने लगे।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—एनं पश्य।	इमं पश्य।
२—सः मम पुत्रः।	एषः मम पुत्रः।
३—एनयोः पुस्तकम्।	अनयोः पुस्तकम्।
४—एनेन पठितम्, पश्य एतम्।	अनेन पठितम्, पश्य एनम्।
५—श्रीशः त्वाम् अवतु।	श्रीशः त्वा अवतु।

(घ) शुद्ध करो :—

१. सखे ते पुस्तकम् अस्ति। २. धाता तव भक्तोऽस्ति, तस्मै तुभ्यं नमः। ३. ओदनं पच ते भविष्यति। ४. अत्र हरिः युष्माकम् अस्माकम् सेव्यः। ५. एनयोः प्रभूतं धनम्, अनयोः महान् आदरो भवति। ६. एषः तत्र अस्ति। सः मम पार्श्वे तिष्ठति।

विशेषण प्रकरण

विशेष्यविशेषण वाचकपदयोरसतिविशेषानुशासने समान वचनकत्व नियम:—जहां कोई विशेष अनुशासन न हो वहां विशेष्य और विशेषण वाचक पदों के वचन समान होते हैं। दूसरा नियम इस प्रकार है :—

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।
तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेषणस्यापि ॥

अर्थ—जिस लिङ्ग, वचन और विभक्ति का विशेष्य होता है, उसी लिङ्ग, वचन और विभक्ति का विशेषण भी होता है।

सङ्केतवाचक विशेषण—

जो शब्द विशेष्य का संकेत प्रकट करते हैं, उसे संङ्केतवाचक विशेषण कहते हैं। संङ्केत वाचक विशेषण के अन्तर्गत सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वाक्य में जब सर्वनाम शब्द स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त होते हैं, तो वे सर्वनाम के रूप में बने रहते हैं। किन्तु जब वे किसी संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त होते हैं, तो उस संज्ञा के प्रति सङ्केत करने के कारण वे विशेषण का कार्य करने लगते हैं।

सङ्केत वाचक विशेषण को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। तद्, इदम्, यद्, किम्, अदस्, एतद् आदि सर्वनाम शब्दों के समस्त रूप यदि किसी विशेष्य के साथ प्रयुक्त होते हैं तो वे सङ्केत वाचक विशेषण या सार्वनामिक विशेषण होते हैं। सङ्केत वाचक विशेषण के उदाहरण सभी विभक्तियों में इस प्रकार हैं :—

पुल्लिङ्ग विशेषण और विशेष्य

प्रथमा विभक्ति—सः बालकः—वह बालक। तौ बालकौ—वे दो बालक। ते बालकाः—वे सब बालक।

द्वितीया विभक्ति—तं बालकम्—उस बालक को। तौ बालकौ—उन दो बालकों को। तान् बालकान्—उन सब बालकों को।

तृतीया विभक्ति—तेन बालकेन—उस बालक के द्वारा। ताभ्यां बालकाभ्याम्—उन दो बालकों के द्वारा। तैः बालकैः—उन सब बालकों के द्वारा।

चतुर्थी विभक्ति—तस्मै बालकाय—उस बालक के लिए। ताभ्यां बालकाभ्याम्—उन दो बालकों के लिए। तेभ्यः बालकेभ्यः—उन सब बालकों के लिए।

पंचमी विभक्ति—तस्मात् बालकात्—उस बालक से। ताभ्यां बालकाभ्याम्, उन दो बालकों से। तेभ्यः बालकेभ्यः—उन सब बालकों से।

षष्ठी विभक्ति—तस्य बालकस्य—उस बालक का। तयोः बालकयोः—उन दो बालकों का। तेषां बालकानाम्—उन सब बालकों का।

सप्तमी विभक्ति—तस्मिन् बालके—उस बालक में। तयोः बालकयोः—उन दो बालकों में। तेषु बालकेषु—उन सब बालकों में।

स्त्रीलिङ्ग विशेषण और विशेष्य

प्रथमा विभक्ति—सा बालिका—वह लड़की। ते बालिके—वे दो लड़कियाँ। ताः बालिकाः—वे सब लड़कियाँ।

द्वितीया विभक्ति—ताम् बालिकाम्—उस लड़की को। ते बालिके—उन दो लड़कियों को। ताः बालिकाः—उन सब लड़कियों को।

तृतीया विभक्ति—तया बालिकया—उस लड़की के द्वारा। ताभ्यां बालिकाभ्याम्—उन दो लड़कियों के द्वारा। ताभिः बालिकाभिः—उन सब लड़कियों के द्वारा।

चतुर्थी विभक्ति—तस्यै बालिकायै—उस लड़की के लिए। ताभ्यां बालिकाभ्याम्—उन दो लड़कियों के लिए। ताभ्यः बालिकाभ्यः—उन सब लड़कियों के लिए।

पंचमी विभक्ति—तस्याः बालिकायाः—उस लड़की से। ताभ्यां बालिकाभ्यां—उन दो लड़कियों से। ताभ्यः बालिकाभ्यः—उन सब लड़कियों से।

षष्ठी विभक्ति—तस्याः बालिकायाः—उस लड़की का। तयोः बालिकयोः—उन दो लड़कियों का। तासाम् बालिकानाम्—उन सब बालिकाओं का।

सप्तमी विभक्ति—तस्यां बालिकायाम्—उस लड़की में। तयोः बालिकयोः—उन दो लड़कियों में। तासु बालिकासु—उन सब लड़कियों में।

दो सर्वनाम शब्दों का एक साथ प्रयोग करने से वे परस्पर विशेषण और विशेष्य होते हैं :—सोऽयम् अस्ति—वह यह है। सोऽहम् अस्मि—वह मैं हूँ। एषोऽहम् अस्मि—यह मैं हूँ। तत् त्वम् असि—वह तुम हो।

अभ्यास १६

(क) उदाहरण :—१. वह किसकी पुस्तक है?—इदं कस्य पुस्तकम् अस्ति। २. ये दो पुस्तकें सरला की हैं—इमे पुस्तके सरलायाः स्तः ३. ये सब पुस्तकें राम की हैं—इमानि पुस्तकानि रामस्य सन्ति। ४. वहां कौन लड़का है?—तत्र कः बालकः अस्ति। ५. श्याम उन फलों को खाता है—श्यामः तानि फलानि खादति। ६. इस कक्षा में लड़कियाँ पढ़ती हैं—अस्यां कक्षायां बालिकाः पठन्ति। ७. यह बालक हाथ से जल छूता है—अयं बालकः हस्ताभ्यां जलं स्पृशति। ८. ये लड़के, वे लड़कियां तथा तुम्हारी पुस्तकें वहाँ हैं—इमे बालकाः, ताः बालिकाः तव पुस्तकानि च तत्र सन्ति। ९. इन वृक्षों और इन लताओं से वन शोभा देता है—एभिः वृक्षैः आभिः लताभिश्च वनं शोभते। १०. वे पुस्तकें किन लड़कों और लड़कियों की है?—तानि पुस्तकानि केषां बालकानां कासां बालिकानां च सन्ति।

(ख) अनुवाद करो :—१. तुम किसकी पुस्तक पढ़ते हो? २. यह श्यामा और यह राम हैं। ३. हम लोग तुम्हारे घर आयेंगे। ४. इस नदी का यह पवित्र जल देखो। ५. छात्र इन फलों को खायें। ६. वहां पुरुषों के साथ स्त्रियां खेलती हैं। ७. सभी बालकों तथा सभी बालिकाओं को मिष्टान्न दो। ८. इन गद्यांशों में से किसी एक का अर्थ लिखो। ९. सभी स्त्रियों को पति की सेवा करनी चाहिये। १०. इन विद्वान् पुरुषों और इन विदुषी स्त्रियों को चार पुस्तकें दो। ११. विद्यालय में चार बालक, तीन बालिकायें और तीन पुस्तकें हैं।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

शुद्ध	अशुद्ध
१. इमे स्त्रियः सन्ति।	इमाः स्त्रियः सन्ति।
२. इमाः पुरुषाः सन्ति।	इमे पुरुषाः सन्ति।
३. इमं पुस्तकं पठ।	इदं पुस्तकं पठ।
४. इदं वृक्षः अस्ति।	अयं वृक्षोऽस्ति।
५. अस्यै बालकाय/पुस्तकं देहि।	अस्मै बालकाय पुस्तकं देहि।

६. असमै कन्यायै फलं देहि । — अस्यै कन्यायै फलं देहि ।

७. का मनुष्यः कः बालिका को वस्तु च तत्र वर्तन्ते । — को मनुष्यः का बालिका किम् वस्तु च तत्र वर्तन्ते ।

८. एते पुष्पाणि तानि वृक्षाः ते लताः शोभन्ते । — एतानि पुष्पाणि ते वृक्षाः ताः लताः शोभन्ते ।

(घ) शुद्ध करो :—१. इमाः पुरुषाः गच्छन्ति । २. इमे बालिकाः पठन्ति । ३. इमे फलानि पश्य । ४. अस्यै मनुष्याय पुस्तकान् देहि । ५. अयं लता अस्ति । ६. पश्य तानि वृक्षान् । ७. अस्मिन् लतायां पुष्पाणि नास्ति । ८. तस्यां विद्यालये मनोहरः उद्यानम् अस्ति । ९. अस्मिन् पाठशालायाम् पठ । १०. असमै कन्यायै पुस्तकान् देहि । ११. अस्यां उद्याने वृक्षाणि, पुष्पाः, फलाः सन्ति । १२. त्वं कस्मिन् पाठशालायां पठसि । १३. श्यामः तानि बालकानि पश्यति । १४. रामः तस्मै बालिकायै पुस्तकं दास्यति ।

गुण वाचक विशेषण

जिससे किसी संज्ञा और सर्वनाम का गुण प्रकट होता है, उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं । जैसे, श्वेतः शङ्खः, श्वेता नारी, श्वेतं पुष्पम् । इसी प्रकार श्वेततरः (उससे श्वेत) श्वेत तमः (सब से श्वेत) इत्यादि गुण वाचक शब्द होते हैं । स्त्री लिङ्ग में श्वेततरा, श्वेततमा, पुल्लिङ्ग में श्वेततरः श्वेत-तमः, नपुंसक लिङ्ग में श्वेततरम्, श्वेततमम् इत्यादि रूप होंगे ।

तरप् और तमप् के अतिरिक्त गुण वाचक शब्दों के अन्त में ईयस् और इष्ठ प्रत्यय लगाने से गुण का उत्कर्ष और अपकर्ष प्रकट होता है। जैसे, लघु—लघुतरः, लघीयान् (उससे लघु) । लघुतमः, लघिष्ठः (सब से लघु) । दीर्घ—दीर्घतरः द्राघीयान् (उससे बड़ा) । दीर्घतमः, द्राघिष्ठः (सबसे बड़ा) ।

गुणवाचक शब्द

उत्कृष्ट तथा अपकृष्ट विशेषण

पु०	स्त्री०	नपुं०	पु०	स्त्री०	नपुं०
सुन्दरः	सुन्दरी	सुन्दरम्	मनोहरः	मनोहरा	मनोहरम्
मधुरः	मधुरा	मधुरम्	अम्लः	अम्ला	अम्लम्
कटुः	कटूवी	कटु	तिक्तः	तिक्ता	तिक्तम्

पु०	स्त्री०	नपुं०	पु०	स्त्री०	नपुं०
महान्	महती	महत्	लघुः	लघ्वी	लघु
रक्तः	रक्ता	रक्तम्	पीतः	पीता	पीतम्
विशालः	विशाला	विशालम्	हरितः	हरिता	हरितम्
शीतलः	शीतला	शीतलम्	उष्णः	उष्णा	उष्णम्
श्वेतः	श्वेता	श्वेतम्	कृष्णः	कृष्णा	कृष्णम्
साधुः	साध्वी	साधुः	शोभनः	शोभना	शोभनम्

उत्कृष्टतर तथा अपकृष्टतर विशेषण

पटुतरः,	पटीयान् ।	स्थिरतरः,	स्थेयान् ।
प्रियतरः,	प्रेयान् ।	महत्तरः,	महीयान् ।
गुरुतरः,	गरीयान् ।	मृदुतरः,	म्रदीयान् ।
लघुतरः,	लघीयान् ।	उरुतरः,	वरीयान् ।
अल्पतरः,	अल्पीयान् ।	दूरतरः,	द्रवीयान् ।
बहुतरः,	भूयान् ।	कृशतरः,	क्रशीयान् ।
दीर्घतरः,	द्राघीयान् ।	दृढतरः,	द्रढीयान् ।
स्थूलतरः,	स्थवीयान् ।	क्षुद्रतरः,	क्षोदीयान् ।

उत्कृष्टतम तथा अपकृष्टतम विशेषण

लघुतमः,	लघिष्ठः ।	मृदुतमः,	म्रदिष्ठः ।
अल्पतमः,	अल्पिष्ठः ।	प्रियतमः,	प्रेष्ठः ।
दीर्घतमः,	द्राघिष्ठः ।	दूरतमः,	दविष्ठः ।
बहुतमः,	भूयिष्ठः ।	स्थूलतमः,	स्थविष्ठः ।
क्षुद्रतमः,	क्षोदिष्ठः ।	कृशतमः,	क्रशिष्ठः ।
महत्तमः,	महिष्ठः ।	दृढतमः,	द्रढिष्ठः ।
बलवत्तमः,	बलिष्ठः ।	स्थिरतमः,	स्थेष्ठः ।
उरुतमः,	वरिष्ठः ।	क्षुद्रतमः,	क्षोदिष्ठः ।
गुरुतमः,	गरिष्ठः ।	पटुतमः,	पटिष्ठः ।

अभ्यास १७

(क) उदाहरण :—१. कृष्ण श्याम से चतुर है—कृष्णः श्यामात् पटुतरः । २. सीता उस लड़की से पटु है—सीता तस्याः बालिकायाः

पटुतरा अस्ति। ३. यह वस्तु उससे दृढ़ है—इदं वस्तु तस्मात् दृढ़तरम् अस्ति। ४. तुम श्याम से चतुर हो—त्वं श्यामात् पटीयान् असि। ५. श्यामा कृष्णा से चतुर है—श्यामा कृष्णायाः पटीयसी। ६. यह वस्तु उससे छोटी है—इदं वस्तु तस्मात् लघीयान् अस्ति। ७. यह बालक उस बालक से दुर्बल है—अयं बालकः तस्मात् बालकात् कृशतरः अस्ति। ८. प्रतिभा सरला से दुर्बल है—प्रतिभा सरलायाः कृशतरा अस्ति। ९. तुम मुझसे दुर्बल हो—त्वं मत् क्रशीयान् असि। १०. मोहिनी कमला से दुर्बल है—मोहिनी कमलायाः क्रशीयसी अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—१. राम सब भाइयों में बड़ा है। २. कमला सभी लड़कियों से श्रेष्ठ है। ३. तुम दोनों में श्याम बड़ा है। ४. रामा और कृष्णा में रामा अधिक चतुर है। ५. राम और श्याम में कौन अधिक बुद्धिमान् है? ६. संसार में कौन नदी सब नदियों से बड़ी है? ७. पढ़ने में श्यामा सब से तेज है। ८. इलाहाबाद से लखनऊ कानपुर की अपेक्षा अधिक दूर है। ९. कालिदास संस्कृत कवियों में सब से बड़े हैं। १०. गोविन्द मोहन से बलवान् है। ११. दुर्गेश सब बालकों से बलवान् है। १२. मिष्ठान्न सबसे प्रिय वस्तु है। १३. दिनेश सुरेश से मोटा है। १४. तुम सब बालकों से मोटे हो? १५. यह बालक सभी भाइयों से छोटा है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१. इयं लता विशालः अस्ति।	इयं लता विशाला अस्ति।
२. श्वेतः कमलं विकसति।	श्वेतं कमलं विकसति।
३. इदं रमणीयः स्थानम् अस्ति।	इदं रमणीयं स्थानम् अस्ति।
४. मम प्रतिज्ञा दृढतरम् अस्ति।	मम प्रतिज्ञा दृढ़तरा अस्ति।
५. रामात् श्यामः पटुतमः अस्ति।	रामात् श्यामः पटुतरः अस्ति।

(घ) शुद्ध करो :—

१. कृष्णः गोपालात् बलिष्ठः अस्ति। २. तत्र अल्पीयांसः जनः विद्यते। ३. अनेन महती प्रयत्नः कृतः। ४. अस्मिन् मनुष्ये महान् शक्तिः वर्तते। ५. कालिदासः सर्वेषां कवीनां श्रेयान्। ६. श्यामा सरलायाः पटीयान् अस्ति। ७. अहं त्वत् क्रशिष्ठः। ८. रामः लक्ष्मणात् गरीयसी अस्ति। ९. तव वाणी मृदुतरम् अस्ति। १०. अयं सर्वेषां स्थूलतरः

अस्ति । ११. इयं वृक्षः विशालः अस्ति । १२. श्यामः सर्वेषां बालकानां स्थूलतरः अस्ति । १३ गोविन्दः गोपालात् स्थूलतमः अस्ति । १४. दुर्गा कमलायाः पटीयान् अस्ति । १५. लीलावती सर्वासां बालिकानां पटीयसी अस्ति । १६ अस्मात् विद्यालयात् तस्मिन् विद्यालये अल्पीयान् छात्राः वर्तन्ते । १७. कालिदासः सर्वेषां कवीनां श्रेयान् । १८. युवयोः कः पटुतमः । १९. तेषु कः कृशतरः । २०. सुरेशः दिनेशात् बलिष्ठः । २१. गोपालः सर्वेषां छात्रांणां बलीयान् अस्ति २२. त्वं सर्वेषां भ्रातृणां ज्येयान् असि । २३ काशी प्रयागात् निकटतमा अस्ति ।

परिमाण वाचक विशेषण

जो किसी वस्तु व्यक्ति या स्थान का परिमाण प्रकट करता है, वह परिमाण वाचक विशेषण कहलाता है ।यथा :—१. तत्र यवस्य चत्वारः प्रस्थाः सन्ति—(वहाँ चार सेर जौ है)। २. अत्र त्रयः मापकाः रजतं अस्ति—यहाँ तीन माशा चाँदी है)।

परिमाण वाचक शब्द

पणः =पैसा ।	हस्तः =हाथ ।	प्रस्थः =सेर ।
रुप्यकम्=रुपया ।	पादः =पैर ।	षटङ्कः =छटाँक
तोलकः=तोला ।	मासः =महीना ।	सप्ताहः =हफ्ता ।
गुञ्जा =रत्ती ।	प्रहरः =एक पहर ।	अब्दः =वर्ष ।

अभ्यास १८

(क) उदाहरण :—१. चार सेर चने लाओ—चणकस्य चतुरः प्रस्थान् आनय। २. पाँच माशे सुवर्ण दो—पञ्चमापकाः सुवर्णं देहि । ३. रुपये का बारह छटांक तेल है—रूपकस्य द्वादश षटङ्काः तैलम् । ४. मुझे चार अंगुल कपड़े दो—मह्यं चतुरङ्गुलपरिमितं पटं देहि । ५ के० पी० विद्यालय इस स्थान से पाँच कोस पर है—के० पी० विद्यालयः अस्मात् स्थानात् पञ्च क्रोशम् अस्ति । ६. आज कल रुपये के कितने सेर गेहूँ है—अद्यत्वे रूपकस्य कियन्तः प्रस्थाः गोधूमाः सन्ति । ७. यहाँ पाँच तोले चाँदी है—अत्र रजतस्य पञ्च तोलकाः सन्ति । ८. यह सात कोश का मार्ग है—अयं मार्गः सप्त क्रोशपरिमितः अस्ति ।

(ख) अनुवाद करो—

१. आज कल रुपये के कितने सेर गेहूँ मिलते हैं। २. वाराणसी यहां से कितने मील दूर है? ३. बारह तोला सोना आभूषण के लिए पर्याप्त है। ४. सेर भर चावल लाओ। ५. चार माशे सोने दो। ६. सात अंगुल कपड़े दो। ७. चावल एक रुपये के कितने सेर है? ८. मुझे सात छटांक घी दो। ९. पांच सेर चावल लाओ। १०. छः मासे चांदी दो। ११. रुपये के दो सेर गेहूँ है। १२. मुझे चार अंगुल कपड़े दो। १३. काशी प्रयाग से चालीस कोस है। १४. वहां पांच तोला चांदी है।

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :—

१. गोधूमस्य—प्रस्थान्—। २. पञ्चगजपरिमितं—ब्राह्मणाय—। ३. —परिमितोऽयं मार्गः। ४. —चतुरः तोलकान्—। ५. एकः—तण्डुलः। ६. त्रयः—सुवर्णम्। ७. रूपकस्य—षटङ्काः तैलम्। ८. चतुर्मणपरिमितान्—आनय।

अजहल्लिङ्ग विशेषण

'अजहत्' शब्द का अर्थ है, न छोड़ना। अजहल्लिङ्ग से तात्पर्य उस विशेषण से है जो अपने लिङ्ग को नहीं छोड़ते। विशेष्य किसी भी लिङ्ग और वचन का क्यों न हो, किन्तु अजहल्लिङ्ग विशेषण एक समान रूप में रहता है, उसका लिङ्ग विशेष्य के अनुसार नहीं होता। उदारण :—'वेदाः प्रमाणम्'—इस वाक्य में 'वेदाः' शब्द बहुवचनान्त पुलिङ्ग नपुंसक लिङ्ग विशेषण है। विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिङ्ग और वचन नहीं हैं। कुछ अजहल्लिङ्ग विशेषण शब्दों का उल्लेख निम्नाङ्कित है :—

एको गुणी पुत्रो वरम्। अस्यां सभायां पण्डिताः प्रधानम्। देहिनां प्रकृतिः मरणम्। रामः सूर्यवंशस्य रत्नम्। इमे शत्रवः अस्माकं शङ्कास्थानम्। गुणिषु गुणा, पूजास्थानम्।

संख्या वाचक विशेषण

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति, अथवा स्थान की संख्या प्रकट हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे, एकः मनुष्यः, एका स्त्री, एकं पुस्तकम्। द्वौ पुरुषौ, द्वे नार्यौ, द्वे पुष्पे। त्रयः बालकाः, तिस्रः बालिकाः त्रीणि फलानि। चत्वारः वृक्षाः, चतस्रः लताः, चत्वारि वस्तूनि।

'एक' शब्द जब सर्वनाम के रूप में रहता है, तो उसका प्रयोग तीनों वचनों में होता है। किन्तु जब वह संख्यावाचक विशेषण के रूप में रहता है, तो उसका प्रयोग नित्य एक वचन में होता है। इसी प्रकार 'द्वि' का प्रयोग द्विवचन में होता है।

'एक' से लेकर चतुर् शब्द तक के रूप लिङ्गों के अनुसार बदल जाते हैं।

	एक (एक)			द्वि० (दो)		
	पुं०	स्त्री०	नपुं०	पुं०	स्त्री०	नपुं०
प्र०	एकः	एका	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	एकम्	एकम्	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	एकेन	एकया	एकेन	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	एकस्मै	एकायै	एकस्मै	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम	द्वाभ्याम्
प०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्	द्वाभ्याम	द्वाभ्याम्	द्वाभ्यान्
ष०	एकस्य	एकस्याः	एकस्य	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

	त्रि (तीन)			चतुर् (चार)		
	पुं०	स्त्री०	नपुं०	पुं०	स्त्री०	नपुं०
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्य
पं०	त्रिभ्यः	त्रिसृभ्यः	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

'त्रि' से लेकर अष्टादशन् के रूप केवल बहुवचन में होते हैं।

'पंचन्' से अष्टादशन् तक के रूप लिङ्गों के अनुसार कभी नहीं बदलते। वे तीनों लिङ्गों में सदा समान रहते हैं और केवल बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं :—

प्र०	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि०	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सं०	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टासु	नवसु	दशसु

(क) नोट—'दशन्' से 'अष्टादशन्' तक के रूप 'दशन्' के समान होंगे।

(ख) विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः—अर्थात् विंशति से ऊपर के समस्त संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग नित्य एक वचन में होता है।

(ग) 'एकोनविंशति' से नवनवति तक के रूप केवल एक वचन स्त्रीलिङ्ग में होते हैं और इनके रूप 'भक्ति' के समान होते हैं। उनमें से एक के रूप लिखे जाते हैं। शेष शब्दों के रूप उसी प्रकार होंगे।

'एकोनविंशति' के रूप

प्र०	द्वि०	तृ०	च०
एकोनविंशतिः	एकोनविंशतिम्	एकोनविंशत्या	एकोनविंशतये-त्यै

प०	ष०	स०
एकोनविंशतेः	एकोनविंशतेः	एकोनविंशतौ

नोट—इसी प्रकार विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति यथा नवति आदि इकारान्त शब्दों के रूप होंगे।

(३) 'शतम्' सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, तथा नियुतम्, आदि संख्या वाचक शब्दों के रूप नित्य नपुंसक लिङ्ग एक वचन में होते हैं। इनके रूप 'जगत्' के समान होंगे।

(२) 'त्रिंशत्' चत्वारिंशत् आदि तकारान्त शब्दों के रूप एकवचन स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप 'सरित्' के समान होंगे। उदाहरण—

४—'कोटि' शब्द के रूप 'मति' के समान होंगे।

प्र०	त्रिंशत्	शतम्	सहस्रम्	अयुतम्	लक्षम्	नियुतम्
द्वि०	त्रिंशतम्	शतम्	सहस्रम्	अयुतम्	लक्षम्	नियुतम्
तृ०	त्रिंशता	शतेन	सहस्रेण	अयुतेन	लक्षेण	नियुतेन
च०	त्रिंशते	शताय	सहस्राय	अयुताय	लक्षाय	नियुताय
पं०	त्रिंशतः	शतात्	सहस्रात्	अयुतात्	लक्षात्	नियुतात्
ष०	त्रिंशतः	शतस्य	सहस्रस्य	अयुतस्य	लक्षस्य	नियुतस्य
स०	त्रिंशति	शते	सहस्रे	अयुते	लक्षे	नियुते

प्र०	द्वि०	तृ०	च०
प्रयुतम्	प्रयुतम्	प्रयुतेन	प्रयुताय
पं०	ष०	स०	
प्रयुतात्	प्रयुतस्य	प्रयुते	

संख्याओं के नाम

१ एकः	१६ षोडश	३१ एकत्रिंशत्
२ द्वौ	१७ सप्त दश	३२ द्वात्रिंशत्
३ त्रयः	१८ अष्टदश	३३ त्रयस्त्रिंशत्
४ चत्वारः	१९ एकोनविंशतिः	३४ चतुस्त्रिंशत्
५ पञ्च	२० विंशतिः	३५ पञ्चत्रिंशत्
६ षट्	२१ एकविंशतिः	३६ षट् त्रिंशत्
७ सप्त	२२ द्वाविंशतिः	३७ सप्त त्रिंशत्
८ अष्ट, अष्टौ	२३ त्रयोविंशतिः	३८ अष्टा त्रिंशत्
९ नव	२४ चतुर्विंशतिः	३९ एकोनचत्वारिंशत्
१० दश	२५ पञ्च विंशतिः	४० चत्वारिंशत्
११ एकादश	२६ षड्विंशतिः	४१ एक चत्वारिंशत्
१२ द्वादश	२७ सप्त विंशतिः	४२ द्विचत्वारिंशत् (द्वाचत्वारिंशत्)
१३ त्रयोदश	२८ अष्टाविंशतिः	४३ त्रिचत्वारिंशत् (त्रयश्चत्वारिंशत्)
१४ चतुर्दश	२९ एकोनत्रिंशत्	४४ चतुश्चत्वारिंशत्
१५ पञ्चदश	३० त्रिंशत्	४५ पञ्चचत्वारिंशत्

४६ षट्चत्वारिंशत
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टा चत्वारिंशत्
(अष्टचत्वारिंशत्)
४९ एकोन पञ्चाशत्
५० पञ्चाशत्
५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्विपञ्चाशत्
(द्वापञ्चाशत्)
५३ त्रिपञ्चाशत्
(त्रयःपञ्चाशत्)
५४ चतुः पञ्चाशत्
५५ पञ्च पञ्चाशत्
५६ षट् पञ्चाशत्
५७ सप्त पञ्चाशत्
५८ अष्टापञ्चाशत्
५९ एकोनषष्टिः
६० षष्टिः
६१ एक षष्टिः
६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
६३ त्रिषष्टिः, त्रयः षष्टिः

६४ चतुःषष्टिः
६५ पञ्चषष्टिः
६६ षट्षष्टिः
६७ सप्तषष्टिः
६८ अष्टाषष्टिः
६९ एकोन सप्ततिः
७० सप्ततिः
७१ एक सप्ततिः
७२ द्विसप्ततिः
७३ त्रिसप्ततिः
७४ चतुः सप्ततिः
७५ पञ्च सप्ततिः
७६ षट् सप्ततिः
७७ सप्त सप्ततिः
७८ अष्टा सप्ततिः
७९ एकोनाशीतिः
८० अशीतिः
८१ एकाशीतिः

८२ द्व्यशीतिः
८३ त्र्यशीतिः
८४ चतुरशीतिः
८५ पञ्चाशीतिः
८६ षडशीतिः
८७ सप्ताशीतिः
८८ अष्टाशीतिः
८९ एकोननवतिः
९० नवतिः
९१ एक नवतिः
९२ द्विनवतिः द्वानवतिः
९३ त्रिनवतिः,
(त्रयोनवतिः)
९४ चतुर्नवतिः
९५ पञ्चनवतिः
९६ षण्णवतिः
९७ सप्तनवतिः
९८ अष्टानवतिः
९९ एकोनशतम्
१०० शतम्

नोट—१०० से ऊपर की संख्यायें इस प्रकार बनेगी—

(क) 'अधिक' शब्द जोड़कर—जैसे, १०१ के लिए एकाधिकम् शतम्, १०२ के लिए द्व्यधिकंशतम्।

(ख) अन्त में शती शब्द जोड़कर—जैसे, २०० के लिए द्विशती, ३०० के लिए त्रिशती।

(ग) शत के अन्त में द्वयम् आदि का प्रयोग कर—जैसे, २०० के लिए शतद्वयम्, ३०० के लिए, शतत्रयम्।

सहस्रम् = एक हजार। नियुतम् = दश लाख। अर्बुदम् = एक अरब।
अयुतम् = दश हजार। कोटिः = एक करोड़। दशार्बुदम् = दश अरब।
लक्षम् = एक लाख। दशकोटिः = दश करोड़। खर्वम् = एकखर्व।

दशखर्वम् = दशखर्व । पद्मम् = एक पद्म । दशशंखम् = दश शंख ।
नीलम् = एक नील । दशपद्मम् = दश पद्म । महाशंखम् = महाशंख ।
दशनीलम् = दश नील । शंखम् = एक शंख ।

क्रम बोधक विशेषण शब्द

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के क्रम का बोध होता है, उसे क्रम बोधक विशेषण कहते हैं। जैसे प्रथमो बालकः (पहला लड़का)। प्रथमा बालिका (दूसरी लड़की) प्रथमं पुस्तकम् (पहली पुस्तक)।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि क्रम बोधक विशेषण संख्येय हैं। संखेय शब्दों के रूप लिङ्गों के अनुसार होते हैं।

संखेय शब्द :—

पु०	स्त्री०	नपुं०
प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नवमः	नवमी	नवमम्
दशमः	दशमी	दशमम्
एकादशः	एकादशी	एकादशम्
द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
नवदशः	नवदशी	नवदशम्
विंशतितमः	विंशतितमा	विंशतितमम्

नोट—(क) 'प्रथम' से 'नवदश, तक (पु०) संख्येय शब्दों के रूप 'राम' या 'बालक' के समान होंगे।

(ख) 'प्रथमा' से 'तृतीया' तक (स्त्री०) संख्येय शब्दों के रूप 'रमा' या 'बालिका' के समान होंगे।

(ग) 'चतुर्थी' से लेकर 'नवदशी' तक (स्त्री०) संख्येय शब्दों के रूप 'नदी' या गौरी के समान होंगे।

(घ) 'प्रथम' से 'नवदश' तक (नपं०) संख्येय शब्दों के रूप 'पुस्तक' या 'गृह' के समान होंगे।

(ङ) 'विंशति' या जिनके अन्त में 'विंशति' हो, ऐसे शब्दों से ऊपर की सभी संख्याओं में 'तम' जोड़कर संख्येय शब्द बनाये जाते हैं। इनके रूप (पुं०) में 'राम' या बालक (स्त्री०) में 'रमा' या 'बालिका' तथा (नपुं०) में पुस्तक या फल के समान होंगे। उदाहरण :—

पुं०	स्त्री०	नपुं०
एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्
विंशतितमः	विंशतितमा	विंशतितमम्
त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमा	त्रिंशत्तमम् ।

नोट—इसी प्रकार चत्वारिंशत्तमः ; पंचाशत्तमः, षष्टितमः, सप्ततितमः ; अशीतितमः नवतितमः इत्यादिरूप बनते हैं। इन सब संख्येय शब्दों के रूप लिङ्गों के अनुसार, होते हैं। ऊपर इनके उदाहरण दिये जा चुके हैं।

आवृत्ति-बोधक विशेषण

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के आवृत्ति सूचक संख्या का बोध हो, उसे आवृत्ति बोधक विशेषण कहते हैं। उदाहरण :—द्विगुणः बालकः, द्विगुणा बालिका, द्विगुणं धनम्।

(क) आवृत्ति-बोधक विशेषण शब्दों का प्रयोग लिङ्गों के अनुसार होता है।

(ख) आवृत्ति-बोधक विशेषण शब्दों का प्रयोग समस्त विभक्तियों में होता है।

समूह-बोधक विशेषण

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के समूह का बोध हो, उसे समूह-बोधक विशेषण कहते हैं। संख्यावाचक शब्दों के अन्त में 'अपि' अव्यय के जोड़ने से समूह-बोधक विशेषण शब्द बनते हैं। जैसे, कक्षायां चत्वारोऽपि छात्राः उपस्थिताः आसन् (कक्षा में चारों छात्र उपस्थित थे)।

विभाग-बोधक विशेषण

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान का विभाग प्रकट होता है, उसे विभाग-बोधक विशेषण कहते हैं। जैसे, प्रतिविद्यार्थिनं पश्य (प्रति विद्यार्थी को देखो)।

अनियत-संख्यावाचक विशेषण

जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के अनियत संख्या का बोध हो, उसे अनियत-संख्यावाक विशेषण कहते हैं। अनियत-संख्यावाचक विशेषण एक, ऊपर अन्य, परस्पर, अन्योन्य, सर्व, बहु, अनेक, कियत्, यावत्, तावत्, कति, कतिचित्, कतिपय, तथा किञ्चित् आदि शब्दों की सहायता से बनते हैं। उदाहरण—१. प्रयागे एको महात्मा वसति (प्रयाग में एक महात्मा रहते हैं)। २. एकः सफलः अपरः असफलः (एक सफल दूसरा असफल)। ३. एकः पठति अन्यो हसति (एक पढ़ता है, दूसरा हँसता है)। ४. अशिक्षिताः मनुष्याः परस्परं विवदन्ते (अपढ़ लोग आपस में विवाद करते हैं)। ५. सर्वे छात्राः प्रसन्नाः अभवन् (सभी छात्र प्रसन्न हो गये)। ६. अस्यां कक्षायां बहवः विद्यार्थिनः, बह्व्यः विद्यार्थिन्यः बहूनि वस्तूनि सन्ति (इस कक्षा में बहुत से छात्र छात्रायें तथा वस्तुयें हैं)। ७. अत्र कति छात्राः सन्ति (यहां कितने छात्र हैं?)। ८. तत्र कतिचित् मनुष्याः सन्ति (वहां कितने मनुष्य हैं)। ९. अस्मिन् उद्याने कति पादपाः लताः च सन्ति (इस उद्यान में कितने वृक्ष और कितनी लतायें हैं)। १०. त्वं कतिपयानि फलानि खादसि (तुम कितने फल खाते हो)। ११. कश्चिद् बालकः क्रीडति, काचिद् बालिका धावति (कोई लड़का, खेलता है और कोई लड़की दौड़ती है)। १२. युष्माकं कक्षायां यावन्तः छात्राः सन्ति तावन्तः अस्माकं कक्षायामपि (आपकी कक्षा में जितने छात्र हैं, उतने मेरी कक्षा में भी हैं)। १३. रामस्य कियन्तः पुत्राः, कियत्यः कन्याः सन्ति (राम के कितने पुत्र और कितनी कन्यायें हैं?)

द्वि, त्र, युग, युगल आदि शब्द जब किसी शब्द के अन्त में आते हैं, तो वे नपुंसक लिंग एक वचन में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण :—पुष्पद्वयम् (दो फूल)। फलत्रयम् (तीन फल)। बालकयुगम् (दो बालक)। पुरुषयुगलम् (दो पुरुष)।

अभ्यास १६

(क) उदाहरण :—१. एक पुरुष—एकः पुरुषः। २. दो बालक—द्वौ बालकौ। ३. तीन स्त्रियाँ—तिस्रः स्त्रियः। ४. चार फल—चत्वारि फलानि। ५. चार वृक्ष—चत्वारः वृक्षाः। ६. चार लतायें—चतस्रः लताः। ७. पाँच छात्र—पञ्च छात्राः। ८. छ बालिकायें—षड् बालिकाः। ९. सात फल—सप्त फलानि। १०. बीस लड़के—विंशतिः बालकाः। ११. बीस लड़कियाँ—विंशतिः बालिकाः। १२. बीस पुस्तकें—विंशतिः पुस्तकानि।

(ख) अनुवाद करो :—

१. दो अध्यापक तीन छात्र और चार पुस्तकें यहाँ हैं। २. चार बालकों को, पांच बालिकाओं को, चार पुस्तकें चार बार दो। ३. सात बालिकायें इस पुस्तक को चार बार पढ़ें। ४. राम को दुगुना धन दो। ५. वह पांच प्रकार से प्रयत्न करे। ६. आठवां छात्र, नवीं छात्रा, दसवें अध्यापक यहां हैं। ७. प्रथम कक्षा में बीस, द्वितीय में अस्सी, तृतीय में सौ विद्यार्थी हैं। ८. मेरे कार्यालय में एक सौ पांच कर्मचारी हैं। ९. आप के कार्यालय में पांच सौ कर्मचारी हैं। १०. उस सभा में लाखों पुरुष तथा स्त्री उपस्थित थे। ११. पहली सभा में ग्यारह, दूसरी में तेरह, तीसरी में चौदह, चौथी में अठारह मनुष्य थे। १२. इस वन में पांच सौ वृक्ष, छ सौ लतायें तथा अनेक वस्तुयें हैं। १३. कल दोनों भाई, तीनों पुत्र, चारों छात्र तथा पाचों बालिकायें वाराणसी जायेंगी। १४. श्याम बारहवीं, लीलावती पन्द्रहवीं तथा सरला सोलहवीं कक्षा में पढ़ती है। १५. वहां तिगुने बालक, चौगुनी बालिकायें तथा दस गुनी पुस्तकें हैं। १६. राम चार बार श्याम पाँच बार, और गोविन्द सात बार दौड़ेंगे। १७ तुम्हारे दूकान में कितने प्रकार की पुस्तकें हैं ? १८. तुम्हारी कक्षा में जितने बालक, जितनी बालिकायें हैं, उतनी अन्य कक्षाओं में नहीं हैं। १९. श्याम ने कितनी पुस्तकें पढ़ीं। २०. इस वृक्ष में जितने फूल हैं, उतने फल नहीं हैं।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार—

अशुद्ध	शुद्ध
१—अत्र एकः पुस्तकम् अस्ति।	अत्र एकं पुस्तकम् अस्ति।
२—तत्र एकं मनुष्यः अस्ति।	तत्र एकः मनुष्यः अस्ति।
३—वेदाः प्रमाणाः ।	वेदाः प्रमाणम्।
४—वयं प्रमाणाः स्मः।	वयं प्रमाणं स्मः।
५—तत्र चत्वारः फलानि सन्ति।	तत्र चत्वारि फलानि सन्ति।
६—इदानीं चत्वारि पुरुषाः सन्ति।	इदानीं चत्वारः पुरुषाः सन्ति।
७—चतस्रः बालकाः चत्वारः स्त्रियः खादन्ति।	चत्वारः बालकाः चतस्रः स्त्रियः खादन्ति।
८—बालकत्रयं क्रीडन्ति।	बालकत्रयं क्रीडति।

(घ) शुद्ध करो :—

१. छात्र द्वयं पश्यतः। २. त्रयः बालिकाः चतस्रः बालकाः, चत्वारः फलानि तत्र वर्तन्ते। ३. सप्तमे कक्षायां शतानि बालकाः सन्ति। ४. पञ्चमस्य कक्षायाः विंशतिः छात्राः सन्ति। ५. अस्य विद्यालये विंशतयः छात्राः सन्ति। ६. शिष्यत्रयं पठन्ति। ७. इदं वस्तु शतैः क्रीतम्। ८. रामः विंशतिभिः बालकैः सह आगच्छति। ९. तत्र नवनवतयः स्त्रियः वर्तन्ते। १०. प्रथमं नारीं, द्वितीयां पुरुषं, चतुर्थः पुस्तकं पश्य। ११. अस्मिन् नगरे कियन्तः नार्यः, कियत्यः पुरुषाः, कियन्ति बालिकाः कियन्तौ पुष्पे सन्ति। १२. अत्र यावत्यः बालकाः तावन्तः बालिकाः सन्ति। १३. केचिद् स्त्रियः काश्चित् पुरुषः कानिचित् छात्राः तत्र वर्तन्ते।

वाच्य-परिवर्तन प्रकरण

(कर्तृ वाच्य, भाव वाच्य, कर्म वाच्य)

सकर्मक धातु—सकर्मक धातुओं का प्रयोग कर्तृ वाच्य और कर्म वाच्य में होता है।

अकर्मक धातु—अकर्मक धातुओं का प्रयोग कर्तृ वाच्य तथा भाव वाच्य में होता है।

कर्तृ वाच्य—इसमें कर्त्ता प्रधान होता है। कर्त्ता कारक में प्रथमा विभक्ति और कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। कर्त्ता और क्रिया के पुरुष और वचन समान होते हैं।

भाव वाच्य—इसमें भाव की प्रधानता होती है। इसमें कर्त्ता का प्रयोग तृतीया विभक्ति में होता है और क्रिया का प्रयोग प्रथम पुरुष के एक वचन में होता है।

कर्म वाच्य—इसमें कर्म की प्रधानता होती हैं। क्रिया के पुरुष और वचन कर्म के अनुसार होते हैं। कर्त्ता का प्रयोग प्रथमा विभक्ति में और कर्म का प्रयोग द्वितीया विभक्ति में होता है।

भाव और कर्म—भाव और कर्म के अर्थ में जो लकार होते हैं उनके स्थान में आत्मनेपद के प्रत्यय होते हैं। लट्, लङ्, लोट् और विधि लिङ्-इन सार्वधातुक लकारों में धातु और प्रत्यय के मध्य में 'यक्' होता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। जैसे, भू—भूयते, पठ्—पठ्यते, गम्—गम्यते, दृश्—दृश्यते इत्यादि।

विशेष नियम

(क) भाव वाच्य में भाव अर्थ में लकार होने से युष्मद् और अस्मद् की लकारों के साथ एकार्थता नहीं होती। इसलिये भाव वाच्य में उत्तम और मध्यम पुरुष का प्रयोग नहीं होता। 'शेषे प्रथमः' के द्वारा केवल प्रथम पुरुष का ही प्रयोग होता है। भाव वाच्य में धातु का रूप एक लकार में होता है और वह केवल एक प्रथम पुरुष के एक वचन में होता है। उदाहरण—त्वया मया अन्यैश्च भूयते (तुम्हारे द्वारा मेरे द्वारा और अन्य

लोगों के द्वारा हुआ जाता है)। उपर्युक्त वाक्य में भाव अर्थ में लकार हुआ है। इसलिये कर्त्ता अनुक्त हो गया। अनुक्त कर्त्ता का प्रयोग तृतीया विभक्ति में हुआ है। भू धातु के अकर्मक होने से भाव अर्थ में लकार हुआ।

(ख) अकर्मकोऽप्युपसर्गवशात्सकर्मकः—जब किसी अकर्मक धातु के पहले उपसर्ग आता है तो वह भिन्न अर्थ प्रकट करने लगता है और वह सकर्मक हो जाता हैं। उदाहरण—'भवति' अकर्मक क्रिया का अर्थ है—'होता है' इसके पहले 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से 'अनुभवति' क्रिया बनती है। इसका अर्थ होता है—अनुभव करता है। 'भवति' क्रियाके अर्थ से अनुभवति क्रिया का अर्थ भिन्न हो गया। इसलिये 'अनुभवति' सकर्मक क्रिया कही जाती है। अनुभूयते आनन्दश्चैत्रेण (चैत्र के द्वारा आनन्द का अनुभव किया जाता है)। उपर्युक्त वाक्य में कर्म अर्थ में लकार आया है, इसलिये कर्म उक्त हो गया। उक्त कर्म में प्रथमा का प्रयोग हुआ। कर्त्ता अर्थ में लकार का प्रयोग न होने से कर्ता अनुक्त हो गया। अनुक्त कर्त्ता का प्रयोग तृतीया विभक्ति में होता है। उक्त वाक्य में चैत्र कर्त्ता है और आनन्द कर्म हैं। इस नियम के अनुसार चैत्र का प्रयोग तृतीया में हुआ और 'आनन्द' का प्रयोग प्रथमा में।

(ग) कर्म वाच्य में कर्म अर्थ में लकार होने से युष्मद् और अस्मद् के साथ लकार की एकार्थता प्राप्त होती है इसलिये कर्म वाच्य उत्तम, मध्यम और प्रथम तीनों पुरुषों और वचनो में प्रयुक्त हो सकता है। उदाहरण—'त्वम् अनुभूयसे'—यहां कर्म वाच्य है, कर्म मध्यम पुरुष हुआ है। कर्म उक्त होने से त्वम् का प्रयोग प्रथमा विभक्ति में हुआ है।

(घ) क्रिया सुगमता से हो रही है इस भाव को प्रकट करने के लिये अन्य कारक भी स्वतन्त्रतया बन जाते हैं और लकार कर्त्ता अर्थ में होता है।

'असिश्छिनत्ति' इस वाक्य में करण (असि) को कर्त्ता बनाया गया है। स्थाली पचति, इस वाक्य में स्थाली (अधिकरण कारक) को कर्त्ता बनाया गया है।

(ङ) जब क्रिया का सौकर्य दिखाने के लिये कर्म को ही कर्त्ता मान लिया जाता है तो सकर्मक क्रिया अकर्मक बन जाती है और लकार भाव और कर्त्ता अर्थ में होते हैं। उदाहरण—भाव अर्थ में—पच्यते ओदनेन (भात पक रहा है), भिद्यते काष्ठेन (काष्ठ कट रहा है)।

(च) कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः—कर्म में स्थित क्रिया के साथ समान क्रिया वाला कर्त्ता कर्मवत् होता है। उदाहरण—पच्यते फलम् (फल स्वय-

मेव पक रहा है)। पूर्व वाक्य में फल कर्म था उस कर्म में स्थित है 'पचन' क्रिया। उस क्रिया के समान क्रिया वाला कर्त्ता हुआ 'फल'। अर्थात् फल को अब कर्त्ता बना दिया गया। यहाँ कर्त्ता अर्थ में लकार होने पर इस सूत्र से]|२५ कर्मवत् हो गया। कर्मवत् होने से सार्वधातुक लकारों से यक् प्रत्यय और आत्मनेपद के प्रत्यय हुये। कर्त्ता उक्त होने से प्रथमा विभक्ति में प्रयुक्त हुआ। कर्त्ता को कर्मवत् भाव करने का यही फल है कि उससे यक् और आत्मनेपद के प्रत्यय हों। इसी प्रकार भिद्यते काष्ठम् (काष्ठम् स्वयमेव भिद्यते, लकड़ी स्वयं कटती है) आदि प्रयोगों में कर्त्ता को कर्मवद्भाव हुआ है।

द्विकर्मक धातु

संस्कृत में कुछ द्विकर्मक धातुयें हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष् तथ वह्। इन धातुओं के दो कर्म होते हैं, १—प्रधान (मुख्य) तथा गौण (अप्रधान' 'कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र से जिसकी कर्म संज्ञा होती है, वह प्रधाना कर्म होता है तथा अपादान आदि कारकों की अविवक्षा करके जिसकी कर्म संज्ञा होती है, उसे गौण (अप्रधान) कर्म कहते हैं। उदाहरण— 'सः धेनुं दुग्धं दोग्धि'। इस वाक्य में 'दुग्ध' प्रधान कर्म है और धेनु गौण (अप्रधान) कर्म है।

(क) कर्म वाच्य बनाने में दुह् से लेकर मुष् तक धातुओं के गौण (अप्रधान) कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार होता है। प्रधान कर्म ज्यों का त्यों रहता है। उदाहरण—कर्तृवाच्य—सः धेनुं दुग्धं दोग्धि। कर्मवाच्य— तेन धेनुः दुग्धं दुह्यते। कर्तृवाच्य में धेनुम् पद गौण (अप्रधान) कर्म है और द्वितीया विभक्ति में है। कर्मवाच्य में वह प्रथमा में प्रयुक्त हुआ है। प्रधान कर्म जिस रूप में कर्तृवाच्य में था उसी रूप में कर्मवाच्य में भी।

(ख) 'नी' से लेकर वह् तक के धातुओं के प्रधान कर्म में प्रथमा होती है और गौण कर्म में द्वितीया होती है। उदाहरण—कर्तृवाच्य—गोपः गां ग्रामं नयति। कर्मवाच्य—गोपेन गौः ग्रामं नीयते। कर्तृवाच्य में 'गाम्' प्रधान कर्म है वह कर्मवाच्य में प्रथमा में प्रयुक्त है, कर्तृवाच्य में 'ग्रामम्' गौण कर्म है, वह कर्मवाच्य में द्वितीया में प्रयुक्त हुआ है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण:—

कर्तृ वाच्य	कर्मवाच्य
नयति (ले जाता है)।	नीयते (ले जाया जाता है)।
पश्यति (देखता है)।	दृश्यते (देखा जाता है)।
शृणोति (सुनता है)।	श्रूयते (सुना जाता है)।
खादति (खाता है)।	खाद्यते (खाया जाता है)।
जिघ्रति (सूँघता है)।	घ्रायते (सूँघा जाता है)।
पिबति (पीता है)।	पीयते (पिया जाता है)।
पठति (पढ़ता है)।	पठ्यते (पढ़ा जाता है)।
पचति (पकाता है)।	पच्यते (पकाया जाता है)।
दहति (जलाता है)।	दह्यते (जलाया जाता है)।
भाषते (बोलता है)।	भाष्यते (बोला जाता है)।

अकर्मक क्रिया के उदाहरण:—

कर्तृ वाच्य	भाव वाच्य
त्रपते (लजाता है)।	त्रप्यते (लजाया जाता है)।
धावति (दौड़ता है)।	धाव्यते (दौड़ाया जाता है)।
ध्वंसते (नष्ट होता है)।	ध्वंस्यते (नष्ट होता है)।
नश्यति (नष्ट होता है)।	नश्यते (नष्ट कराया जाता है)।
नृत्यति (नाचता है)।	नृत्यते (नचाया जाता है)।
पतति (गिरता है)।	पत्यते (गिराया जाता)।
बिभेति (डरता है)।	भीयते (डराया जाता है)।
भवति (होता है)।	भूयते (होआया जाता है)।
मोदते (प्रसन्न होना)।	मोद्यते (प्रसन्न कराया जाता है)।

अभ्यास २०

(क) उदाहरण—१. रामेण पुस्तकं पठ्यते। २. त्वया पुस्तकं पठ्यते, त्वया पुस्तके पठ्येते, त्वया पुस्तकानि पठ्यन्ते। ३. त्वया मया तेन वा विद्यालयो गम्यते। ४. युष्माभिः अस्माभिः तैः वा जलं पीयते। ५. अध्यापकेन छात्रः पृच्छ्यते, छात्रौ पृच्छ्येते, छात्राः पृच्छ्यन्ते। ६. मया अत्र भूयते। ७: छात्रैः पुस्तकानि पठ्यन्ते। ८. बालकेन उच्चैः

हस्यते, अहस्यत, हस्यताम्, हस्येत् हसिष्यते वा। ९. अध्यापकेन छात्राः नीयन्ताम्। १०. भक्तैः ईश्वरः सेव्यते।

(ख) अनुवाद करो—१. छात्र के द्वारा दो पुस्तकें पढ़ी जायँ। २. विद्यार्थियों द्वारा गांव को जाया जावे। ३. छात्रों द्वारा चार पुस्तकें पढ़ी जायँ। ४. शिष्य के द्वारा गुरु की सेवा की जाय। ५. नेता के द्वारा भाषण दिया जाता हैं। ६. शिशुओं द्वारा रोया जाता है। ७. शिक्षकों के द्वारा छात्र यहां लाये जाते हैं। ८. नौकर के द्वारा पात्र ले आया जाता है। ९. तुम्हारे मेरे और उनके द्वारा सोया जाता है। १०. देवताओं द्वारा समुद्र से अमृत मथा जाता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचारः—

अशुद्ध	शुद्ध
१—तैः रुद्यन्ते।	तैः रुद्यते।
२—पाठकः पुस्तकं पठ्यते।	पाठकेन पुस्तकं पठ्यते।
३—बालकेन विद्यालयम् गम्यते।	बालकेन विद्यालयः गम्यते।
४—लेखकेन लेखः लिख्यते।	लेखकेन लेखः लिख्यते।
५—बालकैः हस्यन्ते।	बालकैः हस्यते।
६—तेन फलानि खाद्यते।	तेन फलानि खाद्यन्ते।
७—स्त्रीभिः भोजनं पच्यन्ते।	स्त्रीभिः भोजनं पच्यते।
८—तैः भोजनानि खाद्यते।	तैः भोजनानि खाद्यन्ते।
९—तेन अजां ग्रामः नीयते।	तेन अजा ग्रामं नीयते।

(घ) शुद्ध करोः—१—त्वया, मया, तेन वा भूयन्ते। २—तैः रुद्यन्ते। ३—अस्माभिः कथ्यन्ते। ४—सः कथ्यते। ५—वयं पुस्तकानि पठ्यन्ते। ६—अध्यापकेन छात्रान् नीयन्ताम्। ७—मया फले खाद्यते। ८—शिशुः रुद्यते। ९—त्वया मृगान् दृश्यन्ते। १०—सुरैः सागरं सुधां कमन्थे।

प्रत्ययान्त धातु प्रकरण

णिजन्त धातु

(१) प्रेरणा अर्थ में धातु के अन्त में णिच् प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। णकार, चकार का लोप हो जाने से 'इ' शेष रह जाता है। 'इ' को गुण आदेश तथा 'ए' को अयादेश होने से प्रेरणार्थक धातु के रूप लकारों में तैयार किये जाते हैं। ऐसी धातुओं में कर्त्ता स्वयं काम न करके दूसरे से काम कराता है। कर्त्ता का प्रयोग तृतीया में तथा कर्म का प्रयोग द्वितीया में होता है। जैसे, अध्यापकः छात्रेण लेखं लेखयति (अध्यापक छात्र से लेख लिखाता है)।

प्रेरणार्थक धातुओं के रूप

अणिजन्त	णिजन्त
१—पठति (पढ़ता है)।	पाठयति (पढ़ाता है)।
२—लिखति (लिखता है)।	लेखयति (लिखता है)।
३—भवति (होता है)।	भावयति (होवाता है)।
४—गच्छति (जाता है)।	गमयति (जवाता है)।
५—पश्यति (देखता है)।	दर्शयति (दिखाता है)।
६—तिष्ठति (बैठता है)।	स्थापयति (बैठाता है)।
७—जिघ्रति (सूँघता है)।	घ्रापयति (सुंघाता है)।
८—शृणोति (सुनता है)।	श्रावयति (सुनाता है)।
९—पिबति (पीता है)।	पाययति (पिलाता है)।
१०—खादति (खाता है)।	खादयति (खिलाता है)।

अभ्यास २१

(क) उदाहरण :—१. कृष्णः रामेण पुस्तकं लेखयति। २. माता शिशुं स्वापयति। ३. रामः कृष्णेन अन्नं खादयति। ४. दिनेशः भृत्येन भारं वाहयति। ५. सः हरि भक्तान् दर्शयति। ६. सुरेशः दिनेशेन स्मारयति घ्रापयति वा। ७. सः देवदत्तेन ओदनं पाचयति। ८. विष्णु मित्रः देवदत्तेन

यज्ञदत्तं गमयति । ९. सः भृत्येन कटं कारयति । १०. कथावाचकः श्रोतारं कथां श्रावयति ।

(ख) अनुवाद करो :—(१) गुरु शिष्य से पुस्तक पढ़वाता है । (२) स्वामी भृत्य से काम कराता है । (३) अध्यापक छात्रों को कक्षा में भेजता है । (४) वह अतिथि को भोजन करवाता है । (५) उसने मुझे आसन पर बैठाया । (६) माता ने शिशु को सुलाया । (७) उपदेशक ने भक्त जनों से धर्म कहलाया । (८) माता शिशु को दूध पिलाती है । (९) अध्यापक छात्रों को विद्यालय में प्रवेश कराता है । (१०) नौकर बालक को विद्यालय पहुँचाये । (११) बच्चे को नहलाओ ।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचारः—

अशुद्ध	शुद्ध
१—रामः कृष्णम् ओदनं पाचयति ।	रामः कृष्णेन ओदनं पाचयति ।
२—स्वामी भृत्यं भारं वाहयति ।	स्वामी भृत्येन भारं वाहयति ।
३—गुरुः वटुम् अन्नं खादयति ।	गुरुः वटुना अन्नं खादयति ।
४—देवदत्तः पुत्रेण धर्मं भाषयति ।	देवदत्तः पुत्रं धर्मं भाषयति ।

(घ) शुद्ध करो:—१. आचार्यः शिष्यं पुस्तकं पाठयति । २. माता शिशुना स्वापयति । ३. रामः सतीया काननं दर्शयति । ४. आचार्यः शिष्येण शास्त्रम् अध्यापयति । ५. पुरोहितः राजानं दानं दापयति । ६. सज्जनाः पथिकाय सलिलं पाययन्ति । ७. आचार्येणः शिष्यं पाठ्यते । ८ तेन देवदत्तं बोध्यते ।

सन्नन्त धातु

(१) इच्छा अर्थ में धातु से सन् प्रत्यय होता है । यह इच्छा क्रिया-परक होती है: अर्थात् क्रिया करने की इच्छा । सन् का स् शेष रह जाता है । किन्हीं-किन्हीं प्रयोगों में स् के स्थान में ष् हो जाता है । जिस धातु में सन् प्रत्यय होता है उस धातु को द्वित्व हो जाता है और धातु और सन् प्रत्यय के बीच में इट् (इ) आ जाता है और कभी नहीं भी आता । उदाहरण—पठ्+सन्, पठ् पठ् सन्, पिपठ्+ई+ष्=पिपठिष् । इसके अन्त में लकारों का प्रत्यय जोड़ने से इस प्रकार रूप बनेगा—पिपठिषति (पठितुम् इच्छति, पढ़ना चाहता) ।

सन्नन्त धातुओं के उदाहरण :—

असन्नन्त	सन्नन्त
१—पृच्छति (पूंछता है)।	पिपृच्छिषति (पूँछना चाहता है)।
२—करोति (करता है)।	चिकीर्षति (करना चाहता है)।
३—गच्छति (जाता है)।	जिगमिषति (जाना चाहता है)।
४—अत्ति (खाता है)।	जिघत्सति (खाना चाहता है)।
५—रोदिति (रोता है)।	रुरुदिषति (रोना चाहता है)।
६—मुष्णाति (चुराता है)।	मुमुषिषति (चुराना चाहता है)।
७—लिखति (लिखता है)।	लिलिखिषति (लिखना चाहता है)।
८—आप्नोति (पाता है)।	ईप्सति (पाना चाहता है)।
९—तरति (पार करता है)।	तितीर्षति (पार करना चाहता है)।
१०—पठति (पढ़ता है)।	पिपठिषति (पढ़ना चाहता है)।

अभ्यास २२

(क) उदाहरण—१. अयं वटुः विवक्षति। २. छात्राः पिपठिषन्ति। ३. वर्षा काले नदीं न कश्चिद् जनः तितीर्षेत्। ४. नेतारः देशसेवां चिकीर्षन्ति। ५. सः जलं पिपासते। ६. बालकाः विद्यालयं जिगमिषन्ति। ७. शिशुः रुरुदिषति। ८. सीता रामं दिदृक्षते। ९. गुरुः शिष्यं प्रश्नं पिपृच्छिषति। १०. भक्तः धर्मं जिज्ञासते।

(ख) अनुवाद करो—१. राम लिखना चाहता है। २. श्याम पढ़ना चाहता है। ३. मैं बोलना चाहता हूँ। ४. नौकर सेवा करना चाहता है। ५. भक्त धर्म जानना चाहता है। ६. पथिक जल पीना चाहता है। ७. मैं ईश्वर भक्ति पाना चाहता हूँ। ८. सीता उद्यान को देखना चाहती है। ९. छात्र विद्यालय जाना चाहते हैं। १०. बालक रोना चाहता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः गन्तुं जिगमिषति।	सः जिगमिषति।
२—रामः वक्तुं विवक्षति।	रामः विवक्षति।
३—कृष्णः राधां दिदृक्षति।	कृष्णः राधां दिदृक्षते।
४—धार्मिकः ईश्वरं जिज्ञासति।	धार्मिकः ईश्वरं जिज्ञासते।
५—शिष्यः गुरुं शुश्रूषति।	शिष्यः गुरुं शुश्रूषते।

(घ) शुद्ध करो :—१. भृत्यः कर्त्तुं चिकीर्षते। २. बालकः विद्यालयं जिगमिषते। ३. आचार्यः धर्मं जिज्ञासति। ४. छात्रः किञ्चिद् विवक्षते। ५. श्यामः पठनं पिपठिषति। ६. रामः गङ्गां तितीर्षते। ७. रामः वनं विदक्षति। ८. बालकः जिघत्सते। ९. शिशुः बुभूषति। १०. शिष्यः प्रष्टुं पिपृच्छिषति। ११. शिशवः रोदितुं रुरुदिषन्ति १२. चौरः धनं मोष्टुं मुमुषिर्षति। १३. गोपालः लेखं लेखितुं लिलिखिषति। १४. दिनेशः सुखम् आप्तुम् ईप्सति।

अव्यय प्रकरण

अव्यय—जो तीनों लिङ्गों, वचनों और सभी विभक्तियों में समान रहता है, बदलता नहीं है, वह अव्यय कहलाता है। जैसे, अत्र, तत्र, क्व इत्यादि।

अव्यय से युक्त विभक्तियों (सुप् इत्यादि) तथा लिङ्ग-सूचक प्रत्ययों (आप्, ङीप्) प्रत्ययों का लोप हो जाता है। 'सु' आदि विभक्तियों का लोप हो जाने पर अव्यय सुबन्त कहलाता है।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

स्वरादि तथा निपात :—

स्वरादि तथा निपात की अव्यय संज्ञा होती है। स्वरादि तथा निपात के अंतर्गत जितने अव्यय शब्द आते हैं, उनके नाम और अर्थ निम्नांकित हैं :—

स्वरादि :—

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
स्वर = स्वर्ग।	ह्यस् = बीता हुआ कल।
अन्तर् = भीतर।	श्वस् = आने वाला कल।
प्रातर् = प्रातःकाल।	दिवा = दिन।
पुनर् = फिर।	रात्रौ = रात में।
सनुतर् = छिप जाना।	सायं = सायंकाल।
उच्चैस् = ऊँचा।	चिरम् = देर।
नीचैस् = नीचा।	मनाक् = थोड़ा।
शनैस् = =धीरे।	ईषत् = थोड़ा।
ऋधक् = सत्य।	जोषम् = चुपचाप।
ऋते = विना	तुष्णीम् = चुपचाप।
युगपत् = एक बार।	बहिस् = बाहर।
आरात् = दूर, निकट।	अवस् = बाहर।

पृथक् = अलग ।
समया = समीप ।
निकषा = समीप ।
स्वयम् = अपने आप ।
वृथा = व्यर्थ ।
नक्तम् = रात ।
न = नहीं ।
नञ् = नहीं ।
हेतौ = कारण ।
इद्धा = स्पष्ट ।
श्रद्धा = स्पष्ट ।
सामि = आधा ।
वत् = समान ।
ब्राह्मणवत् = ब्राह्मण के समान ।
क्षत्रियवत् = क्षत्रिय के समान ।
सना = नित्य ।
सनत् = नित्य ।
सनात् = नित्य ।
उपांशु = एकान्त ।
क्षमा = क्षमा ।
विहायसा = आकाश ।
दोषा = रात ।
मृषा = झूठ ।
मिथ्या = झूठ ।
मुधा = व्यर्थ ।
पुरा = पहले ।
मिथो = परस्पर, साथ ।
मिथस् = साथ, परस्पर ।
प्रायस् = प्रायः ।
मुहुस् = बार-बार ।
प्रवाहुकम् = एक बार ।
प्रवाहिका = एक बार ।

अधस् = नीचे ।
उपधा = भेद ।
तिरस् = छिपना, तिरस्कार ।
अन्तरा = बीच, विना ।
अन्तरेण = विना ।
ज्योक् = शीघ्र ।
कम् = सुख ।
शम् = सुख ।
सहसा = यकायक ।
विना = विना ।
नाना = बहुत ।
स्वस्ति = कल्याण ।
स्वधा = पितरों को दान ।
अलम् = निषेध, पर्याप्त ।
वषट् = देवों को हविदान ।
श्रौषट् = देवों को देना ।
वौषट् = देवों को देना ।
अन्यत् = अन्य ।
अस्ति = है ।
आर्यहलम् = बलात् ।
अभीक्ष्णम् = निरन्तर ।
साकम् = साथ ।
सार्धम् = साथ ।
नमस् = प्रणाम ।
हिरुक् = विना ।
धिक् = धिक्कार ।
अथ = प्रारम्भ ।
अम् = हां ।
प्रताम् = दुःख ।
प्रशान् = समान ।
मा = निषेध ।
माङ् = निषेध ।

स्वरादिगण को आकृतिगण कहा गया है। इस लिये उनके अन्तर्गत अन्य अव्यय शब्द भी आते हैं। जिनके नाम और अर्थ इस प्रकार हैं :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
परम् =	परन्तु।	साम्प्रतम् =	इस समय।
साक्षात् =	सामने।	भूयः =	फिर।
प्रकामम् =	अधिक।	कामम् =	यथेच्छा।
ओम् =	हाँ, प्रारम्भ।	अवश्यम् =	अवश्य।
झगिति =	शीघ्र।	झटिति =	शीघ्र।
आशु =	शीघ्र।	मङ्क्षु =	शीघ्र।
सम्वत् =	वर्ष।	सुदि =	शुक्लपक्ष।
वदि =	कृष्णपक्ष।	वरम् =	श्रेष्ठ।
अञ्जसा =	श्रेष्ठ।	सुष्ठु =	श्रेष्ठ।

निपात :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
च =	और।	नह =	निषेध पूर्वक प्रारम्भ।
वा =	विकल्प।	हन्त =	हर्ष, विषाद।
ह =	ख्याति।	माकिः =	मना करना।
अह =	पूजा।	माकिम् =	मना करना।
एव =	ही।	नकिः =	मना करना।
एवं =	इस प्रकार।	नकिम् =	मना करना।
नूनं =	निश्चित।	माङ् =	मना करना।
शाश्वत् =	सदा।	नञ् =	मना करना।
युगपद् =	एक वार।	यावत् =	जितना।
भूयस् =	पुनः।	तावत् =	उतना।
कूपत् =	प्रश्न, प्रशंसा।	त्वै =	वितर्क।
कुवित् =	अधिक प्रशंसा।	न्वै =	वितर्क।
नेत् =	शंका, अन्यथा।	द्वै =	वितर्क।
चेत् =	यदि।	रै =	दान या आदर।
चण =	यदि।	श्रौषट् =	हविदान।
यत्र =	जहाँ।	वौषट् =	हविदान।
कच्चित् =	प्रश्न।	स्वाहा =	देवदान।

शब्द अर्थ

स्वधा = पितृ दान।
तुम् = तुम्।
खलु = निश्चित।
अतो = प्रारम्भ।
सुष्ठु = अच्छा।
आदः = प्रारम्भ, निन्दा।
इ = सम्बोधन, आश्चर्य, घृणा।
पशु = पूर्णरूप से।
यथा कथा च = जैसे-तैसे।

घ = हिंसा
विषु = बहुत।
युत् = घृणा

शब्द अर्थ

वषट् = हवि दान।
तथापि = तोभी।
किल् = निश्चित।
अथ = प्रारम्भ।
स्म = बीता हुआ समय।
अ = सम्बोधन, निषेध, स्मरण।
ई उ ऊ ए ऐ ओ औ = सम्बोधन।
शुकम् = शीघ्र।
पाट, प्याट, अंगः, है, हे, भोः, अये = सम्बोधन।

एक पदे = एक बार।
आतः = इसलिये।

चादि निपात को आकृतिगण कहा गया है। इसके अन्तर्गत और भी निपात अव्यय आते हैं, जिनके नाम और अर्थ निम्नङ्कित हैं :—

शब्द अर्थ

व = समान।
आहोस्विद् = अथवा।
हुम = भर्त्सना।
इव = समान।
असकृत् = बार-बार।
अमुत्र = पर लोक।
अह्नाय = शीघ्र।
अहो = आश्चर्य।
प्रसह्य = हठात्।
किंच = इसके अलावा।
पश्चात् = बाद में।
भृशम् = बहुत।
अतः = इसलिए।

शब्द अर्थ

दिष्ट्या = प्रसन्नता।
चटु चाटु = चापलुसी।
अद्यत्वे = आजकल।
सकृत् = एक बार।
प्रेत्य = पर लोक।
सत्वरम् = शीघ्र।
जातु = कदाचित्।
उताहो = अथवा।
किमुत = अथवा।
इति = समाप्त।
स्थाने = उचित्।
उरी, उररी = हां।
अवश्यम् = अवश्य।

पूर्वेद्युः = बीता हुआ दिन ।	अद्य = आज ।
परश्वः = परसों ।	परेद्यवि = दूसरे दिन ।
परुत् = गतवर्ष ।	परारि = गत से गत वर्ष ।
एषमः = इस वर्ष ।	

अवदत्तम् , अहंयुः, अस्तिक्षीरा, इन प्रयोगों में अव, अहम्, अस्ति, क्रमशः उपसर्ग, सुबन्त तथा तिङन्त नहीं हैं । वस्तुतः ये अव्यय पद है ।

यस्मात्सर्वा विभक्तिर्नोत्पद्यते स तद्धितान्तोऽव्ययं स्यात्—अर्थात् जिससे सब विभक्तियां उत्पन्न नहीं होती वह तद्धितान्त शब्द अव्यय होता है । कुछ तद्धितान्त अव्यय शब्द और उनके अर्थ निम्नाङ्कित है :—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इत्थम्	इस प्रकार ।	अल्पशः	थोड़ा ।
अत्र	यहां ।	पचतितराम्	अच्छा पकाता है ।
क्व	कहां ।	पंचकृत्वः	पांच बार ।
विना	विना ।	नाना	बहुत ।

जिन शब्दों के अन्त में मकारान्त और एजन्त कृत् प्रत्यय हों वे अव्यय कहलाते हैं । 'णमुल' मकारान्त कृत प्रत्यय है । अनुबन्ध लोप होने से इसका अम् शेष रह जाता है । स्मारं स्मारम् के अन्त में अम् प्रत्यय है इसलिये यह अव्यय कहलाता है ।

'से' एजन्त कृत प्रत्यय है । यह प्रत्यय जिसके अन्त में होगा वह अव्यय कहा जायगा । इसलिये जीव धातु में 'से' प्रत्यय लगाने से जीवसे शब्द बनता हैं । इसलिये यह अव्यय हुआ ।

तुमुन् (तुम्) मकारान्त कृत प्रयत्न है इसलिये पठितुम्, य खादितुम् इत्यादि शब्दों के अन्त में तुम् प्रत्यय होने के कारण अव्यय संज्ञा हुई है ।

त्वा, तोसुन्, कसुन् प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में होते हैं वे अव्यय कहलाते हैं । जैसे—गत्वा, पीत्वा पठित्वा इत्यादि ।

उत्+इण्+तोसुन् (तोस्)=उदेतोः । वि+सृप्+कसुन (अस्)=विसृपः । ये शब्द अव्यय हैं ।

अव्ययी भावश्च—अव्ययी भाव समास शब्द भी अव्यय कहलाता है । जैसे, अधिहरि, यथा शक्ति, अनुरूप इत्यादि ।

अव्यय का प्रयोग

ऋते आरात् और बहिस् के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। उदाहरण—ऋते ज्ञानाद् न मुक्तिः (ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती), आराद् वनात् मन्दिरं अस्ति (वन के निकट मन्दिर है); नगराद् बहिः उपवनम् अस्ति (नगर से बाहर उपवन है)।

अभितः, परितः समया, निकषा, हा, प्रति के योग में द्वितीया होती है। उदाहरण—लङ्कां समया निकषा हा वनं अस्ति (लङ्का के निकट वन है), ग्रामं अभितः वृक्षाः सन्ति, (ग्राम के चारों ओर वृक्ष है)। वृक्षं परितः पत्रिणः सन्ति (वृक्ष के चारों ओर पत्तियां हैं)। हा प्रियं (हाय प्रिय), रामं प्रति (राम के लिये)।

तिरस्—इसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं किया जाता। इसका प्रयोग या तो कृ धातु के साथ या धातु के साथ किया जाता है। जैसे कृष्णः वने तिरोदधाति (कृष्ण जी वन में छिपते हैं), देवदत्त शिवदत्तं तिरस्करोति (देवदत्त शिवदत्त का तिरस्कार करता है)।

अन्तरा, अन्तरेण के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। उदाहरण—रामं लक्ष्मणं च अन्तरा सीता अस्ति (राम और लक्ष्मण के बीच सीता है), विद्याम् अन्तरेण मनुष्यो न शोभते (विद्या के बिना मनुष्य शोभा नहीं देता है)।

विना के योग में द्वितीया तृतीया और पंचमी विभक्तियां होती हैं। उदाहरण—विना धनं, धनेन, धनात् सुखं न लभ्यते (विना धन के सुख नहीं होता)।

नमः, स्वस्ति, स्वधा और वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। उदाहरण—देवाय नमः (देवता को नमस्कार है)। देवाय स्वाहा (देवता के लिये हवि समर्पित है)। पितृभ्यः स्वधा (पितरों के लिये हवि का दान किया जाता है)। इन्द्राय वषट् (इन्द्र को समर्पित किया जाता है)। रामाय श्यामः अलं (राम के लिये श्याम पर्याप्त है)।

साकम् और सार्धम् के योग में तृतीया विभक्ति होती हैं। उदाहरण—पुत्रेण सह, साकं वा पिता आगतः (पुत्र के साथ पिता आया)। धिक् त्वां (तुम्हे धिक्कार है)।

उरी तथा उररी अव्यय शब्दों का प्रयोग स्वतन्त्र रुप से नहीं किया जाता। इनका प्रयोग कृ धातु के साथ किया जाता है। उदाहरण—सः उरी करोति, उररी करोति (वह स्वीकार करता है)।

अव्यय के भेद

अव्यय के चार भेद होते हैं :—१—उपसर्ग। २—क्रिया विशेषण। ३—समुच्चय बोधक। ४—मनोविकार सूचक।

उपसर्ग—जो क्रिया, संज्ञा तथा विशेषण शब्दों के आदि में जोड़े जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

धातुओं के पूर्व उपसर्ग जोड़ने से उनके अर्थ बदल जाते हैं। जैसे, प्र+हृ=प्रहार (आघात)। सं+हृ=संहार (नाश)। आ+हृ=आहार (भोजन)। वि+हृ=विहार (घूमना)। परि+हृ=परिहार (हराना)।

उपसर्ग २२ होते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं :—

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति परि, उप।

सोपसर्ग क्रियायें

भू—होना।

प्र+भू=प्रभवति—पैदा होता हैं।
परा+भू=पराभवदि—हराता है।
सम्+भू=सम्भवति—सम्भव होता है।
अनु+भू=अनुभवति—अनुभव करता है।
उत्+भू=उद्भवति—पैदा होता हैं।
अभि+भू=अभिभवति—दबा देता है।

इण्—जाना।

उप+एति=उपैति—पास जाता है।
अप+एति=अपैति—दूर होता है।
अव+एति=अवैति—जानता है।

आ+एति=ऐति—आता है।
उत्+एति=उदेति—उदित होता है।
सम्+उदेति=समुदेति—व्यक्त होता है।
अभि+प्र+एति=अभिप्रैति—तात्पर्य रखता है।
अनु+एति=अन्वेति—सम्बन्ध रखता है।
अभि+एति=अभ्येति—जानता है।
प्रति+एति=प्रत्येति—विश्वास करता है।
वि+एति=व्येति—खर्च होता है।
अभि+उत्+एति=अभ्युपैति—अङ्गीकार करता है।

दिह्—उपचय (वृद्धि होना)।

उप+दिह्=उपदेग्धि—लीपता है।
सम्+दिह्=संदेग्धि—सन्देह करता है।

सो—नाश करना।

अव+स्यति=अवस्यति—निश्चय करता है।
वि+अव+स्यति=व्यवस्यति—प्रयत्न करता है।

पद्—जाना।

प्र+पद्=प्रपद्यते—लेता है।
उप+पद्=उपपद्यते—पैदा होता है।
सम्+पद्=सम्पद्यते—सम्पन्न होता है।
आ+पद्=आपद्यते—आपत्ति होती है।
उत्+पद्=उत्पद्यते—उत्पन्न होता है।
वि+पद्=विपद्यते—मरता है।
निस्+पद्=निष्पद्यते—निष्पन्न होता है।

चि—चयन करना, चुनना।

अप+चि=अपचिनोति—घटाता है।
निस्+चि=निश्चिनोति—निश्चय करता है।
सत्+चि=सञ्चिनोति—इकट्ठा करता है।
अव+चि=अवचिनोति—नीचे से चुनता है।
उत्+चि=उच्चिनोति—ऊंचे से चुनता है।
उप+चि=उपचिनोति—बढ़ाता है।
परि+चि=परिचिणोति—पहचानता है।

स्तृ—ढकना।

वि+स्तृ=विस्तृणोति—विस्तर बिछाता है।

परि+स्तृ=परिस्तृणोति—बिछाता है।

आ+स्तृ=आस्तृणोति—आसन बिछाता है।

षद्लृ (सद्)—दुःखी होना, जाना, फटना।

प्र+सद्=प्रसीदति—प्रसन्न होता है।

नि+सद्=निषीदति—बैठता है।

वि+सद्=विषीदति—विषाद करता है।

प्रति+आ+सद्=प्रत्यासीदति—निकट आता है।

आ+सद्=आसीदति—निकट पहुँचता है।

अव+सद्=अवसीदति—दुःखी होता है।

छिद्—काटना।

परि+छिद्=परिच्छिनत्ति—नापता है।

उन्+छिद्=उच्छिनत्ति—नाश करता है।

युज्—जुड़ना, मिलना।

प्र+युज्=प्रयुङ्क्ते—प्रयोग करता है।

नि+युज्=नियुक्ति—नियुक्त करता है।

उप+युज्=उपयुङ्क्ते—उपयोग करता है।

अनु+युज्=अनुयुङ्क्ते—प्रश्न करता है।

उद्+युज्=उद्युङ्क्ते—उद्योग करता है।

वि+युज्=वियुनक्ति—अलग होता है।

अञ्ज्—स्पष्ट होना।

अभि+अञ्ज्=अभ्यनक्ति—मालिश करता है।

वि+अञ्ज्=व्यनक्ति—प्रकट करता है।

वृत्—होना।

प्र+वृत्=प्रवर्तते—प्रवृत्त होता है।

अनु+अनुवर्तते=पीछा करता है।

वि+वृत्=विवर्तते—बदलता है।

आ+वृत्=आवर्तते—आवर्तन होता है।

प्रति+आ+वृत्=प्रत्यावर्तते—लौटता है।

परा+वृत्=परावर्तते—लौटता है।

निर्+वृत्=निर्वर्तते—समाप्त करता है।
परि+वृत्=परिवर्तते—बदलता है।
नि+वृत्=निवर्तते—निवृत्त होता है।

हृ—हरना।

प्र+हृ=प्रहरति—आघात करता है।
अप+हृ=अपहरति—हरता है।
सम्+हृ=संहरति—संहार करता है।
उप+सम्+हृ=उपसंहरति—समाप्त करता है।
आ+हृ=आहरति—लाता है।
परि+हृ=परिहरति—छोड़ता है।
उत्+हृ=उद्धरति—उद्धार करता है।
प्रति+हृ=प्रतिहरति—पहरा देता है।
वि+आ+हृ=व्याहरति—बोलता है।
अनु+हृ=अनुहरति—समानता रखता है।
वि+हृ=विहरति—विहार करना है, खेलता है।
उप+हृ=उपहरति—भेंट करता है।
अभि+अव+हृ=अभ्यवहरति—खाता है।
वि+अव+हृ=व्यवहरति—व्यवहार करता है।

नी—ले जाना।

अनु+नी=अनुनयति—मनाता है।
वि+नी=विनयते—सिखाता है ऋण चुकाता है।
अप+नी=अपनयति—हटाता है।
अव+नी=अवनयति—अवनति करता है।
अभि+नी=अभिनयति—अभिनय करता है।
उप+नी=उपनयति—उपनयन संस्कार करता है, भेंट ले जाता है।
निर्+नी=निर्णयति—निर्णय करता है।
उत्+नी=उन्नयति—उन्नति करता है।
परि+नी=परिणयति—विवाह करता है।

कृ—करना।

प्र+कृ=प्रकरोति—उत्पन्न करता है, निर्माण करता है।
अप+कृ=अपकरोति—बुराई करता है।

अनु + कृ = अनु करोति – अनुकरण करता है।
वि + कृ = विकरोति – विकृत करता है।
अधि + कृ = अधिकरोति—अधिकार करता है।
प्रति + कृ = प्रतिकरोति—प्रतिकार करता है।
प्रति + उप + कृ = प्रत्युपकरोति—उपकार के बदले उपकार करता हैं।
उप + कृ = उपकरोति—उपकार करता है।
परि + ष् + कृ = परिष्करोति—शोधता है।
आ + वि + ष् + कृ = आविष्करोति—आविष्कर करता है।
अलम् + कृ = अलङ्करोति—शोभित करता है।
निर् + आ + कृ = निराकरोति—निराकरण करता है।
तिरस् + कृ = तिरस्करोति—तिरस्कार करता है।
नमस् + कृ = नमस्करोति—नमस्कार करता है।
सम् + कृ = संस्करोति—शुद्ध करता है।

ईक्ष्—देखना।

प्र + ईक्ष् = प्रेक्षते—देखता है।
अप + ईक्ष् = अपेक्षते—इच्छा करता है।
सम् + ईक्ष् = समीक्षते—समीक्षा करता है।
अव + ईक्ष् = अवेक्षते—आदर करता है।
निर् + ईक्ष् = निरीक्षते—निरीक्षण करता है।
उप + ईक्ष् = उपेक्षते—उपेक्षा करता है।
परि + ईक्ष् = परीक्षते—परीक्षा करता है।

आप्—प्राप्त करना।

प्र + आप् = प्राप्नोति—प्राप्त करता है।
अव + आप् = अवाप्नोति—प्राप्त करता है।
वि + आप् = व्याप्नोति—ढकता है।
सम् + आप् = समाप्नोति—समाप्त करता है।

गम्—जाना।

सम् + गम् = सङ्गच्छति—मेल करता है।
अनु + गम् = अनुगच्छति—पीछे चलता है।
अव + गम् = अवगच्छति—जानता है।
अधि + गम् = अधि गच्छति—पाता है।

निर्+गम्=निर्गच्छति—निकलता है।
आ+गम्=आगच्छति—आता है।
उत्+गम्=उद्गच्छति—ऊपर जाता है।
प्रति+उत्+गम्=प्रत्युद्गच्छति—स्वागत करता है।
प्रति+आ+गम्=प्रत्यागच्छति—लौटता है।
अभि+उप+गम्=अभ्युपगच्छति—स्वीकार करता है।

ज्ञा—जानना।

सम्+ज्ञा=सञ्जानीते—आशा करता है।
अप्+ज्ञा=अपजानीते—इनकार करता है।
अनु+ज्ञा=अनुजानीते—आज्ञा देता है।
अव+ज्ञा=अव जानाति—अनादर करता है।
प्रति+ज्ञा=प्रतिजानीते—प्रतिज्ञा करता है।

चर्—चलना।

प्र+चर्=प्रचरति—प्रचार होता है।
सम्+चर्=सञ्चरति—सञ्चार करता है।
अनु+चर्=अनुचरति—पीछे चलता है।
उत्+चर्=उच्चरति—उच्चारण करता है।
उप+चर्=उपचरति—सेवा करता है।
आ+चर्=आचरति—व्यवहार करता है।
परि+चर्=परिचति—सेवा करता है।

दिश्—देना।

सम्+दिश्=संदिशति—सन्देश देता है।
उप+दिश्=उपदिशति—उपदेश देता है।
आ+दिशि्=आदिशति—आदेश देता है।
निर्+दिश्=निर्दिशति—बताता है।

मन्—मानना।

अनु+मन्=अनुमन्यते—परामर्श देता है।
अव+मन्=अवमन्यते—अपमान करता है।
सम्+मन्=संमन्यते—सम्मान करता है।

वह्—ढोना, ले जाना।

प्र + वह् = प्रवहति—बहता है।
सम् + वह् = संवहति—मींजता है।
निर् + वह् = निर्वहति—निर्वाह करता है।
आ + वह् = आवहति—उत्पन्न करता है, धारण करता है।
उद् + वह् = उद्वहति—ऊपर बहता है।

सृ—जाना।

प्र + सृ = प्रसरति—फैलता है।
अप + सृ = अपसरति—हटता है।
सम् + सृ = संसरति—नष्ट होता है।
अनु + सृ = अनुसरति—अनुसरण करता है।
निः + सृ = निःसरति—निकलता है।
अभि + सृ = अभि सरति—प्रिय के पास जाता है।

ग्रह्—ग्रहण करना है।

सम् + ग्रह् = सङ्गृह्णाति संग्रह करता है।
अनु + ग्रह् = अनुगृह्णाति—अनुग्रह करता है।
वि + ग्रह् = विगृह्णाति—विग्रह करता है।
नि + ग्रह् = निगृह्णाति—वश में करता है।
प्रति + ग्रह् = प्रतिगृह्णाति—स्वीकार करता है।

लप्—बोलना

प्र + लप = प्रलपति—बकबकाता है।
अप + लप् = अपलपति—छिपाता है।
आ + लप् = आलपति—बात करता है।
सम् + लप् = संलपति बात करता है।
वि + लप् = विलपति—रोता है।

क्रिया-विशेषण

जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं, ये शब्द सर्वनाम, संख्या वाचक विशेषण, तद्धित तथा

कृदन्त शब्दों से बनते हैं। कुछ शब्दों का परिगणन अव्यय के अन्तर्गत किया गया है।

(क) अव्यय के मूल शब्द—विना, वृथा, पृथक् इत्यादि।

(ख) संख्या वाचक—एकधा, द्विधा इत्यादि।

(ग) सर्वनाम—यदा, तदा, कदा, इदानीम् इत्यादि।

(घ) तद्धित—रामवत्, कृष्णवत्, आत्मसात् इत्यादि।

(ङ) कृदन्त—भूत्वा, पठित्वा, गत्वा इत्यादि।

क्रिया विशेषण शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
हि	इसलिए।	ह्यः	बीता हुआ कल।
सर्वतः	चारों ओर।	सकृत्	एकबार।
सम्यक्	सब प्रकार।	समम्	समान।
सपदि	शीघ्र।	सद्यः	तुरन्त।
सततम्	सदा।	सहसा	यकायक।
सार्धम्	साथ।	साकम्	साथ।
श्वः	आने वाला कल।	शनैः	धीरे।
मुधा	व्यर्थ।	मृषा	झूठ।
युगपत्	एक बार।	मनाक्	थोड़ा।
भृशम्	बहुत।	भूयः	पुनः।
प्राक्	पहले।	पुरा	पहले।
प्रकामम्	यथेष्ट।	पुरस्तात्	आगे।
पर्याप्तम्	काफी।	परेद्युः	दूसरे दिन।
परश्वः	आगे आने वाला। परसों।	प्रायः	प्रायः।
नो	नहीं।	नोचेत्	नहीं तो।
नूनम्	निश्चित।	ध्रुवम्	निश्चय।
दूरम्	दूर।	तावत्	तब तक।
र्हि	तो।	तथाहि	जैसे।
चिरम्	देर तक।	अचिरम्	शीघ्र।
तदानीम्	तब।	कदानीम्	कब।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इदानीम्	अब।	तत्र	वहाँ।
अत्र	यहाँ।	यत्र	जहाँ।
क्व	कहाँ।	केवलम्	केवल।
कुत्र चित्	कहीं।	कुत्र	कहाँ।
कुतः	कहाँ से।	किमुत	और कितना।
किम्	क्यों।	किञ्च	और।
कथञ्चित्	किसी तरह।	कथञ्चन	किसी तरह।
एव	ही।	एवम्	इसी तरह।
किल	निश्चित।	इत्थम्	इस प्रकार।
इति	इस प्रकार	आरात्	निकट।
खलु	निश्चित।	क्वचित्	कहीं।
इतः	यहाँ से	ततः	वहाँ से।
असम्प्रति	अनुचित।	अलम्	पर्याप्त।
अन्यथा	नहीं तो।	अन्यच्च	और।
अद्य	आज	अतीव	बहुत।
अकस्मात्	यकायक।	अन्तरा	बीच में।
अन्तरेण	बिना।	अर्वाक्	पहले।
अधुना	अब।	अनिशम्	लगातार।
ऋते	बिना।	अपरम्	और।
अपरेद्युः	दूसरे दिन।		
प्रत्युत	बल्कि।	तुष्णीम्	चुपचाप
यत्	कि।	समन्तात्	चारों ओर।
स्वस्ति	आशीर्वाद।	स्वयम्	अपने आप।
साक्षात्	आँख के सामने।	सम्प्रति	इस समय।

समुच्चय बोधक अव्यय

जिससे किसी समुदाय का बोध होता है, उसे समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं, उदाहरण :—च, वा, तु, चेत्, किन्तु इत्यादि।

मनोविकार सूचक अव्यय

जिससे मनोविकार व्यक्त होते हैं, उसे मनोविकार सूचक अव्यय कहते हैं। उदाहरण :—हा, धिक्, हन्त, बत, आ इत्यादि।

शब्द-कोष

हरति=प्रहार करता है। परिहरति=छोड़ता है। उपहरति=भेंट करता है। अधिकरोति=अधिकार करता है। आहरति=लाता है। संस्करोति=शुद्ध करता है। संगृह्णति=संग्रह करता है। आलपति=बात करता है। निर्वहति=निर्वाह करता है। अलङ्करोति=सजाता है। तिरस्करोति=तिरस्कार करता है। सन्देग्धि=सन्देह करता है।

अभ्यास २३

(उपसर्ग, लट् , लोट्)

(क) उदाहरण :—१. वह सुख का अनुभव करता है—सः सुखम् अनुभवति। २. यहां रात्रि में पढ़ना सम्भव नहीं है—अत्र रात्रौ पठनं न सम्भवति। ३. गङ्गा हिमालय से निकलती है—गङ्गा हिमालयात् प्रभवति। ४. धर्म से दुःख दूर हो जाता है—धर्मेण दुःखम् अपैति। ५. राम श्याम के आचरण में सन्देह करता है—रामः श्यामस्य आचरणे सन्देग्धि। ६. श्रम से सब काम हो जाते हैं—श्रमेण सर्वाणि कार्याणि सम्पद्यते। ७. क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो ?—किं त्वं मां न परिचिणोषि ? ८. छात्र अध्यापक का अनुकरण करता है—छात्रः अध्यापकं अध्यापकस्य वा अनुकरोति। ६. पुत्र माता को नमस्कार करता है—पुत्रः मातरं नमस्करोति। १०. सुरेश दिनेश की बुराई करता है—सुरेशः दिनेशस्य अपकरोति। ११. सज्जन लोक का उपकार करते हैं—सज्जनाः लोकस्य उपकारं उपकुर्वन्ति। १२. वह धर्म में प्रवृत्त होता है—सः धर्मे प्रवर्तते। १३. श्याम अधर्म से निवृत्त होता है—श्यामः अधर्मात् निवर्तते। १४. धन के विना वह दुःखी होता है—धनम् अन्तरेण सः अवसीदति। १५. देवदत्त फूलों को लाता है—देवदत्तः पुष्पाणि आहरति। १६. गोविन्द उद्यान में विहार करता है—गोविन्दः उद्याने विहरति।

(ख) अनुवाद करो :—१. वह शत्रुओं पर प्रहार करता है, फूल लाता है, दुष्टों का संहार करता है। २. श्याम आलस्य को छोड़ता है और धर्म का व्यवहार करता है। ३. पर द्रव्य का अपहरण न करो। ४. वह पढ़ना समाप्त करे। ५. मुनि देवता को फूलों का उपहार देता है। ६. गुरु शिष्य का उपनयन करता है। ७. सरला शकुन्तला का अभिनय करती है। ८. बालक जल लायें। ६. रावण ने सीता का अपहरण किया। १०. सत्य

बोलो, असत्य को छोड़ दो। ११. तुम सब का उपकार करो। १२. सज्जन लोग असज्जनों का तिरस्कार करते हैं। १३. कृष्ण राज्य पर अधिकार करता है। १४. अञ्जन नेत्रों का संस्कार करता है। १५. श्याम अपना लेख समाप्त करे। १६. गुरु शिष्य को उपदेश देता है। १७. वह धन का संग्रह करता है। १८. वह श्रम करके जीवन-निर्वाह करता है। १९. कक्षा में लड़के बातचीत न करें। २०. दुर्जन सज्जनों का तिरस्कार करते हैं। २१. श्याम सभा को अलंकृत करता है। २२. वह राम का अनुकरण करता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१. सः दुःखस्य अनुभवं करोति।	सः दुःखम् अनुभवति।
२. श्यामः मोहनस्य आचरणं सन्देग्धि।	श्यामः मोहनस्य आचारणे सन्देग्धि।
३. चौरः परद्रव्यस्य अपहरति।	चौरः परद्रव्यम् अपहरति।
४. सः धर्मस्य उद्धरतु।	सः धर्मम् उद्धरतु।
५. ते सर्वेभ्यः उपकुर्वन्तु।	ते सर्वेषां उपकुर्वन्तु।
६. सः रामस्य अभिनयति।	सः रामम् अभिनयति।

(घ) शुद्ध करो :—

१—अहम् दुःखस्य परिहरिष्यामि। २—दिनेशः शत्रून् प्रहरति। ३—देवदत्तः शत्रुषु संहरति। ४—श्यामः देवेभ्यः पुष्पाणाम् उपहरति। ५—सुरेशः अर्जुनस्य अभिनयति। ६—गुरुः शिष्यस्य उपनयति। ७—सः मम न परिचिणोति। ८—रामः धर्मस्य आचरति। ९—सः आचार्ये अनुनयति। १०—शिष्य गुरुं पुष्पाण्युपहरति। ११—सः सलिलं विहरति। १२—श्यामः धर्मे उद्धरति। १३—बालकः सत्ये व्यवहरति। १४—त्वं गुरोः उपदेशे अनुसरसि। १५—छात्राः पठने समाप्नुवन्तु।

———

स्त्री प्रत्यय प्रकरण

अजाद्यतष्टाप्—अजादि और अकारान्त शब्दों में स्त्रीत्व अर्थ बताने के लिये टाप् प्रत्यय होता है। टकार और पकार का लोप होने से आ शेष रह जाता है। उदाहरण—अज+टाप् (आ)–अजा (बकरी)। एडक+टाप् (आ)–एडका (भेड़ी)। अश्व+टाप् (आ)–अश्वा (घोड़ी)। चटक+टाप् (आ)–चटका (चिड़िया)। मूषक+टाप् (आ)–मूषिका (चुहिया)। बाल+टाप् (आ)–बाला (लड़की)।

उगितश्च—जिस शब्द के अन्त में उगित प्रत्यय होते हैं उससे स्त्रीत्व अर्थ बताने के लिये ङीप् प्रत्यय होता है। पकार और ङकार का लोप होने से ई शेष रहता है। उदाहरण—भवत्+ङीप् (ई) इस स्थिति में भवत् शतृ प्रत्ययान्त शब्द है जिसमें शतृ के ऋकार का लोप हो गया है। ऋकार, उक् प्रत्याहार के अन्तर्गत आता है। यहां उक् की इत् संज्ञा हुई है। इसलिये भवत् शब्द उगित कहा जाता है। उगित होने से ङीप् प्रत्यय हुआ। 'शप्श्यनोरनित्यम्' सूत्र से पचत्+ङीप्+पचन्ती, दीव्यत्+ङीप –दीव्यन्ती रूप सिद्ध होते हैं।

टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः—अनुपसर्जन (जो विशेषण न हो) टित, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नञ्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ् और क्वरप आदि प्रत्ययान्त शब्दों से स्त्री लिङ्ग में ङीप् प्रत्यय होता है। उदाहरण—कुरुचर+ङीप्–कुरुचरी (कुरुष चरति)। यहां 'यस्येति च' से अकार का लोप हुआ है। नदट् (नद) +ङीप् (ई)–नदी। देवट् (देव)+ङीप् (ई)—देवी। सौपर्णेय+ङीप् (ई)—सौपर्णेयी। यहां पर ढक् के स्थान में एय् प्रत्यय होने से सौपर्णेय शब्द बना। इसलिये सौपर्णेय शब्द ढ प्रत्ययान्त शब्द माना जाता है। इसी प्रकार इन्द्र+ङीप् (ई)–ऐन्द्री (इन्द्रो देवता अस्याः)। उत्स+ङीप् (ई)—औत्सी—(उत्सस्य इयम्)। ऊरुद्वयस+ङीप् (ई)–ऊरुद्वयसी। ऊरुदघ्न+ङीप् (ई)–ऊरुदघ्नि। ऊरुमात्र+ङीप् (ई)–ऊरुमात्री (ऊरुप्रमाणमस्याः) आदि रूप सिद्ध होंगे। पञ्चतय+ङीप् (ई)—पञ्चतयी (पञ्च अवयवा

अस्याः)। आक्षिक+ङीप् (ई)—आक्षिकी (अक्षैर्दीव्यति, जूओं से खेलने वाली)। प्रास्थिक+ङीप् (ई)—प्रास्थिकी (प्रस्थेन क्रीता)। लावणिक+ङीप् (ई)–लावणिकी (लवणंपण्यमस्याः) लवण बेचने वाली)। यादृश्+ङीप् (ई)—यादृशी। इत्वर+ङीप् (ई)—इत्वरी (व्यभिचारिणी)। आदि रूप सिद्ध होते हैं।

षिद्गौरादिभ्यश्च—षित् तथा गौर शब्दों से ङीप् प्रत्यय होता है। ङीप् का ई बच रहता है। उदाहरण—गार्ग्यायण+ङीप् (ई)—गार्ग्यायणी (गर्गस्य अपत्यं स्त्री)। नर्तक+ङीप् (ई)–नर्तकी। गौर+ङीप् (ई)—गौरी।

प्रत्ययस्थात्कात् पूर्वस्यात इदाप्यसुपः—प्रत्यय में स्थित ककार से पूर्व अकार को आप् परे होने से इकार होता है, किन्तु सुप् से पर आप् प्रत्यय न हो। उदाहरण :—सर्विका—सर्व शब्द से अकच् प्रत्यय होने पर, सर्वक बना। 'अजाद्यतष्टाप्' से आप् होने पर 'सर्वका' 'यस्येति च' से अन्तिम अकार-लोप से 'सर्वका' बना। 'प्रत्ययस्थात्' सूत्र से ककार के पूर्व अकार को इकार होने से रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार 'कारिका' शब्द भी सिद्ध होता है।

इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमाऽरण्ययवयवनमातुलाऽऽचार्याणामानुक्—इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, हिम, अरण्य यव, यवन, मातुल तथा आचार्य शब्दों से ङीप् प्रत्यय और आनुक् का आगम होता है। उदाहरण—इन्द्र+आन्+ई=इन्द्राणी। वरुण+आन्+ई=वरुणानी। इसी प्रकार भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, हिमानी, यवानी, यवनानी, मातुलानी, उपाध्यायानी शब्द सिद्ध होते हैं।

ऊङुतः—जिस शब्द के उपधा में यकार न हो तथा जिसके अन्त में उकार हो ऐसे मनुष्यजाति वाचक शब्द से स्त्रीलिङ्ग में 'ऊङ् प्रत्यय होता है। ङकार का लोप होने से ऊ बच जाता है।

श्वशुरस्योकाराऽकारलोपश्च—श्वशुर शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ऊङ् प्रत्यय होता है। शकारगत उकार और रकारगत अकार का लोप होता है। उदाहरण :—श्वशुर+ऊङ् (ऊ)=श्वश्रूः।

यूनस्तिः—स्त्रीलिङ्ग में 'युवन्' शब्द से 'ति' प्रत्यय होता है। जैसे, युवन्+ति=युवतिः। यहां 'स्वादिषु' से पद संज्ञा, 'न लोपः' से नकार लोप होने से रूप सिद्ध हुआ।

ऋन्नेभ्योङीप्—ऋकारान्त तथा नकारान्त शब्दों से ङीप् (ई) स्त्री प्रत्यय होगा। जैसे, हर्तृ—हर्त्री। यशस्विन्—यशस्विनी। इत्यादि।

पुंयोगादाख्यायाम्—जब पुरुष वाचक शब्द पुरुष योग से स्त्री लिङ्ग में प्रयुक्त होता है तो उससे ङीष् (ई) प्रत्यय होता है। जैसे, गोपस्य स्त्री गोपी। सूर्यस्य स्त्री देवता सूर्या।

पालकान्तान्न—पालकान्त पुरुष वाचक शब्द से स्त्री लिङ्ग में ङीष् (ई) नहीं होता। जैसे, गोपालिका, अश्व पालिका।

जातेरस्त्री विषयाद्योपधात्—जो शब्द नित्य स्त्री लिङ्ग नहीं होते तथा जिनके उपधा में यकार नहीं होता, ऐसे जाति वाचक शब्दों से ङीष् (ई) प्रत्यय होता है। जैसे, घटी, वृषली, औपगवी इत्यादि।

वोतो गुणवचनात्—उकारान्त गुणवाचक शब्द से विकल्प से ङीष् (ई) प्रत्यय होता है। जैसे, गुरुः—गुर्वी। मृदुः—मृद्वी। लघुः—लघ्वी। साधुः—साध्वी। इत्यादि।

बह्वादिभ्यश्च—बह्वादि गण में पठित 'बहु' पद्धति, अञ्चति, अहि, कपि, यष्टि, मुनि शब्दों से विकल्प से ङीष् (ई) प्रत्यय होता है। जैसे, बह्वी, बहुः, रात्री, रात्रिः, भूमिः भूमी, इत्यादि।

स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्—असंयोग उपधा से युक्त तथा उपसर्जन स्वाङ्ग वाचक शब्द से स्त्री लिङ्ग में विकल्प से ङीष् होता है। जैसे, अति केशी, अति केशा। चन्द्र मुखी, चन्द्रमुखा।

वयसि प्रथमे—प्रथम अवस्था बोधक शब्दों से ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। जैसे, कुमारः—कुमारी इत्यादि।

वयस्यचरम इति वाच्यम्—अन्तिम अवस्था बोधक शब्दों से ङीप् (ई) नहीं होता। जैसे, वृद्धा इत्यादि।

शब्द-कोष

स्वसा – बहन। गायन्ती = गाती हुई। नृत्यन्ती = नाचती हुई। मातुलः = मामा। मातुलानी = मामी। भवानी = पार्वती। इन्द्राणी = इन्द्र की स्त्री। श्वश्रूः = सास। श्वशुरः = ससुर। विहरति = विहार करता है। सेवते = सेवा करता है।

अभ्यास २४

(क) उदाहरण—१—राम इस पाठशाला की मनोहारिणी शोभा को देखता है—रामः अस्याः पाठशालायाः मनोहारिणीं शोभां पश्यति। २—उद्यान में सुन्दर युवतियां विहार करती हैं—उद्याने सुन्दर्यः युवतयः विहरन्ति। ३—इन्द्राणी इन्द्र की सेवा करती है—इन्द्राणी इन्द्रं सेवते। ४—हिमालय पर्वत पर बहुत से तपस्वी तथा बहुत-सी तपस्विनियां रहती हैं—हिमालय पर्वते बहवः तपस्विनः बह्वयः तपस्विन्यश्च निवसन्ति। ५—चुहिया बिडाल से डरती है—मूषिका मार्जार्याः बिभेति। ६—प्रेमलता लिखती, गौरी पढ़ती तथा बालिका सोती है—प्रेमलता लिखति, गौरी पठति बालिका शेते च। ७—दुर्गा देवी जगत् की अधिष्ठात्री हैं—दुर्गा देवी जगतः अधिष्ठात्री अस्ति। ८—मेरी माता आज वाराणसी जायेंगी—मम माता अद्य वाराणसीं गमिष्यति। ९—मेरी बहन आज मेरी पत्नी के साथ नगर में जायगी—मम स्वसा अद्य मम पत्न्या सह नगरं गमिष्यति। १०—जहाँ ब्राह्मणियां रहती हैं, वहाँ क्षत्रिय स्त्रियाँ रहती हैं—यत्र ब्राह्मण्यः सन्ति तत्र क्षत्रियाः नार्यः सन्ति। ११—वहाँ वैश्य स्त्रियाँ हैं और यहाँ शूद्र स्त्रियाँ हैं—तत्र वैश्याः स्त्रियः अत्र च शूद्राः स्त्रियः वर्तन्ते।

(ख) अनुवाद करो :—१. ब्राह्मणी को गाय, क्षत्रिय स्त्री को धन वैश्य स्त्री को वस्त्र तथा शूद्र स्त्री को अन्न दो। २. कुमारी तथा किशोरी स्त्रियाँ मनोहारिणी होती हैं। ३. सिंही तथा व्याघ्री को देखकर मृगी दूर भाग जाती है। ४. विदुषियों का आदर सर्वत्र होता है। तरुणी स्त्रियों की वाणी मधुर है। ६. आचार्यानी के साथ आचार्य विद्यालय में जायेंगे। ७. इन्द्राणी के साथ इन्द्र, भवानी के साथ शिवजी विहार करते हैं। ८. कविता करती हुई कवयित्री को रानी ने देखा। ९. यहाँ की नारियाँ तपस्विनियों की भाँति रहती हैं। १०. गाती हुई तथा नाचती हुई गोपियाँ शोभा देती हैं। ११. वीणावादिनी सरस्वती हमें बुद्धि प्रदान

करें। १२. मामी मामा के साथ, दादी, दादा के साथ, नानी नाना के साथ प्रातः काल उद्यान में घूमने जाते हैं। १३. नववधू सास की सेवा करती है।

(घ) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—बालिकी, अश्वपालिकी।	बालिका, अश्वपालिका।
२—मनोहारिणा, कुमारा।	मनोहारिणी कुमारी।
३—मृडा, अरण्या।	मृडानी, अरण्यानी।
४—यशस्त्रा, तपस्त्रा।	यशस्विनी, तपस्विनी।
५—गायका, नायका।	गायिका, नायिका।

(घ) शुद्ध करो :—

१—ब्राह्मणी, वैश्यी क्षत्रियी नार्यः गायन्ति। २—विदुषाः स्त्रियः समजे आद्रियन्ते ३—रुद्रा रुद्रेण सह, इन्द्रा इन्द्रेण सह, भवा शङ्करेण सह विहरन्ति। ४—धावन्तां बालिकां पश्य। ५—श्वशुरी श्वसुरेण सह गच्छति। ६—गोपालिकीं पश्य। ७—साध्वा सीता रामेण सह वनं आगच्छत्। ८—अहम् एकाम् अतिकेशिनीं नारीं अपश्यम्। ९—एका वृद्धी नारी नवागतां वधूं पश्यति। १०—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसा। ११—गङ्गायाः तटा निर्मला अस्ति। १२—भगवतः कृपा सुखप्रदी भवति। १३—इमां शिखिकीं नारीं पश्य। १४—सरला बुद्धिमता विद्वानी च अस्ति। १५—अयं तनुः कोमलः अस्ति। १६—इन्दोः किरणस्यश्वेतिमां पश्य।

समास प्रकरण

अव्ययी भाव

विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अभाव, ध्वंस, अनुचित, शब्द का प्रकाश, पश्चात् , यथा, क्रमशः, एकबार, तुल्यता, सम्पत्ति, सम्पूर्णता, अन्त इन अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ नित्य समास होता है।

नित्य समास—लौकिक विग्रह में जहाँ समास के सभी अवयव विग्रह में न आयें, वहाँ नित्य समास होता है। जैसे, 'अधिहरि' का लौकिक विग्रह है :—'हरौ इति।' इस विग्रह में 'हरि' शब्द तो आया है किन्तु 'अधि' शब्द नहीं आया। अतः विग्रह में सभी अवयव नहीं आये। इसलिए यहाँ नित्य समास है।

अलौकिक विग्रह—जहाँ केवल विभक्तियों के द्वारा विग्रह किया जाता है, वहाँ अलौकिक विग्रह माना जाता है। जैसे, 'हरि ङि अधि'।

अधिहरि—(हरौ इति) यहाँ 'अधि' शब्द सप्तमी विभक्ति का वाचक है। अतः यहाँ विभक्त्यर्थ में 'अधि' अव्यय का 'हरि' सुबन्त के साथ नित्य समास हुआ है। 'अव्ययी भावश्च' से अव्ययः संज्ञा, 'अव्यायदापसुपः' से समस्त पद के अन्तिम विभक्ति का लोप होने से रूप सिद्ध हुआ।

प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्—समास विधायक सूत्र में जो पद प्रथमान्त होता है, वह उपसर्जन कहलाता है।

उपसर्जनं पूर्वम्—समास में जो उपसर्जन होता है, उसका प्रयोग पहले होता है। 'हरि ङि अधि' इस अलौकिक विग्रह में 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा हुई है। इसीलिए उसका प्रयोग 'हरि' के पहले होने से 'अधिहरि' समास हुआ। अधिगोपम्—गाः पातीति गोपाः, तस्मिन्निति अधिगोपम् इति (लौकिक विग्रह)। गोपाः ङि अधि इति (अलौकिक विग्रह)। यहाँ विभक्ति अर्थ में समास हुआ। 'अधि' सप्तमी विभक्ति का अर्थ है।

उपकृष्णम् , उपकृष्णेन—('कृष्णस्य समीपम्') इस विग्रह वाक्य में समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय शब्द का 'कृष्ण' सुबन्त के साथ

समास हुआ। 'प्रथमा निर्दिष्टम्' सूत्र से 'उप' का पूर्व प्रयोग हुआ। तृतीया विभक्ति में 'अम्' भाव विकल्प से होने पर उपकृष्णम्, उपकृष्णेन रूप सिद्ध हुए।

सुमद्रम्—(मद्राणां समृद्धिः)। समृद्धि अर्थ में वर्तमान 'सु' अव्यय पद का 'मद्राणां' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

दुर्यवनम्—(यवनानां व्यृद्धि; नाशः)। व्यृद्धि अर्थ वाले 'दुर्' अव्यय पद का 'यवनानाम्' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

निर्मक्षिकम्—(मक्षिकाणामभावः) अभावार्थक 'निर्' अव्यय पद का 'मक्षिकाणाम्' सुबन्त के साथ समास हुआ है। 'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक होने पर 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से ह्रस्व होने पर 'निर्मक्षिका' से निर्मक्षिक होने पर, अम् भाव होने से 'निर्मक्षिकम्' सिद्ध होता है।

अतिहिमम् (हिमस्य अत्ययः, नाशः) अव्यय अर्थ में वर्तमान 'अति' अव्यय पद का 'हिमम्' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

अतिनिद्रम्—(निद्रासम्प्रति न युज्यते इति, इस समय निद्रा अनुचित है)। असम्प्रति (अनुचित) अर्थ में वर्तमान 'अति' अव्यय पद का 'निद्रा' सुबन्त के साथ समास हुआ है। नपुंसक होने से निद्रा के आकार का ह्रस्व अकार होने से शब्द सिद्ध हुआ।

इति हरि—(हरि शब्दस्य प्रकाशः) प्रकाशार्थक 'इति' अव्यय पद का 'हरेः' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

अनुविष्णु—(विष्णोः पश्चात्) पश्चात् अर्थ वाले पश्चात अव्यय का विष्णोः सुबन्त के साथ समास हुआ है।

नोट—योग्यता, वोप्सा, (वार-बार), अनतिवृत्ति (अतिक्रमण न होना), सादृश्य ये यथा शब्द के अर्थ होते हैं।

अनुरुपम्—(रुपस्य योग्यम्)। योग्यता अर्थ में वर्तमान 'अनु' अव्यय का रुपम् सुबन्त के साथ समास हुआ है।

प्रत्यर्थम्—(अर्थम् अर्थं प्रति) वीप्सा (बारबार) अर्थ में वर्तमान 'प्रति' अव्यय पद का अर्थम् सुबन्त के साथ समास हुआ है। यथा शक्ति—(शक्तिमनतिक्रम्य)। अनतिक्रमण अर्थ में वर्तमान 'यथा' अव्यय पद का 'शक्ति' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

अव्ययी भावेचाऽकाले—अव्ययी भाव समास में काल अर्थ को छोड़कर सह को 'स' हो जाता है।

सहरि—(हरेः सादृश्यम्)। सादृश्य अर्थ वाले 'सह' अव्यय का 'हरेः' सुबन्त के साथ समास हुआ है। यहां सह के स्थान में 'स' आदेश हुआ है।

अनुज्येष्ठम्—(ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण इति)। आनुपूर्व्य अर्थ में वर्तमान अनु अव्यय पद का ज्येष्ठस्य सुबन्त के साथ समास हुआ है।

सचक्रम्—(चक्रेण युगपत्) युगपत् अर्थ में वर्तमान 'सह' का चक्रेण सुबन्त के साथ समास हुआ है।

ससखि—(सख्या सदृशः) सादृश्यार्थक 'सह' पद का सख्या सुबन्त के साथ समास हुआ है। यहां 'सह' को 'स' आदेश हुआ है और सुप् का लुक् हुआ है।

सक्षत्रम्—(क्षत्राणां सम्पत्तिः) सम्पत्यर्थक 'सह' का क्षत्राणां के साथ समास हुआ है। सह के स्थान में 'स' हो गया है।

सतृणम्—(तृणमपि अपरित्यज्य) साकल्यार्थक 'सह' पद का तृणम् के साथ समास हुआ। 'सह' के स्थान में 'स' हो गया है।

साग्नि—(अग्नि ग्रन्थ पर्यन्तम् अधीते इति)। अन्त अर्थ में वर्तमान 'सह' का अग्निना सुबन्त के साथ समास हुआ है।

नदीभिश्च—नदी वाचक शब्द के साथ संख्या वाचक शब्द का समास होता है और समस्त पद का अर्थ समाहार होता है।

पञ्चगङ्गम्—(पञ्चानाम् गङ्गानां समाहारः)। पञ्चन् संख्या वाचक शब्द का नदी वाचक गङ्गा शब्द के साथ समास हुआ है। संख्या वाचक शब्द का पूर्व प्रयोग, सुप् का लोप, पञ्चन् के नकार का लोप, प्रातिपदिक को ह्रस्व होने पर अम् भाव होने से पञ्चगङ्गम् शब्द सिद्ध हुआ।

द्वियमुनम्—(द्वयोर्यमुनयोः समाहारः) यह पञ्चगङ्गम् की भांति सिद्ध होता है।

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः—अव्ययी भाव समास में शरद् आदि शब्दों से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टकार का लोप होने से 'अ' शेष रह जाता है।

उपशरदम्—(शरदः समीपम्) ।समीपार्थक उप अव्यय पद का 'शरदः' सुबन्त के साथ समास हुआ है। उपशरद् बनने पर समासान्त टच् प्रत्यय का अकार मिल जाने से 'उपशरद' बन जाता है। सुप् के स्थान में अम् आदेश हो जाने से उपशरदम् सिद्ध हुआ।

प्रति विपाशम्—(विपाशाया अभिमुखम्)। अभिमुख अर्थ में वर्तमान प्रति अव्यय शब्द का 'विपाशायाः' सुबन्त के साथ समास हुआ है। यहां समासान्त टच् प्रत्यय होकर शब्द सिद्ध होता है।

उपजरसम्—(जरायाः समीपम्)। समीपार्थक 'उप' का 'जरायाः' सुबन्त के साथ समास हुआ है। जरा को जरस् आदेश टच् प्रत्यय अम् भाव होने पर उक्त रूप सिद्ध होता है।

अनश्च—जिन शब्दों के अन्त में अन् हो ऐसे अव्ययीभाव से समासान्त टच् प्रत्यय होता है।

नस्तद्धिते—भ संज्ञक नकारान्त टि का लोप होता है, यदि उससे परे तद्धित प्रत्यय हो।

उपराजम्—(राज्ञः समीपम्)। समीपार्थक 'उप' अव्यय का 'राज्ञः' सुबन्त के साथ समास हुआ है। उप का पूर्व प्रयोग दोनों पदों के बीच के सुप् का लोप, टच् प्रत्यय, टि (अन्) का लोप, अम् भाव होने से रूप सिद्ध होता है।

अध्यात्मम्—(आत्मनि) अधिकरण अर्थ में वर्तमान अधि अव्यय पद का आत्मनि सुबन्त के साथ समास हुआ है। अधि का पूर्व प्रयोग, सुप् का लुक्, टच् प्रत्यय टि का लोप, अम् भाव होने से रूप सिद्ध होता है।

नपुंसकादन्यतरस्याम्—जिस नपुंसक लिङ्ग शब्द के अन्त में अन् होता है, ऐसे अव्ययीभाव से विकल्प से टच् प्रत्यय होता है।

उपचर्मम्, उपचर्म—(चर्मणः समीपम्) समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय पद 'चर्मणः' सुबन्त पद के साथ समास हुआ है। उप का पूर्व निपात, सुप् का लोप, टच् प्रत्यय, टि का लोप, अम् भाव होने पर उपचर्मम् तथा अभाव पक्ष में उपचर्म रूप सिद्ध होता है।

शब्द कोष

उपगङ्गम् = गङ्गा के निकट। निर्विघ्नं = विघ्न रहित। समाप्नोति = समाप्त करता है। यथाकामम् = इच्छानुसार। वहिर्ग्रामम् = गाँव के बाहर। प्रत्यावर्तते = लौटता है। आसमुद्रम् = समुद्रपर्यन्त।

अभ्यास २५

(अव्ययी भाव)

(क) उदाहरण—१—राम गङ्गा के निकट निवास करता है—रामः उपगङ्गं निवसति। २—मैं अपनी शक्ति के अनुसार प्रयत्न करूँगा—अहम् यथाशक्ति प्रयत्नं करिष्यामि। ३—मंत्री राजा के पास जाये—मंत्री उपराजं गच्छतु। ४—तुम अपनी इच्छा के अनुसार भोजन करो—त्वं यथाकामं भोजनं कुरु। ५—तुम प्रतिकूल आचरण क्यों करते हो—त्वं प्रतिकूलं कथम् आचरसि ? ६—उसने अपना काम निर्विघ्न समाप्त कर लिया—सः निर्विघ्नं स्वकार्यं समाप्नोत्। ७—वह अबला निर्जन वन में रोने लगी—सा अबला निर्जने वने रोदितुमारभत। ८—राम अपने को निर्द्वन्द्व मानता था—रामः आत्मानं निर्द्वन्द्वम् अमन्यत्। ९—परिश्रम से अनुकूल फल प्राप्त होता है—परिश्रमेण अनुकूलं फलं प्राप्यते। १०—वह सदा दूसरों के प्रतिकूल आचरण करता है—सः सदा परेषां प्रतिकूलम् आचरति। ११—राजा दशरथ समुद्र पर्यन्त राज्य करते थे—राजा दशरथः आसमुद्रं राज्यमकरोत्।

(ख) अनुवाद करोः—(अव्ययी भाव समास के आधार पर)

१—देवदत्त नाम का एक ब्राह्मण गङ्गा के निकट निवास करता था। २—वह सपरिवार मेरे यहां आया। ३—लड़के अपनी इच्छा के अनुसार खेलें। ४—तुम्हें गुरु के अनकूल आचरण करना चाहिए। ५—राम विभीषण के अनकूल तथा रावण के प्रतिकूल थे। ६—बीज से वृक्ष उत्पन्न होते हैं। ७—तब वह गाँव के बाहर चला गया। ८—श्रम से सब काम हो जाता है। ९—तुम इतने समय तक कहां थे ? १०—जब तक मैं लौटकर आता हूँ, तब तक तुम यहां रहो। ११—जितने लोग राजा के साथ जायंगे, उतने लोग धन पायेंगे। १२—भक्ति से निर्मल ज्ञान उत्पन्न होता है। १३—राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वन से निर्विघ्न लौट आये। १४—तुम वस्त्र को यथा शक्ति धुलो। १५—श्याम सब के अनुकूल है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१—निर्मले व्योमे चन्द्रः शोभते ।	निर्मले व्योम्नि चन्द्रः शोभते ।
२—पूर्वस्यां सीमायां समुद्रः अस्ति ।	पूर्वस्मिन् सीम्नि सागरः अस्ति ।
३—सः यथा शक्त्या यतते ।	सः यथाशक्ति यतते ।
४—सः यथा कामेन उपनदि विहरति ।	सः यथाकामम् उपनदि विहरति ।
५—यावन्तः स्त्रियः तावत्यः मनुष्याः ।	यावत्यः स्त्रियः तावन्तः मनुष्याः ।
६—सः रात्रौ निर्विघ्ने न पठति ।	सः रात्रौ निर्विघ्नं पठति ।

(घ) शुद्ध करो :—

१—गोपालिकी धावति । २—बालकाः यथाकामेन विहरन्ति । ३—श्यामः त्वयि प्रतिकूलः अस्ति । ४—गोपालः अस्मासु अनुकूलः अस्ति । ५—अत्र बह्वयः पुरुषाः विहरन्ति । ६—तत्र बह्वः नार्यः गच्छन्ति । ७—सा आत्मानं बुद्धिमताम् अमन्यत् । ८—तत्र यावत्यः पुरुषाः सन्ति तावन्तः स्त्रियश्च सन्ति । ९—वयं श्वसीं, श्वसुरीं, मातुलां च पश्यामः । १०—अयं देवता दयालुः इयं गौश्च साध्वी अस्ति । ११—मह्यं निर्मलीं भक्तिं देहि । १२—भारतीया वसुन्धरी सुजली सुफली च अस्ति । १३—श्यामः ससुखेन निवसति ।

तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, वह तत्पुरुष समास कहलाता है। तत्पुरुष समास के विग्रह वाक्य में पूर्व पद प्रथमा विभक्ति को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों में होता है, उत्तर पद सर्वप्रथम प्रथमान्त रहता है और बाद में विवक्षित अर्थ के अनुसार उसमें अन्यान्य विभक्तियों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ :—'राज पुरुषः'—इस समास का विग्रह वाक्य है 'राज्ञः पुरुषः'। इसमें पूर्वपद है 'राज्ञः' उत्तर पद है 'पुरुषः'। पूर्व पद षष्ठयन्त है और उत्तर पद प्रथमान्त है। समास हो जाने पर उत्तर पद को विवक्षा के अनुसार किसी भी विभक्ति में प्रयुक्त कर सकते हैं, जैसे, 'राजपुरुषम्', 'राजपुरुषेण' राजपुरुषाय इत्यादि। इसका पूर्व पद षष्ठयन्त था, इसलिए यह षष्ठी तत्पुरुष है।

(क) श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त तथा आपन्न आदि सुबन्तों के साथ द्वितीयान्त पद का समास होता है और वह द्वितीया तत्पुरुष समास कहलाता है :—

कृष्णश्रित :—(कृष्णं श्रितः)। यहां पर 'श्रितः' सुबन्त के साथ द्वितीयान्त पद 'कृष्णम्' का तत्पुरुष समास हुआ है।

(ख) तृतीयान्तार्थ कृत गुण वाचक शब्द के साथ तृतीयान्त पद का तत्पुरुष समास होता है। जैसे, शङ्कुलाखण्डः (शङ्कुलया खण्डः)। यहां तृतीयान्तार्थ कृत गुण वाचक शब्द है 'खण्डः' और तृतीयान्त पद है 'शङ्कुलया'। समास होने पर 'शङ्कुलाखण्डः' रूप बनता है। इसी प्रकार धान्याऽर्थः (धान्येन अर्थः) तृतीया तत्पुरुष समास है।

(ग) कर्त्ता और करण में प्रयुक्त तृतीयान्त पद के कृदन्त के साथ तत्पुरुष समास बहुलता से होता है। जैसे, हरित्रातः (हरिणा त्रातः)। यहां तृतीयान्त पद है 'हरिणा' और कृदन्त है 'त्रात'। इसी प्रकार नखभिन्नः (नखैर्भिन्नः)। तृतीया तत्पुरुष समास हुआ।

(घ) विग्रह वाक्य में चतुर्थ्यन्त पद का जो अर्थ होता है, उसके लिए जो पदार्थ होता है, उस पदार्थ के वाचक शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यह चतुर्थी तत्पुरुष कहलाता है। उदाहरण :—यूपदारुः (यूपाय दारुः)—यहां पर विग्रह वाक्य में चतुर्थ्यन्त पद है 'यूपाय'। इसका अर्थ है 'यूप' (दो बैलों को गले में पहनाया जाने वाला जुआ)। इस के लिए पदार्थ है 'दारु' (एक विशेष प्रकार की लकड़ी, जो जुआ बनाने के काम में आती है)। अतः यहां चतुर्थी तत्पुरुष समास होकर 'यूपाय दारुः' सिद्ध हुआ।

(ङ) अर्थ, बलि, हित, सुख, तथा रक्षित आदि पदों के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यह चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है। उदाहरण :—द्विजार्थः (द्विजाय अयम्), द्विजार्था (द्विजाय इयम्), द्विजार्थम् (द्विजाय इदम्), भूत बलिः (भूतेभ्यो बलिः), गोहितम् (गोभ्यो हितम्) गोसुखम् (गोभ्यः सुखम्), गोरक्षितम् (गोभ्यो रक्षितम्)।

(च) भय वाचक शब्द के साथ पञ्चम्यन्त पद का पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है, जैसे, चौरभयम् (चौराद् भयम्)।

(छ) जिन सुबन्त पदों के अन्त में क्त प्रत्यय होता है, उनके साथ स्तोक (थोड़ा), अन्तिक (निकट) और दूर वाचक पद और कृच्छ्र (दुःख) इन सुबन्त पदों का समास होता है।

(ज) उपर्युक्त स्तोक आदि शब्दों से उत्तर पद परे होने पर पञ्चमी विभक्ति का 'लुक्' नहीं होता। जैसे, स्तोकान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, अभ्यासादागतः, दूरादागतः, कृच्छादागतः।

(झ) षष्ठी तत्पुरुष समास में षष्ठ्यन्त पद का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे, राजपुरुषः (राज्ञः पुरुषः)।

(ञ) पूर्व, पर, अधर, और उत्तर इन अवयव वाचक पदों का अवयवी वाचक पदों के साथ समास होता है यदि अवयवी एक वचन में हो। जैसे, पूर्वकायः—(पूर्वं कायस्य) अपरकायः—(अपरं कास्य)।

(ट) नित्य नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान 'अर्ध' शब्द का सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है। जैसे, 'अर्धपिप्पली'—(अर्धंपिप्पल्याः)।

(ठ) सप्तमी तत्पुरुष में शौण्ड आदि पदों के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। उदाहरण :—अक्षशौण्डः—(अक्षेषु शौण्डः, द्यूतक्रीडायां निपुणः)।

(ड) दिग्वाचक, और संख्या वाचक पदों का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे, पूर्वेषुकामशमी। (पूर्वः इषुकामशमी)। सप्तर्षयः—(सप्त च ते वे ऋषयः)।

(ढ) समानाधिकरण तत्पुरुष को 'कर्मधारय' समास कहते हैं। संख्यापूर्व समास को 'द्विगु' समास कहते हैं। तत्पुरुष के दो भेद होते हैं। १—समानाधिकारण तत्पुरुष। २—व्यधिकरण तत्पुरुष। समानाधिकरण तत्पुरुष—जिस समस्त पद के विग्रह वाक्य में पूर्व पद और उत्तर पद की दोनों विभक्तियाँ एक ही होती हैं वह समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय कहलाता है। जैसे कृष्ण सर्पः (कृष्ण श्चासौ सर्पः)—व्यधिकरण। तत्पुरुष—जिस समस्त पद के विग्रह वाक्य में पूर्व पद और उत्तर पद विभक्तियों में साम्य न हो वह व्याधकरण तत्पुरुष कहलाता है। जैसे, राजपुरुषः—(राज्ञः पुरुषः)।

(ण) समानाधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत कर्मधारय' और द्विगु, समास आते हैं। इनके पूर्व और उत्तर दोनों पद प्रथमान्त होते हैं।

(त) व्यधिकरण तत्पुरुष में पूर्व पद प्रथमा को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों (द्वितीया से सप्तमी तक) में प्रयुक्त होता है। उत्तर पद प्रायः प्रथमान्त होता है।

(थ) 'द्विगु' समास का अर्थ 'समाहार' होता है और वह सदा एक वचनान्त होता है। जैसे, पञ्चगवम्—(पञ्चानां गवांसमाहर:)। यहां 'द्विगु' समास है।

(द) विशेषण पद का विशेष्य पद के साथ बहुलता से समास होता है। जैसे, नीलोत्पलम्—(नीलम् उत्पलम्)। कृष्णसर्प:—(कृष्ण: सर्प:)।

(ध) उपमान वाचक पद का सामान्य धर्मवाचक के साथ समास होता है। जैसे, घनश्याम:—(घन इव श्याम:)। यहाँ विग्रह वाक्य में उपमान वाचक पद है—'घन', तथा सामान्यधर्म वाचक पद है—'श्याम'।

(न) 'शाकपार्थिव' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए उत्तर पद का लोप किया जाता है, जैसे, शाकपार्थिव:—(शाक प्रिय: पार्थिव:)। देवब्राह्मण:—(देव पूजको ब्राह्मण:)।

(प) निषेधार्थक 'नञ्' का सुबन्त के साथ समास होता है। उत्तर पद परे होने पर 'नञ्' के नकार का लोप हो जाता है। जहां 'नञ्' के साथ समास होता है। वहां नञ् तत्पुरुष होता है। जैसे, अब्राह्मण: (न ब्राह्मण:)।

(फ) 'नञ्' के नकार का लोप हो जाने पर उससे परे 'अजादि' उत्तर पद को नुट् का आगम होता है। उकार-टकार का लोप हो जाने से केवल न् शेष रह जाता है। उदाहरण :—अनश्व: (न अश्व:)। नञ् के नकार का लोप होने से अश्व: बना। उत्तर पद 'अश्व' है, जो अजादि है अर्थात् जिसके आदि में अच् (स्वर) अकार है। इसलिए उसे नुट् (न्) का आगम होने से अ न् अवश्व:, अश्व:' रूप सिद्ध हुआ।

(ब) 'कु' शब्द, गति संज्ञक शब्द, तथा 'प्र' आदि शब्दों का सुबन्त के साथ समास होता है। जैसे, कुपुरुष: (कुत्सित: पुरुष:)।

(भ) ऊरी आदि शब्द, तथा, जिन शब्दों के अन्त में 'च्वि' और 'डाच्' प्रत्यय हों, उनकी क्रिया के योग में गति संज्ञा होती है। गति संज्ञक होने से इन शब्दों का सुबन्त के साथ समास होता है। उदाहरण:—ऊरीकृत्य (ऊरी कृत्वा)। शुक्लीकृत्य (अशुक्लं शुक्लं कृत्वा)। पटपटाकृत्य (पटत्, पटत् इति कृत्वा)।

सुपुरुष: (शोभन: पुरुष:)। यहां प्रादि 'सु' का 'पुरुष:' सुबन्त के साथ समास हुआ है।

(म) गत्यर्थक 'प्र' आदि का प्रथमान्त सुबन्त के साथ समास होता है। प्राचार्यः (प्रगतः आचार्यः)।

एकविभक्तिचाऽपूर्वविपाते—विग्रह वाक्य में जो पद सदा एक ही विभक्ति में प्रयुक्त होता है उसे उपसर्जन कहते हैं किन्तु इस उपसर्जन का पूर्व प्रयोग नहीं होता है। इसके द्वारा स्त्री लिङ्ग में दीर्घ शब्द को ह्रस्व किया जाता है।

अतिमालः—(अतिक्रान्तोमालाम्) इस समास के विग्रह वाक्य में मालाम् पद नियत विभक्तिक है अर्थात् यह सदा द्वितीयान्त पद होता है। इस लिये इसकी उपसर्जन संज्ञा होती है। इसलिये यहां 'गोस्त्रियोरुप सर्जनस्य' सूत्र से 'माला' स्त्रीलिङ्ग शब्द के दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो गया है।

(य) तृतीयान्त पद के साथ क्रुष्ट आदि अर्थ में अव आदि का समास होता है। उदाहरण :—अवकोकिलः (अवक्रुष्टः कोकिलया)। यहां 'एक विभक्ति' से उपसर्जन संज्ञा 'गोस्त्रियोः' से ह्रस्व हुआ है।

(र) चतुर्थ्यन्त सुवन्त के साथ ग्लानि आदि अर्थ में परि आदि का समास होता है। उदाहरण :—पर्यध्ययनः (परिग्लानो अध्ययनाय)।

(ल) पञ्चम्यन्त सुबन्त के साथ निष्क्रान्त इत्यादि अर्थ में 'निर्' आदि का समास होता है। उदाहरण :—निष्कौशाम्बिः (निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः)।

तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्—कर्मणि इत्यादि सप्तम्यन्त पद वाच्यत्व रूप से वर्तमान कुम्भ आदि पद की उप पद संज्ञा होती है। उपपदमतिङ्—उपपद सुबन्त का तिङ् (क्रिया) से भिन्न समर्थ पद के साथ नित्य समास होता है। उदाहरण :—कुम्भकारः—(कुम्भम् करोति)। यहां 'कुम्भ' पद उपपद तथा 'कारः' कृदन्त है।

(व) जिस शब्द के अन्त में अङ्गुलि शब्द हो और उसके आदि में संख्या वाचक या कोई अव्यय पद हो तो उस तत्पुरुष समास को समासान्त अच् प्रत्यय होगा। उदाहरण :—द्व्यङ्गुलम् (द्वे अंगुली प्रमाणम् अस्य)। निरङ्गुलम्—(निर्गतम् अंगुलिभ्यः)। यहां समासान्त अच् प्रत्यय हुआ है।

(श) जिन शब्दों के अन्त में रात्र, अह्न और अह शब्द आते हैं वे द्वन्द्व और तत्पुरुष पुंल्लिङ्ग में होते हैं। उदाहरण :—(अहश्च रात्रिश्चतयोः समाहारः)। यहां 'रात्राऽह्नाऽहाः पुंसि' सूत्र से पुंल्लिङ्ग, हुआ। समाहार द्वन्द्व से एक वचन हुआ। सर्वरात्रः—(सर्वाः रात्रयः)। अहः सर्वैक"

सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय हुआ। 'रात्रि' के इकार का लोप होने से और अच् के अकार के मिलने से सर्वरात्रः बना। 'रात्राह्नाऽहाः पुंसि' से पुंल्लिङ्ग हुआ। संख्यातरात्रः (संख्याता रात्रयः)। यहां पर समासान्त अच् प्रत्यय हुआ है। पूर्वरात्रः—(रात्रेः पूर्वः, रात का पहला भाग)। यहां समासान्त अच् प्रत्यय हुआ है।

(ष) जब रात्र शब्द के पहले कोई संख्या वाचक शब्द होता है तो वह नपुंसक लिङ्ग में होता है। उदाहरण :—द्विरात्रम् (द्वयोः रात्र्योः समाहारः)। त्रिरात्रम् और (तिसृणाम् रात्रीणाम् समाहारः)। यहां समाहार द्वन्द्व है। समासान्त अच् प्रत्यय हुआ है। इकार का लोप हुआ है। संख्या पूर्व रात्रम् क्लीबम् इस वर्तिक से नपुंसक लिङ्ग हुआ।

(स) जिन शब्दों के अन्त में राजन्, अहन् और सखि शाब्द आते है तो उस तत्पुरुष समास से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—परमराजः (परमश्च असौ राजाच)। यहां परम और राजन् शब्द का कर्म धारय तत्पुरुष समास हुआ है। समासान्त टच् प्रत्यय, नस्तद्धिते से टि का लोप, प्रथमा के एक वचन में उपर्युक्त शब्द सिद्ध हुआ है।

(ह) महत् शब्द के तकार को आकार आदेश होता है यदि उससे परे समानाधिकरण उत्तर पद हो या 'जातीय' उत्तर पद हो। उदाहरण :—महाराजः (महान् च असौ राजा)। यहां महत् और राजन् का कर्मधारय तत्पुरुष समास हुआ है। महत् शब्द को आकार अन्तादेश, समासान्त टच् प्रत्यय, तथा टि के लोप होने से उक्त समस्त पद सिद्ध होता है। इसी प्रकार महाजातीयः (महाप्रकारः) यहाँ प्रकार वचने 'जातीयर्' सूत्र से महत् शब्द से जातीयर् प्रत्यय प्रकार अर्थ में हुआ है। महत् के तकार का आकार अन्तादेश होने पर रूप सिद्ध होता है।

(क्ष) संख्या वाचक द्वि और अष्टन् शब्द को आकार अन्तादेश होता है। किन्तु अशीति शब्द से परे रहने पर तथा बहुव्रीहि समास में आकार अन्तादेश नहीं होता। उदाहरण :—द्वादश—(द्वौ च दश च)। यहाँ द्वि और दशन् इन दो सुबन्तों का द्वन्द्व समास हुआ है और द्वि के इकार को आकार अन्तादेश हुआ है। अष्टाविंशति—(अष्टौ च विंशतिश्च)। यह रूप द्वादश के समान ही निष्पन्न होता है।

परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः—द्वन्द और तत्पुरुष समास में जो पर शब्द होता है, उसी के अनुसार लिङ्ग होता है। उदाहरण :—कुक्कुट

मयूर्यौ इमे (कुक्कुटश्च मयूरी च)। यहां मयूरी शब्द पर में है वह स्त्रीलिंग शब्द है। इसलिये समस्त पद भी स्त्रीलिंग हुआ। मयूरीकुक्टौ—(मयूरी च कुक्कुटश्च)। यहां पर उत्तर पद कुक्कुट है जो पुंल्लिग है, इसलिये समस्त पद पुंल्लिग हुआ है। अर्द्ध पिप्पली—(अर्धं पिप्पल्याः)। यहाँ उत्तर पद पिप्पली स्त्रीलिंग है। इसलिये समस्त पद स्त्री लिंग हुआ है।

द्विगु समास

द्विगुप्राप्ताऽपन्नाऽलंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्य :— प्राप्त, आपन्न, अलम् द्विगु समास, हों तथा गति समासमें पर शब्द के अनुसार लिङ्ग नहीं होता। उदाहरण :—पञ्चकपालः शः (पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पुरोडाशः) यहां पर शब्द कपाल है। वह नपुंसक लिङ्ग होता है। उक्त वार्तिक से उसका निषेध होने से पर शब्द को पुंल्लिङ्ग हो गया है। द्वितीयान्त समर्थ के साथ प्राप्त और आपन्न सुबन्तों का समास होता है। उदाहरण :—प्राप्तजीविकः (प्राप्तो जीविकाम्)। आपन्नजीविकः (आपन्नो जीविकाम्)। अलंकुमारिः। (अलं कुमार्यै)। यहां पद कुमारी शब्द स्त्री लिङ्ग है। 'द्विगुप्राप्तापन्न' वार्तिक से स्त्रीलिङ्ग का निषेध होकर पुँल्लिङ्ग हुआ है। निष्कौशाम्बिः निष्क्रान्तः—कौशाम्ब्याः) यहां उत्तर पद कौशाम्बी स्त्रीलिङ्ग है, किन्तु उपर्युक्त वार्तिक से स्त्रीलिङ्ग का निषेध होकर पुँल्लिङ्ग हो गया हैं।

अर्धर्चाः पुंसि च—अर्धर्च आदि शब्द पुँल्लिङ्ग में भी होते हैं और नपुंसक लिङ्ग में भी। अर्धर्चः, अर्धर्चम्—(अर्धम् ऋचः)। इस समास के विग्रह वाक्य में ऋच् शब्द स्त्रीलिङ्ग है किन्तु 'अर्धर्चाः पुंसि च' सूत्र से स्त्रीलिङ्ग का निषेध होकर पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग दोनों रूप हुए।

शब्द कोष

नभसि=आकाश में। अम्रियत=मर गये। अग्निपतितः=अग्नि में गिरा हुआ। निर्गच्छति=निकलता है। आतपशुष्कः=आतप से शुष्क। शैशवे वयसि=शैशव अवस्था में। हविषा=हवि से। ग्रामान्तरम्=दूसरा गांव। राजान्तरम्=दूसरा राजा। महानसम्=रसोई-घर। मासपूर्वः=एक मास पूर्व।

अभ्यास २६

(तत्पुरुष)

(क) उदाहरण :—१—योगी एकान्त में परमात्मा का ध्यान करते हैं—योगिनः रहसि परमात्मानं ध्यायन्ति। २—राजमन्त्री मन, वचन और कर्म से राज्य का कार्य करता है—राजमन्त्री मनसा, वाचा कर्मणा राज्य-कार्यं करोति। ३—आकाश में नक्षत्रेश चन्द्रमा की शोभा देखो —नभसि नक्षत्रेशस्य चन्द्रमसः शोभां पश्य। ४—कृष्ण के आश्रित गोपियां वृन्दावन में विहार करती हैं—कृष्णाश्रिताः गोप्यः वृन्दावने विहरन्ति। ५—आग में गिरा मनुष्य मर गया—अग्निपतितः मनुष्यः अम्रियत। ६—राम को वाक्कलह अच्छा नहीं लगता—रामाय वाक्कलहः न रोचते। ७—आप पिता के समान हैं - भवान् पितृसमः अस्ति। ८—चोर के भय से वह घर से नहीं निकला—चौरभयात् सः तमसि गृहात् न निर्गच्छति। ९—दूर से आया हुआ पथिक जल मांगता है—दूरादागतः पथिकः जलं याचते। १०—धूप से सूखी लकड़ियों को लाओ—आतपशुष्कानि काष्ठानि आनय। ११—यह गाय ब्राह्मण के लिए है—द्विजार्था इयं धेनुः।

(ख) अनुवाद करो :—

१—तुम्हें प्रातःकाल ईश्वर का भजन करना चाहिये। २—राज्य के कर्मचारी कार्यालयों में कार्य करते हैं। ३—बाल्यावस्था में सब को पढ़ना चाहिए। ४—अंधेरे में कोई वस्तु दिखाई नहीं देती। ५—तपस्वी अपने तेज से शोभायमान है। ६—भगवद्भक्त एकान्त में ईश्वर का भजन करते हैं। ७—भक्ति हीन, मनुष्य सदा कष्ट में रहते हैं। ८—उसके शरीर में स्वर्णाभूषण शोभा देते हैं। ९—वह हवि से हवन करता है। १०—राम ने साधुजनों के हित में कार्य किया। ११—वह दूसरे गांव (ग्रामान्तरम्) में चला गया। १२—मैं किसी अन्य राजा (राजान्तरम्) के पास नहीं जाऊंगा। १३—समुद्र में जलमग्न मछलियां रण में युद्ध निपुण सैनिक तथा देव मन्दिर में देव ब्राह्मण शोभा देते हैं। १४—मैं भोजन के लिए रसोई घर में जाऊंगा।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः महाराज्ञः आगमनं प्रतीक्षते।	सः महाराजस्य आगमनं प्रतीक्षते।
२—गोप्यः कृष्णस्य आश्रिताः आसन्।	गोप्यः कृष्णम् आश्रिताः आसन्।

३—जले पतिता: रवि किरणावलय: शोभन्ते।	जलं पतिता: रविकिरणावलय: शोभन्ते।
४—वाल्ये वये सर्वे क्रीडन्ति।	वाल्ये वयसि सर्वे क्रीडन्ति।
५—वाच: कलह: मह्यं न रोचते।	वाचा कलह: मह्यं न रोचते।

(घ) शुद्ध करो :—

१—अहं महाराजानम् अपश्यम्। २—श्याम: पूर्वां सीमां अगच्छत्। ३—शरहता: रक्षांसि भूतले पतिता: सन्ति। ४—कार्ये दक्षा: मन्त्रिण: उपराजानम् अगच्छन्। ५—स: उपगङ्गस्य समीपं याति। ६—महात्मान: आचारं निपुणा: सन्ति। ७—गोपाल: इदं कार्यं मासस्य पूर्वं कृतवान्। ८—आसनं तिष्ठन्त: जना: ईश्वरभजनं कुर्वन्ति। ९—स: गुरुं स्निह्यति। १०—नभसि चन्द्रमस्य शोभां पश्य। ११—मने देवब्राह्मणं चिन्तय।

शब्द-कोष

उपैति—पास पहुँचता है। व्याप्नोति—व्याप्त हैं। वयति – बुनता है। विक्रीणाति—बेचता है। रजक:—धोवी। संमार्जनी—झाड़ू। कुनारी—कुत्सितनारी। कुपुत्र:—कुत्सितपुत्र। बिभेति—डरता है। प्रक्षालयति—धोता है। स्वच्छता—सफाई।

अभ्यास २७

(कर्मधारय तथा द्विगु)

(क) उदाहरण—१. तुम्हें कुदेश में निवास नहीं करना चाहिए—त्वं कुदेशे न निवसे:। २. मुझे बुरे पुरुषों से बचाओ—मां कुपुरुषेभ्य: त्राहि। ३. सुन्दर पुरुष सदा भलाई करते हैं—सुपुरुषा: सदा उपकुर्वन्ति। ४. जो पति की सेवा नहीं करती वह कुनारी होती है—या पतिं न सेवते सा कुनारी भवति। ५. व्याघ्र के समान पुरुष के पास लक्ष्मी स्वयं चली जाती हैं—पुरुषव्याघ्रं लक्ष्मी: स्वयमुपैति। ६. चन्द्र के समान मुख को देखो—चन्द्रमुखं पश्य। ७. बादल के समान श्यामल श्रीकृष्ण नृत्य करते हैं—घनश्याम: श्रीकृष्ण: नृत्यति। ८. उसके मुख कमल को देखो—पश्य तस्य मुखकमलम्। ९. महाराज ने मुनि को प्रणाम किया—महाराज: मुनिं प्राणमत्। १०. श्याम काले सांप से डरता है—श्याम: कृष्णसर्पाद् बिभेति। ११—भगवान् विष्णु तीनों लोकों में व्याप्त हैं—भगवान् विष्णु: त्रिलोकं

व्याप्नोति। १२. ब्रह्मा जी चारों युगों को देखते हैं—ब्रह्मा चतुर्युगं पश्यति। १३. जलाशय में श्वेत कमल खिलते हैं—जलाशये श्वेतकमलानि विकसन्ति। १५. तेली तेल बेचता है—तैलिकः तैलं विक्रीणाति। १६. मल्लाह नाव लाता है—कर्णधारः नावं नयति। १७. जुलाहा कपड़ा बुनता है—तन्तुवायः पटं वयति। १८. इस गाँव में चमार, धोबी, कुम्हार, लोहार, सोनार, माली तथा चित्रकार रहते हैं—अस्मिन् ग्रामे 'चर्मकारः' रजकः, कुम्भकारः, लौहकारः, स्वर्णकारः, मालाकारः, चित्रकारश्च निवसन्ति। १६. यहाँ चार मजदूरों तथा पाँच कारीगरों की आवश्यकता है—अत्र चतुर्णां भारवाहानां पञ्च शिल्पिनां च आवश्यकता अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—नौकर झाड़ू से सफाई करता है। २—चमार चमड़े से जूता बनाता है। ३—श्याम ज्ञान से यश प्राप्त करता है। ४—माली लताओं के सुन्दर फूलों को तोड़ता है। ५—चित्रकार ने मनोहर चित्र बनाया है। ६—कुपुरुषों से सदा दूर रहना चाहिए। ७—रात में नील गगन की शोभा बढ़ जाती है। ८—नदियों में रक्त कमल खिल रहे हैं। ९—पूजा के लिए पञ्चपात्र लाओ। १०—पञ्चरत्न को देखो। ११—महात्माओं का दर्शन कल्याण दायक होता है। १२—शकुन्तला के मुखकमल को देखकर दुष्यन्त मुग्ध हो गया। १३—इस मनोहर सरोवर में नील कमल शोभा दे रहे हैं। १४—जुलाहा वस्त्र बुनेगा। १५—ईश्वर तीनों भुवनों में फैला हुआ है। १६—कृष्ण के पीताम्बर को देखो। १७—कालावस्त्र लाओ। १८—कृष्ण का वस्त्र देखो।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—देवाः चतुर्युगेषु वर्तन्ते।	देवाः चतुर्युगे वर्तन्ते।
२—विष्णुः त्रिलोकेषु विचरति।	विष्णुः त्रिलोके विचरति।
३—गुरोः चरणकमलानि पश्य।	गुरोः चरणकमलं पश्य।
४—स्वर्णकारः स्वर्णाद् अङ्गुलीयकं रचयति।	स्वर्णकारः स्वर्णेन अङ्गुलीयकं रचयति।

(घ) शुद्ध करो :—

१—पुरुषव्याघ्रे लक्ष्मीः स्वयमेव उपैति। २—ईश्वरः त्रिभुवने व्याप्नोति ३—अस्याः मुखकमलानि पश्य। ४—महाराज्ञः दर्शनं कर्त्तव्यम्

अस्माभिः । ५—ब्रह्मा चतुर्युगेषु वर्तन्ते । ६—अमराः त्रिलोकेषु निवसन्ति । ७. पितुः मातुः च चरणकमलानि पश्य । ८. भृत्यः संमार्जन्याः स्वच्छतां करोति । ६. सुदेशं वस, कुदेशे न गच्छ । १०. नायिकायाः चन्द्रमुखः शोभते । ११. पञ्चपात्रेषु पूजायाः सामग्र्यः सन्ति । १२. रात्रौ नीलगगनानां शोभा वर्धते । १३. सः इमं संदेशं महाराज्ञे न्यवेदयत् ।

बहुव्रीहि समास

अनेकमन्यपदार्थे—अन्य पदार्थ में (विशेषण रूप से) वर्तमान प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ—बहुव्रीहि में सप्तम्यन्त और विशेषण का पूर्व प्रयोग होता है।

हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम्—संज्ञा में हलन्त और अदन्त से परे सप्तमी विभक्ति का लुक् नहीं होता । उदाहरण :—कण्ठेकालः (कण्ठे कालो यस्य) यहां सप्तमी विभक्ति का अलुक् हुआ है। सरसिजम् (सरसि जातम्) सप्तमी का अलुक् हुआ । प्राप्तोदको ग्रामः (प्राप्तम् उदकं यम्) यहां 'प्राप्त' और उदक इन प्रथमान्त पदों का अन्य पदार्थ (द्वितीया विभक्ति के अर्थ मे वर्तमान पदार्थ) के साथ बहुव्रीहि समास हुआ है। ऊढरथः (ऊढो रथो येन) यहां ऊढ और रथ इन प्रथमान्तो का तृतीया विभक्त्यर्थ में समास हुआ है । उपहृतपशुः (उपहृतः पशुः यस्मै) चतुर्थी विभक्ति के अर्थ में समास हुआ । उद्धृतौदना (उद्धृतः ओदनो यस्याः) पञ्चमी अर्थ में समास हुआ। पीताम्बरो हरिः (पीतानि अम्बराणि यस्य) षष्ठी अर्थ में समास। वीरपुरुषको ग्रामः (वीराः पुरुषाः यस्मिन्) सप्तमी अर्थ में समास ।

प्रादिभ्योधातुजस्यवाच्यो वा चोत्तरपदलोपः—धातुओं से बने हुये शब्द यदि प्र आदि से परे हों तो उस तदन्त का अन्य पद के साथ समास होगा और इसके उत्तर पद का विकल्प से लोप होगा । उदाहरण:—प्रपतितपर्णः प्रपर्णः (प्रपतितानि पर्णानि यस्मात्) यहां 'पतित' शब्द 'प्र' से पर में स्थित है । तदन्त हुआ 'प्रपतित' शब्द, उसका पर्ण के साथ समास हुआ और उत्तर पद 'पतित' का लोप विकल्प से हुआ ।

नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः—यदि 'नञ्' से परे अस्ति अर्थ का वाचक पद हो, तो तदन्त का अन्य पद के साथ समास

और उसके उत्तर पद का लोप हो जायगा। उदाहरण :—अपुत्रः (अविद्यमानः पुत्रो यस्य) यहां 'अस्ति' अर्थ का वाचक पद 'विद्यमान' है जो नञ् (अ) से परे है। तदन्त पद हुआ 'अविद्यमान'। उत्तर पद हुआ 'विद्यमान'। इस उत्तर पद का लोप होने से अपुत्रः शब्द सिद्ध होता है।

पुंवद्भावः— 'ऊङ्' प्रत्ययान्त् को छोड़कर शेष स्त्रीवाचक पद को पुंवद्भाव होता है, यदि पर में समान विभक्तिक उत्तर पद हो, पूरणी संख्या और क्रिया आदि पद न हो।

चित्रगुः—(चित्रा गावो यस्य) यहां षष्ठी विभक्ति के अर्थ में चित्रा और गौ प्रथमान्त पदों का समास हुआ है। स्त्रियाः 'पुंवन्' सूत्र से 'चित्रा' शब्द का पुंवद भाव होने से 'चित्र' हो गया और 'गौ' शब्द की उपसर्जन संज्ञा होने से 'गो' के स्थान में 'गु' ह्रस्व हो गया।

रूपवद्भार्यः—(रूपवती भार्या यस्य) उपर्युक्त की भांति सिद्ध होगा।

अप्पूरणीप्रमाण्योः—जिसके अन्त में पूरणार्थ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द हो, तथा जिसके अन्त में प्रमाणी शब्द हो, ऐसे बहुव्रीहि समास से समासान्त 'अप्' प्रत्यय होगा। उदाहरण :—कल्याणीपञ्चमा—(कल्याणी पञ्चमा यासां रात्रीणाम्)। यहां पूरणी संख्या 'पञ्चमा' परे होने से पुंवद् भाव नहीं हुआ। समासान्त अप् पञ्चमी के (अ) (भ संज्ञक) ईकार् का लोप होने से 'कल्याणी पञ्चम' बना। स्त्रीत्व विवक्षा में 'टाप्' होने से 'कल्याणी पञ्चमा' रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार 'स्त्री प्रमाणः' (स्त्री प्रमाणी यस्य) रूप सिद्ध होगा।

सुहृद्दुर्हृदौ मित्राऽमित्रयोः—'मित्र' अर्थ में 'सु' और 'शत्रु' अर्थ में वर्तमान 'दुर्' से परे 'हृदय' शब्द को निपातन से हृद् होता है। उदाहरण :—सुहृद् (शोभनं हृदयं यस्य) यहां 'मित्र' अर्थ में वर्तमान 'सु' से परे 'हृदय' को हृद् आदेश हुआ है।

उरः, प्रभृतिभ्यः कप्—'उरस्' आदि से बहुव्रीहि समास में समासान्त 'कप्' प्रत्यय होता है। 'पकार' का लोप होने से 'क' बच रहता है।

कस्काऽऽदिषु च—कस्कादि गण में पठित शब्दों में 'इण्' से परे 'विसर्ग' को 'षकार' होता है, 'इण्' से परे न होने पर विसर्ग को 'सकार' होता है। उदाहरण :—व्यूढोरस्कः—(व्यूढम् उरो यस्य) दोनों पदों का षष्ठी अर्थ में बहुव्रीहि समास, समासान्त कप्, प्रत्यय, विसर्ग को सकार हुआ है।

प्रियसर्पिष्कः—(प्रियं सर्पिः यस्य) यहाँ षष्ठी अर्थ में प्रिय और सर्पिष् शब्दों का समास हुआ है। समासान्त रूप् प्रत्यय, सकार को विसर्ग और विसर्ग को षकार हुआ है।

शेषाद् विभाषा—अनुक्त समासान्त बहुव्रीहि से समासास्कः रूप प्रत्यय विकल्प से होता है। उदाहरण—महायशस्कः, महायशाः (महद् यशो यस्य) यहाँ षष्ठी अर्थ में महत् और यशस् प्रथमान्त बहुव्रीहि समास हुआ है। विकल्प से उपर्युक्त दोनों रूप सिद्ध होते हैं।

अन्यपदार्थप्रधानोबहुव्रीहिः—बहुव्रीहि समास में अन्य पदार्थ प्रधान होता है, अर्थात् बहुव्रीहि समास किसी अन्य पद का विशेषण होता है। अन्य पदार्थ विशेष्य होता है। वह अन्य पदार्थ विग्रह वाक्य में प्रथमा विभक्ति को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों में होता है। विग्रह करने पर यम्, येन, यस्मै, यस्मात्, यस्य, यस्मिन् आदि शब्द अन्य पदार्थ (विशेष्य) के लिए प्रयुक्त होते हैं।

समानाधिकरण बहुव्रीहि—पूर्व और उत्तर, दोनों पद प्रथमान्त होते हैं। जैसे 'प्राप्तम् उदकं यम्' इस विग्रह वाक्य में पूर्वपद है 'प्राप्तम्' उत्तर पद है 'उदकम्'। ये दोनों पद प्रथमान्त हैं।

उदाहरणः—द्वितीया—प्राप्तम् उदकं यं सः प्राप्तोदकः (ग्रामः)। कृतः सङ्कल्पः येन सः कृत सङ्कल्पः (पुरुषः)। उपहृतः पशुः यस्मै सः उपहृतः पशुः (रुद्रः)। उद्धृतः ओदनो यस्याः सा उद्धृतौदना (स्थाली)। पीतम् अम्बरं यस्य सः पीताम्बरः (कृष्णः)। वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः वीरपुरुषः (ग्रामः)।

सहार्थक बहुव्रीहि—'सह' के योग में बहुव्रीहि समास होता है। उदाहरणः—पुत्रेण सहितः सपुत्रः (पिता)।

व्याधिकरण--व्यधिकरण बहुव्रीहि समास के दोनों पदों की विभक्तियाँ असमान होती हैं। उदाहरण:—चन्द्रः शेखरे यस्य सः चन्द्रशेखरः (शिवः)। यहाँ 'चन्द्रः' पूर्व पद है और 'शेखरे' उत्तरपद है। पूर्वपद प्रथमान्त है और उत्तरपद सप्तम्यन्त है। अतः दोनों पदों की विभक्तियाँ असमान हैं।

शब्द-कोष

लिम्प्=पोतना। हन्=मारना। वञ्च्—ठगना। नम्—नमस्कार करना। प्र+स्था—प्रस्थान करना। रम्—रमण करना। नापितः—नाई। वप्—बाल काटना। सौचिकः—दर्जी। तक्षकः—बढ़ई। सूचिका—सुई। वधकः—कसाई। वञ्चकः—ठग। रञ्जकः—कपड़ा रंगने वाला। अपुत्रः—पुत्रहीन। केशः—बाल।

अभ्यास २८

(बहुव्रीहि समास)

(क) उदाहरण :—१. मन्त्री राजा से सविनय निवेदन करता है—मन्त्री राज्ञे सविनयं निवेदयति। २. श्याम उस गाँव में परिवार के साथ रहता है—श्यामः तस्मिन् ग्रामे सपरिवारः निवसति। ३. छात्र गुरुजनों को सविनय तथा सादर नमस्कार करें—छात्राः गुरुजनान् सादरं सविनयं च नमस्कुर्वन्तु। ४. भोजन किये हुए छात्रों ने विद्यालय को प्रस्थान किया—कृतभोजनाः छात्राः विद्यालयं प्रातिष्ठन। ५. जिस थाली से भात निकाल लिया गया है, उसे लाओ—उद्धृतौदनां स्थालीम् आनय। ६. पीत वस्त्र धारण करने वाले श्रीकृष्ण जी गोपिकाओं के साथ रमण करने लगे—पीताम्बरः श्रीकृष्णः गोपिकाभिः सह रन्तुमारभत। ७. नाई अपने छोटे भाई के साथ वहाँ गया और दोनों ने पुरुषों के बाल काटे—सानुजः नापितः तत्र अगच्छत्, उभौ पुरुषाणां केशान् अवपताम्। ८. हाथ में धनुष धारण करने वाले राम वन में राक्षसों को मारते हैं—धनुष्पाणिः रामः कानने निशाचरान् हन्ति। ९. अपुत्र मनुष्य की मुक्ति नहीं होती—अपुत्रस्य मनुष्यस्य मुक्तिः न भवति। १०. चौड़ी छाती वाले राम शोभा देते हैं—व्यूढोरस्कः रामः शोभते। ११—रूपवती स्त्री वाले राम वन में निवास करते हैं—रूपवद्भार्यः रामः वने निवसति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—बढ़ई कुरसी बनायेगा। २—दर्जी सुई से वस्त्रों को सीयेगा। ३—इस गांव में कसाई, कहार रंगरेज, मदारी तथा पुताई करने वाले रहते हैं। ४—द्वारपाल राजकुमार के सहित राजा से बोला। ५—बाण लिए हुए शिकारी ने वन में मृगों का पीछा किया। ६—वह ठगों का विश्वास नहीं करता। ७—नाई से कहो कि वह छुरे से बाल काटे। ८—तुम पुताई करने वाले को बुलाओ। ९—मैं दशानन को नहीं देख सकता। १०—मैंने गुरु से सादर एवं सविनय निवेदन किया। ११—कहार से कहो कि वह जल से भरा हुआ घड़ा लाये। १२—जिस वृक्ष से फूल गिर पड़े हैं, उसे देखो।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—प्राप्तम् उदकं येन सः।	प्राप्तम् उदकं यं सः।
२—धृतः बाणः यस्य सः।	धृतः बाणः येन सः।
३—दत्तं धनं यं सः।	दत्तं धनं यस्मै सः।
४—पतितानि कुसुमानि यस्य सः।	पतितानि कुसुमानि यस्मात् सः।
५—गुरुं सादरः प्रणमति।	गुरुं सादरं प्रणमति।
६—पिता सपुत्रम् आगतः।	पिता सपुत्रः आगतः।
७—चन्द्रः शेखरं यस्य सः।	चन्द्रः शेखरे यस्य सः।
८—वीराः पुरुषाः यस्य सः।	वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः।

(घ) शुद्ध करो :—

१. पीतम् अम्बरं यास्मिन् सः। २. पुत्रेण सहितं सपुत्रः। ३. आदरेण सहितम् सादरः। ४. विनयेन सहितः सविनयम्। ४. परिवारस्य सहितः सपरिवारः। ५. पीतम् च असौ अम्बरम् पीताम्बरः। ६. कृतः सङ्कल्पः यस्य सः। ७. पतितानि पत्राणि यस्य सः। ८. दृष्टः सागरः यस्य सः। ९. सः सानुजं गृहं गच्छति। १०. जितानि इन्द्रियाणि यस्य सः। ११. निर्गतं घनं यस्य सः। १२. व्यूढः उरो यस्य सः। १३. रूपवद् भार्या यस्य सः। १४. न विद्यमानं पुत्रं यस्य सः।

द्वन्द्व समास

द्वन्द्वसमास--'च' अर्थ में वर्तमान एक से अधिक सुबन्तों का समास द्वन्द्व समास कहलाता है। 'च' निपात के चार अर्थ होते हैं। १. समुच्चय, २. अन्वाचय, ३. इतरेतर योग, ४. समाहार।

(१) समुच्चय—जहाँ दो या दो से अधिक पद परस्पर साकांक्ष न होकर किसी एक क्रिया में अन्वित होते हैं, वहाँ 'च' का अर्थ 'समुच्चय' होता है। जैसे, 'ईश्वरं, गुरुं 'च भजस्व।' इस वाक्य में ईश्वर और गुरु दोनों निरपेक्ष (स्वतन्त्र) हैं, दोनों का अन्वय 'भजस्व' क्रिया में होता है। निरपेक्षता के कारण दोनों या दो से अधिक पदों में समर्थता न होने से समास नहीं होता।

(२) अन्वाचय—जहाँ दो निरपेक्ष पदों में एक प्रधान दूसरा अप्रधान होता है, वहाँ 'च' का अर्थ अन्वाचय होता है। अन्वाचय में भी समर्थता न होने से समास नहीं होता। जैसे, 'भिक्षामट गां चानय'—इस वाक्य में 'भिक्षामट' (भिक्षा मांगो) प्रधान है, 'गां चानय' (गाय भी लाओ) यह अप्रधान है।

(३) इतरेतर योग—जहाँ दो पदार्थ परस्पर एक ही क्रिया में अन्वित होते हैं, वहाँ 'च' का अर्थ इतरेतर योग होता है। इन पदार्थों में समर्थता होने से समास होता है। जैसे, 'धवखदिरौ छिन्धि।' इस वाक्य में 'धव' और खादिर दोनों परस्पर सम्बद्ध होकर 'छिन्धि' क्रिया में अन्वित होते हैं।

(४) समाहार शब्द का अर्थ है समूह। समूह के प्रत्येक पदार्थ का अन्य पदार्थ में अन्वय नहीं होता। समुदाय मात्र का अन्वय होता है। समाहार में समर्थता होने के कारण समास होता है।

उदाहरण :—संज्ञापरिभाषम्—संज्ञा च परिभाषा च इति संज्ञा परिभाषम्। यहां च का अर्थ समाहार है और समर्थता के होने के कारण द्वन्द्वसमास हुआ है।

नोट :—द्वन्द्व समास अनेक प्रथमान्त पदों का समास होता है। सभी पद प्रधान होते हैं। इसलिये समास सूत्र में पठित 'अनेकम्' प्रथमान्त पद के द्वारा प्रत्येक पद की उपसर्जन संज्ञा होती है। जिस पद की उपसर्जन

संज्ञा करके उसका पूर्व प्रयोग करना होता है, उसके लिये सूत्रों द्वारा नियम बनाये गये हैं।

राजदन्ताऽऽदिषुपरम् :—राजदन्त आदि शब्दों में समास शास्त्र द्वारा जिस पद का पूर्व निपात प्राप्त हो, उसका प्रयोग पर में करना चाहिये। उदाहरण :—राजदन्तः (दन्तानां राजा)। यहां षष्ठी सूत्र के द्वारा समास हुआ है। षष्ठी पद प्रथमान्त है इसलिये विग्रह वाक्य में षष्ठ्यन्त पद 'दन्तानाम्' की उपसर्जन संज्ञा होने से दन्त शब्द का पूर्व निपात होना चाहिये था किन्तु प्रस्तुत सूत्र के द्वारा उसका पूर्व निपात न होकर उसका प्रयोग पर में किया गया है।

धर्माऽऽदिष्वनियम :—धर्म और अर्थ आदि शब्दों में पूर्व और पर का कोई प्रयोग नहीं है। किसी को भी पूर्व अथवा पर रखा जा सकता है। उदाहरण :—अर्थधर्मौ (अर्थश्च धर्मश्च)। धर्मार्थौ (धर्मश्च अर्थश्च)।

द्वन्द्वे घि—द्वन्द्व समास में जिस पद की घि संज्ञा होती है, उसका पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण :—हरिहरौ (हरिश्च, हरश्च) यहां हरि शब्द इकारान्त होने से घि संज्ञक है। इसलिये विग्रह वाक्य में उसका पूर्व प्रयोग हुआ है।

अजाऽऽद्यदन्तम्:—द्वन्द्व समास में जिस पद के आदि में अच (स्वर) होते हैं तथा अन्त में अकार हो उस पद का पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण :—ईशकृष्णौ—(ईशश्च कृष्णश्च)। यहां ईश पद अजादि और अकारान्त भी है इसलिये इसका पूर्व प्रयोग हुआ है।

अल्पाच्तरम्—जिस शब्द में अपेक्षाकृत अल्प अच् (स्वर) हों तो द्वन्द्व समास में उसका पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण :—शिवकेशवौ (शिवश्च केशवश्च)। यहां शिव पद में केशव पद की अपेक्षा अल्प अच् (स्वर) है। इसीलिये शिव पद का पूर्व प्रयोग हुआ।

पिता मात्रा :—माता के साथ पिता का उच्चारण करने पर दोनों में से केवल पितृ शब्द विकल्प से शेष रह जाता है और शेष रहने पर मातृ शब्द का भी अर्थ बतलाता हैं। उदाहरण :—पितरौ (माता च पिता च) अभाव पक्ष में मातापितरौ (माता च पिता च) रूप होता है।

द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाऽङ्गानाम्—प्राणी तूर्य और सेना इनके अंगवाचक शब्द द्वन्द्व समास में एक वचन में प्रयुक्त होते हैं, क्योकि इन पदों का समाहार अर्थ में ही समास होता है। समाहार सदा नपुँसकलिङ्ग एक वचन में होते है। उदाहरण :—पाणिपादम् (पाणी च पादौ च)। मार्दङ्गिकवैणविकम् (मार्दङ्गिकश्च वैणविकश्च) रथिकाश्वारोहम् (रथिकाश्च अश्वारोहाश्च)।

द्वन्द्वाच्चुदषहाऽन्तात् समाहारे :—द्वन्द्व समास में समाहार अर्थ में चवर्गान्त दकारान्त, पकारान्त और हकारान्त समस्त पद से टच् प्रत्यय होता है। उदाहरण वाक्त्वचम्—(वाक् च त्वक् च, तयोः समाहारः)। त्वकस्रजम्—(त्वक् च स्रक् च तयोः समाहारः)। शमीदृषदम्—(शमी च दृषद् च तयोः समाहारः)। वाक्त्विषम्—(वाक् च त्विट् च तयोः समाहारः)। छत्रोपानहम्। (छत्रम् च उपानत् च तयोः समाहारः)।

क्षुद्र जन्तवः—क्षुद्र जन्तुओं के समाहार मे द्वन्द्व समास में एकवद् भाव होता है। उदाहरण :—यूकालिक्षम् (यूका च लिक्षा च इति)

येषां च विरोधः शाश्वतिकः—जिन जन्तुओं में शाश्वतिक विरोध होता है, उनके समाहार में एकवद् द्वन्द्व समास होता है। उदाहरण :—अहि नकुलम् (अहयो नकुलाश्च इति)। गोव्याघ्रम् (गावश्च व्याघ्राश्च इति)। काकोलूकम् (काकाः उलूकाश्च इति)।

गवाश्वप्रभृतीनि च—गो तथा अश्व आदि पदार्थों को द्वन्द्व समास में एकवद् भाव होता है। उदाहरण :—गवाश्वम् (गावश्च अश्वाश्च इति)।

न दधिपय आदीनि—दधि और पय आदि को द्वन्द्व समास में एकवद् भाव नहीं होता। उदाहरण :—दधि पयसी (दधि च पयश्च इति)।

आनङ् ऋते द्वन्द्वे—विद्या तथा योनि सम्बन्ध वाची ऋकारान्त शब्दों को आनङ् आदेश होता है उत्तर पद परे रहते। उदाहरण—माता पितरौ (माता च पिता च इति)। यहाँ शब्द के ऋकार को 'आनङ्' आदेश होने से 'माता पितरौ' बना। यदि आनङ् आदेश न होता तो 'मातृ-पितरौ' यह अशुद्ध प्रयोग हो जाता।

देवता द्वन्द्वे च—देवता वाची शब्दों को उत्तर पद परे रहते पूर्व पद को 'आनङ्' होता है। जैसे, 'मित्रावरुणौ' (मित्रश्च वरुणश्च)।

वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधः—वायु शब्द के प्रयोग में द्वन्द्व समास में पूर्व पद को आनङ् आदेश नहीं होता। उदाहरण :—अग्निवायू (अग्निश्च वायुश्च इति)।

नोट——द्वन्द्व समास में जब अनेक शब्दों में से एक शेष रह जाता है तो उसे एक शेष द्वन्द कहते हैं। जैसे, रामश्च रामश्च इति रामौ।

ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण—समान अक्षर वाले ऋतुओं और नक्षत्रों का द्वन्द्व समास में आनुपूर्वी (क्रमिक) प्रयोग होता है। उदाहरण—हेमन्तशिशिरवसन्ताः (हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्ताश्च इति)। कृत्तिका-रोहिण्यौ (कृत्तिका च रोहिणी च इति)।

नोट—असमान अक्षर वाले ऋतुओं और नक्षत्रों का द्वन्द्व समास में आनुपूर्वी (क्रमिक) प्रयोग नहीं होता। ग्रीष्मवसन्तौ—(ग्रीष्मश्च वसन्त-श्च इति)।

लघ्वक्षरं पूर्वम्—लघु अक्षर वाले शब्द का पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण—कुशाकाशम्—(कुशश्च काशश्च इति)।

अभ्यर्हितं च—श्रेष्ठ का द्वन्द्व समास में पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण—तापसपर्वतौ (तापसश्च पर्वतश्च इति)। वासुदेवार्जुनौ (अर्जुनश्च वासुदेवश्च इति)।

वर्णानामानुपूर्व्येण—वर्णों (जातियों) का द्वन्द्व समास में आनु-पूर्वी (क्रमिक) प्रयोग होता है। उदाहरण—ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः (ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च विट् च शूद्रश्च इति)।

भ्रातुर्ज्यायसः—जेष्ठ भ्राता का द्वन्द्व समास में पूर्व प्रयोग होता है। उदाहरण:—युधिष्ठिरार्जुनौ—(युधिष्ठिरः अर्जुनश्च इति)।

समासान्त

ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे—जिस समस्त पद के अन्त में ऋच् पुर् अप्, धुर् और पथिन् शब्द आते हैं, उस समास को समासान्त अ प्रत्यय होता है किन्तु अक्ष रथ का जो धुरा होता है तद् वाचक धुर् पद जिस समास के अन्त में हो उसे नहीं होता। उदाहरण :— अर्धर्चः—(अर्धम् ऋचः)। इस प्रयोग में 'अर्धम्' नपुंसकम्' सूत्र के द्वारा समास हुआ है। समस्त पद के अन्त में ऋच् होने से समासान्त अ प्रत्यय हुआ है और 'अर्धर्चादयः पुंसि च' से इसका प्रयोग पुल्लिङ्ग में भी किया गया है। विष्णुपुरम् (विष्णोः पूः)। यहाँ समासान्त अ प्रत्यय होने से तथा अकारान्त नगरवाचक शब्द होने से नपुंसक लिङ्ग का प्रयोग हुआ है। विमलापं सरः (विमला आपो यत्र)। बहुव्रीहि समास, समासान्त अ नपुंसक लिंग एक वचन में रूप सिद्ध हुआ। राजधुरा (राज्ञो धूः)। यहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास समासान्त अप्रत्यय तथा टाप् स्त्री-प्रत्यय होने से रूप सिद्ध होता है। दृढ़धूः (दृढ़ा धूर्यस्य) यहाँ धुर् का अर्थ है अक्ष की धुरा। इसलिये यहाँ षष्ठी बहुव्रीहि समास से समासान्त अ प्रत्यय नहीं हुआ। सखिपथः (सख्युः पन्थाः)। षष्ठी तत्पुरुष समासान्त अ प्रत्यय भ संज्ञक टि (अन्) का लोप आदि कार्य हुये हैं। रम्यपथो देशः—(रम्याः पन्थानो यस्य यस्मिन् वा)। षष्ठी या सप्तमी बहुव्रीहि समास में समासान्त अप्रत्यय भ संज्ञक टि (अन्) का लोप, आदि कार्य हुये हैं।

अक्ष्णोऽदर्शनात्—चक्षु के पर्याय वाचक शब्द को छोड़कर अक्षि शब्द को समासान्त अच् प्रत्यय होता है। उदाहरण—गवाऽक्षः (गवाम् अक्षि इव) षष्ठी तत्पुरुष समास समासान्त अच् प्रत्यय, भ संज्ञक इकार का लोप, आदि कार्य हुये हैं।

उपसर्गादध्वनः—अध्वन् शब्द को समासान्त अच् प्रत्यय होता है यदि वह उपसर्ग से परे हो। उदाहरण—प्राऽध्वोरथः—(प्रगतोऽध्वानम्)। यहाँ प्रादि समास टि लोप आदि कार्य हुये हैं।

न पूजनात्—जो शब्द प्रशंसार्थक शब्दों से परे होते हैं उनको समासान्त प्रत्यय नहीं होता।

स्वतिभ्यामेव—सु तथा अति इन दो प्रशंसावाचक पदों से ही परे होने पर समासान्त अच् प्रत्यय नहीं होता। उदाहरण—सुराजा—

(शोभनो राजा)। प्रादि समास, समासान्त टच् प्रत्यय का निषेध होने से रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार अतिराजा (अतिक्रान्तो राजानम्)। रूप सिद्ध होता है।

शब्द-कोष

पितामहः = दादा। पितामही = दादी। मातामहः = नाना। मातामही = नानी। पितृव्यः = चाचा। देवरः = देवर। मातुलः = मामा। मातुलानी = मामी। उद्गिरति = उगलता है। निगिरति = निगलता है। स्वसा = बहन। श्यालः = साला।

अभ्यास २६
(द्वन्द्व समास)

(क) उदाहरणः—१. गोपाल के माता-पिता कल यहां आयेंगे—गोपालस्य मातापितरौ श्वः अत्र आगमिष्यतः। २. राम और कृष्ण को देखो—रामकृष्णौ पश्य। ३. श्रमिक लोग शीत और उष्ण को सहन करते हैं—श्रमिकाः शीतोष्णं सहन्ते। ४. मुझे दही और घी दो—मह्यं दधिघृतं देहि। ५. सांप और नेवले को देखो—अहिनकुलं पश्य। ६. फूल, फल और जल लाओ—पुष्पफलजलानि आनय। ७. राधा और कृष्ण नाचते हैं—राधाकृष्णौ नृत्यतः। ८. अर्जुन और वासुदेव पूजनीय हैं—वासुदेवार्जुनौ पूजनीयौ स्तः। ९—हरि और हर का, ईश और कृष्ण का, शिव तथा केशव का भजन करो—हरि हरौ, ईशकृष्णौ, शिवकेशवौ च भज। १०. गाय और घोड़े को देखो—गवाश्वं पश्य।

(ख) अनुवाद करोः—

१—सांप और नेवला एकत्र नहीं रह सकते। २—मेरे भाई-बहन आज वाराणसी जायेंगे। ३—मेरे सास ससुर, माता-पिता, दादा-दादी, मामा-मामी तथा नाना-नानी तीर्थ यात्रा के लिए कल प्रस्थान करेंगे। ४—गाय और घोड़ा लाओ। ५—पिता और पुत्र आते हैं। ६—अर्जुन और युधिष्ठिर पूजनीय हैं। ७—वह धान और जौ बोयेगा। ८—अग्नि और वायु को देखो। ९—सीता राम, राधा कृष्ण, उमा महेश्वर सभी प्राणियों द्वारा पूजनीय हैं। १०—हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुयें सुहावनी होती हैं। ११—पिता पुत्र को पढ़ने का आदेश देता है। १२—आचार्य शिष्य को धर्म का उपदेश करता है। १३—वह अपने हृदय के उद्गार को उगलता है और उसका मित्र भोजन निगलता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध बिचारः—

अशुद्ध	शुद्ध
१—मातृ पितरौ गच्छतः।	मातापितरौ गच्छतः।
२—पत्रपुष्पफलाः दृश्यन्ते।	पत्रपुष्पफलानि दृश्यन्ते।
३—अहिनकुलौ पश्य।	अहिनकुलं पश्य।
४—अर्जुनवासदेवौ पूजनीयौ।	वासुदेवार्जुनौ पूजनीयौ।
५—हरहरी पश्य केशवशिवौ गच्छ च।	हरिहरौ पश्य, शिवकेशवौ गच्छ च।
६—गवाश्वौ चरतः।	गवाश्वं चरति।
७—सः सीतारामं, राधाकृष्णं च भजति।	सः सीतारामौ, राधा कृष्णौ च भजति।
८—दधिघृते आनय।	दधिघृतम् आनय।

(घ) शुद्ध करोः—

१—दधिपयः आनय। २—काकोलूकौपश्य। ३—गोव्याध्रौ दर्शनीयौ। ४—मित्रावरुणं पश्य। ५—तस्य हस्तपादौ दुर्बलौ। ६—गो महिषौ आनय। ७—अत्र दधिमधुफलाः सन्ति। ८—वसंतग्रीष्मौ शोभनीयौ। ९—गङ्गा-यमुनम् पश्य। १०—क्षत्रियब्राह्मणौ दृष्ट्वा सः स्वगृहम् अगच्छत्। ११—मथुरापाटलिपुत्रौ दर्शनीयौ। १२—मूषकमार्जारौ धावतः। १३—गच्छ गङ्गशोणौ। १४—कुक्कुटमयूरौ नृत्यतः।

तद्धित प्रकरण

(साधारण प्रत्यय)

अश्वपत्यादिभ्यश्च—'अश्व' तथा 'पति' आदि शब्दों से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। जैसे, अश्वपतेर-पत्यं आश्वपतम्। गणपतेरपत्यं गाणपतम्। अश्वपति+अण् (अ), गणपति+अण् (अ)। इस स्थिति में ताद्धितेष्वाचामादेः सूत्र से आदि अच् को वृद्धि से 'यस्येतिच' सूत्र से अन्तिम इकार का लोप हुआ तब आश्वपत और गाणपत ये अकारान्त शब्द बना। अपस अर्थ में प्रत्यय होने से नपुंसक लिङ्ग के प्रथमा विभक्ति के एक वचन में 'आश्वपतं' तथा 'गाणपतं' रूप सिद्ध हुए।

दित्यदित्यादित्य पत्युत्तरपदाद्ण्यः—दिति, अदिति, आदित्य और पति, ये जिन शब्दों के अन्त में हों उन षष्ठ्यन्त सुवन्तों से अपत्य (सन्तान) अर्थ में ण्य प्रत्यय होता है। णकार का लोप होने से य शेष रहता है। उदाहरण-दितेरपत्यं दैत्यः, अदितेरपत्यं आदित्यः, प्रजापतेरपत्यं प्राजापत्यः इन प्रयोगों में दिति+य, अदिति+य, प्रजापति+य, इस दशा में आदि अच् की वृद्धि हुई। आदि अच् की वृद्धि होने से क्रमशः दिति+य, आदिति+य, प्रजापति+य, उत्पन्न हुये। तकार गत इकार का लोप होने से दैत्य, आदित्य, प्राजापत्य आदि अकरान्त शब्द बने। प्रथमा विभक्ति के एक वचन में दैत्यः आदित्यः और प्राजापत्यः रूप सिद्ध हुये।

देवाद्यञञौ—देव शब्द से अपत्य अर्थ में यञ् और अञ् प्रत्यय होते हैं। अकार का लोप होने से य और 'अ' शेष रहते हैं। देव+यञ् (य्)–दैव्यम्, देव+अञ् (अ) –दैवम्, देवस्य अपत्यं इति विग्रहः। बाह्यः–बहिर्भवः इति बाह्यः बहिस् शब्द से यञ् प्रत्यय टि (इस्) का लोप होने से आदि अच् की वृद्धि होने से बाह्य शब्द बना प्रथमा विभक्ति के एक वचन में बाह्यः रूप सिद्ध हुआ। बाहीकः—बहिर्भवः इति बाहीकः। बहिस् शब्द से 'ईकक् च' से ईकक् प्रत्यय हुआ ककार का लोप होने से इक शेष रहता है। टि (इस्) का लोप होने से वह् इक बना। इक प्रत्यय के ककार का लोप होने से यह कित् प्रत्यय माना जाता है। कित् प्रत्यय परे होने से

आदि अच् की वृद्धि होती है। प्रथमा विभक्ति के एक वचन में बाहीकः रूप सिद्ध हुआ।

सर्वत्रगोरजादिप्रसंगे यत्—अपत्य और भव आदि अर्थों में गो शब्द अच् आदि प्रत्ययों की प्राप्ति में यत् प्रत्यय होता है। जैसे, गवि भवम्, गोः इदम् गोरपत्यं इति गव्यम् (गो + यत)।

अपत्याधिकार

तस्यापत्यम्—षष्ठ्यन्त सन्धि किये गये पदों से 'अपत्य' अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। उदाहरण—उपगु+अण् = औपगवः (उपगोरपत्यम)। अश्वपति+अण् = आश्वपतः।

उत्साऽऽदिभ्योऽञ्—उत्स आदि शब्दों से अपत्य आदि अर्थों में अण् प्रत्यय होता है। जैसे, उत्सस्य अपत्यम् औत्सः (उत्स+अय्)=औत्सः

एकोगोत्रे—गोत्र अर्थ में एक ही अपत्य प्रत्यय होता है। जैसे, उपगोः गोत्रापत्यं औपगवः। उपगु + अण्=औपगतः।

गर्गाऽऽदिभ्यो यञ्--गर्ग आदि षष्ठ्यन्त सुबन्त पदों से गोत्रापत्य अर्थ में यञ् अथ होता है। जैसे—गर्गस्य गोत्रापत्यं गार्ग्यः, वत्सस्य गोत्रापत्यम् वात्स्यः। गर्ग यञ् = गार्ग्यः। वत्स+यञ्=वात्स्यः।

यञिञोश्च—गोत्र अर्थ में यञ् और इञ् प्रत्यय जिस शब्द के अन्त में हो उससे फक् प्रत्यय होता है। ककार का लोप होने से फ शेष रहता है।

आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्—फकार के स्थान में आयन्, ढकार के स्थान में एय् खकार के स्थान में ईन, छकार के स्थान में ईय् और घकार के स्थान में इय् आदेश हो जाते हैं। जैसे—गर्गस्य युवापत्यं गार्ग्यायणः। गर्ग शब्द से 'गर्गादिभ्योयञ्' सूत्र से गार्ग्य बना। यञिञोश्च सूत्र से फक् प्रत्यय हुआ। फ के स्थान में आयन् आदेश हुआ। 'यस्येति च' से भ संज्ञक अकार का लोप आदि वृद्धि तथा स्वादिकार्य के पश्चात् गार्ग्यायणः रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार दत्तस्य युवापत्यं दात्तायणः रूप सिद्ध होता है।

अतइञ्—अकारान्त षष्ठ्यन्त सुबन्त पद से अपत्य अर्थ में इञ् प्रत्यय होता है। जैसे दक्षस्य अपत्यं पुमान् इति दाक्षिः। दक्ष शब्द से इञ् प्रत्यय होने पर आदि वृद्धि तथा अंतिम अकार का लोप होने पर दाक्षिः यह रूप सिद्ध हुआ।

शिवाऽऽदिभ्योऽण्—शिवादिगण से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। शिवस्य अपत्यं शैवः गङ्गाया अपत्यम् गाङ्गः। शिव+अण् (अ)–शैवः, गङ्गा+अण् गाङ्गः, इन प्रयोगों में क्रमशः अन्तिम अकार और आकार का लोप हो गया आदि अच् की वृद्धि होने पर रूप सिद्धि हुई।

स्त्रीभ्योढक्—स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों से 'अपत्य' अर्थ में 'ढक्' प्रत्यय होता है। ककार का लोप हो जाने से ढ शेष रहता है। 'ढ' के स्थान में एय आदेश हो जाता है। जैसे, विनताया अपत्यं पुमान् इति वैनतेयः। विनता शब्द से 'ढक्' प्रत्यय ढक् के स्थान में एय आदेश हुआ। 'किति च' से आदि वृद्धि, भ संज्ञक आकार का लोप होकर 'वैनतेयः' रूप सिद्ध हुआ।

जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्—क्षत्रियवाचक जनपद शब्द से अपत्य अर्थ में 'अञ्' प्रत्यय होता है। जैसे, पञ्चालानां (देशविशेषाणां) राजा पाञ्चालः। पञ्चाल+अञ् (अ)=पाञ्चालः।

रक्ताद्यर्थक प्रत्यय

तेन रक्तं रागात्—रंग वाचक तृतीयान्त पद से अण् प्रत्यय होता है। जैसे, कषायेण रक्तं वस्त्रं इति काषायम्। यहां पर कषाय टा अण् इस स्थिति में तद्धितान्त पद होने से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'सुपोधातु प्रातिपादिकयोः' से टा विभक्ति का लोप, आदि वृद्धि, अन्तिम अकार का लोप होने से 'काषायम्' रूप सिद्ध हुआ।

साऽस्य देवता—प्रथमान्त देवता वाचक पद से अस्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। जैसे, पाशुपतं—पशुपतिः देवता अस्य। पशुपति+अण्=पाशुपतं। बार्हस्पतम् (बृहस्पतिः देवता अस्य)। बृहस्पति+अण्=बार्हस्पतम्।

ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्—ग्राम, जन और बन्धु शब्दों से समुदाय अर्थ में तल् प्रत्यय होता है लकार का लोप होने से 'त' शेष रहता है। 'तलन्तं स्त्रियाम्' 'तलन्त' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इसलिये इनके अन्त में टाप् प्रत्यय होता है। उदाहरण—ग्राम + तल् (त) + टाप् (आ) = ग्रामता—(ग्रामाणां समूहः)। जन + त + आ = जनता—(जनानां समूहः)। बन्धु + त + आ = बन्धुता।

तदधीते तद्वेद—द्वितीयान्त पद से अध्ययन अर्थ में 'अण्' प्रत्यय होता है। उदाहरण—वैयाकरणः—(व्याकरणम् अधीते)। व्याकरण + अण् यहां यकार से पहले ऐच् का आगम हुआ है न कि आदि वृद्धि हुई है। इसलिये व् + ऐ + याकरण इस दशा में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'वैयाकरणः' रूप सिद्ध हुआ।

क्रमादिभ्यो वुन्—क्रम आदि द्वितीयान्त पदों से 'अध्ययन' अर्थ में वुन् प्रत्यय होता है। नकार का लोप होकर वु, शेष रह जाता है। उदाहरण—क्रमम् अधीते क्रमकः। पदम् अधीते पदकः। शिक्षाम् अधीते शिक्षकः। मीमांसाम् अधीते मीमांसकः। क्रम + वु (अक) = क्रमकः। पद + वु (अक) = पदकः। शिक्षा + वु (अक) = शिक्षकः। मीमांसा + वु (अक) = मीमांसकः।

चातुरर्थिक प्रत्यय

तदस्मिन्नस्तीतिदेशे तन्नाम्नि—'वह यहां है' इस अर्थ में वस्तु वाचक प्रथमान्त पद से अण् प्रत्यय होता है यदि स्थानवाची सप्तम्यन्त पद किसी देश का नाम हो। उदाहरण—औदुम्बरो देशः—उदुम्बराः सन्ति अस्मिन देशे। उदुम्बर + अण् = औदुम्बरः।

तेननिर्वृत्तम्—तृतीयान्त पद से निर्वृत्त अर्थ में अण् प्रत्यय होता है। निर्वृत्त शब्द का अर्थ है बसाया हुआ। उदाहरण—कौशाम्बी—(कुशाम्बेन निर्वृत्ता = बसायी हुई नगरी), कुशाम्ब + टा + अण् = कौशाम्बी। यहाँ विभक्ति का लोप, आदि वृद्धि, अन्तिम अकार का लोप ङीप् (ई) स्त्री प्रत्यय से रूप सिद्ध हुआ।

तस्य निवासः—षष्ठ्यन्त पद से 'निवास' अर्थ में अण् प्रत्यय का लोप हो जाता है।

जनपदे लुप्—जनपद अर्थ में हुये अण् प्रत्यय का लोप हो जाता है।

लुपियुक्तवद्व्यक्तिवचने—प्रत्यय का लोप होने पर प्रकृत के समान ही लिङ्ग और वचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण— पाञ्चालाः—(पञ्चालानां निवासो जनपदः)। 'पञ्चाल' शब्द से 'निवास' अर्थ में 'तस्य निवासः' सूत्र के आधार पर 'अण्' प्रत्यय होने से पञ्चाल 'अ यह स्थिति हुई। 'जनपदे लुप्' से अण् का लोप हो गया। 'जनपद' एक वचन में है, इसलिये पञ्चाल शब्द को एक वचन में होना चाहिये था किन्तु 'लुपियुक्तवद्व्यक्तिवचने' सूत्र से प्रकृत पद का जो लिङ्ग और वचन है वही होकर 'पाञ्चालाः' यह रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार निम्नाङ्कित शब्द सिद्ध होते हैं। यथा कुरवः—कुरूणां निवासो जनपदः (कुरु लोग जिस देश में रहते हैं)। अङ्गाः—अङ्गानां निवासो जनपदः (अंङ्गलोग जिस जनपद में रहते हैं)। वंगाः—वङ्गानां निवासो जनपदः (वङ्ग लोग जिस देश में रहते हैं)। कलिङ्गाः—कलिङ्गानां निवासो जनपदः (कलिङ्ग जिस जनपद में रहते हैं।

शैषिक प्रत्यय

शेष (ग्रहण आदि) अर्थ में जो प्रत्यय होते हैं वे शैषिक कहलाते हैं।

शेषे—'ग्रहण' अर्थ में अण्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—चक्षुषा गृह्यते इति चाक्षुषम्। चक्षुष्+अण् (अ)=चाक्षुषम् रूपम्। श्रवणेन गृह्यते इति श्रावणः शब्दः। श्रवण+अण्=श्रावणः।

ग्रामाद् यखञौ—सप्तम्यन्त ग्राम पद से जात (उत्पन्न) अर्थ में य और खञ् प्रत्यय होते हैं। उदाहरण :—ग्रामे जातः ग्राम्यः, ग्रामीणः। ग्राम+य=ग्राम्यः। ग्राम+ख, ग्राम+ईन ('ख' के स्थान में ईन) णत्व होने पर ग्रामीणः सिद्ध हुआ।

नद्यादिभ्यो ढक्—नदी आदि सप्तम्यन्त शब्दों से ज्ञात, या भव (होने वाला) अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—नद्यां जातः नादेयम्। नदी+एय (ढक् के स्थान में एय) 'किति च' से आदि वृद्धि, भ संज्ञक ईकार का लोप, स्वादि कार्य, होने से 'नादेयम्' यह रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार मह्यां जातः 'माहेयम्' वाराणस्यां जातः 'वाराणसेयम्' शब्द बनते हैं। 'दक्षिणा पश्चात् पुरसस्त्यक्'—दक्षिणा, पश्चात् और पुरस् इन पदों से 'ज्ञात' अर्थ में त्यक् प्रत्यय होता है। ककार का लोप होने से 'त्य' शेष रह जाता है। उदाहरण :—दक्षिणस्यां जातः दाक्षिणात्यः। दक्षिण+त्य, आदि वृद्धि होने से 'दाक्षिणात्यः' रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार पाश्चात्यः (पश्चात् जातः) शब्द भी सिद्ध होता है।

द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्—दिव्, प्राच्, अपाच्, उदच् प्रतीच् आदि सप्तम्यन्त पदों से 'जात', 'भव' (होने वाला) अर्थ में 'यत्' प्रत्यय होता है उदाहरण :—दिव्+य=दिव्यम् (दिवि भवम्) इसी प्रकार निम्नाङ्कित शब्द बनेंगे। प्राच्यम् (प्राच्यां जातम्) उदीच्यम् (उदीच्यां जातम्)। प्रतीच्यम् (प्रतीच्यां जातम्)। अपाच्यम् (अपाच्यां जातम्)।

प्राच्यम्—(पूर्व दिशा में रहने वाला)।
अपाच्यम्—(दक्षिण दिशा में रहने वाला)।
उदीच्यम्—(उत्तर दिशा में रहने वाला)।
प्रतीच्यम्—(पश्चिम दिशा में रहने वाला)।

अव्ययात्त्यप्—अमा, इह, क्व, तसन्त, त्र, प्रत्ययान्त अव्यय शब्दों से 'भव' (रहनेवाला) अर्थ में त्यप् प्रत्यय होता है, 'त्य' शेष रह जाता है। उदाहरण :—अमा+त्यप्=अमात्यः (राजा के साथ रहने वाला मन्त्री)।

इह+त्यप्=इहत्यः (यहां होने वाला, यहां का)।
क्व+त्यप्=क्वत्यः (कहां होने वाला, कहां का)।
ततः+त्यप्=ततस्त्यः (वहां होने वाला, वहां का)।
तत्र+त्यप्=तत्रत्यः (वहां होने वाला, वहां का)।

वाक्य प्रयोग—अत्रत्यः छात्राः परिश्रमशीलाः। (यहां के छात्र परिश्रमी हैं) क्वत्यस्त्वम् (तुम कहां के हो)। तत्रत्याः छात्राः पठन्ति (वहां के छात्र पढ़ते हैं)।

ट—जिस शब्द में आदि अच् की वृद्धि होती है। उस शब्द की वृद्ध संज्ञा होती है। साथ ही साथ त्यद् आदि की भी वृद्धि संज्ञा होती है।

वृद्धाच्छ :—जिस शब्द की वृद्ध संज्ञा होती है। उससे छ प्रत्यय होता है। उदाहरण—शालायां भवः शालीयः। शाला+छ—इस दशा में छ के स्थान में 'ईय्' आदेश हुआ। भ संज्ञक आकार का लोप होने से शालीयः रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार मालायां भवः 'मालीयः' शब्द सिद्ध होता है। तदीयः (तस्य अयम्)=उसका। तद्+छ (ईय)=तदीयः। इसी प्रकार युष्मदीयः अस्मदीयः त्वदीयः भवदीयः, यदीयः एतदीयः इत्यादि रूपों की सिद्धि होती है।

व्यक्ति वाचक शब्द की विकल्प से वृद्ध संज्ञा होती है। देवदत्त+छ (ईय)=देवदत्तीय बना। प्रथमा विभक्ति के एक वचन में देवदत्तीयः—(देवदत्तस्य अयम) रूप सिद्ध हुआ। विकल्प से वृद्ध संज्ञा होने से छ प्रत्यय के अभाव में 'अण्' होने से 'दैवदत्तः' रूप सिद्ध हुआ।

युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च—युष्मद् और अस्मद् शब्दों में 'खञ्' प्रत्यय विकल्प से होता है। और छ प्रत्यय भी होता है। अभाव पक्ष में 'अण्' प्रत्यय होता है। उदाहरण—युष्मदीयः (युवयोः युष्माकम् वा अयम्)। युष्मद्+छ (ईय)=युष्मदीयः। अस्मदीयः—(आवयोः अस्माकं वा अयम्) इसकी सिद्धि 'युष्मदीयः' के समान होगी।

तस्मिन्नणि च युष्माकाऽस्माकौ—'खञ्' तथा 'अण्' प्रत्यय यदि पर में हों, तो युष्मद् और अस्मद् को क्रमशः 'युष्माकं' और अस्माकं' आदेश होते हैं। उदाहरण :—यौष्माकीणः (युवयोः—युष्माकं वाऽयम्)। युष्मद् खञ् इस स्थिति में 'तस्मिन्नणि' सूत्र से युष्माक आदेश हुआ। 'खञ्' के स्थान में 'ईन' होने से युष्माकीन बना। आदि वृद्धि, णत्व स्वादि कार्य के बाद 'यौष्माकीणः' रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार आस्माकीनः (आवयोः अस्माकं वा अयम्) रूप सिद्ध होगा। यौष्माकः—युष्मद् अण् इस दशा में युष्मद् के स्थान में 'युष्माक' आदेश हुआ। आदि वृद्धि, स्वादि कार्य के बाद 'यौष्माकः' सिद्ध हुआ। इसी प्रकार 'आस्माकः' भी सिद्ध होगा।

तवकममकावेकवचने—'खञ्' और 'अण्' प्रत्यय परे रहते 'युष्मद्' और 'अस्मद्' के एक वचन में क्रमशः तवक और ममक आदेश होते हैं। उदाहरण :—तावकीनः, तावकः (तव अयम्)। युष्मद्+खञ् इस दशा में युष्मद् के स्थान में 'तवक' आदेश होने से 'खञ्' के स्थान में 'ईन' आदेश आदि वृद्धि, स्वादि कार्य के बाद 'तावकीनः' रूप सिद्ध हुआ। 'तवक, आदेश और 'अण्' होने पर 'तावकः' रूप सिद्ध हुए। इसी प्रकार 'मामकीनः' 'मामकः' रूप सिद्ध होते हैं।

प्रत्ययोत्तर पदयोश्च—प्रत्यय और उत्तर पद परे होने पर एक वचनान्त 'युष्मद्' और 'अस्मद्' शब्द को मकार तक त्व और म आदेश होते हैं। उदाहरण :—त्वदीयः (तव अयम्)। मदीयः (मम अयम्)। यहां पर 'त्यदादीनि च' से वृद्ध संज्ञा, 'वृद्धात छः' से छ प्रत्यय, त्व म आदेश, छ के स्थान में इय् आदेश, स्वादि कार्य से रूप सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार 'मदीयः' (मम अयम्) रूप सिद्ध होता है।

मध्यान्मः—'मध्य' सप्तम्यन्त पद से भव अर्थ में 'म' प्रत्यय होता है। जैसे, 'मध्यमः' (मध्ये भवः) मध्य+म='मध्यमः'।

कालात् ठञ्—सप्तम्यन्त काल पद तथा कालवाचक पद से 'भव' अर्थ में 'ठञ्' प्रत्यय होता है। अकार का लोप होकर ठ शेष रहता है। उदाहरण :—कालिकः (काले भवः)। काल ठक् इस दशा में 'ठस्येकः' से 'ठ' के स्थान में 'इक' आदेश होने से काल इक बना। आदि वृद्धि, भसंज्ञक अन्तिम अकार का लोप, होने से 'कालिकः' रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार 'मासिकम्' 'साम्वत्सरिकम्' 'सायम्प्रतिकः' 'पौनःपुनिकः' शब्द सिद्ध होते हैं।

तत्र जातः—सप्तम्यन्त समर्थ पद से 'भवः' या 'जातः' अर्थ में 'अण् आदि तथा 'घ' आदि प्रत्यय होते हैं। उदाहरण:—औत्सः। राष्ट्रियः (राष्ट्रे जातः)। राष्ट्र+घ (इय्)=राष्ट्रियः।

शरीराऽवयवाच्च—शरीर के अवयव वाचक सप्तम्यन्त पद से 'भव' अर्थ में यत्, प्रत्यय होता है। उदाहरण :—दन्त्यम् (दन्तेषु भवम्)। कण्ठ्यम् (कण्ठेषु भवम्)। दन्त+यत् (य)=दन्त्यम। कण्ठ+यत् (य)= कण्ठ्यम्।

अध्याऽऽत्मादेष्ठञिष्यते—'अध्यात्म' आदि सप्तम्यन्त पद से 'भव' अर्थ में 'ठञ्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—आध्यात्मिकम् (अध्यात्मं भवम्)। 'ठस्येकः' से 'इक' आदेश आदि वृद्धि, अन्तिम अकार का लोप, होने से रूप सिद्ध हुआ।

अनुशतिकादीनां च—'अनुशतिकादि' गण में पठित अधि देव आदि पदों में णित्, कित् और 'ञित्' प्रत्यय परे होने से दोनों पदों ('अधि' और देव') की आदि वृद्धि होती है। उदाहरण :—आधिदैविकम्—(अधि दैवं भवम्)। आधिभौतिकम् (अधिभूते भवम्)। ऐहलौकिकम् (इहलोके भवम्)। इन प्रयोगों में ठञ् प्रत्यय, ठ के स्थान में इक आदेश, उभय पद वृद्धि, अन्तिम अकार लोप, से रूप सिद्ध हुए।

तेन प्रोक्तम्—तृतीयान्त पद से 'प्रोक्त' अर्थ में 'अण्' आदि प्रत्यय होते हैं। उदाहरण :—पाणिनीयम्—(पाणिनिना प्रोक्तम्)। यहां 'वृद्धात् छः' से 'छ' प्रत्यय, 'छ' के स्थान में 'इय' आदेश, अन्तिम इकार का लोप, होने से रूप सिद्ध हुआ।

प्राग्दीव्यतीय

तस्य विकारः—षष्ठ्यन्त पद से विकार अर्थ में 'अण्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—आश्मः—(अश्मनो विकारः)। भास्मनः (भस्मनो-विकारः)। मार्तिकः (मृत्तिकायाः विकारः)। उपर्युक्त प्रयोगों में अण् प्रत्यय आदि वृद्धि, आश्मः', 'भास्मनः' में 'नस्तद्धिते' से टि लोप 'मृत्तिका' के अन्तिम आकार का लोप, होने से रूप सिद्ध हुए।

नित्यं वृद्धशरादिभ्यः—वृद्ध संज्ञा वाले शब्द तथा 'शर' आदि 'षष्ठ्यन्त' पदों से 'अवयव' और विकार अर्थ में नित्य ही मयट् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—आम्रमयम्—(आम्रस्य अवयवो विकारो वा)। शरमयम्—शराणाम् अवयवो विकारो वा)। आम्र+मयट् = आम्रमयम् शर+मयट्=शरमयम्।

गोश्च पुरीषे—षष्ठ्यन्त 'गो' पद से पुरीष (गोबर) अर्थ में मयट् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—गोमयम्—(गोः पुरीषम्) गो+मयट्=गोमयम्।

गोपयसोर्यत्—षष्ठ्यन्त 'गो' और 'पयस्' शब्द से अवयव या विकार अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—गव्यम् (गोरवयवो विकारो वा)। पयस्यम्—(पयसो विकार:)। गो+यत्=गव्यम्। पयस्+यत्=पयस्यम्।

ठगधिकार

संस्कृतम्—तृतीयान्त पद से 'संस्कार किया गया' अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—दाधिकम् (दध्ना संस्कृतम्) दधि+ठक् (इक)=दाधिकम्। इसी प्रकार 'मारीचिकम् (मरीचिकाभि: संस्कृतम्) रूप सिद्ध होगा।

तरति—तृतीय पद से तरने 'वाला' अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। औडुपिक:—(उडुपेन तरति)। उडुप+ठक् (इक) औडुपिक:।

चरति—तृतीयान्त पद से 'चलना' या 'खाना' अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। हास्तिक:—(हस्तिना चरति)। दाधिक: :—(दध्ना चरति)। हस्ती+ठक्=हास्तिक:। दधि+ठक्= दाधिक:।

संसृष्टे—तृतीयान्त पद से 'संसृष्ट' (मिला हुआ) अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। दाधिकम्—दध्ना संसृष्टम् (दधि मिला हुआ)। दधि+ठक् (इक)=दाधिकम्।

रक्षति—द्वितीयान्त पद से 'रक्षक' अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। सामाजिक :—(समाजं रक्षति)। समाज+ठक् (इक)=सामाजिक:। धर्मं चरति—'धर्म' द्वितीयान्त पद से 'आचरण करनेवाला' अर्थ में 'ठक्' प्रत्यय होता है। धार्मिक :—(धर्मं चरति)। धर्म+इक=धार्मिक:।

अधर्माच्चेति वक्तव्यम्—'अधर्म' द्वितीयान्त पद से भी उक्त अर्थ में उक्त कार्य होता है। आधर्मिक: (अधर्मं चरति)। अधर्म+इक=आधर्मिक:।

प्रहरणम्—अस्त्र, शस्त्र वाचक प्रथमान्त पद से 'यह इसका है' अर्थ में ठक् प्रत्यय होता है। आसिक:—(असि: प्रहरणमस्य)। असि+ठक्=

आसिकः । धानुष्कः—(धनुः प्रहरणमस्य) । धनुष्+ठक् (इक्)= धानुष्कः ।

शीलम्—प्रथमान्त पद से 'यह इसका स्वभाव है' अर्थ में 'ठक्' होता है। आपूपिक :—(अपूपभक्षणं शीलमस्य)। अपूप+ठक् (इक)= आपूपिकः ।

निकटे वसति—सप्तम्यन्त निकट पद से 'निवासकर्त्ता' अर्थ में 'ठक्' होता है। नैकटिकः—(निकटे वसति) । निकट+ठक् (इक)।

यदधिकारः

नौ, वयस्, धर्म, विष, मूल, मूल, सीता, तुला आदि तृतीयान्त पदों से क्रमशः तार्य (तरने योग्य) तुल्य (समानता), प्राप्य (प्राप्त करने योग्य), (वध करने योग्य), आनाम्य (सञ्चित करने योग्य धन), सम (समानता), समिति (जुती हुई भूमि), संमित (तोला हुआ), अर्थों में यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—नौ+यत्=नाव्यम्—(नावा तार्यम्)। वयस्+यत्=वयस्य :—(वयसा तुल्यः) । मूल+यत्=मूल्यम्—(मूलेन आनाम्यम्)। मूल+यत्=मूल्यः—मूलेन समः) सीता+यत्=सीत्यम् (सीतया संमितम्) तुला+यत्=तुल्यम् (तुलया संमितम्)।

तत्र साधु :—सप्तम्यन्त पद से 'साधु' (चतुर) अर्थ में 'यत्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—अग्र+यत्=अग्र्य :—(अग्रे साधुः, आगे रहने में चतुर)। सामन्+यत्=सामान्यः (सामसु साधुः, सामगान में चतुर)। इसी प्रकार 'कर्मण्यः' (कर्मणि साधुः) शरण्यः (शरणे साधुः), इत्यादि शब्द सिद्ध होते हैं।

छयतोरधिकार

तस्मै हितम्—चतुर्थ्यन्त पद से 'हितकर' अर्थ में 'छ' प्रत्यय होता है। उदाहरण—वत्स+छ (ईय्)=वत्सीयः (वत्सेभ्यो हितः)।

आत्मविश्वजनभोगोत्तरपदात्खः—आत्मन, विश्वजन भोगोत्तर इत्यादि चतुर्थ्यन्त पदों से हितकर अर्थ में ख प्रत्यय होता है। उदाहरण :—आत्मन्+ख (ईन्)=आत्मनीनम् (आत्मने हितम्, अपने लिए

उपकारक) विश्वजन+ख (ईन) विश्वजनीनम् (विश्वजनाय हितम्, विश्वजन के लिए उपकारक) मातृ भोग+ख (ईन)=मातृ भोगीणः (मातृ भोगाय हितः)।

ठञधिकार

तेन क्रीतम्—तृतीयान्त पद से 'खरीदना' अर्थ में 'ठञ्' प्रत्यय होता है। 'ठञ्' का 'ठ' शेष रहता है। उदाहरण—साप्ततिकम् (सप्तत्या क्रीतम्)। प्रास्थिकम् (प्रस्थेन क्रीतम्)। इन प्रयोगों में ठ के स्थान में 'इक' आदेश होने पर, अन्तिम अकार का लोप होने से रूप सिद्ध हुआ।

तस्येश्वरः—षष्ठ्यन्त सर्वभूमि तथा पृथिवी पद से स्वामी अर्थ में क्रमशः अण्' और 'अञ्' प्रत्यय होते हैं। उदाहरण—सार्वभौमः (सर्वभूमेरीश्वरः) सर्वभूमि+अण्=सार्वभौमः। यहां उभय पद वृद्धि हुई है। पार्थिवः (पृथिव्या ईश्वरः) पृथिवी+अञ्=पार्थिवः।

तदर्हति—द्वितीयान्त पद से प्राप्त करने योग्य अर्थ में 'ठञ्' आदि प्रत्यय होते हैं। उदाहरण—

श्वेतच्छत्रिकः—(श्वेतच्छत्रमर्हति)। श्वेतच्छत्र+ठक् (इक)= श्वेतच्छत्रिकः।

दण्डादिभ्यो यत्—'दण्ड' आदि द्वितीयान्त पदों से 'लब्ध करने योग्य' अर्थ में यत् प्रत्यय होता है। दण्ड्यः—(दण्डमर्हति)। अर्घ्यः—(अर्घमर्हति)। वध्यः—(वधमर्हति)। दण्ड=यत्=दण्ड्यः। अर्घ+यत् =अर्घः। वध+यत्=वध्यः।

तेन निर्वृत्तम्—तृतीयान्त काल वचन शब्द से निर्वृत्त (किया गया) अर्थ में 'ठञ्' प्रत्यय होता है। जैसे, आह्निकम् (अह्ना निर्वृत्तम्) अहन्+ठञ् (इक)=आह्निकम्। इति ठञधिकारः।

भाव कर्मार्थ

तत्र तस्येव—सप्तम्यन्त और षष्ठ्यन्त पदों से 'इव अर्थ में 'वति प्रत्यय होता है। उदाहरण :—मथुरावत् स्रुघ्ने प्राकारः—(मथुरायामिव

स्रुघ्ने प्राकारः, मथुरा के समान स्रुघ्न में प्राकार है)। मथुरा+वति=मथुरा-वत्। चैत्रवत् मैत्रस्य गावः (चैत्रस्य इव मैत्रस्य गावः) चैत्र के समान मैत्र की गाय है,) चैत्र+वति=चैत्रवत्।

तस्य भावस्त्वतलौ—षष्ठ्यन्त पद से 'भाव' अर्थ में 'त्व' और 'तल' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—गोत्वम्—(गो र्भावः)। गोता—(गोर्भावः)। गो+त्व=गोत्वम्। गो+तल् (त)+टाप् (आ)=गोता।

पृथिव्यादिभ्य इमनिज् वा—पृथु आदि पदों से भाव अर्थ में विकल्प से 'इमनिच्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—प्रथिमा, (पृथोर्भावः) पृथु+इमनिच् इस दशा में 'पृ' के ऋकार को 'र' ऋतो हलादेर्लघोः से 'र' आदेश हो गया। तब प्रथु+इमनिच् बना। भसंज्ञक टि (प्रथु के उकार) का लोप हुआ। प्रथ्+इमन् बना। प्रथिमन् सु यहां पर नान्त पद के उपधा को दीर्घ नकार लोप, सुलोप, होने पर 'प्रथिमा' रूप सिद्ध हुआ। अभाव पक्ष में पृथु+अण्=आदि वृद्धि, 'ओर्गुणः' से गुण, अवादेश, होने पर 'पार्थिवम् रूप सिद्ध हुआ।

भवनाद्यर्थक प्रत्यय

व्रीहिशाल्योर्ढक्—'व्रीहि और 'शालि' इन षष्ठ्यन्त पदों से "इसमें होता है" इस अर्थ में 'ढक्' प्रत्यय होता है। ककार का लोप होकर 'ढ' शेष रहता है। उदाहरण—व्रीहि=ढक् (एय)=व्रैहेयम् (व्रीहीणां भवनं क्षेत्रम्)। शालि+ढक् (एय)=शालेयम् (शालीनां भवनं क्षेत्रम्)।

तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्—तारका आदि प्रथमान्त पदों से 'वह इसका हो गया है' अर्थ में इतच् प्रत्यय होता है। चकार का लोप होने से 'इत शेष रहता है। उदाहरण :—तारका+इत=तारकितम्—(तारकाः संजाता अस्य)। पण्डा+इत=पण्डितः—(पण्डा संजाता अस्य)।

यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्—'यत्', तत् और 'एतद्' प्रथमान्त पदो से 'परिमाण' अर्थ में 'वतुप्' प्रत्यय होता है। उकार, पकार का लोप होने से 'वत्' शेष रहता है। यत्+वत्=यावान् (यत् परिमाणमस्य) इसी प्रकार तावान् (तत् परिमाणमस्य)' एतावान्- (एतत्परिमाणमस्य)। आदि रूप सिद्ध होंगे।

किमिदंभ्यां वो घः—'किम्' और 'इदम्' प्रथमान्त शब्दों से परिमाण अर्थ में 'वतुप्' प्रत्यय और 'व' को 'घ' होता है।

इदं किमोरीश् की—'इदम्' 'ईश' और किम् शब्द को 'की' आदेश होते हैं, 'दृक्', 'दृश्' तथा 'वतुप्' प्रत्यय परे होने पर। उदाहरणः—इयान्—(इदं परिमाणमस्य)। इस अर्थ में इदम् वतुप् (वत्) बना। व को घ आदेश, घ को इय् आदेश होने पर इदम् इय त् बना। इदम् को ई आदेश होने पर ई इयत् बना। भसंज्ञक 'ई' का लोप होने से इयत् बना। प्रथमा के एक वचन में 'इयान्' रूप सिद्ध होगा। किम्+इय्+की=कियान्।

संख्याया अवयवे तयप्—प्रथमान्त संख्या वाचक शब्द से 'इस समुदाय के इतने अवयव हैं' इस अर्थ में तयप् प्रत्यय होता है। उदाहरण—पञ्च+तयप्=पञ्चतयम्—(पञ्च अवयवा अस्य)।

द्वित्रिभ्यां तयस्यायज् वा— द्वि और त्रि के तयप् को विकल्प से 'अयच्' आदेश होता है। उदाहरण :—द्वि+तयप्=द्वितयम्। द्वि+अयच्=द्वयम्—(द्वौ अवयवौ अस्य)। त्रि+तयप्=त्रितयम्। त्रि+अयच्=त्रयम्—(त्रयोऽवयवा अस्य)।

उभादुदात्तोनित्यम्—उभ शब्द के तयप् को अयच् आदेश नित्य होता है। उदाहरण :—उभ+तयप् (अयच्)=उभयम्—(उभौ अवयवौ अस्य)।

तस्यपूरणेडट्—संख्या वाचक षष्ठ्यन्त पदों से पूरण अर्थ में डट् प्रत्यय होता है। डकार-टकार का लोप होने से अ शेष रहता है। एकादश+डट् (अ)=एकादशः (एकादशानां पूरणः, ग्यारहवाँ)।

नान्तादसंख्यादेर्मट्—नकारान्त संख्या वाचक शब्द के डट् को मट् का आगम् होता है, जब कि उसके पहले कोई दूसरा संख्या वाचक शब्द न जुड़ा हो। उदाहरण :—पञ्चन्+मट् (म्)+डट् (अ) इस दशा में पञ्चन् के नकार का लोप होकर 'पञ्चमः' यह रूप सिद्ध हुआ।

ति विंशतेर्डिति—डित् प्रत्यय परे रहते विंशति के भ संज्ञक 'ति' का लोप हो जाता है। उदाहरण:—विंशति+डट् (अ) विंश:—(त्रिंशतेः पूरणः)। पर रूप होने से विंशः रूप सिद्ध हुआ।

षट्कतिकतिपयचतुरांथुक्—षष्, कति, कतिपय, चतुर् इनके डट् को थुट् का आगम पूरण अर्थ में होता है। थुट् के उकार-टकार का लोप हो जाता है थ् शेष रहता है। षष्+थ+अ, इस दशा में ष्टुत्व होने पर षष्ठः —(षण्णां पूरणः), रूप सिद्ध हुआ। कति+थ्+अ्=कतिथः—(कतीनां पूरणः) । इसी प्रकार कतिपयथः—(कतिपयानां पूरणः)। चतुर्थः—(चतुर्णां पूरणः), रूप सिद्ध होंगे।

द्वेस्तीयः—संख्या वाचक षष्ठ्यन्त द्वि शब्द से पूरण अर्थ में तीय प्रत्यय होता है। द्वि+तीय=द्वितीयः—(द्वयोः पूरणः)।

त्रेः सम्प्रसारणं च—त्रि+तीय=तृतीयः—(त्रयाणां पूरणः)। यहां त्रि के रकार को सम्प्रसारण ऋकार होने से त्रि के इकार को पूर्वरूप होने से रूप सिद्ध हुआ।

मत्वर्थीय प्रत्यय

तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्—'वह इसका है,' 'वह इसमें है' इन अर्थों में प्रथमान्त पद से मतुप् प्रत्यय होता है। उकार-पकार का लोप होने से 'मत्' शेष रहता है। उदाहरण :—गो+मतुप्=गोमान्—(गावः अस्य सन्ति इति गोमान्)।

अत इनिठनौ—प्रथमान्त अकारान्त शब्द से मतुवर्थ में 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं। उदाहरण :—दण्ड+इनि इस प्रयोग में प्रत्यय के इकार का लोप होने से दण्ड इन् बना। भ संज्ञक अकार का लोप होने से दण्डिन् बना। प्रथमा के एक वचन में 'दण्डी' रूप सिद्ध हुआ। दण्ड+ठन् (इक) दण्डिकः (दण्डो अस्यास्ति)।

अस्मायामेधास्रजोविनिः—'अस्' हो अन्त में जिनके ऐसे, प्रथमान्त, तथा माया, मेधा, स्रज् इन प्रथमान्त शब्दों से मतुवर्थ में विनि

प्रत्यय विकल्प से होता है। अन्तिम इकार का लोप होने से विन् शेष रहता हैं।

मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः—मकारान्त, अकारान्त, जिसके उपधा में मकार या अकार हो ऐसे शब्दों से परे मतुप् के मकार को वकार हो जाता है। किन्तु यवादि से पर को नहीं होता है। उदाहरण :—यशस्+विन् से यशस्वित् बना। प्रथमा के एक वचन में 'यशस्वी' रूप सिद्ध हुआ। अभाव पक्ष में यशस् मतुप् (मत्) यशस्मत् बना। 'मादुपधायाश्च' सूत्र से मकार को वकार हुआ। यशस्वत् बना। प्रथमा के एक वचन में 'यशस्वान्' (यशोऽस्यास्ति)। रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार मायावी मायावान्—(माया अस्यास्ति)। मेधावी—(मेधा अस्यास्ति)। स्रग्वी (स्रगस्यास्ति)। आदि रूप सिद्ध होंगे।

प्राग्दिशीय

पञ्चम्यास्तसिल्—किम् आदि पञ्चम्यन्त शब्दों से विकल्प से तसिल् प्रत्यय होता है। इकार–लकार का लोप होने से 'तस्' शेष रहता है। उदाहरण—किम्+तस् इस दशा में 'कुति हो' से किम् को कु आदेश होने से कु+तस् बना। सकार को रुत्व, विसर्ग होने पर 'कुतः' रूप सिद्ध हुआ।

इदम इश्—प्राग्दिशीय प्रत्यय परे रहने पर इदम् को इश् हो जाता है। शकार का लोप होकर इकार शेष रहता है। इदम्+तस्+इ+तस्, 'इतः' रूप सिद्ध हुआ।

अन्—एतद् को अन् हो जाता है, प्राग्दिशीय प्रत्यय परे होने पर। उदाहरण :—एतद्+तस्, अन्+तस् (नकार का लोप होने पर) अतस् बना, रुत्व विसर्ग होने पर 'अतः' रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार यद्+तस्=यतः, बहु+तस्=बहुतः, अदस्+तस्=अमुतः आदि रूप सिद्ध होते हैं।

पर्यभिभ्यांच—परि तथा अभि से तसिल् प्रत्यय होता है। परि+तस्=परितः। अभि+तस्=अभितः।

सप्तम्या त्रल्—किम् आदि सप्तम्यन्त पद से त्रल् प्रत्यय होता है। किम्+त्रल्=कुत्र। यद्+त्रल्=यत्र। तद्+त्रल्=तत्र। बहु+त्रल्=बहुत्र।

इदमो हः—'इदम्' सप्तम्यन्त पद से ह प्रत्यय होता है। इदम्+ह इस दशा में इदम् इश् से इदम् को इश् होने पर 'इह' रूप सिद्ध हुआ। किमोऽत्—किम् सप्तम्यन्त पद से अत् प्रत्यय होता है किम् अत् इस दशा में 'क्वाऽति' से किम् के स्थान में क्व आदेश होने पर क्व+अत् (अ) बना। 'अतो गुणे' से पर रूप होने पर 'क्व' सिद्ध हुआ।

सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा—सर्व, एक, अन्य, किम्, यद्, और तद् इन सप्तम्यन्त कालवाचक शब्दों से स्वार्थ में द प्रत्यय होता है। सर्व+दा=सर्वदा–(सर्वस्मिन् काले)। एक+दा=एकदा–(एकस्मिन् काले) अन्य+दा=अन्यदा–(अन्यस्मिन् काले)। किम्+दा=कदा—(कस्मिन् काले)। यद्+दा=यदा (यस्मिन् काले)। तद्+दा=तदा—तस्मिन् काले।

इदमो र्हिल्—काल वाचक सप्तम्यन्त इदम् शब्द से स्वार्थ में र्हिल् प्रत्यय होता है। लकार का लोप होने से 'र्हि शेष' रहता है।

एतेतौ रथोः—'इदम्' को रकारादि प्रत्यय परे होने पर 'एत' और थकारादि प्रत्यय परे होने पर 'इत' आदेश होते हैं। इदम्+र्हि यहां पर रकारादि प्रत्यय र्हि परे होने पर इदम् को 'एत' आदेश होने पर 'एतर्हि' (अस्मिन् काले) रूप सिद्ध हुआ।

किम्, यद् इन सप्तम्यन्त काल वाचक पदों से र्हिल् प्रत्यय विकल्प से होता है। उदाहरण—किम्+र्हि=कर्हि। किम्+दा=कदा। यद्+र्हि=यर्हि। यद्+दा=यदा। तद्+र्हि=तर्हि। तद्+दा=तदा।

प्रकारवचने थाल्—प्रकार अर्थ में किम् आदि शब्दों से थाल् प्रत्यय होता है। लकार का लोप होने से 'था' शेष रहता है। किम्+था=कथा। यद्+था=यथा।

इदमस्थमुः—(एतदोऽपि वाच्यः)—'प्रकार' अर्थ में 'इदम्' तथा 'एतद्' शब्दों से थमु प्रत्यय होता है। उकार का लोप होने से 'थम्' शेष रहता है। उदाहरण :–एतद्+थमु इदम्+ थम्=इत्थम् (अनेन प्रकारेण)।

नोट—इदम् शब्द के स्थान में 'एतेतौ रथोः' से और 'एतद्' शब्द को 'एतदः' से इत् आदेश हुआ। इदम् और एतद् , दोनो से 'इत्थम्' रूप सिद्ध होता है।

किमश्च—प्रकार अर्थ में किम् से थमु प्रत्यय होता है। किम्+थ इस स्थिति में किमः कः' से 'किम् ' को क आदेश होने पर 'कथम्' रूप सिद्ध होता है।

प्रागिवीय प्रत्यय

अतिशायने तमबिष्ठनौ—अतिशय अर्थ में वर्तमान पद से स्वार्थ में 'तमप् ' और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं। उदाहरणः—आढ्य+तमप्= आढ्यतमः (अयमेषामतिशयेन आढ्यः)। लघु+तमप्=लघुतमः, लघु+ इष्ठन्=लघिष्ठः (अयमेषामतिशयेन लघुः)।

तिङश्च—अतिशय अर्थ में वर्तमान तिङन्तपद से भी स्वार्थ में 'तमप्' प्रत्यय होता है।

तरप्तमपौ घः—तरप् और तमप की घ संज्ञा होती है। किमेत्तिङ-व्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे—घ प्रत्ययान्त किम्, एकारान्त, तिङ् और अव्यय से आमु प्रत्यय होता है, द्रव्य के प्रकर्ष में नहीं। उकार का लोप होने से 'आम्' शेष रहता है। किम्+तमप्+आम्=किन्तमाम्, पचति+ तमप्+आम्=पचतितमाम् (अच्छा पकाता है)। उच्चैस्+तमप्+आम् =उच्चैस्तमाम् (बहुत ऊँचे से)।

नोट—द्रव्य के प्रकर्ष में आम् प्रत्यय नहीं होता। उच्चैस्+तमप्= उच्चैस्तमः, उच्चैस्+तरप्=उच्चैस्तरः वृक्षः। 'वृक्ष' पद द्रव्य वाची है।

द्विवचने विभज्योपपदे तरबीयसुनौ—किन्हीं दो में से एक के अतिशय को प्रकट करने वाले पद से स्वार्थ में तरप् और ईयसुन् प्रत्यय होते हैं।

लघु+तरप्=लघुतरः, लघु+ईयसुन्, इस स्थिति में 'टेः' से टि का लोप होने पर लघीयस्—इस दशा में प्रथमा विभक्ति के एक वचन में उपधा के दीर्घ होने से नुम् होने से लघीयान् (अयं, अनयोः अतिशयेन लघुः) रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार पटु+तरप्=पटुतरः—(अयं अनयोः अतिशयेन पटुः)। पटु+ईयसुन्=पटीयान् (अयं अनयोः अतिशयेन पटुः)।

प्रशस्यस्यश्रः—अजादि अतिशयार्थक इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय परे होने पर प्रशस्य को 'श्र' आदेश हो जाता है। प्रशस्य+ईयसुन् (ईयस्) यहां पर प्रशस्य को 'श्र' आदेश होने पर 'श्र ईयस्' बना। गुण होने पर श्रेयस् बना। प्रथमा के एक वचन में श्रेयान् रूप सिद्ध हुआ। प्रशस्य+इष्ठन् (इष्ठ), श्र+इष्ठ, श्रेष्ठ, बना। प्रथमा के एक वचन में श्रेष्ठः (अयं एषाम् अतिशयेन प्रशस्यः) रूप सिद्ध हुआ।

ज्य च—इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय परे होने पर प्रशस्य को ज्य आदेश हो जाता है। उदाहरण—ज्येष्ठः (अयं एषाम् अतिशयेन प्रशस्यः) प्रशस्य+इष्ठ, ज्य+इष्ठ, इस स्थिति में गुण होकर प्रथमा के एक वचन में ज्येष्ठः रूप सिद्ध हुआ। ज्यायान्—(अयं अनयोः अतिशयेन प्रशस्यः)। प्रशस्य+ईयस् इस दशा में 'ज्यादादीयसः' सूत्र से ईयस् के ईकार को आकार होने पर ज्या आयस् बना। सवर्ण दीर्घ हो कर ज्यायस् बना। प्रथमा के एक वचन में ज्यायान् रूप सिद्ध हुआ।

बहोर्लोपो भू च बहोः—बहु शब्द से परे इमनिच् और ईयसुन् प्रत्ययों के क्रमशः आदि इकार और आदि ईकार का लोप होता है तथा बहु के स्थान में भू आदेश होता है। बहु+इमनिच् (इमन्), इस दिशा में आदि इकार का लोप होने से बहु को भू आदेश होने से भूमन् बना। प्रथमा के एक वचन में भूमा—(बहोर्भावः) रूप सिद्ध हुआ। बहु+ईयस् इस स्थिति में बहु के स्थान में भू आदेश ईयस् के आदि ईकार का लोप होने से भूयस् बना। प्रथमा के एक वचन में उपधा दीर्घ और नुम् होने से भूयान्—(अयं अनयोः अतिशयेन बहुः) रूप सिद्ध हुआ।

इष्ठस्य यिट् च—बहु शब्द से परे 'इष्ठन' के आदि इकार का लोप हो जाता है और यिट आगम होता है और बहु को भू आदेश हो जाता है। उदाहरण—बहु+इष्ठन् (इष्ठ), भू+(इष्ठ), भू+यिष्ठ बना प्रथमा के एक वचन में भूयिष्ठः (अयम् एषां बहुः) रूप सिद्ध हुआ।

किंयत्तदोर्निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच्—दो में से एक निर्धार्यमाण किम्, यद्, और तद् शब्द से 'डतरच्' प्रत्यय होता है। डकार-चकार का लोप होने से अतर शेष रह जाता है। उदाहरण:—कतरो वैष्णवः (अनयोः कः वैष्णवः)। किम्+अतर, इस दशा में 'डतर्' प्रत्यय के डित् होने से प्रकृत शब्द के टि (इम्) का लोप होने से प्रथमा के एक वचन 'कतरः' रूप बना। इसी प्रकार यद्+डतरच (अतर)=यतरः (अनयो यः)। तद्+डतरच् (अतर) ततरः। (अनयोः सः)।

वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्—बहुतों में एक निर्धार्यमाण किम्, यद्, तद् शब्दों से डतमच् प्रत्यय होता है। डकार-चकार का लोप होने से 'अतम' शेष रहता है। उदाहरण—कतमो भवतां कठः—किम्+डतमच् (अतम)=कतमः। यद्+डतमच् (अतम)=यतमः। तद्+डतमच् (अतम) ततमः। 'डतमच्' प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग सदैव निर्धारण अर्थ में होता है।

स्वार्थिक प्रत्यय

तत्प्रकृत वचने मयट्—प्राचुर्य विशेषण से विशिष्ट प्रथमान्त पदों से स्वार्थ में 'मयट्' प्रत्यय होकर 'मय' शेष रहता है। उदाहरण:—अन्न+मयट् (मय)=अन्नमयम् (प्रचुरमन्नम्), इसी प्रकार 'अन्नमयो यज्ञः' (प्रचुर मन्नं यस्मिन् यज्ञे)। तथा 'अपूपमयं' पर्व (अपूपानां प्राचुर्यं यस्मिन पर्वणि) रूप सिद्ध होते हैं।

बह्वल्पाऽर्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम्—बह्वर्थक तथा अल्पार्थक कारक पदों से स्वार्थ में विकल्प से 'शस्' प्रत्यय होता है। उदाहरण—बहु+शस्=बहुशः। अल्प+शस=अल्पशः।

आद्यादिभ्यस्तसेरुपसंख्यानम्—आदि मध्य, अन्त, पार्श्व, आदि शब्दों से 'तसि' प्रत्यय होता है। इकार-लोप से 'तस्' शेष रहता है। उदाहरण—आदि+तस्=आदितः। मध्य+तस्=मध्यतः। अन्त+तस्=अन्ततः। पार्श्व+तस्=पार्श्वतः। स्वर+तस्=स्वरतः। वर्ण+तस्=वर्णतः।

शब्द कोष

भागनेयः=भांजा । सौमित्रिः=लक्ष्मण । आदित्यः=सूर्य । व्योमन्=आकाश । आद्रियते=आदर पाता है । उदेति=निकलता है । उत्पतति=उड़ता है ।

अभ्यास ३०

(तद्धित प्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. विनता का पुत्र गरुड़ पक्षियों का राजा है—विनतायाः पुत्रः गरुड़ः पक्षिणां राजा अस्ति । २. गोविन्द मेरा भांजा है—गोविन्दः मम भागनेयः अस्ति । ३. दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा—दाशरथिः रामः रावणं हतवान् । ४. सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण राम के साथ वन गये—सौमित्रिः लक्ष्मणः रामेण सह वनम् अगच्छत् । ५. कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने कृष्ण से कहा—कौन्तेयः अर्जुनः कृष्णम् उवाच । ६. अदिति के पुत्र सूर्य आकाश में शोभा देते हैं—आदित्यः रविः व्योम्नि शोभते । ७. राम राजवंश वाले क्षत्रिय हैं—रामः राजन्यः क्षत्रियः अस्ति । ८. श्याम मेरे श्वशुर का पुत्र है—श्यामः मम श्वशुर्यः अस्ति । ९. विद्यावान् मनुष्य सर्वत्र पूजा जाता है—विद्यावान् मनुष्यः सर्वत्र पूज्यते । १०. युधिष्ठिर गुणवान् तथा मतिमान थे—युधिष्ठिरः मतिमान् गुणवान् च आसीत् । ११. सावित्री गुणवती तथा बुद्धिमती है—सावित्री गुणवती बुद्धिमती च अस्ति ।

(ख) अनुवाद करो:—१—बुद्धिमानों तथा गुणवानों का सर्वत्र आदर होता है । २—गुणवती तथा बुद्धिमती स्त्रियां गृह कार्य सुचारु रूप से करती हैं । ३—वसुदेव के पुत्र कृष्ण ने कंस को मारा । ४—सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण जी वन में राम की सेवा करते हैं । ५—कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने श्री कृष्ण को देखा । ६—पांडु के पुत्र युधिष्ठिर सत्यवादी थे । ७—राधा के पुत्र कर्ण महादानी थे । ८—रघु के पुत्र श्रीराम विश्वामित्र के साथ वन को गये । ९—गुणवान् मनुष्यों का सभी लोग आदर करते हैं । १०—चरित्रवान् पुरुष और चरित्रवती स्त्रियों को देखो ।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार:—

अशुद्ध	शुद्ध
१—दाशरथः गच्छति ।	दाशरथिः गच्छति ।
२—कौन्तिः हसति ।	कौन्तेयः हसति ।

३—राधिः ददाति।	राधेयः ददाति।
४—सौमित्रः वदति।	सौमित्रिः वदति।
५—दात्तः आगतः।	दात्तिः आगतः।

(घ) शुद्ध करो :—

१—धनमान् मनुष्यः सर्वत्र पूज्यते। २—बुद्धिवान् मनुष्यः आगच्छति। ३—गुणमती नारी गृहकार्यं करोति। ४—बुद्धिवती स्त्री पुस्तकं पठति। ५—मतिवन्तं गुणमन्तं च मनुष्यं पश्य। ६—सः धीवतीं धनमतीं च नारीं दृष्ट्वा प्रसन्नः अभवत्। ७—दाशरथः रामः विश्वामित्रम् अवदत्। ८—सौमित्रः लक्ष्मणः अहसत्। ९—आदितिः सूर्यः आकाशे उदेति। १०—वैनतिः गरुडः उत्पतति। ११—राधिः करणः आचारनिपुणः आसीत्। १२—ज्ञानमतीं नारीं पश्य। १३—श्रीमन्तं राज्ञीं श्रीमतीं राजानं च पश्य। १४—कौन्तिः बाणेन शत्रून् हतवान्।

शब्द कोष

क्षुधितः = भूखा। पिपासितः = प्यासा। अभिलष् = इच्छा करना। नाविकः = मल्लाह। रक्षति = रक्षा करता है। उपदिशति = उपदेश देता है। अद्यत्वे = आजकल।

अभ्यास ३१
(तद्धित प्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. इस संसार में सभी प्राणी सुख चाहते हैं—अस्मिन् संसारे सर्वे प्राणिनः सुखम् अभिलषन्ति। २. पवन नन्दन हनुमान् जी ज्ञानियों में अग्रगण्य हैं—पवन नन्दन हनूमान् ज्ञानिनाम् अग्रगण्यः अस्ति। ३. तत्वदर्शी योगी ज्ञान का उपदेश करते हैं—तत्वदर्शिनः योगिनः ज्ञानं उपदिशन्ति। ४. इस उद्यान में सभी वृक्ष फूले हुये हैं—अस्मिन् उद्याने सर्वे वृक्षाः पुष्पिताः सन्ति। ५. आजकल श्रमिक वर्ग धनियों द्वारा दलित है—अद्यत्वे श्रमिकवर्गः धनिभिः दलितः भवति। ६. नाविक नाव लाता है—नाविकः नावम् आनयति। ७. परिश्रमी पुरुष लौकिक सुख को प्राप्त करता है—परिश्रमी पुरुषः लौकिकं सुखं प्राप्नोति। ८. धनिक कभी भी दुखी नहीं होता—धनिकः कदापि दुःखितः न भवति। ९. सब लोग सुखी हों—सर्वे सुखिनः भवन्तु। १०. भूखे बालक को भोजन तथा प्यासी बालिका को जल दो—क्षुधिताय बालकाय भोजनं पिपासितायै बालिकायै जलं देहि।

(ख) अनुवाद करो :—१—जो मनुष्य गुणी नहीं होते वे सदा दुःखी रहते हैं। २—भोगी चिन्तित रहते हैं और योगी प्रसन्न रहते हैं। ३—श्याम प्यासा है और राम भूखा है। ४—फूले हुये वृक्षों से वन शोभा देता है। ५—वृक्षों के चारों ओर लतायें अंकुरित होती हैं। ६—बली मनुष्य दुर्बल मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ७—संसार के सभी प्राणी दुःखी हैं। ८—दुःखी मनुष्य सुखी मनुष्य के प्रति ईर्ष्या करते हैं। ९—नागरिक मनुष्य शिष्टता पूर्वक व्यवहार करते हैं। १०—सदाचारी मनुष्य सदा सच बोलता है। ११—समाज में सत्य भाषियों का आदर होता है, असत्य भाषियों का नहीं। १२—विद्यावान पुरुष तथा विद्यावती स्त्री को देखो। १३—क्रोधी और लोभी मनुष्य कदापि सुखी नहीं होते।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचारः—

अशुद्ध	शुद्ध
१—तौ गुण्यौ स्तः।	तौ गुणिनौ स्तः।
२—ते तत्वदर्श्यः सन्ति।	ते तत्वदर्शिनः सन्ति।
३—लता पुष्पिताः अस्ति।	लता पुष्पिता अस्ति।
४—तरुः कुसुमिता अस्ति।	तरुः कुसुमितः अस्ति।
५—धनिकः धनम् इच्छन्ति।	धनिकः धनम् इच्छति।
६—मायाकः आयाति।	मायिकः आयाति।

(घ) शुद्ध करो :—

१—ब्रह्मचारी पश्य। २—सः गुणीं पश्यति। ३—धनीनां धनानि। ४—चौरैः धनाः अपहतानि। ५—उपवने वृक्षाः कुसुमितानि सन्ति। ६—ग्रामं परितः तरवः अंकुरितानि भवन्ति। ७—दुःखितः नारी रोदिति। ८—पिपासिता बालकः आयाति। ९—क्षुधितायै शिशवे दुग्धं देहि। १०—दुःखितायै जनाय धनं देहि। ११—मायाकः सदा दुर्व्यवहरति। १२—दुराचारी नारी सदा अपमानितः भवति।

शब्द कोष

अवलोकनीयः=देखने के योग्य। पौराणिकः=पुराण सम्बन्धी। लौकिकः=लोक सम्बन्धी। वार्षिकः=वर्ष सम्बन्धी। पाणिनीयम् = पाणिनिकृत।

अभ्यास ३२

(क) उदाहरण—१. वेद पढ़ने वाला मनुष्य धर्म का आचरण करता है—वैदिकः धर्मम् आचरति। २. पुराण जानने वाला ब्राह्मण प्रवचन करता है—पौराणिकः प्रवचनं करोति। ३. तुम पाणिनि का व्याकरण पढ़ो—त्वं पाणिनीयं व्याकरणं पठ। ४. प्रातःकाल का दृश्य मनोहर होता है—प्रातःकालीनं दृश्यं मनोहरम् अस्ति। ५. आज विद्यालय के वार्षिक उत्सव में बहुत से लोग आये—अद्य विद्यालयस्य वार्षिके उत्सवे बहवो जनाः सम्मिलिताः सन्ति। ६—इस समय की उपवन की शोभा अवलोकनीय है—इदानीन्तनस्य उपवनस्य शोभा अवलोकनीया। ७—आज इस विद्यालय में वार्षिक परीक्षा होगी—अद्य अस्मिन विद्यालये, वार्षिकी परीक्षा भविष्यति। ८. यह छात्र पुराना है—अयं छात्रः पुरातनः अस्ति। ९. यह मेरा दैनिक कार्य है—इदं मम दैनिकं कर्म अस्ति। १०. शरद् सम्बन्धी शोभा को देखो—शारदीं शोभाम् अवलोकय।

(ख) अनुवाद करो :—१. हमारे विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रतिवर्ष वार्षिक परीक्षा होती है। २. उसे पौराणिक कथा अच्छी लगती है। ३. मुझे वैदिक धर्म अच्छा लगता है। ४. ईश्वर चिरन्तन पुरातन और सनातन है। ५. इस नगर में धार्मिक मनुष्य रहते हैं। ६. नैयायिक और साहित्यिक विद्वान होते हैं। ७. वाल्मीकि का रामायण, पाणिनि का व्याकरण, और माहेश्वर के सूत्रों को पढ़ो। ८. भक्ति से लौकिक और परलौकिक सुख प्राप्त होते हैं। ९. विषय में आसक्त जनों को भौतिक वस्तु अच्छी लगती है। १०. मीमांसक कर्म में विश्वास करता है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. पाणिनीयस्य व्याकरणं पठ।	पाणिनीयं व्याकणं पठ।
२. वाल्मीकीयस्य रामायणं पठ्यते।	वाल्मीकीयं रामायणं पठ्यते।
३. शारदः दृश्यम् अवलोकनीयम्।	शारदं दृश्यम् अवलोकनीयम्।
४. सायंकालीनः दृश्यं पश्य।	सायंकालीनं दृश्यं पश्य।
५. व्याकरणी आगतः।	वैयाकरणः आगतः।
६. तर्की तर्कयति।	तार्किकः तर्कयति।
७. सः आह्निकः कार्यं करोति।	सः आह्निकं कार्यं करोति।

(घ) शुद्ध करो :—

१. सैन्धवः आनेतव्यम् । २. अद्य वार्षिकः परीक्षा भविष्यति । ३. दैनिकः कार्यं सर्वैः कर्त्तव्यः । ४. पाणिनीयस्य व्याकरणं पठितव्यम् । ५. वैदकः पौराणकः नैयायकः च धर्मं उपदेक्ष्यन्ति । ६. इदं मासिकपत्रिका अवलोकनीयः । ७. तर्की तर्कयति । ८. व्याकरणी विद्वान भवति । ९. वाल्मीकीयस्य रामायणं पठितव्यम् । १०. पारलौकिकः सुखं प्राप्यते ।

शब्द कोष

त्यजति = छोड़ता है । प्रदर्शयति = दिखलाता है । कारुण्यम् = करुणा का भाव । मधुरिमा = मधुरता । क्षत्रियवत् = क्षत्रिय के समान । श्वेतिमा = उज्ज्वलता ।

अभ्यास ३३
(तद्धितप्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. प्रातःकाल प्रकृति का सौन्दर्य अवलोकनीय है—प्रातः काले प्रकृतेः सौन्दर्यम् अवलोकनीयम् । २—श्रमशील मनुष्य सौख्य प्राप्त करता है—श्रमशीलः मनुष्यः सौख्यं प्राप्नोति । ३. कवि काव्य रचता है—कविः काव्यं रचयति । ४. धीर पुरुष धैर्य को नहीं छोड़ते—धीराः पुरुषाः धैर्यं न त्यजन्ति । ५. राम की सज्जनता प्रशंसनीय है—रामस्य सज्जनता प्रशंसनीया । ६. वीर रणक्षेत्र में अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हैं—वीराः रणक्षेत्रे स्वशौर्यं प्रदर्शयन्ति । ७. देवदत्त की मूर्खता देखकर श्याम हँसा—देवदत्तस्य मूर्खताम् अवलोक्य श्यामः अहसत् । ८. सज्जनों का सामीप्य सदा सुखद होता है—सज्जनानां सामीप्यं सदा सुखकरम् अस्ति । ९. राम में अत्यन्त करुणा का भाव है—रामे अत्यन्तं कारुण्यम् विद्यते । सरला की वाणी में मिठास है—सरलायाः वाण्यां मधुरिमा अस्ति ।

(ख) अनुवाद करो :—

१. राम श्याम का प्रभुत्व देखकर प्रसन्न हुआ । २. आप ब्राह्मण के समान आचरण करते हैं । ३. वेदों की महिमा कौन नहीं जानता । ४. विपत्ति में धैर्य को नहीं छोड़ना चाहिये । ५. वह सदा शूद्रवत् व्यवहार

करता है। ६. इसउपवन की सुन्दरता देखने योग्य है। ७. राम ने क्षत्रियवत् युद्ध किया। ८. कपीश हनूमान के शौर्य को देखकर लङ्कानिवासी निशाचर भयभीत हो गये। ६. राम में विद्वत्ता के साथ-साथ सज्जनता भी है। १०. कालिदास ने रघुवंश-महाकाव्य की रचना की। ११. चन्द्र किरणों की श्वेतिमा चारों ओर फैल रही है। १२. लाल कमल की लालिमा अत्यन्त शोभनीय है। १३. श्याम की वाणी में मधुरता है। १४. श्याम के केशों की कालिमा दर्शनीय है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. तस्य कारुण्यता।	तस्य कारुण्यम्।
२. मम सौख्यता।	मम सौख्यम्।
३. कवेः काव्यता।	कवेः काव्यम्।
४. लघुत्वतां पश्य।	लघुत्वं पश्य।
५. गोविन्दस्य स्थैर्यता।	गोविन्दस्य स्थैर्यम्।
६. सौजन्यताम् अवलोकय।	सौजन्यम् अवलोकय।
७. रामस्य महत्वता।	रामस्य महत्वम्।

(घ) शुद्ध करो :—

१. श्यामः दुष्टत्वतां दर्शयति। २. तेषां शौर्यताम् अवलोकय। वयम् आश्चर्यान्वितः आस्म। ३. कालिदासस्य विद्वानता प्रसिद्धा अस्ति। ४. तस्य उपवनस्य सौन्दर्यता दर्शनीया। ५. परिश्रमेण सव सौख्यता प्राप्यते। ६. गोस्वामि तुलसीदासस्य महानतां को न जानाति। ७. तेषां कारुण्यतां पश्य। ८. तस्य महिमां दृष्ट्वा सः प्रसन्नोऽभूत्। ६. देवदत्तस्य महिमाः प्रसिद्धाः सन्ति। १०. रामस्य इमां महिमाम् अवलोक्य भार्गवः प्रसन्नोऽभवत्। ११. प्रकृतेः सौन्दर्यता अद्भुतम् अस्ति। १२. सज्जनानां सामीप्यता सुखकरी भवति।

शब्द कोष

इतस्ततः = इधर-उधर। तरुः = वृक्ष। बहुत्र = बहुत जगह। शतधा = सौ प्रकार से। इत्थम् = इस प्रकार। परिभ्रमति = घूमता है। मत्तः = मुझ से। त्वत्तः = तुझसे।

अभ्यास ३४
(तद्धित प्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. श्याम इधर-उधर घूमता है—श्यामः इतस्ततः परिभ्रमति। २. तुम कहां से आते हो—त्वं कुतः आयासि। ३. विद्यालय के चारों ओर उद्यान हैं—विद्यालयं परितः उद्यानानि सन्ति। ४. यहाँ चार पुस्तकें हैं—अत्र चत्वारि पुस्तकानि सन्ति। ५. वहां चार वृक्ष हैं—तत्र चत्वारः तरवः सन्ति। ६. जहां तुम जाओगे वहां मैं भी जाऊँगा—यत्र त्वं गमिष्यसि तत्र अहम् अपि गमिष्यामि। ७. हिमालय प्रदेश में देवदारु के वृक्ष बहुत स्थानों पर देखे जाते हैं—हिमालयप्रदेशे देवदारु वृक्षाः बहुत्र दृश्यन्ते। ८. सुदामा ने कृष्ण को मुट्ठी भर चावल दिया—सुदामा कृष्णाय मुष्टिमात्रं तण्डुलम् अददात्। ६. मैंने श्याम से सैकड़ों बार निवेदन किया किन्तु उसने एक न सुनी—अहं श्यामाय शतधा न्यवेदयम् किन्तु सः मह्यं न प्रत्यशृणोत्। ६ देवदत्त मुझसे और तुझसे पुस्तक पढ़ता है—देवदत्तः मत्तः त्वत्तः पुस्तकानि पठति। १०. उसने ऐसा कहा—सः इत्थम् अवदत्। ११. तुम क्यों रोते हो—त्वं कथं रोदिषि ?

(ख) अनुवाद करो :—

१. तुम वहां जाकर फल खाओ। २. मैं यहां बैठता हूँ। ३. श्याम जहाँ जायगा, वहाँ राम भी जायगा। ४. पर्वत के चारो ओर वन हैं। ५. विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं। ६. वह हमसे और तुमसे पढ़े। ७. तुम्हारी पुस्तकें दूसरी जगह हैं। ८. श्याम कहाँ से आता है ? ६. वह यहां से कब जायगा ? १०. मैंने उसको चार बार ढूंढा किन्तु वह न मिला। ११ उसने मुझसे इस प्रकार निवेदन किया। १२. गङ्गा तट पर घुटने मात्र जल है। १३. यमुना तट पर कमर तक जल है। १४. तुम इस समय जाओगे तो कब लौटोगे।

शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१ नगरस्य सर्वतः।	नगरं सर्वतः।
२. वृक्षस्य उभयतः।	वृक्षम् उभयतः।
३. कटि मात्रः।	कटि मात्रम्।
४. इत्थः वदति।	इत्थं वदति।
५. सहस्रधाः पठति।	सहस्रधा पठति।

(घ) शुद्ध करो :—

१—त्वं कुत्र आगच्छति। २—सः कुतः गमिष्यसि। ३—मुष्टिमात्रः तण्डुलं देहि। ४—ग्रामस्य उभयतः लताः सन्ति। ५—सः बहुधः माम् अपश्यत्। ६—सः विद्यालयं त्रिधं गच्छति। ७—तत्र जलाशये कटिमात्रं सलिलः अस्ति। ८—त्वं कुतः पठसि। ९—सः इतः तिष्ठति। १०—रामः अत्र गच्छति। ११—सः अन्यत्रं गच्छति। १२—अस्मिन् देशे ईर्ष्यालवः सर्वत्रं दृश्यन्ते।

शब्द कोष

ज्येयान्=बड़ा। कनीयान्=छोटा। ज्येष्ठः=(सब से) बड़ा। कनिष्ठः=(सब से) छोटा। प्रेयान्=(उस से) प्रिय। प्रेष्ठः-(सब से) प्रिय।

अभ्यास ३५

(तद्धित प्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. मातृ भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है—मातृ भूमिः स्वर्गादपि गरीयसी भवति। २. देवदत्त यज्ञदत्त से श्रेष्ठ है—देवदत्तः यज्ञदत्तात् श्रेयान् अस्ति। ३—कालिदास कवियों में श्रेष्ठ है—कालिदासः कविषु श्रेष्ठः अस्ति। ४. युधिष्ठिर अर्जुन से बड़े थे—युधिष्ठिरः अर्जुनात् ज्यायान् आसीत्। ५. राम श्याम से छोटा है—रामः श्यामात् कनीयान् अस्ति। ६. रघुवंशियों में राम सब से बड़े और शत्रुघ्न छोटे थे—राघवाणां रामः ज्येष्ठः शत्रुघ्नः कनिष्ठः। ७. राणा प्रताप क्षत्रियों में सबसे बलवान् था—राणा प्रतापः क्षत्रियाणां बलिष्ठः आसीत्। ८. गोविन्द गोपाल से चतुर है—गोविन्दः गोपालात् पटुतरः अस्ति। ९. श्यामा रामा से बड़ी है—श्यामा रामायाः ज्यायसी अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—मेरा गांव तुम्हारे गांव से दूर है। २—श्याम राम से मोटा है। ३—ब्राह्मण सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ है। ४—पाण्डवों में युधिष्ठिर सबसे बड़े भाई थे। ५—दशरथ के चारों पुत्रों में राम सबसे बड़े और शत्रुघ्न सबसे छोटे थे। ६—यह पुस्तक उस पुस्तक से बड़ी है। ७—सुरेश दिनेश से चतुर है। ८—कमला विमला से बलवती है। ९—फलों में केला मुझे सबसे प्रिय है। १०—गोपाल सभी लड़कों से चतुर है। ११—मेरा घर विद्यालय

से दूर है। १२—परमात्मा इससे महान् तथा बलवान है। १३—यह वृक्ष सब वृक्षों से विशाल है। १४—सरला प्रतिमा से कोमल है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—अयं श्रायान्।	अयं श्रेयान्।
२—श्यामः ज्यायिष्ठः।	श्यामः ज्येष्ठः।
३—अयं प्रायान्।	अयं प्रेयान्।
४—सः युवीयान्।	सः कनीयान्।
५—सः युविष्ठ।	सः कनिष्ठः।
६—सः स्थायान्।	सः स्थेयान्।
७—सः प्रियष्ठः।	सः प्रेष्ठः।
८—अयं मृदीयान्।	अयं म्रदीयान्।

(घ) शुद्ध करो :—

१—जन्म भूमिः स्वर्गादपि गरीयान्। २—स्वधर्मः परधर्मात् श्रेयसी। ३—रामः सर्वेषां भ्रातृणां ज्यायान्। ४—युधिष्ठिरः अर्जुनात ज्येष्ठः। ५—कालिदासः कवीनां श्रेयान्। ६—रामः श्यामात् वरिष्ठः। ७—गोविन्दः सर्वेषां छात्राणां बलीयान्। ८—मम गृहं विद्यालयात् दूरतमम् अस्ति। ९—श्यामा रामायाः कोमला अस्ति। १०—सुरेशः दिनेशात् पटुः। ११—इदं वस्तु तस्मात् लघु अस्ति। तव पुस्तकं अस्मात् लघिष्टम्। १२—इयं योजना तस्याः योजनायाः बृहत्तमा अस्ति।

शब्द कोष

प्रियतरः=(उससे) प्रिय। प्रियतमः=(सबसे) प्रिय। पटुतरः=(उससे) चतुर। पटुतमः=(सबसे) चतुर। नवीनतरः=(उससे) नवीन। नवीनतमः=(सबसे) नवीन।

अभ्यास ३६

(तद्धित प्रत्यय)

(क) उदाहरण :—१. राम श्याम से चतुर है—रामः श्यामात् पटुतरः। २. प्रतिमा सरला से चतुर है—प्रतिमा सरलायाः पटुतरा। ३. यह पुस्तक उससे प्रिय है—इदं पुस्तकं तस्मात् प्रियतरम्। ४. कालिदास कवियों में श्रेष्ठ हैं—कालिदासः कविषु श्रेष्ठः। ५. श्याम छात्रों में चतुर

है—श्यामः छात्राणां पटुतमः। ६. ज्ञान से भक्ति बड़ी है—ज्ञानाद् भक्तिः प्रशस्यतरा अस्ति। ७. यह पुस्तक उससे बड़ी है—इदं पुस्तकं तस्मात् वृहत्तरम्। ८. यह पेड़ सभी पेड़ों से प्राचीन है—अयं वृक्षः सर्वेषां वृक्षाणां प्राचीनतमः अस्ति। ९. प्रकाश महेश से छोटा है—प्रकाशः महेशात् कनीयान्। १०. राम लक्ष्मण से ज्येष्ठ है—रामः लक्ष्मणात् ज्येयान् अस्ति। ११. श्यामा छात्राओं में चतुर है—श्यामा छात्रासु पटुतमा। १२. नक्षत्रों में चन्द्रमा बड़ा है—नक्षत्राणां चन्द्रः महत्तमः।

(ख) अनुवाद करोः—१—वर्षा ऋतु में सबसे अधिक वर्षा होती है। २—गरमी के मौसम में सबसे अधिक गरमी पड़ती है। ३—यह वृक्ष उससे बड़ा है। ४—यह पुस्तक उस पुस्तक से नई है। ५—मुझे सबसे पुराना ग्रंथ दो। ६—श्याम का वस्त्र राम से नया है। ७—मुझे सबसे पुराना वस्त्र दो। ८—श्यामा का शरीर सबसे कोमल है। ९—मोहिनी दुर्गा से छोटी है। १०—कमला सरोजिनी से कोमल है। ११—मोहन सबसे बड़ा विद्वान् है। १२—दिनेश सुरेश से अधिक दुष्ट है। १३—विमला सबसे अधिक विदुषी है। १४—यह फल सबसे मीठा है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार.......

अशुद्ध	शुद्ध
१—श्यामः रामेण पटुतरः।	श्यामः रामात् पटुतरः।
२—प्रतिभा सरलया पटुतरा।	प्रतिभा सरलायाः पटुतरा।
३—इदं तस्मात् प्राचीनतमम्	इदं तस्मात् प्राचीनतरम्।
४—अयं सर्वेषां नवीनतरः।	अयं सर्वेषां नवीनतमः।
५—कमला सर्वासु विद्वत्तरा।	कमला सर्वासु विद्वत्तमा।
६—सुषमा विमलायाः विद्वत्तमा।	सुषमा विमलायाः विद्वत्तरा।

(घ) शुद्ध करो :—१—कालिदासः कवीनां बुद्धिमत्तरः। २—श्यामः तस्मात् पटुतमः। ३—मोहिनी सरोजिन्या पटुतरा। ४—इयं तस्याः मृदुतमा। ५—मम पुस्तकं सर्वेषां प्रियतरम्। ६—अयं वृक्षः तस्मात् लघुतरः। ७—इमानि फलानि सर्वेषां मधुरतराणि सन्ति। ८—इदं पुष्पं तस्मात् सुन्दरतमम्। ९—गोविन्दः गोपालेन महत्तरः। १०—श्यामः मोहनेन लघुतरः। ११—सरला सर्वासु छात्रासु विद्वत्तरा। १२—ग्रीष्मर्तौ दिनं महत्तरम्। १३—अयं वृक्षः तस्मात् नवीनतमः। १४—इदं गृहं सर्वेषां प्राचीनतरम्।

कृदन्त प्रकरण

कृत्—धातु के अन्त में जिसे जोड़कर संज्ञा और विशेषण आदि शब्द बनते हैं, उसे कृत् प्रत्यय कहते हैं।

कृदन्त—धातु के अन्त में कृत् प्रत्यय के जोड़ने से जो शब्द बनते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं।

कर्तरिकृत्—कर्त्ता अर्थ में कृत् प्रत्यय होते हैं। पूर्व कृदन्त और उत्तर कृदन्त का विचार अगले पृष्ठों पर किया गया है।

तयोरेव कृत्यक्त खलर्थाः—कृत्यक्त और खलर्थ प्रत्यय भाव और कर्म में होते हैं।

कृदन्त के दो प्रकार होते हैं:—१—पूर्व कृदन्त। २—उत्तर कृदन्त।

पूर्व कृदन्त के प्रत्यय प्रायः कारक-अर्थ में प्रयुक्त होते हैं और उत्तर कृदन्त के प्रत्यय प्रायः भाव तथा अव्यय अर्थ मे प्रयुक्त होते हैं।

कृत्य प्रत्यय

तव्यत्तव्यानीयरः—धातुओं से तव्य तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय 'चाहिये' अर्थ में होते हैं। तकार और रकार का लोप हो जाने से तव्य और अनीय शेष रह जाता है।

(क) अकर्मक धातुओं से ये प्रत्यय भाव अर्थ में होते हैं। भाव अर्थ में इनका प्रयोग नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होता है और इनके कर्त्ता का प्रयोग तृतीया विभक्ति में होता है। उदाहरण—एधितव्यम् एधनीयं वा त्वया। इस उदाहरण में एध् अकर्मक धातु है। इसलिये यहां भाव अर्थ में तव्यत् प्रत्यय और अनीयर् प्रत्यय हुये हैं। भाव अर्थ में होने से इनका प्रयोग नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में हुआ है और इनका कर्त्ता तृतीया विभक्ति में त्वया हो गया है।

(ख) सकर्मक धातुओं से ये प्रत्यय कर्म अर्थ में होते हैं। कर्म जिस लिङ्ग विभक्ति और वचन का होता है उसी में इन प्रत्ययों से बने शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कर्त्ता का तृतीया में कर्म का प्रथमा विभक्ति में, प्रयोग होता है।

उदाहरण—चेतव्यः चयनीयो वा धर्मस्त्वया। इस वाक्य में चि धातु सकर्मक है। इसलिये यहाँ तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय 'कर्म' अर्थ में हुए हैं। इनका कर्म 'धर्म' प्रथमा विभक्ति के एक वचन में हैं। पुल्लिङ्ग में 'चेतव्यः' चयनीयः। स्त्रीलिङ्ग में चेतव्या चयनीया। नपुंसक लिङ्ग में चेतव्यम् चयनीयम् होता है। यथा चेतव्यं चयनीयं वा पुष्पम्। चेतव्या चयनीया वा लता। चेतव्यः चयनीयो वा धर्मः।

कृत्यल्युटो बहुलम्—कृत्य और ल्युट् प्रत्यय बहुल होते हैं। बहुल चार प्रकार का होता है। (१) प्रवृत्ति (प्राप्ति न होने पर भी प्रवृत्त होना)। (२) अप्रवृत्ति (प्राप्त होने पर भी प्रवृत्त न होना। (३) विकल्प से प्रवृत्त होना। (४) किसी अन्य प्रकार से प्रवृत्त होना। स्नानीयं चूर्णम् दानीयो विप्रः, इन प्रयोगों में अनीयर् प्रत्यय क्रमशः 'करण' अर्थ और 'सम्प्रदान' अर्थ में प्राप्त नहीं भी है, फिर भी 'बहुलम्' के आधार पर स्नाति अनेन इति 'स्नानीयं चूर्णम्' प्रयोग में 'करण' अर्थ में तथा दीयते अस्मै इति 'दानीयो विप्रः' में 'सम्प्रदान' अर्थ में अनीयर् प्रत्यय हुआ है। स्ना+अनीयर्=स्नानीयम्, दा+अनीयर=दानीयः।

अचो यत्—अजन्त (स्वर हों अन्त में जिसके) धातु से यत् प्रत्यय 'चाहिये' अर्थ में होता है। यत् प्रत्यय के योग में धातु के अन्तिम स्वर को गुण हो जाता है। जैसे, चि+यत् में इकार को गुण हो जाने से चेय, चेया, चेयम् रूप सिद्ध हुए।

यदि धातु के अन्त में आ होता है तो उसके स्थान में इकार आदेश होता है फिर गुण हो जाता है। जैसे—दा+यत् (य)=देयः देया, देयम्।

वाक्य प्रयोग के शेष नियम तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय के समान होंगे।

पोरदुपधात्—जिस धातु के अन्त में पवर्ग का कोई वर्ण हो और उसके उपधा में कोई अकार हो तो उससे यत् प्रत्यय होता है। उदाहरण—शप्+यत् (य)=शप्यम्। लभ्+यत् (य)=लभ्यम्।

इण्, स्तु, शास्, वृ और जुष् धातु से क्यप् प्रत्यय होता है। इसके क् और प् का लोप हो जाता है शेष य् बचता है। प् का लोप जाने से यह पित् कृत् प्रत्यय कहलाता है। पित् कृत् प्रत्यय परे होने पर ह्रस्व को तुक् का आगम होता है। तुक् में ककार और उकार का लोप हो जाता शेष (त्) बचता है। उदाहरण—स्तु+तुक् (त)+क्यप् (य)=स्तुत्यः।

शास इदङ् हलोः—शास् धातु के उपधा को इकार हो जाता है। उदाहरण शास्+क्यप्=शिष्यः। वृ+तुक्+क्यप्=वृत्यः।

आदृ+तुक्+क्यप्=आदृत्यः। जुष्+क्यप्=जुष्यः।

ऋहलोर्ण्यत्—जिस धातु के अन्त में ऋकार हो अथवा कोई हल् वर्ण हो तो उससे 'ण्यत्' प्रत्यय होता है। 'ण्यत्' के णकार और तकार का लोप हो जाता है और शेष 'य' बचता है। जिस धातु के अन्त में यह प्रत्यय लगता है, उस धातु के ऋकार को आर् वृद्धि हो जाती है। उदाहरण—कृ+ण्यत् (य)=कार्यम्।, हृ+ण्यत (य)=हार्यम्।, धृ+ण्यत् (य)=धार्यम्।

पूर्व कृदन्त

ण्वुल्-तृचौ—(क) 'ण्वुल्' और 'तृच्' प्रत्यय 'कर्त्ता' अर्थ में धातु से होते हैं। ण्वुल का वु और तृच् का तृ बच रहता है।

(ख) यु और वु को क्रम से अन और अक आदेश हो जाता है। उदाहरण—कृ+तृच् (तृ)=कर्ता। कृ+ण्वुल् (वु)=कारकः।

(ग) नन्द आदि धातुओं से 'ल्युट्', ग्रह आदि धातुओं से 'णिनि' और 'पच्' आदि धातुओं से अच् प्रत्यय होते हैं। 'ल्युट्' का यु और 'णिनि' का 'इन्' और 'अच्' का 'अ' शेष रह जाता है। 'यु' के स्थान में 'अन' आदेश हो जाता है। उदाहरण—नन्द+ल्युट् (यु=अन)=नन्दनः। लू+ल्युट् (यु=अन)=लवणः।

ग्रह+णिनि (इन्)='ग्रहिन्' उपधा की वृद्धि होने से 'ग्राहिन्' प्रथमा के एक वचन में 'ग्राही' शब्द बना। स्था+इन् यहां पर का युक् का आगम होने से स्था+य्+इन्=स्थायिन् बना। प्रथमा विभक्ति के एक वचन में 'स्थायी' रूप सिद्ध हुआ।

इगुपधज्ञा प्री किरः कः—जिस धातु के उपधा में इक् (इ उ ऋ लृ) हो, उससे तथा 'ज्ञा', प्री' और 'कॄ' धातुओं से 'क' प्रत्यय होता है। 'क' का 'अ' शेष रह जाता है। 'क' का लोप होने से यह कित् प्रत्यय कहलाता है। कित् प्रत्यय के परे होने से धातु के स्वरों को गुण और वृद्धि कार्य नहीं होता। बुध्+क (अ)=बुधः। कृष्+क (अ)=कृषः। ज्ञा+क (अ)=ज्ञः। यहां पर 'आतो लोप इटि च' सूत्र से ज्ञा के आकार का लोप हो गया है। प्री+क (अ)=प्रियः। यहाँ पर इकार को इयङ् आदेश हो गया है। कॄ+क (अ)=किरः। यहां 'ॠत इद्धातोः' सूत्र से ॠ के स्थान में 'इर्' आदेश हुआ है।

गेहे कः—'ग्रह' धातु से कर्ता अर्थ में 'क' प्रत्यय होता है। ग्रह+क (अ)=गृहम् यहां 'ग्रहि ज्या' सूत्र से सम्प्रसारण होकर ग्रह के स्थान में गृह शब्द हो गया है।

कर्मण्यण्—धातु से परे 'कर्म' उपपद होने से अण् प्रत्यय होता है। णकार का लोप होकर 'अ' शेष रहता है। उदाहरण—कुम्भकारः—कुम्भम् करोति इति कुम्भकारः। कुम्भ+अम्+कृ+अण् (अ)=कुम्भकारः।

क्त क्तवतू निष्ठा—(क) 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं। क्त का त् और क्तवतु का वत् शेष रह जाता है। ये प्रत्यय भूतकाल में होते हैं।

(ख) क्त प्रत्यय भाव और कर्म में होता है और क्तवतु प्रत्यय कर्त्ता में होता है।

(ग) क्त प्रत्ययान्त क्रिया का कर्त्ता तृतीया में और कर्म प्रथमा में होता है।

(घ) क्तवतु प्रत्ययान्त क्रिया का कर्त्ता प्रथमा में और कर्म द्वितीया में होता है।

(ङ) 'क्त' प्रत्यय कर्म और भाव वाच्य में होता है और क्तवतु प्रत्यय कर्तृ वाच्य में होता है।

(च) अकर्मक धातुओं से क्त प्रत्यय भाव अर्थ में होता है और सकर्मक धातुओं से कर्म अर्थ में। उदाहरण—स्ना+क्त (त)=स्नातम् मया।

स्तु+क्त (त)=स्तुतः त्वया विष्णुः। इन प्रयोगों में स्ना अकर्मक धातु है, इसलिये भाव अर्थ में प्रत्यय होने से यहाँ नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा विभक्ति का एक वचन होगा। स्तुतः में 'स्तु' सकर्मक धातु है, इसलिये यहाँ 'कर्म' अर्थ में क्त प्रत्यय हुआ। विश्वं कृतवान् विष्णुः—यहाँ 'कृतवान्' में कृ धातु से कर्ता अर्थ में क्तवतु प्रत्यय हुआ है। कृ+क्तवतु (तवत्)=कृतवत्, प्रथमा विभक्ति के एक वचन में कृतवान् रूप सिद्ध हुआ।

लिटः कानज् वा—लिट् के स्थान में कानच् प्रत्यय होता है। ककार तथा चकार का लोप होने से 'आन' शेष रह जाता है। 'तङानावात्मनेपदम्' अर्थात् तङ् और कानच् की आत्मनेपद संज्ञा होती हैं। उदाहरणः—चक्राणः—कृ धातु से लिट् के स्थान में कानच् (आन) प्रत्यय हुआ। लिट् का कार्य (द्वित्व, और अभ्यास) होने से चकृ आन बना। यण होने पर चक्रान णत्व होने पर 'चक्राण' प्रातिपदिक हुआ। प्रथमा के एक वचन में चक्राणः रूप सिद्ध हुआ।

लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे—प्रथमान्त से भिन्न पद के साथ समानाधिकरण होने पर लट् के स्थान में 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्यय होते हैं। शतृ परस्मैपदी धातुओं से होता है और शानच् आत्मनेपदी धातुओं से। 'शतृ' के शकार और ऋकार का लोप होने से 'अत्' शेष रहता है और शानच् के शकार और चकार के लोप होने से आन शेष रहता है। इन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़ने से अकारान्त प्रातिपदिक शब्द बनते हैं।

शतृ (अत्) शानच् (आन) प्रत्ययों के साथ प्रथमान्त पद के साथ समानाधिकरण नहीं होता। समानाधिकरण का अर्थ है समानविभक्ति वाला। शतृ और शानच् प्रत्यय विशेषण का काम करते हैं, अतः इनके साथ विशेष्य भी समान विभक्ति वाला होता है, 'द्वितीयान्त' हो प्रथमान्त नहीं। जैसे, 'पचन्तं चैत्रं पश्य' इस वाक्य में पचन्तम् और चैत्रम् दोनों क्रमशः विशेषण पद और विशेष्य हैं तथा दोनों द्वितीयान्त पद हैं प्रथमान्त पद नहीं। इसलिये यहां पर द्वितीयान्त पदों का समानाधिकरण है न कि प्रथमान्त पदों का।

कहीं-कहीं प्रथमान्त पद का भी समानाधिकरण देखने में आता है जैसे, ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति—गांव जाते हुये तृण को स्पर्श करता है। यहाँ

गच्छन् शब्द शतृ प्रत्ययान्त है जो प्रथमान्त विशेष्य का समानाधिकरण है अर्थात् विशेष्य (सः) और विशेषण (गच्छन्) दोनों प्रथमान्त पद हैं।

शतृ और शानच् दोनों विशेषण का कार्य करते हैं। पचन्—पच्+ शतृ (अत्), पच् धातु से लट् के स्थान में शतृ प्रत्यय शित् होने से सार्वधातुक हुआ। सार्वधातुक होने से शप् प्रत्यय हुआ। शप् का 'अ' शेष हो जाता है। अतोगुणे से पररूप होकर 'पचत्' प्रातिपदिक शब्द बनता है। प्रथमा विभक्ति के एक वचन् में नुम् का आगम होने से 'पचन्' यह रूप सिद्ध हुआ। इसके रूप सभी विभक्तियों में होते हैं। जैसे पचन् पचन्तौ पचन्तः इत्यादि।

'पचमानं चैत्रं पश्य'—यहाँ भी चैत्र पद विशेष्य है पचमान् शानच् प्रत्ययान्त शब्द है जो विशेषण का काम करता है। विशेषण और विशेष्य दोनो का समानाधिकरण है अर्थात् दोनों द्वितीयान्त पद हैं।

कहीं-कहीं शानच् प्रत्ययान्त पद का प्रथमान्त पद का समानाधिकरण होता है। जैसे, पचमानः देवदत्तः (पकाता हुआ देवदत्त)।

पचमानः—पच् धातु से लट् के स्थान् में शानच् (आन्) प्रत्यय जोड़ने के बाद शप् (अ) होने से धातु अदन्त अङ्ग का हो गया और उसके बाद 'आनेमुक्' से मुक् का आगम हुआ और मुक् का आगम होने से पचमान शब्द बना। प्रथमा विभक्ति के एकवचन में पचमानः शब्द सिद्ध हुआ।

लृटः सद्वा——लृट् के स्थान में सत् प्रत्यय विकल्प से होता है। करिष्यन्तम् करिष्यमाणं पश्य—इस वाक्य में करिष्यन्तम् शतृ प्रत्ययान्त और करिष्यमाणम् शानच् प्रत्ययान्त है। कृ उभयपदी धातु है इसलिये इसमें उपर्युक्त दोनों प्रत्यय लगते हैं। कृ धातु से लृट् के स्थान में क्रमशः शतृ और शानच् आदेश हुये हैं स्य और इट् के होने से 'करिष्यत्' तथा 'करिष्य-माण' शब्द बने। द्वितीया विभक्ति के एक वचन में क्रमशः करिष्यन्तम् करिष्यमाणं रूप सिद्ध हुए।

शब्द-कोष

गन्तव्यः = जाने के योग्य, जाना चाहिये। द्रष्टव्यः = देखने के योग्य, देखना चाहिए। दातव्यम् = देने के योग्य, देना चाहिए।

अभ्यास ३७

कृदन्त प्रत्यय, तव्यत्, अनीयर् ('चाहिए')

(क) उदाहरण:—१. तुम्हें विद्यालय जाना चाहिए—त्वया विद्यालयो गन्तव्यः। २. मुझे घर जाना चाहिए—मया गृहं गन्तव्यम्। ३. यह भवन देखने के योग्य है—इदं भवनं दर्शनीयम्। ४. श्याम की दशा देखने योग्य है—श्यामस्य दशा द्रष्टव्या। ५. सभी कामों को करना चाहिए—सर्वाणि कार्याणि कर्त्तव्यानि। ६. उसका उपहास नहीं करना चाहिए—सः न उपहसितव्यम्। ७. ये पद लिखने के योग्य हैं—इमानि पदानि लेखनीयानि। ८. दीनों को धन देना चाहिए—दीनाय धनं दातव्यम्। ९. यह ग्रंथ मुझे लिखना चाहिए—अयं ग्रंथः मया लेखनीयः। १०. श्याम को हंसना चाहिए—श्यामेन हसनीयम्। ११. स्त्रियों को पुस्तक पढ़ना चाहिए—स्त्रीभिः पुस्तकं पठनीयम्।

(ख) अनुवाद करो:—

१—हम लोगों को अपना कर्म करना चाहिए। २—तुम लोगों को श्लोक याद करना चाहिए। ३—छात्रों को अध्ययन करना चाहिए। ४—छात्राओं को स्नान करना चाहिए। ५—तुम्हें गङ्गा में स्नान करना चाहिए। ६—श्याम को स्वच्छ जल पीना चाहिए। ७—रात में सोना चाहिए। ८—दिन में कदापि नहीं सोना चाहिए। ९—सभा में तुम्हें नहीं हंसना चाहिए। १०—तुम्हें मीठे फल खाने चाहिए। ११—प्रातःकाल की छटा देखनी चाहिए। १२—राम-कथा सभी को सुननी चाहिए।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार:—

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः पुस्तकं पठनीयम्।	तेन पुस्तकं पठनीयम्।
२—त्वं इयं शोभा दृष्टव्या।	त्वया इयं शोभा दृष्टव्या।
३—सः राम-कथा श्रोतव्या।	तेन राम-कथा श्रोतव्या।
४—श्यामेन कृष्ण कथा श्रवणीयम्।	श्यामेन कृष्ण कथा श्रवणीया।
५—त्वया इदं कर्म कर्त्तव्यः।	त्वया इदं कर्म कर्तव्यम्।
६—तेन पुस्तकं पठितव्यः।	तेन पुस्तकं पठितव्यम्।
७—त्वया हसनीयः।	त्वया हसनीयम्।
८—ग्रंथः लेखनीयम्।	ग्रंथः लेखनीयः।

(घ) शुद्ध करोः—

१—तेन हसितव्यः। २—मया शयनीयः। ३—इमानि फलानि खादनीयाः। ४—त्वं गृहं गन्तव्यम्। ५—अहं विद्यालयो गन्तव्यः। ६—रामेण प्रकृति-शोभा दर्शनीयम्। ७—इदं पुस्तकं पठनीयः। ८—अयं ग्रंथः लेखनीयम्। ९—सः राम-कथा श्रोतव्या। १०—सः पुष्पाणि चयनीयानि। ११—तेन शान्तिः स्थापनीयम्। १२—तेन ईश्वरः स्तवनीयम्। १३—सर्वे स्वकार्याणि कर्त्तव्यानि। १४—सः स्वाध्यायात् मा प्रमदितव्यः। १५—त्वं सर्वं कार्यं करणीयम्। १६—अयं ग्रंथः पठनीयम्। १—अस्माभिः लेखः लेखनीया।

शब्द-कोष

देयम्=देने के योग्य, देना चाहिए। चेयम्=चुनने के योग्य, चुनना चाहिए। पेयम्=पीने के योग्य, पीना चाहिए। जेयः=जीतने के योग्य, जीतना चाहिए।

अभ्यास ३८

(कृदन्त—यत्, अच्, अप्)

(क) उदाहरणः—१. मुझे पुस्तक देना चाहिए—मया पुस्तकं देयम्। २. तुम्हें फूल चुनने चाहिए—त्वया पुष्पाणि चेयानि। ३. शिशु को जल पीना चाहिए—शिशुना जलं पेयम्। ४. कुत्सित कर्म छोड़ देना चाहिए—कुत्सितं कर्म हेयम्। ५. राम को यह कविता गानी चाहिए—रामेण इयं कविता गेया। ६. उसके हाथ विशाल हैं—तस्य करौ विशालौ स्तः। ७. नदी बहती है—नदी वहति। ८. वह आश्रय चाहता है—सः आश्रयम् अभिलषति। ९. विद्या विनय प्रदान करती है—विद्या विनयं प्रददाति। १०—काव्य दो प्रकार का होता है दृश्य और श्रव्य—काव्यं द्विविधं दृश्यं श्रव्यं च।

(ख) अनुवाद करो :—

१—तुम्हें पुस्तक लिखना चाहिए। २—मुझे जल पीना चाहिए। ३—राम को दूध पीना चाहिए। ४—यह समाचार सुनने योग्य है। ५—तुम्हें फूलों को चुनना चाहिए। ६—पवन नन्दन अजेय हैं। ७—तुम्हें दुष्कर्म को छोड़ देना चाहिए। ८—श्याम को गीत गाना चाहिए। ९—शिष्य को गुरु से विद्या पढ़नी चाहिए। १०—गुरु को धर्म का उपदेश करना चाहिए।

११—तुम्हें यह पुस्तक मुझे देनी चाहिए। १२—आपको यहाँ ठहरना चाहिए। १३—ईश्वर सब जीवों का आश्रय है। १४—मनुष्यों में विनय एक महान गुण है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः पुस्तकं देयम् ।	तेन पुस्तकं देयम् ।
२—त्वं पयः पेयम् ।	त्वया पयः पेयम् ।
३—अहं दुष्कर्म हेयम् ।	मया दुष्कर्म हेयम् ।
४—इदं काव्यं श्रव्यः ।	इदं काव्यं श्रव्यम् ।
५—अयं शत्रुः जेयम् ।	अयं शत्रुः जेयः ।
६—सः पुष्पं चेयम् ।	तेन पुष्पं चेयम् ।
७—त्वम् अस्माकम् आश्रयम् ।	त्वम् अस्माकम् आश्रयः ।
८—विद्यया विनयं ददाति ।	विद्या विनयं ददाति ।

(घ) शुद्ध करो :—

१—सः पापं हेयम्। २—त्वं पुष्पं चेयम्। ३—शिशुः निर्मलं जलं पेयम्। ४—अहं पुस्तकं देयम्। ५—मया तद्वचनं श्रव्यः। ६—अयं रिपुः जेयम्। ७—त्वया अत्र स्थेयः। ८—छात्राः व्याकरणम् अध्येयम्। ९—बालिकाः इमानि पदानि गेयानि। १०—त्वं शत्रुं जेयः। ११—धनिकाः दानं देयम्। १२—दुष्कृतां आश्रयः हेयम्। १३—तेन विनयः कृतम्। १४—तस्य विजयः निश्चितम्।

शब्द-कोष

नियन्ता=नियामक। कर्त्ता=करने वाला। हर्त्ता=हरने वाला। अध्येता=पढ़ने वाला। संहारक=संहार करने वाला। उत्पादकम्=उत्पन्न करने वाला। कारकम्=करने वाला। सेविका=सेवा करने वाली।

अभ्यास ३९

(कृदन्त एवुल, तृच, (करने वाला) ल्युट्=भाव अर्थ)

(क) उदाहरण :—१. परमेश्वर विश्व का नियन्ता है—परमेश्वरः विश्वस्य नियन्ता अस्ति। २. प्रकृति जगत् की कर्त्री है—प्रकृतिः जगतः

कर्त्री अस्ति। ३. महेश्वर दुःख के हर्ता हैं—महेश्वरः दुःखस्य हर्ता अस्ति। ४. रघुवंश महाकाव्य के रचयिता कालिदास हैं—रघुवंश महाकाव्यस्य रचयिता कालिदासः अस्ति। ५. राम अनेक ग्रंथों के अध्येता हैं—रामः अनेकेषां ग्रंथानाम् अध्येता अस्ति। ६. ईश्वर विश्व का नियामक है—ईश्वरः विश्वस्य नियामकः अस्ति। ७. प्रकृति जगत् की कारिका है—प्रकृतिः जगतः कारिका अस्ति। ८. महेश्वर विश्व के संहारक हैं—महेश्वरः विश्वस्य संहारकः अस्ति। ९. भगवद्भक्ति सुखदायिका होती है—भगवद्भक्तिः सुखदायिका भवति। १०. भगवान् सेवकों का रक्षक है—भगवान् सेवकानां रक्षकः अस्ति। ११. ईश्वर का दर्शन कल्याण कारक होता है—ईश्वरस्य दर्शनं कल्याण कारकं भवति। १२. उसका भाषण प्रभावोत्पादक होता है—तस्य भाषणं प्रभावोत्पादकम् अस्ति।

(ख) अनुवाद करो :—

१. भगवान् का भजन करो। २. सदा सत्य वचन बोलो। ३. ईश्वर का दर्शन सुखदायक होता है। ४. माता बच्चों के दुःख को हरने वाली है। ५. मुनि लोग प्रातःकाल स्नान और ध्यान करते हैं। ६. ऋषि लोग मन्त्र-द्रष्टा होते हैं। ७. राम ने सीता का पाणिग्रहण किया। ८. बच्चे का रोना सुनकर माता जाग उठी। ९. राम का आगमन् सुनकर भरद्वाज मुनि प्रसन्न हो गये। १०. गायकों का संगीत सुनकर श्रोता मुग्ध हो गये। ११. दिन में शयन नहीं करना चाहिए। १२. पढ़ना, लिखना, विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है। १३. माता बच्चों का पालन करती है। १४. परद्रव्य का अपहरण नहीं करना चाहिए। १५. रात में जागरण नहीं करना चाहिये। १६. मानव जीवन का अनुभव रखने वाला सदा सुखी रहता है। १७. ईश्वर सकल संसार का निर्माता है।

(ग) शुद्धाशुद्धविचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. जगतः कर्तृ।	जगतः कर्त्री।
२. जीवनस्य अनुभवकः।	जीवनस्य अनुभविता।
३. तस्य गच्छनम्।	तस्य गमनम्।
४. रामस्य पश्यनम्।	रामस्य दर्शनम्।
५. प्रकृतिः पालकः।	प्रकृतिः पालिका।

६. अयं सुखदायिकः ।	अयं सुखदायकः ।
७. रामस्य आगमनः ।	रामस्य आगमनम् ।
८. जल पिबनं कुरु ।	जलपानं कुरु ।

(घ) शुद्ध करो :—

१. रामेण आगमनं भविष्यति । २. श्यामेन वचनं भवति । ३. भजनः दुःखं निवारयति । ४. भरतस्य आगच्छनं श्रुत्वा रामः प्रसन्नोऽभवत् । ५. शिशवे पयः पिबनं रोचते । ६. रात्रौ शयनः न कर्त्तव्यः । ७. प्रकृतिः संसारस्य कर्तृ अस्ति । पराशक्तिः सकलस्य विश्वस्य अनुभावित्ता अस्ति । ८. वाल्मीकिः रामायणस्य रचयित्री अस्ति । ९. महादेवी वर्मा हिन्दी भाषाया कविः अस्ति । १०. अयं मार्गः कल्याण कारकम् अस्ति । ११. इदं पुष्पं मनोहारकः अस्ति । १२. भगवत्याः कृपा मङ्गल कारकः अस्ति । १३. महाकवेः कालीदासस्य कृतिः अतीव मनोहरम् अस्ति ।

शब्द-कोष

हन्=मारना । श्रु=सुनना । गम्=जाना । पत्=गिरना । घ्रा=सूँघना । पा=पीना । स्वप्=सोना । विश्=प्रवेश करना । दृश्=देखना ।

अभ्यास ४०

कृदन्त क्त (कर्म अर्थ में) क्तवतु=(कर्त्ता अर्थ में)

नोट—क्त प्रत्ययान्त शब्द कर्म अर्थ प्रकट करते हैं, अतः उनके लिङ्ग वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होते हैं और क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द कर्त्ता अर्थ में होते हैं, अतः उनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति कर्त्ता के अनुसार होते हैं :—

(क) उदाहरण :—१. उसने पुस्तक पढ़ा—सः पुस्तकं पठितवान् । २. उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी गई—तेन पुस्तकं पठितम् । ३. राम ने रावण को बाण से मारा—रामः रावणं बाणेन हतवान् । ४. राम के द्वारा रावण मारा गया—रामेण रावणः हतः । ५. राम ने श्याम को देखा—रामः श्यामं दृष्टवान् । ६. राम के द्वारा श्याम देखा गया—रामेण श्यामः दृष्टः । ७. भक्त ने राम-कथा सुनी—भक्तः रामकथां श्रुतवान् । ८. भक्त के द्वारा

राम कथा सुनी गई—भक्तेन राम-कथा श्रुता। ९. छात्र विद्यालय गये—छात्राः विद्यालयं गतवन्तः। १०. छात्रों के द्वारा विद्यालय जाया गया—छात्रैः विद्यालयो गतः। ११. वृक्ष से पत्ते गिरे—वृक्षात् पर्णानि पतितवन्ति। १२. बालिकाओं ने कथा सुनी—बालिकाः कथां श्रुतवत्यः। १३. बालिकाओं द्वारा कथा सुनी गई—बालिकाभिः कथा श्रुता।

(ख) अनुवाद करो :—

१. राम ने श्याम को देखा। २. गोविन्द ने फूल सूँघा। ३. सरला ने जल पिया। ४. बालिकाओं ने कथा सुनी। ५. छात्रों ने पुस्तकें पढ़ीं। ६. छात्राओं ने फल खाये। ७. वृक्ष से पत्ते गिरे। ८. बच्चे रात में सो गये। ९. श्यामा दिन में नहीं सोई। १०. मोहन ने जंगल में प्रवेश किया। ११. तुम विद्यालय कब गये थे। १२—श्याम ने यह कार्य कर लिया। १३. बच्चों ने कपड़े पहने। १४. उसने राम का अभिनय किया। १५. आपने मेरा बड़ा उपकार किया।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. तेन इदं कृतवान्।	सः इदं कृतवान्।
२. सः इदं कृतम्।	तेन इदं कृतम्।
३. श्यामः रामं दृष्टः।	श्यामेन रामः दृष्टः।
४. त्वया वचनं श्रुतवान्।	त्वया वचनं श्रुतम्।
५. अहं कथा श्रुता।	मया कथा श्रुता।
६. तेन पुस्तकं पठितः।	तेन पुस्तकं पठितम्।
७. मया ग्रंथः पठितम्।	मया ग्रंथः पठितः।

(घ) शुद्ध करो :—

१. रामः ग्रामे गतः। २. शिशुः शयितम्। ३. छात्रः उत्थितम्। ४. मुनिः उषितम्। ५. अहं जलं पीतम्। ६. तेन वचनं श्रुतवान्। ७. अर्जुनः अश्वारूढम्। ८. दुःखं सोढः। ९. फलं गृहीतः। १०. रामं दृष्टः। ११ शिशुः जातम्। १२. रामात् हतः। १३. शिशुः सुप्तम् १४. ग्रामः ध्वस्तम् १५. तेन पुस्तकं पठितवान्। १६. रामः कार्यं कृतम्। १७. सः परीक्षा उत्तीर्णा।

शब्द-कोष

क्रीडन्=खेलता हुआ। अवलोक=देखना। पिबन्=पीता हुआ। गच्छन्=जाता हुआ। पठन्=पढ़ता हुआ। धावन्=दौड़ता हुआ। रुदन्=रोता हुआ। पतन्=गिरता हुआ।

अभ्यास ४१

(शतृ, शानच्)

(क) उदाहरण :—१. वह विद्यालय जा रहा है—सः विद्यालयं गच्छन् अस्ति। २. तुम घर जा रहे थे—त्वं गृहं गच्छन् आसीः। ३. वे दोनों पुस्तक पढ़ रहे हैं—तौ पुस्तकं पठन्तौ स्तः। ४. वे दोनों पुस्तक पढ़ रहे थे—तौ पुस्तकं पठन्तौ आस्ताम्। ५. वे खेल रहे हैं—ते क्रीडन्तः सन्ति। ६. वे खेल रहे थे—ते क्रीडन्तः आसन्। ७. वन जाते हुये राम की दशा देखो—वनं गच्छतः रामस्य दशाम् अवलोकय। ८. वृक्ष से फूल गिर रहे हैं—वृक्षात् पुष्पाणि पतन्ति सन्ति। ९. जल पीती हुई बालिका को देखो—जलं पिबन्तीं बालिकां पश्य। १०. जाते हुये छात्र के द्वारा विद्यालय देखा गया—गच्छता छात्रेण विद्यालयः दृष्टः। ११. खेलते हुए बालक को कन्दुक दो—क्रीडते बालकाय कन्दुकं देहि। १२. दौड़ते हुए घोड़े से सवार गिर पड़ा—धावतः अश्वात् अश्ववारः अपतत्। १३. राम वन जा रहे थे तब सीता भी उनके साथ गई—रामे वनं गच्छति सति सीतापि तेन सह अगच्छत्। १४. श्यामा घर जाती रहेगी—श्यामा गृहं गच्छन्ती भविष्यति।

(ख) अनुवाद करो :—१. केशव विद्यालय जा रहा है। २. सीता पुस्तक पढ़ रही है। ३. तुम दोनों किसे देख रहे हो। ४. श्याम तुम्हें देखती रहेगी। ५. वे लोग कथा सुनते रहेंगे। ६. हम दोनो दौड़ते रहेंगे। ७. मैं कार्य कर रहा हूँ। ८. हम लोग लिख रहे हैं। ९. दौड़ते हुये हिरन को देखो। १०. नगर जाते हुए मैंने मार्ग में श्याम को देखा। ११. पढ़ता हुआ बालक सो गया। १२. जब मैं पढ़ रहा था, तब एक भिखारी मेरे पास आया। १३. रोते हुए बच्चे के द्वारा माता देखी गई। १४. मिठाई खाते हुये बालक को जल दो। १५. दौड़ते हुए घोड़े पर से सवार गिर पड़ा। १६. हम दोनों ने वन में दौड़ते हुए मृगों को देखा।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. सः दृशन् अस्ति।	सः पश्यन् अस्ति।
२ त्वं स्थान् असि।	त्वं तिष्ठन् असि।
३. अहं पान् अस्मि।	अहं पिबन् अस्मि।
४. पठती छात्रा।	पठन्ती छात्रा।
५. पश्यती बालिका।	पश्यन्ती बालिका।
६.गच्छन्तं बालिकाम्।	गच्छन्तीं बालिकाम्।
७. धावन्तीं शिशुम्।	धावन्तं शिशुम्।

(घ) शुद्ध करो :—

१. सः विद्यालयं गमन् अस्ति। २. धावतः बालकं पश्य। ३. गच्छन् मनुष्येण दृष्टम् इदम् स्थानम्। ४. धावन् अश्वात् सः अपतत्। ५. मिष्टान्नं खादन् बालकाय जलं देहि। ६. सिंहासने तिष्ठन् राज्ञे मन्त्री न्यवदेयत्। ६. रामस्य वनं गच्छति लक्ष्मणोऽपि तेन सह तत्र अगच्छत्। ८. सूर्यस्य अस्तंगते मुनिः सन्ध्याम् अकरोत्। ९. दिनेशस्य गायति सर्वे बालकाः अहसन् १०. वृक्षात् पतन्तः फलानि पश्य। ११. रामलक्ष्मणयोः वनं गच्छतोः सीताऽपि तत्र अगच्छत्। १२. उद्यानशोभां दृशन्तं मनुष्यं पश्य। रामस्य वनं गते राजा दशरथः प्राणान् अत्यजत्।

शब्द कोष

शयानः = सोता हुआ। अधीयानः = पढ़ता हुआ। पचमानः = पकाता हुआ। कुर्वाणः = करता हुआ। यतमानः = प्रयत्न करता हुआ। यजमानः = यज्ञ करता हुआ।

अभ्यास ४२

(कृदन्त—शतृ, शानच्)

(क) उदाहरण:—१. सरला इस समय सो रही है—सरला इदानीं शयाना अस्ति। २. मैं कल विद्यालय में पढ़ रहा था—अहं ह्यः विद्यालये अधीयानः आसम्। ३. वे बात कर रहे थे—ते वार्तां कुर्वाणाः आसन्। ४. भात पकाती हुई नारी को देखो—ओदनं पचमानां नारीं पश्य। ५. वह कल वाराणसी जाता रहेगा—सः श्वः वाराणसीं गमिष्यन् भविष्यति।

६. छात्र पुस्तक पढ़ते रहेंगे—छात्राः पुस्तकं पठिष्यन्तः भविष्यन्ति। ७. मैं कल गुरु के पास जाता रहूँगा—अहं श्वः गुरुं गमिष्यन् भविष्यामि। ८. जब तुम पढ़ते हो तो राम सोता है—त्वयि पठति सति रामः शेते। ६. मेरे गाने पर लड़के हँसते हैं—मयि गायति सति बालकाः हसन्ति। १०. राम आसन पर बैठा हुआ है—रामः आसने आसीनः अस्ति।

(ख) अनुवाद करोः—(शानच् का प्रयोग) १—वह भोजन बना रहा है। २—राम को सोता हुआ देखकर श्याम लौट आया। ३—सोती हुई बालिका न जगाओ। ४—भोजन पकाती हुई नारी को देखो। ५—राम श्याम के पुस्तक माँग रहा है। ६—कृषक बैलों को खेत में ले जा रहा है। ७—श्याम कल विद्यालय जा रहा होगा। ८—मैं कल प्रातः पढ़ रहा हूँगा। ६—वह मुझे घर में जोह रही थी। १०—चन्द्रमा ताराओं के मध्य में शोभा दे रहा है। ११—श्यामा जब सो रही थी, तब रामा आयी। १२—जब मैं जा रहा था, तब श्याम आया। १३—पुस्तक पढ़ती हुई छात्रा तथा आसन पर बैठी हुई बालिका को देखो।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचारः—

अशुद्ध	शुद्ध
१—सा वर्तन्ती अस्ति।	सा वर्तमाना अस्ति।
२—श्यामा अधीयती अस्ति।	श्यामा अधीयाना अस्ति।
३—रामः आसन्।	रामः आसीनः।
४—मम पठति सः आगतः।	मयि पठति सः आगतः।
५—गोविन्दः शयन् अस्ति।	गोविन्दः शयानः अस्ति।
६—शयन्तं शिशुं पश्य।	शयानं शिशुं पश्य।
७—याचमानः बालिका रोदिति।	याचमाना बालिका रोदिति।

(घ) शुद्ध करोः—

१—बालिका गच्छन् अस्ति। २—बालकः गच्छन्ती अस्ति। ३—श्यामः अधीयन् अस्ति। ४—मोहनः गच्छन्तं बालिकां पश्यति। ५—गोपालः पठन्तीं बालकं गच्छति। ६—फलानि खादमानं मनुष्यं पश्य। ७—सुरेशः शयन्तीं बालिकां पश्यति। ८—सरलायाः शयानायाम् सत्यां श्यामा आगता। ६—रामस्य गायति सुरेशः अहसत्। १०—धनञ्जयस्य गच्छति सति गोविन्दः आगतः। ११—सा श्वः विद्यालयं गमिष्यन् भविष्यति। १२—सः श्वः पुस्तकं पठिष्यन्ती भविष्यति।

उत्तर कृदन्त प्रकरण

तुमुन्-ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्—क्रिया के अर्थ में होने वाली क्रिया उपपद यदि परे हो तो भविष्यत् अर्थ में धातु से तुमुन् प्रत्यय होगा। 'तुमुन्' का 'तुम्' शेष रह जाता है। 'उपपद' का अर्थ है निकट चाहे वह किसी पद के पूर्व में हो या उत्तर में।

उदाहरण :—कृष्णं द्रष्टुं याति—कृष्ण को देखने के लिए जाता है। कृष्णं दर्शको याति—कृष्ण को देखने वाला जाता है।

उपर्युक्त वाक्य में 'याति' क्रियार्थ उपपद है। यहाँ पर 'दर्शन' क्रिया के लिए गमन क्रिया हो रही है। अतः याति (गमन क्रिया) उपपद के परे (समीप) होने पर दृश् धातु से तुमुन् प्रत्यय होने पर 'द्रष्टुम्' रूप बना। 'दर्शकः'—यहां दृश् धातु से ण्वुल् प्रत्यय हुआ है। ण्वुल् का 'वु' शेष रहता है। 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अक' आदेश होने से 'दर्शकः' सिद्ध हुआ।

काल समय वेलासु तुमुन्—धातु से काल, समय और वेला उपपदों के परे होने से 'तुमुन्' प्रत्यय होता है। उदाहरण :—कालः समयो वेला वा भोक्तुम्—खाना खाने का समय है। यहाँ भुज् धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय हुआ है, क्योंकि धातु परे काल, समय और वेला उपपद हैं।

भावे—सिद्धावस्थापन्न धातु का अर्थ क्रिया वाच्य होने पर धातु से 'घञ्' प्रत्यय होता है। 'घञ्' का अ शेष रहता है। धातु का अर्थ दो प्रकार का होता है। १—साध्यावस्थापन्न तथा २—सिद्धावस्थापन्न। तिङन्त धातुओं का अर्थ साध्यावस्थापन्न होता है और घञन्त धातुओं का अर्थ सिद्धावस्थापन्न होता है। उदाहरण :—पच्+घञ् (अ)=पाकः। यहाँ पच् धातु से सिद्धावस्थापन्न भाव अर्थ में घञ् (अ) प्रत्यय 'अत उपधायाः' से उपधा वृद्धि, 'चजोः कुः घिण्यतोः' से चकार के स्थान में ककार होने पर 'पाक' प्रातिपदिक से प्रथमान्त पद 'पाकः' शब्द सिद्ध हुआ।

अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम्—कर्त्ता से अतिरिक्त कारक अर्थ में धातु से 'घञ्' होता है, संज्ञा में।

उदाहरण :—रञ्ज्+घञ् (अ)=रागः।

एरच्—इवर्णान्त धातु से अच् प्रत्यय होता है भाव अर्थ में। उदाहरण :—चि+अच् (अ)=चयः। जि+अच् (अ)=जयः।

ऋदोरप्—भाव अर्थ में ऋकारान्त और उवर्णान्त धातुओं से 'अप्' प्रत्यय होता है—कृ+अप्=करः। गृ+अप् (अ)=गरः। यु+अप्=यवः। लू+अप्=लवः। पू+अप्=पवः। स्तु+अप्=स्तवः।

घञर्थे क विधानम्—'घञ्' अर्थ में 'क' प्रत्यय होता है। 'क' का 'अ' शेष रहता है।

ककार इत् होने से गुण का निषेध होता है। उदाहरण :—प्र+स्था+क=प्रस्थः। वि+हन्+क=विघ्नः।

यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्—यज्, याच्, यत्, विच्छ्, प्रच्छ्, रक्ष् धातुओं से भाव अर्थ में नङ् होता है। 'नङ्' का 'न' शेष रहता है। उदाहरण :—यज्+न=यज्ञः। याच्+न=याच्ञा+टाप् (आ) याच्ञा। यत्+न=यत्नः। विश्+न=विश्नः। रक्ष्+न=रक्ष्णः।

स्वपोनन्—स्वप् धातु से भाव अर्थ में नन् प्रत्यय होता है। 'नन्' का न शेष रहता है। उदाहरण :—स्वप्+न=स्वप्नः।

स्त्रियां क्तिन्—भाव अर्थ में स्त्रीलिङ्ग में धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होता है। 'क्तिन्' का 'ति' शेष रहता है। कृ+ति=कृतिः। स्तु+ति=स्तुतिः।

नपुंसके भावे क्तः—भाव अर्थ में नपुंसक लिङ्ग में धातु से 'क्त' (त) प्रत्यय होता है। उदाहरण :—हस+क्त (त)=हसितम्, यहां धातु से क्त (त) प्रत्यय होने से वलादि आर्ध धातुक से इट् प्रत्यय होने पर रूप

निष्पन्न हुआ। हस + ल्युट् (यु) = हसनम्—यहां पर युवोरनाकौ से यु को अन हो गया है।

ईषद्दुस्सुषु कृच्छ्राऽकृच्छ्रार्थेषु खल्—ईषद्, दुस्, और सु इन अर्थ वाले उपपदों के परे होने पर धातु से 'खल्' प्रत्यय होता है। 'खल्' का 'अ' शेष रहता है। खल् प्रत्यय भाव और कर्म में होता है।

दुस् + कृ + खल्(अ) = दुष्करः। ईषत् + कृ + खल् (अ) = ईषत्करः। सु + कृ + खल् (अ) = सुकरः।

आतोयुच्—दुःख सुखार्थक उपपदों के परे होने पर अकारान्त धातु से 'युच्' प्रत्यय होता है भाव और कर्म में 'युच्' का 'यु' शेष रहता है। ईषत् + पा + युच् = ईषत्पानः। दुस् + पा + युच् = दुष्पानः। सु + पा + युच् (यु) = सुपानः।

समानकर्तृकयोः पूर्वकाले—जब एक वाक्य में दो क्रियाओं का एक ही कर्त्ता हो तो पहली क्रिया से त्वा प्रत्यय होगा। उदाहरण:—रामः भुक्त्वा, व्रजति—राम खाकर जाता है। यहां भुक्तवा (खाकर) और व्रजति (जाता है) इन दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही है। अतः पहली क्रिया 'भुज' से क्त्वा प्रत्यय किया गया। उदाहरणः—भुज् + क्त्वा = भुक्त्वा।

न क्त्वा सेट्—इट् सहित क्त्वा कित् नहीं होता। अतः गुण का निषेध नहीं होता। उदाहरण:—शे + त्वा = शयित्वा। यहां वलादि आर्ध धातुक होने से 'इट्' हुआ है। इट् के सहित त्वा होने से कित् नहीं हुआ। कित् न होने से गुण का निषेध नहीं हुआ। शी + त्वा, शे + इ + त्वा शय् + इ + त्वा = शयित्वा।

समासेऽनञ् पूर्वे क्त्वो ल्यप्—जिस समस्त पद को पूर्व पद नञ् को छोड़कर कोई भी अव्यय हो और समास तो त्वा के स्थान में ल्यप् हो जाता है। ल्यप् का 'य' शेष रह जाता है। उदाहरण:—प्र + कृ + से ल्यप् (य)—होने पर प्र + कृ + य बना। यह प्रत्यय पित् है। अतः 'ह्रस्वस्यकृति पिति तुक्' सूत्र से तुक् (त) का आगम होने पर 'प्रकृत्य' रूप सिद्ध हुआ। नञ् पद होने पर ल्यप् नहीं होता। उदाहरण:—अ + कृ + त्वा = अकृत्वा।

नोट – इष् , शक् धातुओं तथा अलं और पर्याप्त के योग में धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। उदाहरण :—पठितुं इच्छति – पढ़ना चाहता है। पठितुं शक्नोति—पढ़ सकता है। सः पठितुं पर्याप्तः—वह पढ़ने के लिए पर्याप्त है।सः पठितुम् अलम् – वह पढ़ने के लिये पर्याप्त है।

शब्द-कोष

गन्तुम् = जाना, जाने के लिए। पठितुम् = पढ़ना, पढ़ने के लिए। श्रोतुम् = सुनना, सुनने के लिए। शक्नोति = सकता है। लेखितुम् = लिखना, लिखने के लिए। क्रीडितुम् = खेलना, खेलने के लिये।

अभ्यास ४२

(तुमुन्)

(क) उदाहरण :—१. वह घर जाना चाहता है—सः गृहं गन्तुम् इच्छति। २. तुम विद्यालय जाना चाहते हो—त्वं विद्यालयं गन्तुम् इच्छसि। ३. मैं पढ़ना चाहता हूँ—अहं पठितुम् इच्छामि। ४. छात्र लिखना चाहते हैं—छात्राः लेखितुम् इच्छन्ति। ५. क्या तुम इस कार्य को कर सकते हो ?– किं त्वं इदं कार्यं कर्तुं शक्नोषि ? ६. मैं फल खा सकताहूँ—अहं फलं खादितुं शक्नोमि। ७. यह खेलने का समय है—एषः समयः क्रीडितुम्। ८. विद्यालय जाने का समय आ गया—विद्यालयं गन्तुं समयः आगतः। ९. वह जाना चाहता है—सः गन्तुकामः।

(ख) अनुवाद करो :—

१. पढ़ने के लिए विद्यालय जाओ। २. क्या तुम नहाना चाहते हो। ३. यह पढ़ने का समय है। ४. क्या तुम खाना खा सकते हो। ५. वह जल नहीं पीना चाहता। ६. तुम फल खाने के लिये पर्याप्त हो। ७. वह भोजन करने के लिये घर जाये। ८. क्या तुम खेलने के इच्छुक हो ? ९. श्याम पढ़ सकता है, किन्तु वह लिख नहीं सकता। १०. मैं सुनने का इच्छुक हूँ। ११. वह देखने का इच्छुक है। १२. श्याम पढ़ने का इच्छुक है।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार :—

अशुद्ध	शुद्ध
१. पश्यतुम् इच्छति।	द्रष्टुम् इच्छति।

२. गच्छतुं शक्नोति ।	गन्तुं शक्नोति ।
३. सः वक्तुं कामः ।	सः वक्तुकामः ।
४. सः गन्तुं मनाः ।	सः गन्तु मनाः ।
५. एषः पठनं समयः ।	एषः पठितुं समयः ।

(घ) शुद्ध करो :—

१. सः गां दुग्धुं याति । २. श्यामः दुःखं सहितुं न शक्नोति । ३. त्वं पुष्पं जिघ्रे तुम इच्छसि । ४. रामः पठने अलम् । ५. अयं क्रीडितुं समयः । ६. सः खादितुंमनाः । ७. सर्वे जनः वक्तुंकामाः आसन् । ८. सः प्रष्टुं मनाः अस्ति । ९. अहं तत्र गच्छतुं शक्नोमि । १०. श्यामः रामं पश्यतुं तस्य गृहम् अगच्छन् । ११. सः अश्वम् आसहितुम् शक्नोति । १२. सः क्रीडितुं कामः ।

शब्द कोष

पठित्वा = पढ़कर । कृत्वा = करके । त्यक्त्वा = छोड़कर । गृहीत्वा = ग्रहणकर । गत्वा = जाकर । दत्त्वा = देकर । पीत्वा = पीकर । आगत्य = आकर । अनुसृत्य = अनुसरण कर । उत्तीर्य = पार कर ।

अभ्यास ४४

(क्त्वा, ल्यप्)

(क) उदाहरण—१. राम पढ़कर सोता है—रामः पठित्वा शेते । २. श्याम खाना खाकर विद्यालय जाता है—श्यामः भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छति । ३. श्यामा घर पर रहकर काम करती है—श्यामा गृहे स्थित्वा कार्यं करोति । ४. किसान खेतों में परिश्रम कर अन्न उत्पन्न करता है—कृषकः क्षेत्रेषु परिश्रम कृत्वा अन्नम् उत्पादयति । ५. श्यामा पुस्तक खरीद-कर घर गई—श्यामा पुस्तकं क्रीत्वा गृहम् अगच्छत् । ६. वह पिता को जल लाकर देता है—सः जलम् आदाय पित्रे ददाति । ७. वह परीक्षा उत्तीर्ण कर सुख का अनुभव करता है—सः परीक्षाम् उत्तीर्य सुखम् अनुभवति । ८. वे वेदों को पढ़कर विद्वान हो गये—ते वेदान् अधीत्य विद्वांसः अभवन् । ९. मोह को छोड़कर भगवान् का भजन करो—मोहं परित्यज्य भगवन्तं भज । १०. पुस्तक लाकर मुझे दो—पुस्तकम् आदाय मह्यं देहि ।

(ख) अनुवाद करो:—

१—पक्षियां आकाश में उड़कर कलरव करती हैं २—वह सभी विषयों को पढ़कर बुद्धिमान हो गया । ४—तुम राम को बुलाकर उससे

पूछो। ४—मैं घर जाकर स्नान करूँगा। ५—भक्त-जन मोह को छोड़कर ईश्वर का भजन करते हैं। ६—मुनि सन्ध्या करके फल खाते हैं। ७—वह भोजन करके दूध पीता है। ८—धन इकट्ठा करके श्याम पुस्तक खरीदता है। ९—छात्र ने गुरु को नमस्कार कर प्रश्न पूछा। ११—पुस्तक लाकर मुझे दो। १२—यहां आकर राम ने उपवन को देखा।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—गृहम् आगत्वा।	गृहम् आगत्य।
२—जलम् आनीत्वा।	जलम् आनीय।
४—घटम् आदात्वा।	घटम् आदाय।
४—फलं खादित्य।	फलं खादित्वा।
५—कार्यं प्रकृत्वा।	कार्यं प्रकृत्य।
६—कार्यम् अकृत्य।	कार्यम् अकृत्वा।

(घ) शुद्ध करो

१—कृष्णः गृहम् आगत्वा जलम् अपिबत्। २—सः श्रमम् अकृत्य दुःखम् अनुभवति। ३—विद्यालयं गत्य सः अपठत्। ४—जलं पीय सः प्रसन्नोऽभवत्। ५—पुस्तकम् अधीय सः विद्वान् अभवत। ६—सर्वं धनं प्रहृय चौरः गतवान्। ७—शत्रून् विजित्या रामः प्रत्यागच्छत्। ८—चमत्कारम् अदृश्य सः स्वगृहम् अगच्छत्। ९—धनम् आदाय सः आपणम् अगच्छत्। १०—प्रातः उत्थित्वा सः जलम् अपिबत्। ११—परीक्षां उत्तीर्त्वा सः प्रसन्नोऽभवत्।

शब्द कोष

अनुरागः = प्रेम। अपकारः = बुराई। सुगमः = सरल। संहारः = नाश। दुर्गमः = कठिन। फलदः = फल देने वाला। दुःखदः = दुःख देने वाला। सुखदः = सुख देने वाला।

अभ्यास ४५

(घञ्, खल्, क प्रत्यय)

जिन शब्दों के अन्त में घञ् प्रत्यय होता है, वे सदा पुल्लिङ्ग होते हैं 'और उनके योग में' षष्ठी होती है।

(क) उदाहरण:—१. राम का अनुराग विद्या में है—रामस्य अनुरागः विद्यायाम् अस्ति। २. मनुष्य को किसी का अपकार नहीं करना चाहिए—मनुष्यः कस्यापि अपकारं न कुर्यात्। ३. राम ने श्याम का उपकार किया—रामः श्यामस्य उपकारम् अकरोत्। ४. आध्यात्मिक ज्ञान दुर्लभ है—आध्यात्मिकं ज्ञानं दुर्लभम् अस्ति। ५. यह मार्ग सुगम है—अयं मार्गः सुगमः अस्ति। ६. ईश्वर भक्तों को सुलभ है—ईश्वरः भक्तानां सुलभः अस्ति। ७. यह समाचार सुखद है—अयं समाचारः सुखदः अस्ति। ८. दुखद समाचार सुनकर वह रोने लगा—दुखदं समाचारं श्रुत्वा सः रोदितुमारभत।

(ख) अनुवाद करो

१—सांसारिक विषयों का भोग दुखद होता है। २—तुम किस मार्ग से जाओगे? ३—आपका त्याग प्रशंसनीय है। ४—गुरु ने शिष्य को आदेश दिया। ५—समय का उपयोग सभी लोगों को करना चाहिए। ६—महाभारत के युद्ध में घोर नर-संहार हुआ। ७—तुम्हें विवाद नहीं करना चाहिए। ८—यह वस्तु मुझे अत्यन्त प्रिय है। ९—बुद्धिमान् (बुध) मनुष्य संसार के भोगों में लिप्त नहीं होते। १०—यह मार्ग दुर्गम है। ११—परिश्रमी छात्रों को विद्या सुलभ है। १२—मैंने आसनस्थ मुनि को देखा।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१—सः रामम् उपहारं ददाति।	सः रामाय उपहारं ददाति।
२—रामलक्ष्मणौ सम्वादं शृणु।	रामलक्ष्मणयोः सम्वादं शृणु।
३—इदं समाचारं दुःखदम्।	अयं समाचारः दुःखदः अस्ति।
४—परिश्रमिणे न किंचिद् दुर्लभः।	परिश्रमिणां न किंचिद् दुर्लभम्।
५—अस्य त्यागः प्रशंसनीयम्।	अस्य त्यागः प्रशंसनीयः।
६—बुधः आगच्छन्ति।	बुधः आगच्छति।

(घ) शुद्ध करो

१—अयं कष्टः दुःसहः। २—इमे कार्याः दुष्कराणि। ३—अयं मार्गः दुर्गमम्। ४—अस्य शरीरः कृशम्। ५—ईश्वरः भक्तेषु सुलभः।

६—सुगमः उपायं वद। ७—अयं संसारः असारम्। ८—इदं वस्तु प्रियः अस्ति। ९—सर्वैः आचारः कर्त्तव्यम्। १०—अलं विवादस्य।

शब्द कोष

कृतिः = रचना। भुक्तिः = भोग। युक्तिः = उपाय। रक्तिः = राग। गतिः = दशा। मतिः = बुद्धि। क्षतिः = हानि। अनुगामी, अनुयायी = पीछे चलने वाला, मानने वाला। विनाशी = विनाश करने वाला। विनाशिनी = विनाश करने वाली।

अभ्यास ४६

(क्तिन, णिनि)

(क) उदाहरणः—१. कालिदास की कृति मनोहर है—कालिदासस्य कृतिः मनोहरा अस्ति। २. धृति मनुष्य को शान्ति देती है—धृतिः मनुष्याय शान्तिं ददाति। ३. धर्म में राम की प्रवृत्ति देखकर विश्वामित्र प्रसन्न हुए—धर्मे रामस्य प्रवृत्तिम् अवलोक्य विश्वामित्रः प्रसन्नोऽभूत्। ४. प्रकृति की मनोहारिणी शोभा, देखने के योग्य है—प्रकृतेः मनोहारिणी शोभा अवलोकनीया। ५. ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है—ज्ञानात् मुक्तिः प्राप्यते। ६. महात्मा बुद्ध के बहुत से अनुयायी थे—महात्मनः बुद्धस्य बहवः अनुयायिनः आसन्। ७. उसकी कीर्त्ति चारों ओर फैल रही है—तस्य कीर्त्तिः सर्वतः प्रसरति। ८. राम के पीछे चलने वाले लक्ष्मण को देखो—रामस्य अनुगामिनं लक्ष्मणं पश्य। ९. सत्यवादियों की सर्वत्र विजय होती है—सत्यवादिनां सर्वत्र विजयो भवति। १०. कुम्हार घट बनाता है—कुम्भकारः घटं रचयति।

(ख) अनुवाद करो :—

१—समाज में शान्ति की आवश्यकता है। २—तुलसी दास की कृतियां सारगर्भित हैं। ३—महात्मा गान्धी के निधन से देश को बड़ी क्षति पहुँची। ४—संसार की गति विचित्र है। ५—शङ्कराचार्य के अनुयायी अद्वैत दर्शन में विश्वास करते हैं। ६—जटाधारी साधुओं को देखो। ७—पीताम्बर धारिणी स्त्रियाँ गाना गाती हैं। ८—प्रकृति की मनोहारिणी छटा को देखो। ९—कपीश्वर की शक्ति देखकर राक्षस विस्मित हो गये। १०—यहाँ चार द्रुत गामी अश्व हैं। ११—कल मानस प्रचारिणी समिति में विद्वानों के भाषण होंगे।

(ग) शुद्धाशुद्ध विचार

अशुद्ध	शुद्ध
१. तस्य कृतिः मनोहरम् ।	तस्य कृतिः मनोहरा ।
२. तेषां मतीन् पश्य ।	तेषां मतीः पश्य ।
३. शान्तिः स्थातव्यः ।	शान्तिः स्थातव्या ।
४. ते पीत वस्त्रधारयः ।	ते पीतवस्त्रधारिणः ।
५. फलाहारयः साधवः ।	फलाहारिणः साधवः ।

(घ) शुद्ध करो —

१. तत्र बहूनि फलाहारिणः सन्ति । २. ते मांसाहारी नास्ति । ३. तस्य गतिः न ज्ञातम् । ४. भवतां मतिः हितकारी अस्ति । ५. कालिदासस्य कृतीन् अवलोकय । ६. उपासनया भक्तिः प्राप्तव्यः । ७. तौ परोपकार्यौ स्तः । ८. अपकारीणां कुत्रापि आदरः न भवति । ९. सदाचारीणां मनुष्याणां जीवनं सुखमयं भवति । १०. लोकहितकार्यः मनुष्याः सर्वत्र आद्रियन्ते ।

व्यावहारिक संस्कृत प्रकरण

शब्द कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कर्णधारः	मल्लाह	कुम्भकारः	कुम्हारः
चक्रम्	चाक	नौका	नाव
तन्तुवायः	जुलाहा	पटम्	वस्त्र
कञ्चुकः	कुर्ता	नीशारः	रजाई
पाद्यामः	पाजामा	उत्तरीयः	चादर
शिरस्कम्	टोपी	पादत्राणम्	जूता
नापितः	नाई	क्षुरः	छुरा
तूलः	रुई	शाटिका	साड़ी
तक्षकः	बढ़ई	खट्वा	खाट
उष्णीषम्	पगड़ी	गोधूमः	गेहूँ
यवः	जौ	चणकः	चना
माषः	उड़द	मसूरः	मसुरी
कम्बलम्	कम्बल	उपानद्	जूता
अधो वस्त्रम्	धोती	पायसम्	खीर
नवनीतम्	मक्खन	घृतम्	घी
सर्षपः	सरसों	आमलकम्	आंवला
दाडिमः	अनार	नारङ्गफलम्	नारङ्गी
उदुम्बरः	गूलर	तक्रम्	मट्ठा
पनसः	कटहल	अवलेहः	चटनी
द्राक्षा	अंगूर	कटिसूत्रम्	करधनी
उपधानम्	तकिया	अङ्गप्रोक्षणम्	अंगोछा
मुखप्रोक्षणम्	रूमाल	जम्बीरः	नीबू
रसालः	आम	सेवफलम्	सेव
तैलिकः	तेल	महत्तरः	मेहतर
कृशरः	खिचड़ी	कहारः	कहार

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वधक:	कसाई	सूप:	दाल
तण्डुल:	चावल	भक्तम्	भात
शष्कुली	पूरी	लवणम्	नमक
वाताद:	बादाम	मधूक:	महुवा
अश्वत्थ:	पीपल	बदरीफलम्	बेर
अमररूतम्	अमरूद	लशुनम्	लशुन
पिण्डालु:	प्याज	आलूकम्	आलू
मूलिका	मूली	लप्सिका	हलवा
सिता	चीनी	शर्करा	शक्कर
सक्तु:	सतुआ	आपण:	दूकान
रञ्जक:	कपड़ा रंगने वाला	सूत्रिका	सेवंई
सूचिका	सुई	रजक:	धोबी
महत्तर:	मेहतर	वृन्ताकम्	भाँटा

अभ्यास ४७

(क) अनुवाद करो :—

१. मल्लाह नाव खेता है। २. बढ़ई खाट बनायेगा। ३. दर्जी सुई से कपड़े सिलेगा। ४. नाई से कहो कि उस्तरे से बाल काटने के लिए तुरन्त आ जाय। ५. मुझे सक्तु, मिष्टान्न और सेंवई दो। ६. वह मिष्टान्न खरीदने के लिए दूकान पर जायगा। ७. तुम्हें देखकर कसाई भाग गया। ८. रंगरेज से कपड़े रंगने के लिए कहो। ९. कुम्हार चाक पर घड़ा बनाता है। १. कहार बोझा ढोता है। १०. मुझे भात और पूरी खिलाओ। ११. क्या मेहतर झाड़ू से कमरा साफ करेगा। १२. सरसों का तेल बड़ा ही लाभदायक होता है। १३. मेरा जूता कहाँ है।

(ख) अनुवाद करो :—

१. मेरा कुर्त्ता लाओ। २. दर्जी रजाई सिलेगा। ३. बत्ती बनाने के लिए रुई लाओ। ४. जुलाहा साड़ी बुने। ५. तुम्हें सिर में टोपी पहनना चाहिए। ६. श्याम सिर में पगड़ी बाँध कर बाहर निकलता है। ७. मैं आज गेहूँ, जौ, चना, मसूर, उड़द, सत्तू, हलवा और रूत्त खरीदने के लिए बाजार जाऊंगा। ८. इस गांव में गूलर, पीपल, नीम तथा कटहल

के पेड़ हैं। ६. तुम्हें अनार, सेब, नारंगी, केला, बेर आदि फलों को खाना चाहिए। १०. मक्खन, घी, दूध, दही और मट्ठा का सेवन करना लाभदायक होता है। ११. बच्चे करधनी पहन कर खेलते हैं। १२. वह धोती पहनकर, कन्धे पर अंगोछा हाथ में रूमाल लेकर जा रहा था। १३. तेली तेल बेचता है। १४. बालकों को नीबू और अंगूर और आम के फल दो। १५. मुझे खिचड़ी खिलाओ। १६. तुम्हें देखकर कसाई भाग गया। १७. कहार पानी लाये। १८. वह कुर्ता पहनकर कन्धे पर चादर लिए हुए आ रहा था।

शब्द कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पुत्रः	बेटा	पौत्रः	पोता
प्रपौत्रः	पोते का लड़का	पितामहः	दादा
माता	माँ	मातामहः	नाना
प्रपितामहः	परदादा	पितामही	दादी
मातामही	नानी	मातुलः	मामा
मातुलानी	मामी	प्रतितामही	परदादी
पितृव्यः	चाचा	स्वसा, भगिनी	बहन
श्वसुरः	ससुर	देवरः	देवर
अग्रजः	बड़ा भाई	अनुजः	छोटा भाई
श्यालः	साला	जामाता	दामाद
प्रसाधनी	कंघी	अंगुलीयकम्	अंगूठी
फेनिलः	साबुन	मेखला	करधनी
नूपुरः	पाजेब	कैयूरम्	भुजबन्द
कुण्डलम्	कान का बाली	कङ्कणम्	कंगन
उपनेत्रम्	चश्मा	काष्ठपट्टम्	तख्त
रूप्यकम्	रुपया	नाणकम्	नोट
दीनारः	अशरफी	अभियोगः	मुकदमा
कुसीदः	ब्याज	उत्कोचः	घूस
पत्रवाहकः	पोस्टमैन	ग्रीष्मः	गर्मी
वर्षा	बरसात	शरद्	शरद्
हेमन्तः	हेमन्त	शिशिरः	शिशिर
वसन्तः	वसन्त	अङ्गुलीयकम्	अँगूठी

अभ्यास ४८

(क) अनुवाद करो —

१. श्यामा पैर में नूपुर कमर में करधनी, बाँह में केयूर, हाथ में कंगन, पहन कर आई। २. मैं साबुनसे वस्त्र धुलूँगा। ३. आज यहाँ पर मेरे पिता, चाचा बड़े भाई तथा छोटे भाई आयेंगे। ४. कल मेरे नाना, नानी, मामा, मामी, बहन, ससुर, दामाद, साले इस महोत्सव में सम्मिलित होंगे। ५. कल मेरे बड़े भाई की स्त्री अपने देवर के साथ बाजार गई थीं। ६. सरला कंघी से बाल सँवारती है। ७. प्रतिभा आँख में अंजन तथा मांग में सिन्दूर लगाकर कनिष्ठिका उंगली में सोने की अंगूठी पहनकर मेरे यहाँ आई। ८. डाकिया पत्र ले आया। ९. कार्यालयों में सभी कर्मचारी घूस लेने लगे। १०. किसी से रुपये कर्ज लेने पर सूद देना पड़ता है। ११. श्याम ने मुझे कुछ, नोट, रुपये और पैसे दिये। १२. मेरा चश्मा लाओ।

(ख) अनुवाद करो :—

१. गर्मी के दिनों में धूप कड़ी होती है। २. वर्षा ऋतु में चारों ओर हरियाली छा जाती है। ३. शरद् ऋतु में चन्द्रमा की श्वेत किरणों से रात्रि की शोभा बढ़ जाती है। ४. हेमन्त ऋतु में कड़ी सर्दी पड़ती है। ५ शिशिर ऋतु में समस्त वृक्ष पल्लवों से रहित हो जाते हैं।६ बसन्त ऋतु में वन उपवन तथा उद्यान फूलों से खिलने लगते हैं। ७. चारों ओर दिशाओं में फूले हुए फूलों की लालिमा छा जाती है। ८. सरला तख्त पर बैठी हुई है। ९. तुम साबुन से कपड़े धुल डालो। १०. मेरी सोने की अंगूठी कहाँ है।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कृषकः	किसान	भृत्यः	नौकर
प्रतिवेशी	पड़ोसी	अक्रीडी	खिलाड़ी
शिल्पी	कारीगर	ऐन्द्रजालिकः	मदारी
भारवाहः	मजदूर	खनित्रम्	फावड़ा
भृतिः	मजदूरी	व्याधः	शिकारी

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
द्यूतकारः	जुआड़ी	मांसिकः	कसाई
मद्यशाला	हौली	क्षेत्रम्	खेत
करण्डोलः	टोकरा	पेटिका	पेटी
चषकः	प्याला	प्रतीहारः	ड्योढ़ीदार
भर्जकः	भूँजा,	भूर्जन-यन्त्रम्	भाड़
शाकविक्रेता	खटिक	द्रावकः	मोम
आपाकः	आँवा	पटहः	ढोल
डिण्डिमः	ढिंढोरा	क्रकचः	आरा
कर्तरिका	कैंची	छुरिका	छुरी
कार्पासः	रूई	शिरस्त्रम्	पगड़ी
करवस्त्रम्	रूमाल	यवनिका	परदा
कचुलिका	ब्लाउज	ऊर्णावस्त्रम्	स्वेटर
गात्रमार्जनी	अंगोछा		

अभ्यास ४६

(क) अनुवाद करो :—

१. श्याम खिलाड़ी लड़का है तथापि वह कक्षा में सभी छात्रों से उत्तम है। २. सोनार अंगूठी बनायेगा, तुम देखो कि वह सोना न चुराये। ३. यह पेटी किस कारीगर के द्वारा बनाई गई है। ४. कुम्भार घड़ों को बना कर उन्हे आंवा में पकायेगा। ५. मैं बाजार में आज, सुई, कैंची और चाकू खरीदूँगा। ६. कुम्हार दण्ड से चाक घुमा रहा था। ७. भूंजा भाड़ में चावल भुनता है। ८. आज राज को बुलाकर उससे मकान की सफेदी करानी है। ९. उस खटिक से आम, अमरूद और केले के फल खरीदो। १०. कल सार्वजनिक सभा में उपस्थित होने के लिए नगर में ढिंढोरा पिटवा दो।

(ख) अनुवाद करो :—१. स्त्रियां सोने की वाली पहन कर घूम रही हैं। २. शरीर में साबुन लगाकर स्नान करने के बाद तेल लगाना चाहिए। ३. श्यामा का ब्लाउज बहुत सुन्दर है। ४. तुम कुर्ता और पायजामा पहन कर स्कूल जाओ। ५. मुझे रजाई, चादर और तकिया दो। ६. स्नानागार में, साबुन, तेल और इत्र मौजूद है। ७. श्यामा के हाथ में कंगन शोभायमान

हैं। ८. रूई से वर्तिका बनाकर दीपक जलाओ। ६. स्त्रियाँ ढोल बजाकर गाना गाती हैं। १०. वह स्वेटर पहन कर हाथ में रूमाल और कन्धे पर अंगोछा रखकर आ रहा है।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सिंहः	शेर	भल्लूकः	भालू
शूकरः	सूअर	वृकः	भेड़िया
शृगालः	सियार	शशकः	खरगोश
वानरः	बन्दर	नकुलः	नेवला
वृषभः	बैल	घोटकः	घोड़ा
गर्दभः	गधा	महिषः	भैंसा
महिषी	भैंस	उष्ट्रः	ऊँट
कुक्कुरः	कुत्ता	शुनी	कुतिया
अजः	बकरा	अजा	बकरी
मृगः	हरिण	मूषिकः	चूहा
मूषिका	चुहिया	कोकिलः	कोयल
कपोतः	कबूतर	मयूरः	मोर
वर्तकः	बत्तक	हंसः	हंस
टिट्टिभः	टिटिहरा	शुकः	तोता
काकः	कौआ	चिल्लः	चील
सारिका	मैना	चातकः	पपीहा
कुक्कुटः	मुर्गा	कुक्कुटी	मुर्गी
चक्रवाकः	चकवा	चटकः	चिड़ा
चटका	चिड़िया	चकोरः	चकोर
खञ्जनः	खिडरिच	उलूकः	उल्लू
बकः	बकुला	गृध्रः	गिद्ध
श्येनः	बाज	तित्तिरिः	तीतर
चक्रवाकः	चकवा	वर्तकः	बत्तक

अभ्यास ५०

उदाहरण :—१. जंगल में शेर दहाड़ते हैं—कानने सिंहाः गर्जन्ति। २. वर्षा कालमें मेढक टाँय टाँय करते हैं—वर्षतौ दर्दुराः रुवन्ति। ३. जंगल

में हाथी इधर उधर घूमते हुए चिंघाड़ते हैं—कानने करिणः इतस्ततः भ्रमन्तः बृंहन्ति। ४. फुफकारते हुए सांप को देखो—फूत्कुर्वन्तं सर्पं पश्य। ५. वृक्षों पर चिड़ियाँ चहचहाती हैं—वृक्षेषु खगाः चीभन्ते। ६. गाँवों में गाय रंभाती हैं, भैंसे रांभती हैं, गधे हींगते हैं, गीदड़ चीखते हैं, बिल्लियां म्यूँ म्यूँ करती हैं—ग्रामेषु गावः रम्भन्ते, महिष्यः रेभन्ते, गर्दभाः रासन्ते, क्रोष्टारः क्रोशन्ति बिडालाः षीवन्ति। ७. यहां घोड़े हिनहिनाते हैं, वहां कुत्ते भूकते हैं तथा भेड़िये हींगते हैं—अत्र घोटकः ह्रेषन्ते, तत्र कुक्कुराः बुक्कन्ति वृकाः रसन्ति च। ८. सायंकाल पेड़ों पर कौये कांव कांव करते हैं—सायंकाले काकाः कायन्ति।

(ख) अनुवाद करो :—१. गायें घास चरती हैं और बछड़े को देख कर रंभाती हैं। २. एक पिंजरे में तोता और दूसरे पिंजरे में मैना है। ३ राम ने गरजते हुए सिंह को देखा। ४—कांव कांव करते हुए कौए पेड़ों पर मंडराने लगे। ५. मैंने देखा कि जंगल में स्यार चीख रहे थे, तथा साँप गुफाओं में फुँफकार रहे थे। ६. इस वन में, भालू, बन्दर, शूकर, हाथी आदि बड़े बड़े भीषण जन्तु रहते हैं। ७. बिल्लियां चूहों को मारकर खा जाती हैं। ८. चकोर को चांदनी रात सुहानी लगती है। ९. घोड़साल में घोड़े हिनहिनाते हैं। १०. घोड़े, गधे, और ऊँट बोझा ढोते हैं। ११ पानी बरसने पर मेंढक टर्र, टर्र करते हैं। १२. नेवले को देखकर साँप भागता है।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उत्तमर्णः	महाजन	अधमर्णः	ऋणार्थी
गवाक्षः	खिड़की	कारावासः	जेलखाना
करीषम्	कण्डा	खद्योतः	जुगनू
वात्या	आंधी	पणः	पैसा
वात्या	आंधी	विषूचिका	कालरा, हैजा
कशा	कोड़ा	जालाः	धोखेबाज
खलीनः	लगाम	पदातिः	पैदल
उपनिधिः	धरोहर	कटाहः	कड़ाही
प्रतिभूः	जिम्मेदारी लेने वाला	शिविरम्	तम्बू

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वादी	मुद्दई	प्रतिवादी	मुद्दालेह
विनिमयः	हेराफेरी	आयातः	बाहर से आनेवाला
निर्यातः	बाहर जाने वाला	छिक्का	छींक
वाक्कीलः	वकील	न्यायाधीशः	जज

अभ्यास ५१

(क) अनुवाद करो :—१. अदालत में मुद्दई और मुद्दालेह दोनों उपस्थित थे। २. अपराधी जेल में भेज दिया गया। अपराधी को जेल से मुक्त कराने की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली।। ३. कर्ज देने वाला व्यक्ति कर्ज लेने वाले से ब्याज लेता है। ४. वर्षाकाल में रात में घासों पर जुगनू चमकते हैं। ५. कल सायंकाल तेज आंधी आई थी। ६. आजकल नगर में हैजे की बीमारी फैली हुई है। ७. धोखेबाजों से सदा दूर रहना चाहिये। ८. आज श्यामा के पास एक पैसा भी नहीं है। ९. घोड़सवार ने घोड़े का लगाम खींचकर उसे आगे जाने से रोक लिया। १०. घोड़सवार ने घोड़े की पीठ पर सौ कोड़े मार कर उसे बड़ी तेजी से दौड़ाया। ११. मैं चारकोस तक लगातार पैदल चला। १२. वकील ने जज के सामने अपराधी की ओर से अदालत में बहस किया। १३. आजकल भारत में बाहर से सामान मंगायें जाते हैं, और भारत के सामान बाहर भेजे जाते हैं। १४. पूरी बनाने के लिए हलवाई कड़ाही लेकर आया।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
शिरः	सिर	मस्तकम्	माथा
भ्रू :	भौंह	चक्षुः	नेत्रम्
कर्णः	कान	कपोलः	गाल
नासिका	नाक	आननम्	मुख
जिह्वा	जीभ	दन्तः	दाँत
ओष्ठः	ओठ	गलः	गला
स्कन्धः	कन्धा	भुजः	बाँह
बाहुः	बाँह	पाणिः	हाथ
चिबुकम्	ठुड्डी	करतलम्	हथेली

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
नखम्	नाखून	जानु	घुटना
चूचुकम्	स्तन	अङ्गुलिः	उँगलियाँ
जङ्घा	जांघ	नितम्बः	चूतड़
शिश्नः	लिङ्गम् ,पुरुष योनि	भगः	स्त्रीयोनि
उरः	छाती	गुदा	मलद्वार
कटिः	कमर	उदरम्	पेट
कुचः	स्तन	पृष्ठम्	पीठ
मेदः	चरबी	फुफ्फुसम्	फेफड़ा
मज्जा	चरबी	हृदयम्	हृदय
पादः	पैर	लाला	लार
तुन्दम्	तोंद		

अभ्यास ५२

(क) अनुवाद करो :—१. श्याम की तोंद लम्बी है। २. राणा प्रताप का मस्तक चौड़ा, छाती विशाल तथा बाहें लम्बी थीं। ३. श्री कृष्ण की टेढ़ी भौंहें, विशाल नेत्र शोभा दे रहे थे। ४. सरला कानों में सोने की वालियाँ पहने है। ५. इस वच्चे की नाक सुडौल है। ६. किसी खाद्य वस्तु का स्वाद जिह्वा के द्वारा ज्ञात होता है। ७. उसका कन्धा विशाल है। ८. वच्चा मां के स्तन से दूध पीता है। ९. मोहन की जांघे वहुत पुष्ट है। १०. राम के दांत कुन्द फूल के कली के समान शोभायमान है। ११. उसके पेट में दर्द है। १२. उसके कमर में करधनी शोभा देती है। १३. व्यायाम करने से फेफड़ा पुष्ट होता है और शरीर में रक्त का सञ्चार होता है।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अद्यत्वे	आजकल	अद्यतन	आजकल
क्रीडकः	खिलाड़ी	ष्ठीवनम्	थूकना
जल्पनम्	बकवाद	मसी	स्याही
माषगर्भा	कचौड़ी	शष्कुली	पूरी
आढकी	अरहर	राधेयम्	रायता
वर्तुलम्	गोल	कलायः	मटर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मुद्गकः	मूंग	कोद्रवः	कोदौ
श्यामिका	सांवा	प्रियङ्गुः	बाजरा
कर्कटिका	ककड़ी	आर्द्रकम्	अदरक
खाजा	खजुली	अजगन्धा	पोदीना
कुण्डलिका	जलेबी	जीरकः	जीरा
पटोलकम्	परवल	पलाण्डुः	प्याज
वृन्ताकम्	बैंगन	कोशातकी	तरोई
गोजिह्वा	गोभी	कारवेल्लम्	करेला
करमर्दकम्	करौंदा	दशाङ्गुलम्	खरबूजा
खर्जूरम्	खजूर	पेरुकम्	अमरूद
कपित्थम्	कैथा	कलिङ्गम्	तरबूज
अमृतफलम्	नासपाती	कदली	केला

अभ्यास ५३

(क) अनुवाद करो :—१. आज मैं मटर, चना सांवा, बाजरा, अरहर, मूंग, खरीदने के लिए बाजार जाऊँगा। २. आजकल लोग पूरी और कचौड़ी खाना पसन्द नहीं करते। ३. भोजन अचार, चटनी, रायता, से भोजन का स्वाद बढ़ जाता है। ४. यहाँ थूंकना मना है। रात में ककड़ी खाना मना है। ५. चटनी में जीरा और पोदीना डालना चाहिए। ६ करेला की तरकारी स्वादिष्ट होती है। ७. मेरे लिए केला, अमरूद, खजूर, नासपाती, तरबूज, और करौंदा लाओ। ८. भांटा, तरोई, गोभी, परवल और आलू की तरकारी लाभदायक होती है। ६. गोल भांटा अधिक स्वादिष्ट होता है। १०—उसके शरीर में खजुली का रोग है।

शब्द-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पितृव्यपत्नी	चाची	पितृव्य पुत्रः	चचेरा भाई
भ्रातृजाया	भाभी	भ्रातृपुत्रः,भ्रात्रीयः	भतीजा
भ्रातृसुता	भतीजी	सहोदरः	सगा भाई
वधूः	बहू	श्वशुरः	ससुर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
श्वश्रूः	सास	याता	देवरानी
ननान्द्रा	ननद	पुत्रवधूः	पतोहू
जामाता	दामाद	भगिनीपतिः	बहनोई
पितृष्वसा	बूआ, फुआ	पितृष्वसृपतिः	फूफा
पितृष्वस्रीयः	फुफेरा भाई	मातृष्वसृपतिः	मौसा
मातृष्वसा	मौसी	मातृष्वस्रीयः	मौसेरा भाई
भागिनेयः	भांजा	परिचायका	नौकरानी

अभ्यास ५४

(क) अनुवाद करो :—१. आज मेरे यहां चाचा, चाची, भाभी, भतीजा, और भतीजी तथा सास और ससुर आयेंगे। २. श्याम मेरे दामाद हैं और राम मेरे बहनोई हैं। ३. मैं आज अपने फूफा के यहां जाऊँगा। मेरी मौसी और फूफी दोनों अस्वस्थ्य हैं। ४. यह मेरा सगा भाई है और वह चचेरा भाई है। ५. यहां मेरी ननद और देवरानी बैठी हैं। ६. मेरे फुफेरे भाई की परीक्षा कल होगी। ७. ससुराल में दामाद की इज्जत होती है। ८ विधवा स्त्री का अनादर कभी नहीं करना चाहिये। ९. आज मैं मामा और मामी के साथ वाराणसी जाऊंगा। १०. मेरा भांजा इस वर्ष आचार्य परीक्षा में प्रविष्ट होगा। ११. नौकरानी के न आने से आज घर का कोई काम नहीं हुआ। १२. कल तुम्हारे नाना और नानी से बात करूँगा। १३. सास, ससुर और पति की सेवा करनी समस्त पतिव्रता स्त्रियों का धर्म है। १४. गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने के लिए पति को पत्नी का और पत्नी को पति का आदर करना चाहिये।

शब्द कोष

प्रचलित अंग्रेजी शब्द

म्युनिस्पल वोर्ड = नगर महापालिका। ऐडमिनिस्ट्रेटर = प्रशासकः। डिस्ट्रिक्ट = मण्डलम्। डिस्ट्रक्ट मैजिस्ट्रेट = मण्डलाधीशः। जज = न्यायाधीशः। कोर्ट = न्यायालयः। कमीशन = आयोगः। पब्लिक सर्विस कमीशन = लोक-सेवा-अयोगः। डाइरेकटर आफ एजुकेशन = शिक्षा-निर्देशकः। डिस्ट्रिक्ट इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स = मण्डल शिक्षा निरीक्षकः।

सुपरिन्टेन्डेन्ट = अधीक्षकः । प्रोफेसर = प्राध्यापकः । लेक्चरार + प्रवक्ता । चीफमिनिस्टर = मुख्य मंत्री । प्राइममिनिस्टर = प्रधान मंत्री । प्रेसीडेंएट = राष्ट्रपतिः । पार्लियामेण्ट = लोक सभा । लेजिस्लेटिव असम्बली = विधान-सभा । लेजिस्लेटिव कौंसिल = विधान परिषद् । कौंसिल आफ स्टेट्स = राज्य परिषद् । चान्सलर = कुलपतिः । वाइस चांसलर = उपकुलपतिः । गवर्नर = राज्यपालः ।

अभ्यास ५५

अनुवाद करो:—१. कल लेजिस्लेटिव असम्बली की तथा परसों पार्लियामेंट की बैठक होगी । २. म्युनिस्पल बोर्ड का ऐडमिनिस्ट्रेटर नगर की प्रगति के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है । ३. डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जिले के गांवों में दौरा करता है और जनता की कठिन समस्याओं को हल करता है । ४. जज कोर्ट में मुद्दई और मुद्दालेह के मुकदमे को सुनता है और अन्त में अपना जजमेण्ट देता है । ५—बड़े-बड़े अफसरों की नियुक्ति पब्लिक सर्विस कमीशन के द्वारा होती है । ६. डाइरेक्टर आफ एजुकेशन प्रदेश की शैक्षिक संस्थाओं को नियन्त्रित करता है । ७. इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स जिले के समस्त विद्यालयों का निरीक्षण करता है । ८. लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा कौंसिल आफ स्टेट्स में देशोन्नति के लिए योजनायें बनाई जाती हैं । ९. प्रेसीडेन्ट राष्ट्र का सब से बड़ा पदाधिकारी होता है । १०. प्रेसीडेंएट की अनुमति के बिना प्राइममिनिस्टर कोई कार्य नहीं करते । ११. आज विद्यालय के हाल में चीफ मिनिस्टर का भाषण होगा ।

लकारों का विशेष प्रयोग

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
प्रच्छ्	पूँछना	इष्	चाहना
तुद्	दुःख देना	स्पृश्	छूना
अस्	होना	भू	होना
कृ	करना	घ्रा	सूँघना
जि	जीतना	स्मृ	स्मरण करना
स्था	ठहरना	नम्	नमस्कार करना
ब्रू	बोलना	चिन्त्	सोचना
चुर्	चुराना		

अभ्यास ५६

(क) अनुवाद करो:—१. तुम क्या पूछते हो ? २. श्याम क्या चाहता है। २. तुम्हें किसी भी व्यक्ति को दुःख नहीं देना चाहिये। ३, लड़के इन फलों को न छूयें। ४. वे भोजन नहीं करेंगे। ५. वे दोनों फूल सुँघते थे। ६. अशोक ने कलिङ्ग को जीत लिया। ७. भक्त भगवान् का स्मरण करता है। ८. शिष्य गुरु को नमस्कार करें। ६. जब तक मैं लौट कर आता हूँ, तब तक तुम यहीं पर ठहरो। १०. मनुष्य को सदा सच बोलना चाहिये। ११. देवदत्त सदा सत्य बोलता था। १२. तुम लोग क्या सोचते हो ? १३. तुम किसी की पुस्तक न चुराओ। १४. समाज में चोरों का आदर नहीं होता। १५. पथिक बालक से रास्ता पूछता है। १६. बालकों को झूठ नहीं बोलना चाहिये।

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
धाव	दौड़ना	अधिशी	सोना
अधिस्था, अध्या	बैठना	भ्रम	घूमना
रुह्	सवार होना	नी, वह्	ले जाना
दह्	जलना	वृष्	बरसना
गै	गाना	दा	देना
स्पृह	इच्छा करना	कुप्, क्रुध्	क्रोध करना
निवेदय	निवेदन करना	उपादिश्	उपदेश करना
ईर्ष्य्	ईर्ष्या करना	असूय	निन्दा करना
रुच्	अच्छा लगना	क्रन्द	रोना
भज्	भजन करना	आदिश्	आज्ञा देना
रुह	उगना	उपदिश	उपदेश देना

अभ्यास ५७

अनुवाद करो :—१. लड़के खेल के मैदान में दौड़ते हैं। २. अस्वस्थ मनुष्य को तेजी से नहीं दौड़ना चाहिये। ३. वह आसन पर बैठेगा। ४. तुम कल कहां बैठे थे ? ५. प्रातःकाल खुले मैदान में घूमना स्वास्थ्य-कारक होता है। ६. तुम लोगों को प्रातः शुद्ध वायु का सेवन करने के लिए

घूमना चाहिए। ७. भक्त भगवान के गुणों का गान करते हैं। बालिकायें कब गायेंगी। ८. पवन-नन्दन ने लङ्का को क्षण भर में जला दिया। ९. आग जलती है। उस कमरे में दीपक जलता है। १०. छात्रों को क्रोध नहीं करना चाहिये। ११. तुम किसी से ईर्ष्या न करो। १२. वह सदा दूसरों की निन्दा करता है। १३. कल रास्ते में पड़ा हुआ एक बालक रो रहा था। १४. सदा ईश्वर का भजन करो। भक्त लोग सदा परमात्मा का भजन करते हैं। १५. मुझे लड्डू अच्छा लगता है। १६. गुरु शिष्य को उपदेश देता है। १७. पिता पुत्र को आदेश देता है। १८. आज पानी बरसेगा।

धातु कोष

शब्द	अर्थ	अर्थ	शब्द
जन्	उत्पन्न होना	जुगुप्स	घृणा करना
निली	छिपना	उद्भू	निकलना
प्रभू	उत्पन्न होना	प्रतिदा	बदले में लेना
प्रमद्	आलस्य करना	विरम्	रुकना
खन्	खोदना	अभिलष्	चाहना
जीव	जीना	आह्व	बुलाना
तृ	तैरना	शुच्	शोक करना
ध्यै	ध्यान	जप्	जप करना
अर्च	पूजा करना	आलप्	बात करना
निन्द्	निन्दा करना		

अभ्यास ५८

अनुवाद करो :—१—धर्म से सुख उत्पन्न होता है। २—तुम्हें पाप से घृणा करना चाहिए। ३—राम श्याम से छिपता है। ४—बीज से अंकुर निकलता है। ५—हिमालय से गङ्गा नदी निकलती है। ६—वह तिल के बदले उड़द देगा। ७—छात्र अध्ययन से प्रमाद न करें। ८—पाप करने से रुको। ९—वह जमीन खोदता था। १०—तुम क्या चाहते थे। ११—हम दोनों पुस्तक पढ़ना चाहते हैं। १२—स्वस्थ मनुष्य अधिक जीते हैं। १३—श्याम को बुलाओ। १४—वह तुम्हें बुलाता है। १५—छात्रों को यहाँ मत बुलाओ। १६—मैं नदी में तैरूंगा। १७—मनुष्य को शोक नहीं

करना चाहिए। १८—हम लोग ईश्वर का ध्यान करते हैं। १९—मुनि लोग देवताओं की पूजा करते है। २०—अध्यापक शिष्यों से बात करेंगे। २१—दुर्जन लोग सज्जनों की निन्दा करते हैं।

धातु कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सृ	चलना	श्रि	सहारा लेना
भृ	पालन करना	वे	बुनना
गर्ज्	गरजना	ईक्ष्	देखना
मूर्च्छ्	बेहोश होना	निरीक्ष	देखभाल करना
रम्	लगना	कम्प	कांपना
शुभ	शोभित होना	भिक्ष्	मांगना
यत्	कोशिश करना	शिक्ष्	सीखना
कूर्द्	कूदना	सेव्	सेवा करना
भाष्	बोलना, कहना	वन्द्	प्रणाम करना
वृत्	होना	सह्	सहना
वृध्	बढ़ना	मुद्	प्रसन्न होना
लभ्	पाना		

अभ्यास ५६

अनुवाद करो :—१—आकाश में बादल गरजते हैं। २—जङ्गल में सिंह गरजता था। ३—पत्नी पति का आश्रय लेती है। ४—जुलाहा तन्तुओं से वस्त्र बुनेगा। ४—राजा प्रजा का पालन करता था। ५—हनूमान ने मेघनाद को गदा से इतनी जोर से मारा कि वह बेहोश हो गया। ६—शिक्षा निरीक्षक आज विद्यालय का निरीक्षण करेंगे। ७—श्री कृष्ण भगवान् गोपियों के साथ रमण करते थे। ८—वह भय से कांपने लगा। ९—उद्यान में वृक्ष फूलों से शोभायमान हैं। १०—तुम किसी से भिक्षा न मांगो। ११—वह विद्यालय जाने का प्रयत्न करेगा। १२—तुम्हें बड़ों से अच्छा व्यवहार करना सीखना चाहिए। १३—लड़के हर्ष की अधिकता से उछलते और कूदते हैं। १४—शिष्य को गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए। १५—हम लोग अपने गुरुओं की सेवा करते थे। १६—तुम्हें सदा सच बोलना चाहिए। १७—पुत्र पिता को नित्य प्रणाम करे। १८—श्याम यहां वर्तमान नहीं है। १९—कुछ सभी छात्र विद्यालय में

वर्तमान रहेंगे। २०—जो पहले कष्ट सहते हैं वे बाद में सुख प्राप्त करते हैं। २१—अध्ययन से ज्ञान बढ़ता है। १२—जो श्रम करेगा, वह सुख पायेगा। २३—परीक्षा उत्तीर्ण होने से आज सभी छात्र प्रसन्न हैं।

धातु कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
स्निह्	स्नेह करना	विश्वस्	विश्वास करना
आदृ	आदर करना	क्षिप्	फेंकना
मुच्	छोड़ना	स्पर्ध्	स्पर्द्धा करना
चेष्ट्	प्रयत्न करना	पलाय्	भागना
शङ्क्	शङ्का करना	दीक्ष्	मन्त्र देना
आलम्ब्	सहारा लेना, देना	भास्	चमकना
स्रंस्	गिरना	व्यथ्	दुखी होना
ध्वंस्	नष्ट होना	आनी	लाना
अभिनी	अभिनय करना	अपनी	हटाना
अनुनी	मनाना	उपनी	जनेऊ करना
परिणी	शादी करना	निर्णी	निर्णय करना
प्रणी	ग्रंथ लिखना	व्यवहृ	व्यवहार करना
व्याहृ	बोलना	परिहृ	छोड़ना
अपहृ	चुराना	उदाहृ	उदाहरण देना
विहृ	विहार करना	उपहृ	भेंट देना
संहृ	संहार करना	उद्धृ	उद्धार करना
आहृ	लाना	प्रहृ	प्रहार करना
अलङ्कृ	सजाना	आविष्कृ	आविष्कार करना

अभ्यास ६०

अनुवाद करो :—१. माता शिशु से स्नेह करती है। २. गुरु शिष्य से स्नेह करता है। ३. भक्त ईश्वर में विश्वास करता है। ४. गुरुजनों का आदर करो। ५. हाथी अपनी सूंड से धूलि फेंकता है। ६. अब तुम उसे पानी की आशा छोड़ दो। ७. मनुष्य को किसी से स्पर्धा नहीं करनी चाहिए। ८. चोर चोरी करने की चेष्टा करता था। ९. जब मैं चिल्लाया तो चोर भाग गया। १०. वह तुम्हारे चरित्र में शङ्का करता है। ११. यदि

तुम सच्चे मार्ग पर चलते हो तो कोई भी मनुष्य तुम्हारे चरित्र में शङ्का नहीं करेगा। १.२ तुम दूसरे का सहारा मत लो। १३. अर्जुन के हाथ से धनुष पृथ्वी पर गिर पड़ा। १४. मेरी बात सुनकर श्यामा दुःखी होती है। १५. मोहन कृष्ण का अभिनय करता है। १६. जनक ने अपनी कन्या सीता का विवाह राम के साथ कर दिया। १७. गुरु शिष्य को दीक्षा देगा। १८. इस वस्तु को यहाँ से हटाओ। १९. उद्यान से फूल लाओ। २०. सज्जन सभी के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। २१. यदि तुम उसे मनाओगे, तो वह मान जायगा। २२. लड़के बुरी आदतें छोड़ दें। २३. वर्तमान वैज्ञानिक अनेक यन्त्रों का आविष्कार करते हैं। २४. अशिक्षितों का उद्धार करो। २५. मैं तुम्हें उपहार दूँगा। २६. किसी की वस्तु का अपहरण न करो।

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ग्रस्	निगलना	लङ्घ्	लांघना
अद्	खाना	राज्	शोभा देना
बाध्	दुःख देना	प्रथ्	फैलना
त्वर्	शीघ्रता करना	भ्राज्	चमकना
स्पन्द्	हिलना	भ्रंश्	गिरना
क्षुभ्	व्याकुल होना	रुद्	रोना
कर्तृ	करने वाला	भोक्तृ	भोग करने वाला
वक्तृ	बोलने वाला	अध्येतृ	अध्ययन करने वाला
नेतृ	ले जाने वाला	धा	धारण करना
हा	छोड़ना	निगॄ	निगलना
मा	नापना	जॄ	वृद्ध होना
हा	छोड़ना	हा	छोड़ना
स्तु	स्तुति करना	वप्	बीज बोना, काटना
शप्	शाप देना	बन्ध्	बाँधना
यज्	यज्ञ करना	ग्रह	ग्रहण करना

अभ्यास ६१

अनुवाद करो:—१. ब्राह्मण भोजन करता है। २. राहु चन्द्रमा को

असता है। ३. यह भार मेरे कन्धे को दुःख देता है। ४. चन्द्रमा अपनी श्वेत किरणों से शोभा देता है। ५. भगवान् की कृपा से लँगड़ा भी पहाड़ को लांघता है। ६. तुम्हारा यश चारों ओर फैल रहा है। ७. तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिए। ८. तुम्हारा कटु वचन सुनकर वह क्षुब्ध हो गया। ९. वायु के प्रवाह से लतायें हिलती थीं। १०. चन्द्रमा चमकता है। ११. अध्ययन करने वाले छात्र रात में देर तक जागते हैं। १२. इस ग्रंथ का कर्त्ता कौन है ? १३. देश के बड़े-बड़े नेताओं ने स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लिया। १४. इन वस्तुओं का भोक्ता कौन होगा ? १५. मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। १६. मैं आज इस भूमि को नापता हूँ। १७. वह वृद्ध होता है। १८, तुम्हें बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिये। १९. किसान खेतों में बीज बोता है। २०. मुनि ने उसे शाप दिया। २१. मैं आज रस्सी से हाथी को बाधूँगा। २२. वे यज्ञ करेंगे। २३. तुम्हें गुणवानों का गुण ग्रहण करना चाहिये। २४. आज हम लोग नवीन वस्त्र धारण करेंगे। २५. भक्त जन ईश्वर की स्तुति करेंगे। २६. वे भोजन निगलते हैं।

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
स्वप्	सोना	आस्	बैठना
श्रु	सुनना	प्रविश्	प्रवेश करना
अवगम्	जानना	उत्तॄ	पार होना,
प्राप्	प्राप्त करना	आरुह्	चढ़ना
भुज्	खाना	हन्	मारना
विद्	जानना	स्ना	नहाना
चल्	चलना	बुध्	जानना
यापि	बिताना	या	जाना
भा	चमकना	शम्	शान्त होना
पा	रक्षा करना	पीड्	दुःख देना
युज्	लगाना	प्रक्षाल्	धोना
प्रेर्	प्रेरणा देना	पाल्	पालन करना
गण्	गिनना	मन्त्र्	सलाह करना
घुष्	घोषित करना	तुल्	तोलना
सान्त्व्	धैर्य प्रदान करना	पुष्	पोषण करना

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
खण्ड्	खण्डन करना	आलोच्	गुण दोष का विवेचन करना
मण्ड्	समर्थन करना	तृप्	सन्तुष्ट करना
तड्	मारना	चिकित्स्	दवा करना
आश्लिष्	हृदय से लगाना	परिचि	पहचानना

अभ्यास ६२

अनुदाद करो :—१. माता बच्चे को सुलाती है। २. श्याम अभी तक सोता है। ३. वह तुम्हारी बात नहीं सुनेगा। ४. छात्रों को वृक्ष पर नहीं चढ़ना चाहिये। ५. केवट ने नौका द्वारा राम को गङ्गा के पार उतार दिया। ६. वे दोनों कमरे में सोते हैं। ७. आज हम लोग रात में नहीं सोयेंगे। ७. जो श्रम करते हैं, वे ही सुख प्राप्त करते हैं। ८. महान् पुरुष अच्छे कामों में अपना समय बिताते हैं। १०. तीर्थ यात्री सङ्गम के पवित्र तट पर स्नान करते हैं। ११. माता बच्चे को नहलाती है। १२. वे प्यासों को जल पिलाते हैं। १३. मैं इसका तात्पर्य समझ गया। १४. राजा को प्रजा का पालन करना चाहिए। १५. वे पशुओं को मारते हैं। १६. आज प्रातःकाल ठंडी हवा चलती है। १७. वैद्य रोगी की दवा करेगा। १८ प्यासा जल पीने की इच्छा करता है। १६ तैराक नदी को तैरना चाहता है। दुर्जन सज्जनों को पीड़ित करता है। २० शिष्य गुरु के चरणों को धोता है। २१. वह गौवों को पालेगा। २२ सत्संगति मनुष्य को अच्छे कामों में लगाती है। २३. गुरु शिष्य को प्रेरणा देता है। २४ मंत्री राजा को सलाह देता है। २५. वे फलों को गिनते हैं। २६. माँ ने बच्चों को हृदय से लगा लिया। २७. एक विद्वान दूसरे विद्वान के कथन का खण्डन करता है। २८, पिता पुत्र को सान्त्वना देता है। २६. वे फलों को तोलते ३०. श्याम इस ग्रन्थ की आलोचना करता है।

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तर्ज्	डराना	कृत्	वर्णन करना।
तर्क्	तर्क करना	गर्ह्	निन्दा करना
गवेष्	ढूँढ़ना	आस्वाद्	स्वाद लेना

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आदा	लेना	विधा	करना
अभिधा	कहना	परिधा	पहनना
अपिधा	ढकना	निधा	रखना
श्रद्धा (श्रद्धधाति)	श्रद्धा करना	अस्	फेंकना
सिव्	सीना	अभ्यस्	अभ्यास करना
निरस्	खण्डन करना	तृप्	तृप्त होना
रञ्ज्	प्रसन्न होना	शुष्	सूखना
शुध्	शुद्ध होना	तुष्	सन्तुष्ट होना
मुह्	मोहित होना	नश्	नष्ट होना
दम्	दमन करना	शम्	शमन करना
क्लम्	थकना	लुभ्	लोभ करना
हृष्	प्रसन्न होना	विलप्	रोना

अभ्यास ६२

अनुवाद करो:—१. राजा मंत्रियों से सलाह करता है। २. छात्रों को गुरु की निन्दा नहीं करनी चाहिये। ३. रावण अपने प्रभुत्व से देवताओं को डराता था। ४. आज हम श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन करेंगे। ५. माता बच्चों का पोषण करती है। ६. तुम क्या तर्क करते हो? ७. दोनों छात्र परस्पर सलाह करते हैं। ८. लड़का पिता को ढूँढ़ता है। ९. वह श्याम से पुस्तक लेगा। १०. उसने दोनों हाथों से अपने कानों को ढक लिया। ११. तुम्हें स्वच्छ वस्त्र पहनना चाहिये। १२. उसने पुस्तकों को विद्यालय में रख दिया। १३. वह ईश्वर तथा गुरु में श्रद्धा रखता है (श्रद्दधाति)। १४. तुम मेरा कुर्ता कब सिलोगे। १५. लड़के दौड़ने का अभ्यास करते हैं। १६. श्याम ने राम के कथन का निरास कर दिया। १७. उस पर बाण मत फेंको। १८. उसे संगीत का अभ्यास करना चाहिये। १९. जलाशय का जल सूख गया। २०. मेरा उत्तर सुन कर वे सन्तुष्ट हो गये। २१. मैं जल पीकर तृप्त हो गया। २२. धोती सूखती है। २३. श्याम को देख कर उसका मन प्रसन्न होता है। २४. प्रातःकालीन सौंदर्य देखकर उसका मन मोहित हो गया। २५. उसका सारा धन नष्ट हो जायगा। २६. वह शान्त हो गया। २७. उसे इन्द्रियों का दमन करना चाहिये। २८. राही रास्ता चलते-चलते थक गया। २९. वह लड्डू के लिए लालच करता है। ३०. वे प्रसन्न होंगे।

धातु-कोप

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उद्डी	उड़ना (उड्डीयते)	दीप्	जलना
क्लिश्	दुःखित होना	जन	पैदा करना
सम्पद्	पूरा होना (सम्पद्यते)	उत्पद्	पैदा होना (उत्पद्यते)
सु (सुनोति)	निकालना	सु (सुनुते)	नहाना
व्याप्	व्याप्त होना	समाप्	समाप्त करना
शक्	सकना	मृ	मरना
संदिश्	सन्देश देना	क्षिप्	फेंकना
सृज्	बनाना	विसृज्	छोड़ना
सिच्	सींचना	मुच्	छोड़ना
लिप	लीपना	लुप्	नष्ट होना
रुध्	रोकना	छिद्, भिद्	काटना
भुज्	खाना	अश्	खाना
अनुग्रह्	अनुग्रह करना	अभिज्ञा	पहचानना
अवज्ञा	आज्ञा न मानना	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा करना
अनुज्ञा	आज्ञा देना	ज्ञा	जानना

अभ्यास ६४

अनुवाद करो:—१. आकाश में पक्षियां उड़ती हैं। २. कमरे में दीप जलता था। ३. आग जलती है। ४. उसकी बात सुनकर मेरा मन दुखित हो गया। ५. ज्ञान से सुख उत्पन्न होता है। ६. माता से पुत्र उत्पन्न होता है। ७. बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। ८. श्याम आज स्नान करेगा। ९. तुम अपना कार्य समाप्त करो। १०. मैं आज तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। ११. जो जन्म लेता है, वह अवश्य ही मरता है। १२. किसान पानी से खेत सींचता था। १३. द्वारपाल ने राजमहल के द्वार पर ही मुझे रोक लिया। १४. लड़के फल खायेंगे। १५. गुरु शिष्य पर अनुग्रह करता है। १६. मैं आपको पहचानता हूँ। १७. आप आज विद्यालय न जा सकेंगी। १८. कृपया मुझे घर जाने की आज्ञा दें। १९. श्याम ने सहायता प्रदान करने की प्रतिज्ञा की है। २०. राजा को प्रजा का पालन करना चाहिये। २१. कुछ दिनों में धर्म का लोप हो जायगा। २२. इस ठण्डक में मैं आज स्नान न

कर सकूँगा। २३. जब तक यह कार्य पूरा न हो, तब तक आप यहाँ पर रहें। २४. दुर्जनों के व्यवहार से वह दुःखित होता है।

धातु-कोष

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
हन्	मारना	सह	सहना
पत्	गिरना	वस्	रहना
श्रु	सुनना	दृश्	देखना
नम्	नमस्कार करना	मुद्	प्रसन्न होना
वृध्	बढ़ना		

अभ्यास ६५
(लिट् , लृङ्)

लिट्—वक्ता ने जिस क्रिया को स्वयं नहीं देखा है, उस क्रिया का प्रयोग लिट् लकार में होता है। जैसे, रामः रावणं जघान (राम ने रावण को मारा)।

लृङ्—वाक्य में जब दो क्रियायें एक साथ प्रयुक्त हों और उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया का हेतु हो तो उन क्रियाओं का प्रयोग लृङ् लकार में होता है। जैसे, यदि सः आगमिष्यत् नाहम् अक्लिश्यम् (यदि वह आता, तो मैं दुःखित न होता।

अनुवाद करोः—(क) १. कृष्ण ने कंस को मारा। २. राम ने वन में अनेक कष्टों का सहन किया। ३. राणा प्रताप ने सम्राट् के साथ युद्ध किया। ४. वनेचर ने युधिष्ठिर को देखा। ५. धौम्य ने शिष्यों को आदेश दिया। ६. सीता राम के साथ वन गईं। ७. कौन कहता है कि मैं वाराणसी नहीं गया था। ८. राजा दिलीप ने सिंह को देखा। ९. कृष्ण ने गोपियों के साथ रमण किया। १०. वंशी की मधुर ध्वनि सुनकर व्रजाङ्गनायें कृष्ण के पास गईं। ११. यदि हवा न होती, तो कोई भी मनुष्य जीवित न रह सकता। १२. यदि कैकयी हठ न करती तो राजा दशरथ राम को वन न भेजते। १३. यदि तुम मेरे घर आते तो मैं तुम्हें मीठे फल खिलाता। १४. यदि तुम वहां जाते तो, शीतल जल पीते। १५. यदि मैं गुरु को देखता तो उन्हें नमस्कार अवश्य करता। १६. यदि वह यह समाचार सुनता तो वह प्रसन्न होता।

धातु-कोष

शब्द	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
शक्	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
इष्	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
आरभ्	आरभते	आरभेते	आरभन्ते

नोट—उपर्युक्त धातुओं का प्रयोग प्रायः 'तुमुन्' प्रत्ययान्त धातुओं के योग में होता है, उदाहरण :—(क) सः गन्तुं शक्नोति—वह जा सकता है। (ख) छात्रः पठितुम् इच्छति—छात्र पढ़ना चाहता है। (ग) शिशुः रोदितुम् आरभत—बच्चा रोने लगा।

अभ्यास ६६

अनुवाद करो :—१. मैं आज तुम्हारे लिए कुछ भी न कर सकूँगा। २ वे आज कार्यालय में न जा सकेंगे। ३. मैं उसकी सहायता कर सकता था। ४. हम लोग पर्वत पर चढ़ सकते थे। ५. क्या मैं इस पुस्तक को पढ़ सकता हूँ? ६. हम दोनों इस अन्याय का सहन न कर सकेंगे। ७ श्याम सिंह को मार सकता है। ८. मैं शयन करना चाहता हूँ। ९. तुम दोनों कहां खेलना चाहते हो १०. वे लोग सिनेमा देखना चाहते थे। ११. यदि वे प्रयाग आयेंगे, तो मुझसे अवश्य मिलना चाहेंगे। १२. लड़के पढ़ना नहीं चाहते। १३. मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि आप वाराणसी कब जायेंगे। १४ वह बिना श्रम के ही परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहता है। १५. जब बच्चे ने मां को देखा तब वह रोने लगा। १६ जब मैं उस पर बिगड़ता हूँ तब वह रोने लगता है। १७. जब मैं भोजन करने लगूंगा, तब तुम मुझे समाचार सुनाओगे। १८. जब वह पढ़ने लगता था, तो उस समय उससे कोई भी नहीं बोलता था। १९. जब मैं यहां से विद्यालय जाने लगूंगा, तो तुम मेरे पास आ जाना।

अनुवादार्थ गद्यांश-संग्रह

[१]

एक दिन वसन्त ऋतु में एक राजा अपनी रानियों को अपने बाग की शोभा दिखाने के लिये ले गया। बाग में एक ताल था। ताल पर कमल के फूल तैर रहे थे। अपने बाग की शोभा पर मुग्ध होकर राजा ने अपने वस्त्र उतार दिये, और सरोवर में स्नान किया। उसने कमल का फूल तोड़ लिया और किनारे पर ले जाकर अपनी एक रानी को भेंट किया। दुर्भाग्यवश फूल उसके हाथ से टूट गया, रानी के पैर पर गिरा और उसे घायल कर दिया। राजा ने आज्ञा दी कि जब तक यह आरोग्य न हों, तब तक उनकी चिकित्सा यत्नपूर्वक हो। उसी रात में उदय होते हुए चन्द्रमा की किरणें दूसरी रानी पर पड़ीं और उसकी खाल झुलस गई। दूसरे दिन प्रातःकाल एक पड़ोसी के धान कूटने का शब्द तीसरी रानी के कान में पड़ा, इससे उसके सिर में इतने जोर की पीड़ा हुई कि वह मूर्च्छित हो गई। इन तीनों रानियों में कौन सबसे अधिक कोमल थी ? वही, सबसे अधिक कोमल थी, जो धान कूटने का शब्द सुनकर मूर्च्छित हो गई।

[२]

एक आदमी अपने पड़ोसी के खेत में अनाज चुराने के लिये जाया करता था। एक दिन अपने लड़के को भी साथ ले गया जो आठ वर्ष का था। बाप ने कहा, "बोरा पकड़े रहो, तब तक मैं पता लगा आऊँ कि कोई मुझे देख रहा है या नहीं।" एक टीले पर खड़े होकर और अनाज के पौधों की सब पत्तियों में झांक कर अपने लड़के से बोरा लेने और अपना बेइमानी का काम आरम्भ करने को लौटा। लड़के ने कहा पिता, "आप एक ओर देखना भूल गये।" आदमी ने डर के मारे बोरा गिरा दिया और यह देखते हुए कि उसने किसी को देखा है, कहा, किस ओर ? उसने कहा आप आकाश की ओर देखना और यह सोचना भूल गये कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर आपको देख रहा है। बाप ने लड़के की भर्त्सना इतनी महसूस की कि उसने अनाज छोड़ दिया, घर लौट आया और कभी चोरी करने का साहस नहीं किया। उसने सदा यह सबक याद

रखा जो उसके लड़के ने उसे सिखाया था कि ईश्वर की आंख हमें प्रति दिन देखती है।

[३] इण्टरमीडियेट परीक्षा १९६०

चार ब्राह्मणों ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए दूसरे देश को जाने का निश्चय किया। तदनुसार वे सब कन्नोज गए और वहां बारह वर्षों तक अध्ययन किया। उन सबों ने सभी शास्त्रों को पढ़ा और अपने घरों को लौटने का विचार किया। अपने आचार्य से अनुमति लेकर कन्नौज से चल पड़े। रास्ते में उन्हें दो यात्री मिले, उनमें से एक ने कहा "हे भद्र लोगो! हम अयोध्या जा रहे हैं, किस रास्ते से हम लोग जायं?" उन चारों में से एक ने झट से अपनी पुस्तक को खोला और उत्तर दिया—"आप लोगों को आज अयोध्या न जाना चाहिये। आप सबों को या तो यहीं पांच दिन तक ठहरना चाहिये या लौट कर अपने घर को चला जाना चाहिये, क्योंकि आप सबों के ग्रहों की स्थिति आज अच्छी नहीं है।"

[४] इण्टरमीडियेट परीक्षा १९६१

राजा जीमूत वाहन नर्मदा नदी के किनारे पर धर्मपुर में राज्य करता था। एक दिन उसने एक स्त्री का विलाप सुना। जांच करने पर उसे ज्ञात हुआ कि वह स्त्री सर्पों की माता है। उसके आठ बच्चों को पक्षियों के राजा गरुड़ ने खा लिया है। वह इसलिये रो रही है कि गरुड़ उसके आखिरी बच्चे को भी खाना चाहता है। राजा ने उसके बच्चे को बचाने का वचन दिया। बच्चे के बदले अपना शरीर गरुड़ को दे दिया। जब गरुड़ ने उसके शरीर का वाम भाग खा लिया तो राजा ने दाहिना भाग भी उसके सम्मुख कर दिया। यह देख गरुड़ ने अत्यन्त पश्चाताप किया और राजा के शरीर को पुनः सर्वाङ्गपूर्ण करने के विचार से अमृत लाने के लिए पाताल लोक गया और अमृत ले आया। ज्योंही, गरुड़ राजा के शरीर पर अमृत छिड़कने वाला था कि राजा ने गरुड़ से आठों सर्पों के बच्चों को भी पुनः जीवित करने के लिए कहा जिनको वह पहले ही मार चुका था।

[५] इण्टरमीडियेट परीक्षा १९६२

संस्कृत के सबसे अच्छे व्याकरण के लिखने वाले महर्षि पाणिनि के के बारे में हमें अधिक मालूम नहीं है। महाभाष्य के अनुसार उनकी मां का नाम दाक्षी था। इसी प्रकार कथा सरितसागर के अनुसार वे उपवर्ष के

शिष्य और व्याडि, कात्यायन तथा इन्द्र दत्त के समय के कहे जा सकाते हैं पञ्चतन्त्र के एक पद्य के अनुसार उनकी मृत्यु बाघ के द्वारा बताई जाती है। सुना जाता है कि ये बचपन में बहुत बुद्धिमान नहीं थे। पढ़ने लिखने से निराश होकर उन्होंने भगवान् शिव की आराधना की और उनसे चौदह प्रत्याहार सूत्रों को पाया। उन्हीं के आधार पर उन्होंने अष्टाध्यायी की रचना की।

[६] इएटरमीडियेट परीक्षा १६६३

गङ्गा के तट पर स्थित, बनारस एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह नगर रेशम, मन्दिर और अपने घाटों के लिए सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। किन्तु हिन्दुओं के पवित्र नगर के रूप में यह अधिक विख्यात है। यह पीढ़ियों से हिन्दू धर्म का आश्रय स्थान रहा है और सम्भवतः भारत का सर्व प्राचीन नगर है। प्रत्येक धार्मिक हिन्दू इस पवित्र धार्मिक स्थान के दर्शन करने की आकांक्षा रखता है। वह अपने पापों को इसकी पुण्य सरिता में बहाने और अनन्त काल तक स्वर्ग में परम सुख पाने की कामना करता है। नदी के किनारे के प्रासाद ऐसे वृद्धजनों से भरे रहते हैं, जो भारत के सभी भागों में आते हैं। वे धैर्यपूर्वक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि बनारस उसके लिए स्वर्ग का प्रवेश द्वार है।

[७] इएटरमीडियेट परीक्षा १६६४

संस्कृत भाषा भारत की अमूल्य एवं अनुपम निधि है। हमारे देश के जीवन पर उसका गहरा प्रभाव पड़ा है। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति उससे पूर्णतया अनुप्राणित है। देववाणी पद से विभूषित होकर वह आज भी भारतीय जनता के हृदय में श्रद्धा का सञ्चार करती है। ऐसी देशप्राण भाषा को मृत कहना उसके प्रति अन्याय करना है। जो लोग संस्कृत को 'पुराने जमाने की चीज' कह कर उसे अवहेलना की दृष्टि से देखते हैं, वे वास्तव में उसके महत्व को नहीं जानते। यह बलपूर्वक कहा जा सकता है कि आज भी संस्कृत, ग्रीक और लैटिन की अपेक्षा कहीं अधिक जीवित है।

[८] इएटरमीडियेट परीक्षा १६६५

जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे। इस बड़े पद के लिये उनसे योग्यतर व्यक्ति नहीं चुना जा सकता था। वे हर प्रकार से

महान् थे। एक धनी, विख्यात एवं उदार कुल में उत्पन्न होकर उन्हें इंगलैंड में सबसे उत्तम शिक्षा प्राप्त हुई। वकील के रूप में वे अपार धन कमा सकते थे। किन्तु उन्होंने अपने लिए धन अथवा पद की कभी परवाह न की। वे बड़े वक्ता, विचारक और लेखक थे। उन्होंने अपनी महती शक्तियों एवं प्रतिभा का उपयोग अपने देश की भलाई के लिए ही करना पसन्द किया। अपने महान् गुरु महात्मा गांधी की तरह वे मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता की लड़ाई में कई बार जेल गये।

[९] आत्मनिर्भरता

तुलसीदास जी को लोक में जो इतनी सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त हुई, उनका दीर्घ जीवन इतना महत्त्वमय और शान्तिमय रहा, सब इसी मानसिक स्वतन्त्रता, निर्द्वन्द्वता और आत्म-निर्भरता के कारण। वही उनके समकालीन केशवदास को देखिये जो जीवनभर विलासी राजाओं के हाथ की कठपुतली बने रहे, जिन्होंने आत्म-स्वतन्त्र्य की ओर कम ध्यान दिया और अन्त में आप अपनी बुरी गति की। एक इतिहासकार कहता है— "प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन-निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। इसे चाहे आत्म-निर्भरता कहो, चाहे स्वावलम्बन कहो।"

[१०] भीष्मपितामह

भारतवासियों के लिए महात्मा भीष्म के चरित्र की चर्चा अमृत के समान है। भीष्म-चरित्र से पितृ-भक्ति, प्रतिज्ञा-पालन, सत्य, धर्मपरायणता, शूरता, निर्भयता, देश-भक्ति आदि गुणों की शिक्षायें मिलती हैं। इन्हीं गुणों से देश, जाति और भारतवासियों का उत्थान सम्भव है। भीष्म जी के चरित्र पर जितना अधिक हो उतना मनन करना चाहिए। भीष्म-पितामह राजा शान्तनु के पुत्र थे। उनके पिता ने आखेट को जाते हुए एक दिन एक युवती देखी। वह युवती एक मल्लाह की लड़की थी। राजा शान्तनु ने मल्लाह से उसकी पुत्री के साथ अपना विवाह करने की इच्छा प्रकट की, परन्तु मल्लाह ने यह उत्तर दिया कि वह राजा के साथ अपनी पुत्री का विवाह केवल इस शर्त पर करेगा कि उससे जो पुत्र उत्पन्न हो वही राज्य का उत्तराधिकारी बने।

[११] कवीन्द्र रवीन्द्र

बालक रवीन्द्र को स्कूल के पाठ्य-क्रम से अरुचि थी। उनकी स्कूल-शिक्षा की व्यवस्था ठीक न रही। उनके एक बड़े भाई जज थे। वे रवीन्द्र को शिक्षा के लिए विलायत ले गये। व्यावहारिक दृष्टि से वहां भी उनकी शिक्षा का क्रम ठीक न रहा। किन्तु वहां उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। काव्य-रचना तो वे प्रायः बाल्य-काल से ही करने लगे थे और विलायत में भी बंगला की कविता करते थे। गाने के लिए उनका कण्ठ प्रारम्भ से ही मधुर था। गाने के इस माधुर्य के कारण उनको एक बार बड़ा दण्ड भुगतना पड़ा था।

[१२] कर्त्तव्य और सत्यता

कर्त्तव्य-पालन में और सत्यता में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य-पालन करता है, वह अपने कर्मों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है। क्योंकि संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी घर के सब लोग झूठ बोलने लगे तो उस घर में कोई काम न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दुःख भोगेंगे। इसी लिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का कभी बर्ताव नहीं करना चाहिए और सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है।

[१३] कृष्ण का बाल्य जीवन

कृष्ण का बाल्य-जीवन तो एक काव्य ही है। जन्म से लेकर अथवा उसके पूर्व ही, उनके सम्बन्ध के अति मानवी चरित्रों का क्रम आरम्भ हो गया था और उनके वृन्दावन छोड़कर मथुरा आने के समय तक ये बाल लीलायें आकाश में एकत्रित होने वाली सुन्दर सुखद मेघ मालाओं की भांति नाना वर्णों और रूपों से संचित होती रहीं। बिना कहे ही उन्हें हम जानते हैं। हमारे देश के बाल वर्ग के लिए तो उन कथाओं की रसमय सामग्री एक अत्यन्त प्रिय वस्तु है। यमुना नदी और उसके समीप के पीलु के विरवों पर लहलहाती हुई लताओं के कुञ्जों में कृष्ण के बाल चरित्रों की प्रतिध्वनि आज भी जीवित काव्य-कथायें हैं।

[१४] ग्राम-सेवा

जब हम सेवा करने का उद्देश्य लेकर देहात में जाते हैं, तब हमें यह नहीं सूझता कि कार्य का आरम्भ किस प्रकार करना चाहिए। हम नगरों में रहने के अभ्यस्त हो गये हैं। देहात की सेवा करने की इच्छा ही हमारा मूल धन, हमारी पूँजी होती है। अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि इतनी थोड़ी पूँजी से व्यापार किस प्रकार आरम्भ करें। मेरा कहना तो यह है कि हमें देहात में जाकर व्यक्तियों की सेवा करने की ओर अपना ध्यान देना चाहिए न कि सारे समाज की ओर। सारे समाज की ओर पहुँचना सम्भव भी नहीं है। रण भूमि में लड़ने वाले सिपाही से यदि हम पूँछे "किसके साथ लड़ना है ?" तो वह कहेगा, "शत्रु के साथ"। किन्तु लड़ते समय वह किसी व्यक्ति को ही लक्ष्य बनाता है।

[१५] महात्मा गान्धी

भारत में अनेक महात्मा हो गये हैं। उनमें से कुछ तो जीवन विमुख थे। कुछ केवल आत्मोद्धार के पीछे पड़े हुये थे। कुछ लोगों ने तो लोकोत्तर शक्तियाँ प्राप्त कीं। अनेक दयामय महात्मा थे जिन्होंने लोगों का दुःख दूर किया। ऐसे भी विज्ञान-वीर महात्मा थे जिन्होंने योग द्वारा या प्रयोग द्वारा मनुष्य की गूढ़ शक्तियाँ ढूंढ निकालीं। लेकिन जीवन के सब स्तरों में अपने जीवन द्वारा प्रवेश करके सांसारिक प्रश्नों की आधारशिला तक पहुँचने वाले महात्मा गान्धी ही हुये। इसलिये उन्हें हम जीवन वीर और जीवनोपयोगी कह सकते हैं। गान्धी के सिद्धान्तों का सर्वत्र आदर हुआ। हीन से हीन, पतित से पतित, दुर्जन से दुर्जन, सबके प्रति उनके मन में समान प्रेम था। यही कारण था कि अन्तर में परम शान्ति रखते हुये भी वे अपने हृदय में समस्त संसार की वेदना अनुभव करते थे।

[१६] समाज और धर्म

यदि सभी लोग अपने-अपने धर्म का पालन करें तो सभी सुखी और समृद्ध रह सकेंगे। परन्तु आज ऐसा नहीं हो रहा है। धर्म का स्थान गौण हो गया है। इसलिये सुख और समृद्धि भी दुर्लभ है। यदि एक सुखी और सम्पन्न है तो अनेक दुःखी और दरिद्र हैं। साधनों की कमी नहीं है परन्तु धर्म-बुद्धि के विकसित न होने से उनका उपयोग नहीं हो रहा है। मनुष्य का सबसे बड़ा स्वार्थ मोक्ष है। किन्तु समाज किसी

भी मनुष्य में हठात् न तो आत्मज्ञान की इच्छा उत्पन्न कर सकता है और न कोई योगी बनने के लिये विवश किया जा सकता है। योगी व्यक्ति, कलाकार, विज्ञानी चाहे किसी देश के निवासी हों, मनुष्य समाज मात्र की विभूति हैं। इसके साथ ही आर्थिक विभाजन भी समाप्त होना चाहिये। प्रकृति ने जो भोग सामग्री प्रदान की है उसे भी उपभोग का साधन बनाना उचित है।

[१७] पं० जवाहर लाल नेहरू

पं० जवाहर लाल नेहरू का जन्म १४ नवम्बर, १८८९ ई० को प्रयाग की पावन नगरी में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मोतीलाल नेहरू तथा माता का नाम स्वरूप रानी था। पं० नेहरू बाल्यावस्था में ही अत्यन्त प्रतिभावान् थे। इनके माता पिता ने इनके पढ़ाने लिखाने की सुन्दर व्यवस्था की थी। पं० नेहरू उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश भी गये थे। विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत लौटे और कुछ दिनों तक वकालत करते रहे। किन्तु इनके मन में देश-सेवा की उत्कट अभिलाषा थी। इसलिये वकालत में इनका मन नहीं लगा। महात्मा गान्धी से वे बहुत प्रभावित हुये और अखिल भारतीय कांग्रेस के सदस्य हो गये। तब से इन्होंने देश-सेवा का व्रत लिया और देश को स्वतंत्र करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहे। अनेकों बार इन्हें जेल की यात्रा करनी पड़ी परन्तु वे अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं हुये और महात्मा गांधी के आदर्शों का पालन करते रहे। अन्त में जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो वे भारत के सर्वप्रथम प्रधान मंत्री निर्वाचित हुये।

[१८] सर्वोदय

गांधी जी जब तक जीवित रहे उन्होंने मानवता के कल्याण हेतु कार्य किया और उनकी इच्छा सदैव रही कि संसार में सुख तथा शांति की स्थापना हो। उनका यह अटल विश्वास था कि सत्य एवं अहिंसा के द्वारा ही विश्व में प्रेम शान्ति और एकता की स्थापना हो सकती है। सर्वोदय समाज का उद्देश्य है सत्य और अहिंसा के आधार पर एक ऐसा समाज बनाने का प्रयत्न करना जिसमें जाति-पांति न हो, जिसमें किसी को शोषण करने का मौका न मिले और जिसमें समाज और व्यक्ति दोनों को सर्वाङ्गीण विकास का अवसर मिले सर्वोदय का तत्वज्ञान समन्वयात्मक है। भारतीय संस्कृति ही ऐसी है कि समन्वय उसके रोम-रोम में बिधा हुआ है। उसकी

पूर्णता सर्वोदय के विचार से हो सकती है। सर्वोदय चाहता है कि सब का उदय हो उसकी दृष्टि में सभी बराबर हैं। रचनात्मक कार्य करना सर्वोदय का कर्त्तव्य है। आज के युग की मांग सर्वोदय है।

[१६] एक राजा

एक राजा जो एक विशाल प्रासाद में रहता था एक बड़ा निमन्त्रण देने वाला था। ऋतु ऐसी प्रतिकूल थी कि एक मछली भी पकड़ी न जा सकी। निमन्त्रण के दिन प्रातःकाल एक मछवाहा एक मछली लेकर वहां आया। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा, तुम इसका दाम लगाओ।" मछवाहे ने उत्तर दिया, "मेरी नंगी पीठ पर सौ कोड़े इसका मूल्य है।" राजा ने कहा मैं तुम्हें रुपया देना अधिक पसन्द करता परन्तु मुझे मछली लेनी ही है इसलिये तुम जो कुछ चाहते हो वही करूँगा। जब मछहरा पचास कोड़े खा चुका तो चिल्लाया ठहरो मेरा एक साथी और है उसे भी अपना भाग मिलना चाहिये। विस्मित होकर राजा बोला "क्या दुनियां में दो ऐसे मूर्ख हैं ?" मछेरे ने कहा दूसरा मूर्ख आपका दरबान है। जब तक मैंने मछली के मूल्य का आधा भाग उसे देने का वचन नहीं दिया तब तक वह मुझे अन्दर नहीं आने दिया। राजा ने दरबान को निकाल दिया और बुद्धिमान मछुये को पुरस्कार दिया।

[२०] श्रवण कुमार

ऐसा कौन होगा जो श्रवण कुमार का नाम नहीं जानता है। उनको मरे हुये हजारों वर्ष व्यतीत हो चुके हैं किन्तु उनका नाम आज भी लोग याद करते हैं। श्रवण कुमार के इस महत्त्व का कारण जानना आवश्यक है। श्रवण कुमार अपने माता-पिता के अनन्य भक्त थे। वे उनका अनादर कभी नहीं करते थे। जब उनके मात पिता इतने वृद्ध हो गये कि वे चल नहीं सकते थे तो उन्होंने तीर्थ यात्रा करने की इच्छा प्रकट की। श्रवण कुमार ने अपने वृद्ध माता पिता को अपने कन्धे पर लटका लिया और यात्रा प्रारम्भ की। जिस समय वे जंगल में से होकर जा रहे थे उनके माता पिता को प्यास लगी। वह अपने माता पिता को एक वृक्ष के नीचे बिठाकर निकट वाली नदी से जल लेने गये। घड़ा भरने के लिये वे झुके। राजा दशरथ ने उन्हें पानी पीता हुआ हिरण समझकर भूल से उनके ऊपर तीर चला दिया। मरते समय श्रवण कुमार ने राजा से हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि मेरे प्यासे माता पिता, को पानी दे दीजियेगा।

[२१] एक कवि

एक कवि एक अमीर आदमी के पास गया और उसकी बड़ी प्रशंसा की। उस अमीर आदमी ने प्रसन्न होकर कहा—"इस समय मेरे पास रुपये नहीं हैं परन्तु अनाज बहुत है। यदि आप कल आवें तो आपको कुछ अनाज दूँगा।" कवि घर चला गया और दूसरे दिन सवेरे ही अमीर आदमी के घर पर उपस्थित हुआ। उसे देखकर अमीर आदमी ने उससे पूछा—"इतने सवेरे कैसे आना हुआ मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" कवि ने उत्तर दिया, "आपने कल मुझे कुछ अनाज देने का अश्वासन दिया था, इसलिये मैं हाजिर हुआ हूँ।" यह सुनकर अमीर आदमी हँस पड़ा। उसने कवि से कहा कि आप तो बड़े ही मूर्ख मालूम पड़ते हैं। आंपने मुझे बातों से प्रसन्न किया था इसलिये मैंने भी आपको उसी तरह प्रसन्न किया। मैं आपको अनाज क्यों दूँ? क्या आपने शब्दों के अतिरिक्त मुझे कुछ दिया था जिसके बदले में आप मुझसे अनाज की आशा करते थे! बेचारा कवि कुछ न कह सका। उसने अपनी छड़ी उठाई और घर चल दिया। उस दिन से उसने अपनी कविताओं में दूसरों की प्रशंसा करना बन्द कर दिया।

[२२] विश्व-शान्ति

जहाँ प्रत्येक राष्ट्र अपने आन्तरिक सङ्कटों से पीड़ित है, वहां अन्त-र्राष्ट्रिय संकट उनसे भी भयावने रूप में वर्तमान विश्व को भयभीत किए हुए हैं। सारा मानव-समाज आपाद मस्तक कांप रहा है। विश्व दो बड़े भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग शक्ति व्यवस्था और लोक कल्याण के नाम पर अपना स्वार्थ साधने में तत्पर है। प्रत्येक व्यक्ति समझता है कि वह जिस मार्ग का अनुसरण कर रहा है वही विश्व के लिए सबसे हितकर मार्ग है। आज मानवता के सामने जितने उग्र और विकराल रूप में सङ्कट उप-स्थित है, उतने भयानक रूप में शायद मानव-समाज ने उसे कभी न देखा हो। इसका कारण यह है कि विज्ञान की अपरिमित शक्ति को पाकर मानव की पाशविक वृत्तियां जाग उठी हैं।

[२३] भू-दान यज्ञ

भारत प्राचीन काल से ही एक कृषि-प्रधान देश है। इस देश की ८० प्रतिशत जनता कृषि पर ही निर्भर रहती है। ऐसे कृषि-प्रधान देश में जिसकी जनता एक बड़ी संख्या में ग्रामों में निवास करती है, एवं कृषि पर निर्भर रहती है, उस देश में यदि खाद्य की समस्या हो, एवं जिसे अपनी

उदर पूर्ति के लिए बाहर से खाद्य का आयात करना पड़ता हो, ऐसा वात उस देश के लिए लज्जा जनक है। भारत में उसका मुख्य कारण भूमि आदि अन्य कृषि के उत्पादन में आने वाले साधन एवं भूमि का असमान वितरण है। भारत जैसे विशाल देश में किसानों की बड़ी दुर्दशा है।

[२४] नारी

प्राचीन काल में नारियों की धार्मिक स्थिति भी बहुत उत्तम थी। स्त्रियों को अपने पुरुषों के साथ धार्मिक कार्यों में हाथ बटाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। धार्मिक कार्यों में स्त्री की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। कोई भी धार्मिक कार्य, जिसमें स्त्रियों की उपस्थिति नहीं होती थी अपूर्ण माने जाते थे। उस समय विवाह पूर्ण रूप से एक धार्मिक संस्कार माना जाता था। प्राचीन काल में शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार था। किन्तु धीरे-धीरे समय बदलता गया और स्त्रियों की स्थिति विकृत होती गई। मध्यकालीन परिवारों में पुत्री का उत्पन्न होना अभिशाप समझा जाने लगा। स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखने के लिए अनेक नियमों का निर्माण होने लगा।

[२५] परिवार नियोजन

परिवार नियोजन का लक्ष्य है, परिवार स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना। आज विश्व की जन संख्या तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। इसीलिये समस्त विश्व में खाद्यान्न की समस्या उपस्थित हो गई है। हमारे देश में खाद्यान्न की बहुत कमी है। इस सङ्कट को दूर करने के लिए परिवार नियोजन अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये लोगों को उत्साहित किया जा रहा है कि वे अपने परिवारों को सीमित रखें। अन्य प्राणियों की भांति प्रकृति ने मनुष्य पर भी जन-नियन्त्रण किया है। जन संख्या को स्थिर करने के लिए प्रकृति का एक अटल नियम है, और वह है मृत्यु।

शब्द-रूप

पति = स्वामी

प्र०	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	पती	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पं०	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
ष०	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
स०	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सं०	हे पते	हे पती	हे पतयः

नोट—समास में पति शब्द के रूप हरि के समान होंगे जैसे भूपति, गणपति, राष्ट्रपति आदि।

ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—पितृ = पिता

प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

नोट—इसी प्रकार भ्रातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्दों के रूप पितृ के समान होंगे।

कर्तृ = करने वाला

प्र०	कर्त्ता	कर्त्तारौ	कर्त्तारः
द्वि०	कर्त्तारम्	कर्त्तारौ	कर्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः

च०	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पं०	कर्त्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
ष०	कर्त्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
स०	कर्त्तरि	कर्त्रोः	कर्त्तृषु
सं०	हे कर्त्तः	हे कर्त्तारौ	हे कर्त्तारः

नोट—इसी प्रकार धातृ, गन्तृ, दातृ, नेतृ इत्यादि ऋकारान्त शब्दों के रूप कर्तृ के समान होंगे।

ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—गो = गाय या बैल

प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवाम्
स०	गवि	गवोः	गोषु
सं०	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

चकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—पयोमुच् = बादल

प्र०	पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वि०	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृ०	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
च०	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पं०	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
ष०	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
स०	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु
सं०	हे पयोमुक्	हे पयोमुचौ	हे पयोमुचः

जकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—वणिज् = बनिया

प्र०	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वि०	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृ०	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः

च०	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पं०	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
ष०	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
स०	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सं०	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिजः

तकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—मरुत् = हवा

प्र०	मरुत्	मरुतौ	मरुतः
द्वि०	मरुतम्	मरुतौ	मरुतः
तृ०	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
च०	मरुते	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
पं०	मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
ष०	मरुतः	मरुतोः	मरुताम्
स०	मरुति	मरुतोः	मरुत्सु
सं०	हे मरुत्	हे मरुतौ	हे मरुतः

नोट—इसी प्रकार महीभृत्, विश्वजित्, भूभृत् इत्यादि तकरान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

महत् = बड़ा

प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च०	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पं०	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष०	महतः	महतोः	महताम्
स०	महति	महतोः	महत्सु
सं०	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

पतत् = गिरता हुआ (शतृप्रत्ययान्त शब्द)

प्र०	पतन्	पतन्तौ	पतन्तः
द्वि०	पतन्तम्	पतन्तौ	पततः
तृ०	पतता	पतद्भ्याम्	पतद्भिः
च०	पतते	पतद्भ्याम्	पतद्भ्यः

पं०	पततः	पतद्भ्याम्	पतद्भ्यः
ष०	पततः	पततोः	पतताम्
स०	पतति	पततोः	पतत्सु
सं०	हे पतन्	हे पतन्तौ	हे पतन्तः

नोट :—इसी प्रकार पठत्, धावत्, वदत्, पिबत् आदि तकरान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के रूप होंगे।

बुद्धिमत्=बुद्धि वाला

प्र०	बुद्धिमान्	बुद्धिमन्तौ	बुद्धिमन्तः
द्वि०	बुद्धिमन्तम्	बुद्धिमन्तौ	बुद्धिमतः
तृ०	बुद्धिमता	बुद्धिमद्भ्याम	बुद्धिमद्भिः
च०	बुद्धिमते	बुद्धिमद्भ्याम्	बुद्धिमद्भ्यः
पं०	बुद्धिमतः	बुद्धिमद्भ्याम्	बुद्धिमद्भ्यः
ष०	बुद्धिमतः	बुद्धिमतोः	बुद्धिमताम्
स०	बुद्धिमति	बुद्धिमतोः	बुद्धिमत्सु
सं०	हे बुद्धिमन्	हे बुद्धिमन्तौ	हे बुद्धिमन्तः

नोट :—इसी प्रकार श्रीमत्, धीमत्, बलवत् इत्यादि तकरान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

नकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—युवन्=युवा, जवान

प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
द्वि०	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च०	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पं०	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
ष०	यूनः	यूनोः	यूनाम
स०	यूनि	यूनोः	युवसु
सं०	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

नोट—इसी प्रकार श्वन् आदि नकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

एतावत्=इतना (पुं०)

प्र०	एतावान्	एतावन्तौ	एतावन्तः
द्वि०	एतावन्तम्	एतावन्तौ	एतावतः

तृ०	एतावता	एतावद्भ्याम्	एतावद्भिः
च०	एतावते	एतावद्भ्याम्	एतावद्भ्यः
पं०	एतावतः	एतावद्भ्याम्	एतावद्भ्यः
ष०	एतावतः	एतावतोः	एतावताम्
स०	एतावति	एतावतोः	एतावत्सु

नोट—स्त्रीलिङ्ग में 'एतावती' के रूप 'नदी' के समान तथा नपुंसक लिङ्ग में 'एतावत्' के रूप 'जगत्' के समान होंगे।

तावत्=उतना (पुं०)

प्र०	तावान्	तावन्तौ	तावन्तः
द्वि०	तावन्तम्	तावन्तौ	तावतः
तृ०	तावता	तावद्भ्याम्	तावद्भिः
च०	तावते	तावद्भ्याम्	तावद्भ्यः
पं०	तावतः	तावद्भ्याम्	तावद्भ्यः
ष०	तावतः	तावतोः	तावताम्
स०	तावति	तावतोः	तावत्सु

नोट—स्त्रीलिङ्ग में 'तावती' के रूप नदी के समान नपुं० लिङ्ग में 'तावत्' के रूप जगत् के समान होंगे।

कियत्=कितना (पुं०)

प्र०	कियान्	कियन्तौ	कियन्तः
द्वि०	कियन्तम्	कियन्तौ	कियतः
तृ०	कियता	कियद्भ्याम्	कियद्भिः
च०	कियते	कियद्भ्याम्	कयद्भ्यः
पं०	कियतः	कियद्भ्याम्	कयद्भ्यः
ष०	कियतः	कियतोः	कियताम्
स०	कियति	कियतोः	कियत्सु

नोट—स्त्रीलिङ्ग में 'कियती' के रूप 'नदी' के समान तथा नपुं० लिङ्ग में 'कियत्' के रूप 'जगत्' के समान होंगे।

यावत् (जितना)

प्र०	यावान्	यावन्तौ	यावन्तः
द्वि०	यावन्तम्	यावन्तौ	यावतः

तृ०	यावता	यावद्भ्याम्	यावद्भिः
च०	यावते	यावद्भ्याम्	यावद्भ्यः
पं०	यावतः	यावद्भ्याम्	यावद्भ्यः
ष०	यावतः	यावतोः	यावताम्
स०	यावति	यावतोः	यावत्सु

नोट—स्त्रीलिङ्ग में 'यावती' के रूप 'नदी' के समान तथा नपुं० लिङ्ग में 'यावत्' के रूप 'जगत्' के समान होंगे।

महिमन् = बड़ाई

प्र०	महिमा	महिमानौ	महिमानः
द्वि०	महिमानम्	महिमानौ	महिम्नः
तृ०	महिम्ना	महिमभ्याम्	महिमभिः
च०	महिम्ने	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
पं०	महिम्नः	महिमभ्याम्	महिमभ्यः
ष०	महिम्नः	महिम्नोः	महिम्नाम्
स०	महिम्नि	महिम्नोः	महिमसु
सं०	हे महिमम्	हे महिमानौ	हे महिमानः

नोटः—इसी प्रकार सीमन्, अश्वत्थामन्, आदि नकारान्त पुंल्लिङ्ग के रूप होंगे।

पथिन् = मार्ग

प्र०	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वि०	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च०	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पं०	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
ष०	पथः	पथोः	पथाम्
स०	पथि	पथोः	पथिषु
सं०	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः

यशस्विन् = कीर्त्ति वाला

प्र०	यशस्वी	यशस्विनौ	यशस्विनः
द्वि०	यशस्विनम्	यशस्विनौ	यशस्विनः

तृ०	यशस्विना	यशस्विभ्याम्	यशस्विभिः
च०	यशस्विने	यशस्विभ्याम्	यशस्विभ्यः
पं०	यशस्विनः	यशस्विभ्याम्	यशस्विभ्यः
ष०	यशस्विनः	यशस्विनोः	यशस्विनाम्
स०	यशस्विनि	यशस्विनोः	यशस्विषु
सं०	हे यशस्विन्	हे यशस्विनौ	हे यशस्विनः

नोट—इसी प्रकार ज्ञानिन्, तपस्विन्, मन्त्रिन्, शशिन्, करिन् इत्यादि नकारान्त पुं० शब्दों के रूप होंगे।

सकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द—विद्वस्=विद्वान्

प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च०	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष०	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सं०	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

नोट—इसी प्रकार सभी वस् में अन्त होने वाले पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

लघीयस्=उससे छोटा

प्र०	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वि०	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृ०	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
च०	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पं०	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
ष०	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
स०	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयस्सु, लघीयः सु
सं०	हे लघीयन्	हे लघीयांसौ	हे लघीयांसः

नोट—इसी प्रकार श्रेयस्, महीयस्, गरीयस् आदि सकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

शकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द तादृश्=उसके समान

प्र०	तादृक्	तादृशौ	तादृशः
द्वि०	तादृशम्	तादृशौ	तादृशः
तृ०	तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च०	तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
पं०	तादृशः	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
ष०	तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स०	तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सं०	हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः

नोट—इसी प्रकार यादृश्, एतादृश्, त्वादृश्, भवादृश् तथा मादृश् आदि शकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

महती

प्र०	महती	महत्यौ	महत्यः
द्वि०	महतीम्	महत्यौ	महतीः
तृ०	महत्या	महतीभ्याम्	महतीभिः
च०	महत्यै	महतीभ्याम्	महतीभ्यः
पं०	महत्याः	महतीभ्याम्	महतीभ्यः
ष०	महत्याम्	महत्योः	महतीषु
सं०	हे महति	हे महत्यौ	हे महत्यः

नोट—इसी प्रकार श्रीमती, धीमती, युवती, विदुषी (पढ़ी लिखी), लघीयसी, (उससे छोटी), पतन्ती (गिरती हुई), तादृशी, त्वादृशी मादृशी, तथा यादृशी आदि ईकारान्त स्त्रीलिंग के रूप होंगे।

स्त्री

प्र०	स्त्री	स्त्रिय	स्त्रियः
द्वि०	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पं०	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
ष०	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
स०	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सं०	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द—स्वसृ = बहिन

प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
तृ०	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
च०	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
पं०	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
ष०	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
स०	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सं०	हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—वाच् = वाणी

प्र०	वाक्-ग्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं०	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष०	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सं०	हे वाक्-ग्	हे वाचौ	हे वाचः

नकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—सीमन्

प्र०	सीमा	सीमानौ	सीमानः
द्वि०	सीमानम्	सीमानौ	सीम्नः
तृ०	सीम्ना	सीमभ्याम्	सीमभिः
च०	सीम्ने	सीमभ्याम्	सीमभ्यः
पं०	सीम्नः	सीमभ्याम्	सीमभ्यः
ष०	सीम्नः	सीम्नोः	सीम्नाम्
स०	सीम्नि	सीम्नोः	सीमसु
सं०	हे सीमन्	हे सीमानौ	हे सीमानः

तकरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—जगत् = संसार

प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति

तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पं०	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
ष०	जगतः	जगतोः	जगताम्
स०	जगति	जगतोः	जगत्सु
सं०	हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति

नोट—इसी प्रकार पतत् (गिरता हुआ), श्रीमत् आदि तकरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप होंगे।

नकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—नामन् = नाम

प्र०	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वि०	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्याम	नामभिः
पं०	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
ष०	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नाम्नि, नामनि	नाम्नोः	नामसु
सं०	हे नाम, नामन्	हे नाम्नी, नामनी	हे नामानि

नोट—इसी प्रकार प्रेमन , दामन् (रस्सी), व्योमन् (आकाश) तथा धामन् (घर) के रूप होंगे।

शकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—तादृश्

प्र०	तादृक् , तादृग्	तादृशी	तादृंशि
द्वि०	तादृक् , तादृग्	तादृशी	तादृंशि

नोट—शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान होंगे।

मनस् = मन

प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पं०	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः

ष०	मनस:	मनसो:	मनसाम्
स०	मनसि	मनसो:	मन: सु, मनस्सु
सं	हे मन:	हे मनसी	हे मनांसि

नोट—इसी प्रकार पयस्, यशस्, सरस्, तपस्, नमस्, वचस्, आदि के रूप होंगे।

भवत्=आप (पुंल्लिङ्ग)

प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्त:
द्वि०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवत:
तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भि:
च०	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:
पं०	भवत:	भवद्भ्याम्	भवद्भ्य:
ष०	भवत:	भवतो:	भवताम्
स०	भवति	भवतो:	भवत्सु
सं०	हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्त:

संस्कृत में भवत् शब्द प्रथम पुरुष होता है। इसके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। भवत् शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में भिन्न-भिन्न होते हैं। पुल्लिङ्ग में भवान्, स्त्री लिङ्ग में भवती तथा नपुंसक लिङ्ग में भवत् आदि रूप हो जाते हैं।

भवत्=आप (स्त्रीलिङ्ग—महती)

प्र०	भवती	भवत्यौ	भवत्य:
द्वि०	भवतीम्	भवत्यौ	भवती:
तृ०	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभि:
च०	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्य:
पं०	भवत्या:	भवतीभ्याम्	भवतीभ्य:
ष०	भवत्य:	भवत्यो:	भवतीनाम्
स०	भवत्याम्	भवत्यो:	भवतीषु
सं०	हे भवति	हे भवत्यौ	हे भवत्य:

भवत्=आप (नपुंसक लिङ्ग)

प्र०	भवत्	भवती	भवन्ति
द्वि०	भवत्	भवती	भवन्ति

नोट—तृतीया से सप्तमी तक पुल्लिङ्ग के समान रूप होंगे ।

अदस्=वह (पुंल्लिङ्ग)

प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च०	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	अमू	अमूः
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	अदः	अमू	अमूनि

नोट—शेष रूप पुंल्लिङ्ग के समान हैं।

अकारान्त सर्वनाम—कतर=दो में से कौन (नपुं०)

प्र०	कतरत्-द्	कतरे	कतराणि
द्वि०	कतरत्-द	कतरे	कतराणि
तृ०	कतरेण	कतराभ्याम्	कतरैः
च०	कतरस्मै	कतराभ्याम्	कतरेभ्यः
पं०	कतरस्मात्-द्	कतराभ्याम्	कतरेभ्यः

ष०	कतरस्य	कतरयोः	कतरेषाम्
स०	कतरस्मिन्	कतरयोः	कतरेषु
सं०	हे कतरत्-द्	हे कतरे	हे कतराणि

नोट—इसी प्रकार इतर, अन्य, अन्यतर (दो अन्यों में से एक), अन्यतम (अन्यों में से एक) एकतर (दोनों में से एक), आदि अकरान्त सर्वनाम के रूप होंगे।

धातु-रूप

नम्=प्रणाम करना

	लट्			लृट्		
प्र०	नमति	नमतः	नमन्ति	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म०	नमसि	नमथः	नमथ	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ०	नमामि	नमावः	नमामः	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

	लिट्			लोट्		
प्र०	ननाम	नेमतुः	नेमुः	नमतु	नमताम्	नमन्तु
म०	नेमिथ	नेमथुः	नेम	नम	नमतम्	नमत
उ०	ननाम	नेमिव	नेमिम	नमानि	नमाव	नमाम

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
म०	अनमः	अनमतम्	अनमत	नमेः	नमेतम्	नमेत
उ०	अनमम्	अनमाव	अनमाम	नमेयम्	नमेव	नमेम

	लुङ्			आ० लिङ्		
प्र०	अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः	नम्यात	नम्यास्ताम्	नम्यासुः
म०	अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट	नम्याः	नम्यास्तम्	नम्यास्त
उ०	अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म	नम्यासम्	नम्यास्व	नम्यास्म

	लुट्			लृङ्		
प्र०	नन्ता	नन्तारौ	नन्तारः	अनंस्यत्	अनंस्यताम्	अनंस्यन्
म०	नन्तासि	नन्तास्थः	नन्तास्थ	अनंस्यः	अनंस्यतम्	अनंस्यत
उ०	नन्तास्मि	नन्तास्वः	नन्तास्मः	अनंस्यम्	अनंस्याव	अनंस्याम

शुच्=शोक करना

	लिट्			लृट्		
प्र०	शोचति	शोचतः	शोचन्ति	शोचिष्यति	शोचिष्यतः	शोचिष्यन्ति

म०	शोचसि शोचथः शोचथ	शोचिष्यसि शोचिष्यथः शोचिष्यथ
उ०	शोचामि शोचावः शोचामः	शोचिष्यामि शोचिष्यावः शोचिष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	शुशोच शुशुचतुः शुशुचुः	शोचतु शोचताम् शोचन्तु
म०	शुशोचिथ शुशुचथुः शुशुच	शोच शोचतम् शोचत
उ०	शुशोच शुशुचिव शुशुचिम	शोचानि शोचाव शोचाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अशोचत् अशोचताम् अशोचन्	शोचेत् शोचेताम् शोचेयुः
म०	अशोचः अशोचतम् अशोचत	शोचेः शोचेतम् शोचेत
उ०	अशोचम् अशोचाव अशोचाम	शोचेयम् शोचेव शोचेम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अशोचीत् अशोचिष्टाम् अशोचिषुः	शुच्यात् शुच्यास्ताम् शुच्यासुः
म०	अशोचीः अशोचिष्टम् अशोचिष्ट	शुच्याः शुच्यास्तम् शुच्यास्त
उ०	अशोचिषम् अशोचिष्व अशोचिष्म	शुच्यासम् शुच्यास्व शुच्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	शोचिता शोचितारौ शोचितारः	अशोचिष्यत् अशोचिष्यताम् अशोचिष्यन्
म०	शोचितासि शोचितास्थः शोचितास्थ	अशोचिष्यः अशोचिष्यतम् अशोचिष्यत
उ०	शोचितास्मि शोचितास्वः शोचितास्मः	अशोचिष्यम् अशोचिष्याव अशोचिष्याम

आत्मनेपदी

सेव्=सेवा करना

	लट्	लृट्
प्र०	सेवते सेवेते सेवन्ते	सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते
म०	सेवसे सेवेथे सेवेध्वे	सेविष्यसे सेविष्येथे सेविष्यध्वे
उ०	सेवे सेवावहे सेवामहे	सेविष्ये सेविष्यावहे सेविष्यामहे

लिट्	लोट्
प्र० सिषेवे सिषेवाते सिषेविरे	सेवताम् सेवेताम् सेवन्ताम्
म० सिषेविषे सिषेवाथे सिषेविध्वे	सेवस्व सेवेथाम् सेवध्वम्
उ० सिषेवे सिषेविवहे सिषेविमहे	सेवै सेवावहै सेवामहै

लङ्	विधिलिङ्
प्र० असेवत असेवेताम् असेवन्त	सेवेत सेवेयाताम् सेवेरन्
म० असेवथाः असेवेथाम् असेवध्वम्	सेवेथाः सेवेयाथाम् सेवेध्वम्
उ० असेवे असेवावहि असेवामहि	सेवेय सेवेवहि सेवेमहि

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० असेविष्ट असेविषाताम् असेविषत	सेविषीष्ट सेविषीयास्ताम् सेविषीरन्
म० असेविष्ठाः असेविषाथाम् असेविढ्वम्	सेविषीष्ठाः सेविषीयास्थाम् सेविषीढ्वम्
उ० असेविषि असेविष्वहि असेविष्महि	सेविषीय सेविषीवहि सेविषीमहि

लुट्	लृङ्
प्र० सेविता सेवितारौ सेवितारः	असेविष्ट असेविषाताम् असेविषत
म० सेवितासे सेवितासाथे सेविताध्वे	असेविष्ठाः असेविषाथाम् असेविढ्वम्
उ० सेविताहे सेवितास्वहे सेवितास्महे	असेविषि असेविष्वहि असेविष्महि

मुद् = प्रसन्न होना

लट्	लृट्
प्र० मोदते मोदेते मोदन्ते	मोदिष्यते मोदिष्येते मोदिष्यन्ते
म० मोदसे मोदेथे मोदध्वे	मोदिष्यसे मोदिष्येथे मोदिष्यध्वे
उ० मोदे मोदावहे मोदामहे	मोदिष्ये मोदिष्यावहे मोदिष्यामहे

लिट्	लोट्
प्र० मुमुदे मुमुदाते मुमुदिरे	मोदताम् मोदेताम् मोदन्ताम्
म० मुमुदिषे मुमुदाथे मुमुदिध्वे	मोदस्व मोदेथाम् मोदध्वम्
उ० मुमुदे मुमुदिवहे मुमुदिमहे	मोदै मोदावहै मोदामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अमोदत अमोदेताम् अमोदन्त	मोदेत मोदेयाताम् मोदेरन्
म०	अमोदथाः अमोदेथाम् अमोदध्वम्	मोदेथाः मोदेयाथाम् मोदेध्वम्
उ०	अमोदे अमोदावहि अमोदामहि	मोदेय मोदेवहि मोदेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अमोदिष्ट अमोदिषाताम् अमोदिषत	मोदिषीष्ट मोदिषीयास्ताम् मोदिषीरन्
म०	अमोदिष्ठाः अमोदिषाथाम् अमोदिढ्वम्	मोदिषीष्ठाः मोदिषीयास्थाम् मोदिषीध्वम्
उ०	अमोदिषि अमोदिष्वहि अमोदिष्महि	मोदिषीय मोदिषीवहि मोदिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	मोदिता मोदितारौ मोदितारः	अमोदिष्यत अमोदिष्येताम् अमोदिष्यन्त
म०	मोदितासे मोदितासाथे मोदिताध्वे	अमोदिष्यथाः अमोदिष्येथाम् अमोदिष्यध्वम्
उ०	मोदिताहे मोदितास्वहे मोदितास्महे	अमोदिष्ये अमोदिष्यावहि अमोदिष्यामहि

आरभ्=प्रारम्भ करना

	लट्	लृट्
प्र०	आरभते आरभेते आरभन्ते	आरप्स्यते आरप्स्येते आरप्स्यन्ते
म०	आरभसे आरभेथे आरभध्वे	आरप्स्यसे आरप्स्येथे आरप्स्यध्वे
उ०	आरभे आरभावहे आरभामहे	आरप्स्ये आरप्स्यावहे आरप्स्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	आरेभे आरेभाते आरेभिरे	आरभताम् आरभेताम् आरभन्ताम्
म०	आरेभिषे आरेभाथे आरेभिध्वे	आरभस्व आरभेथाम् आरभध्वम्
उ०	आरेभे आरेभिवहे आरेभिमहे	आरभै आरभावहै आरभामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	आरभत आरभेताम् आरभन्त	आरभेत आरभेयाताम् आरभेरन्

म० आरभथाः आरभेथाम् आरभध्वम् आरभेथाः आरभेयाथाम् आरभध्वम्
उ० आरभे आरभावहि आरभामहि आरभेय आरभेवहि आरभेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	आरब्ध आरप्साताम् आरप्सत	आरप्सीष्ट आरप्सीयास्ताम् आरप्सीरन्
म०	आरब्धाः आरप्साथाम् आरब्ध्वम्	आरप्सीष्ठाः आरप्सीयास्थाम् आरप्सीध्वम्
उ०	आरप्सि आरप्सवहि आरप्समहि	आरप्सीय आरप्सीवहि आरप्सीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	आरब्धा आरब्धारौ आरब्धारः	आरप्स्यत आरप्स्येताम् आरप्स्यन्त
म०	आरब्धासे आरब्धासाथे आरब्धाध्वे	आरप्स्यथाः आरप्स्येथाम् आरप्स्यध्वम्
उ०	आरब्धाहे आरब्धास्वहे आरब्धास्महे	आरप्स्ये आरप्स्यावहि आरप्स्यामहि

वृत = होना

	लट्	लृट्
प्र०	वर्तते वर्तेते वर्तन्ते	वर्तिष्यते वर्तिष्येते वर्तिष्यन्ते
म०	वर्तसे वर्तेथे वर्तध्वे	वर्तिष्यसे वर्तिष्येथे वर्तिष्यध्वे
उ०	वर्ते वर्तावहे वर्तामहे	वर्तिष्ये वर्तिष्यावहे वर्तिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	ववृते ववृताते ववृतिरे	वर्तताम् वर्तेताम् वर्तन्ताम्
म०	ववृतिषे ववृताथे ववृतिध्वे	वर्तस्व वर्तेथाम् वर्तध्वम्
उ०	ववृते ववृतिवहे ववृतिमहे	वर्तै वर्तावहै वर्तामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अवर्तत अवर्तेताम अवर्तन्त	वर्तेत वर्तेयाताम् वर्तेरन्
म०	अवर्तताथः अवर्तेथाम् अवर्तध्वम्	वर्तेथाः वर्तेयाथाम् वर्तेध्वम्
उ०	अवर्ते अवर्तावहि अवर्तामहि	वर्तेय वर्तेवहि वर्तेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अवर्तिष्ट अवर्तिषाताम् अवर्तिषत	वर्तिषीष्ट वर्तिषीयास्ताम् वर्तिषीरन्
म०	अवर्तिष्ठाः अवर्तिषाथाम् अवर्तिढ्वम्	वर्तिषीष्ठाः वर्तिषीयास्थाम् वर्तिषीध्वम्
उ०	अवर्तिषि अवर्तिष्वहि अवर्तिष्महि	वर्तिषीय वर्तिषीवहि वर्तिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	वर्तिता वर्तितारौ वर्तितारः	अवर्तिष्यत् अवर्तिष्येताम् अवर्तिष्यन्त
म०	वर्तितासे वर्तितासाथे वर्तिताध्वे	अवर्तिष्यथाः अवर्तिष्येथाम् अवर्तिष्यध्वम्
उ०	वर्तिताहे वर्तितास्वहे वर्तितास्महे	अवर्तिष्ये अवर्तिष्यावहि अवर्तिष्यामहि

शुभ = शोभा

	लट्	लृट्
प्र०	शोभते शोभेते शोभन्ते	शोभिष्यते शोभिष्येते शोभिष्यन्ते
म०	शोभसे शोभेथे शोभध्वे	शोभिष्यसे शोभिष्येथे शोभिष्यध्वे
उ०	शोभे शोभावहे शोभामहे	शोभिष्ये शोभिष्यावहे शोभिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	शुशुभे शुशुभाते शुशुभिरे	शोभताम् शोभेताम् शोभन्ताम्
म०	शुशुभिषे शुशुभाथे शुशुभिध्वे	शोभस्व शोभेथाम् शोभध्वम्
उ०	शुशुभे शुशुभिवहे शुशुभिमहे	शोभै शोभावहै शोभामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अशोभत अशोभेताम् अशोभन्त	शोभेत शोभेयाताम् शोभेरन्
म०	अशोभथाः अशोभेथाम् अशोभध्वम्	शोभेथाः शोभेयाथाम् शोभेध्वम्
उ०	अशोभे अशोभावहि अशोभामहि	शोभेय शोभेवहि शोभेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अशोभिष्ट अशोभिषाताम् अशोभिषत्	शोभिषीष्ट शोभिषीयास्ताम् शोभिषीरन्

म०	अशोभिष्ठाः अशोभिषाथाम् अशोभिढ्वम्	शोभिषीष्ठाः शोभिषीयास्थाम् शोभिषीध्वम्
उ०	अशोभिषि अशोभिष्वहि अशोभिष्महि	शोभिषीय शोभिषीवहि शोभिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	शोभिता शोभितारौ शोभितारः	अशोभिष्यत अशोभिष्येताम् अशोभिष्यन्त
म०	शोभितासे शोभितासाथे शोभिताध्वे	अशोभिष्यथाः अशोभिष्येथाम् अशोभिष्यध्वम्
उ०	शोभिताहे शोभितास्वहे शोभितास्महे	अशोभिष्ये अशोभिष्यावहि अशोभिष्यामहि

रुच्=अच्छा लगना

	लट्	लृट्
प्र०	रोचते रोचेते रोचन्ते	रोचिष्यते रोचिष्येते रोचिष्यन्ते
म०	रोचसे रोचेथे रोचध्वे	रोचिष्यसे रोचिष्येथे रोचिष्यध्वे
उ०	रोचे रोचावहे रोचामहे	रोचिष्ये रोचिष्यावहे रोचिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	रुरुचे रुरुचाते रुरुचिरे	रोचताम् रोचेताम् रोचन्ताम्
म०	रुरुचिषे रुरुचाथे रुरुचिध्वे	रोचस्व रोचेथाम् रोचध्वम्
उ०	रुरुचे रुरुचिवहे रुरुचिमहे	रोचै रोचावहै रोचामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अरोचत अरोचेताम् अरोचन्त	रोचेत रोचेयाताम् रोचेरन्
म०	अरोचथाः अरोचेथाम् अरोचध्वम्	रोचेथाः रोचेयाथाम् रोचेध्वम्
उ०	अरोचे अरोचावहि अरोचामहि	रोचेय रोचेवहि रोचेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अरोचिष्ट अरोचिषाताम् अरोचिषत	रोचिषीष्ट रोचिषीयास्ताम् रोचिषीरन्
म०	अरोचिष्ठाः अरोचिषाथाम् अरोचिढ्वम्	रोचिषीष्ठाः रोचिषीयास्थाम् रोचिषीध्वम्
उ०	अरोचिषि अरोचिष्वहि अरोचिष्महि	रोचिषीय रोचिषीवहि रोचिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	रोचिता रोचितारौ रोचितारः	अरोचिष्यत अरोचिष्येताम् अरोचिष्यन्त
म०	रोचितासे रोचितासाथे रोचिताध्वे	अरोचिष्यथ अरोचिष्येथाम् अरोचिष्येध्वम्
उ०	रोचिताहे रोचितास्वहे रोचितास्महे	अरोचिष्ये अरोचिष्यावहि अरोचिष्यामहि

सह् = सहन करना

	लट्	लृट्
प्र०	सहते सहेते सहन्ते	सहिष्यते सहिष्येते सहिष्यन्ते
म०	सहसे सहेथे सहध्वे	सहिष्यसे सहिष्येथे सहिष्यध्वे
उ०	सहे सहावहे सहामहे	सहिष्ये सहिष्यावहे सहिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	सेहे सेहाते सेहिरे	सहताम् सहेताम् सहन्ताम्
म०	सेहिषे सेहाथे सेहिध्वे	सहस्व सहेथाम् सहध्वम्
उ०	सेहे सेहिवहे सेहिमहे	सहै सहावहै सहामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	असहत असहेताम् असहन्त	सहेत सहेयाताम् सहेयुः
म०	असहथाः असहेथाम् असहध्वम	सहेथाः सहेयाथाम् सहेध्वम्
उ०	असहे असहावहि असहामहि	सहेय सहेवहि सहेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	असहिष्ट असहिषाताम् असहिषत	सहिषीष्ट सहिषीयास्ताम् सहिषीरन्
म०	असहिष्ठाः असहिषाथाम् असहिध्वम्	सहिषीष्ठाः सहिषीयास्थाम् सहिषीध्वम्
उ०	असहिषि असहिष्वहि असहिष्महि	सहिषीय सहिषीवहि सहिषीमहि

	लुट्	लृट्
प्र०	सहिता सहितारौ सहितारः	असहिष्यत असहिष्येताम असहिष्यन्त

म० सहितासे सहितासाथे सहिताध्वे	असहिष्यथाः असहिष्येथाम् असहिष्यध्वम्
उ० सहिताहे सहितास्वहे सहितास्महे	असहिष्ये असहिष्यावहि असहिष्यामहि

स्ना = नहाना

लट्	लृट्
प्र० स्नाति स्नातः स्नान्ति	स्नास्यति स्नास्यतः स्नास्यन्ति
म० स्नासि स्नाथः स्नाथ	स्नास्यसि स्नास्यथः स्थास्यथ
उ० स्नामि स्नावः स्नामः	स्नास्यामि स्नास्यावः स्नास्यामः

लिट्	लोट्
प्र० सस्नौ सस्नतुः सस्नुः	स्नातु स्नाताम् स्नान्तु
म० सस्निथ सस्नथुः सस्न	स्नाहि स्नातम् स्नात
उ० सस्नौ सस्निव सस्निम	स्नानि स्नाव स्नाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अस्नात् अस्नाताम् अस्नुः	स्नायात् स्नायाताम् स्नायुः
म० अस्नाः अस्नातम् अस्नात	स्नायाः स्नायातम् स्नायात
उ० अस्नाम् अस्नाव अस्नाम	स्नायाम् स्नायाव स्नायाम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अस्नासीत् अस्नासिष्टाम् अस्नासिषु	स्नायात् स्नायास्ताम् स्नायासुः
म० अस्नासीः अस्नासिष्टम् अस्नासिष्ट	स्नायाः स्नायास्तम स्नायास्त
उ० अस्नासिषम् अस्नासिष्व अस्नासिष्म	स्नायासम् स्नायास्व स्नायास्म

लुट्	लृङ्
प्र० स्नाता स्नातारौ स्नातारः	अस्नास्यत अस्नास्यताम् अस्नास्यन्
म० स्नातासि स्नातास्थः स्नातास्थ	अस्नास्यः अस्नास्यतम् अस्नास्यत
उ० स्नातास्मि स्नातास्वः स्नातास्मः	अस्नास्यम् अस्नास्याव अस्नास्याम

रुद् = रोना

लट्	लृट्
प्र० रोदिति रुदितः रुदन्ति	रोदिष्यति रोदिष्यतः रोदिष्यन्ति

म० रोदिषि रुदिथः रुदिथ
उ० रोदिमि रुदिवः रुदिमः

रोदिष्यसि रोदिष्यथः रोदिष्यथ
रोदिष्यामि रोदिष्यावः रोदिष्यामः

लिट्

प्र० रुरोद रुरुदतुः रुरुदुः
म० रुरोदिथ रुरुदथुः रुरुद
उ० रुरोद रुरुदिव रुरुदिम

लोट्

रोदितु रुदिताम् रुदन्तु
रुदिहि रुदितम् रुदित
रोदानि रोदाव रोदाम

लङ्

प्र० अरोदीत् अरुदिताम् अरुदन्
म० अरोदीः अरुदितम् अरुदित
उ० अरोदम् अरुदिव अरुदिम

विधिलिङ्

रुद्यात् रुद्याताम् रुद्युः
रुद्याः रुद्यातम् रुद्यात
रुद्याम् रुद्याव रुद्याम

लुङ्

प्र० अरुदत् अरुदताम् अरुदन्
म० अरुदः अरुदतम् अरुदत
उ० अरुदम् अरुदाव अरुदाम्

आ० लिङ्

रुद्यात् रुद्यास्ताम् रुद्यासुः
रुद्याः रुद्यास्तम् रुद्यास्त
रुद्यासम् रुद्यास्व रुद्यास्म

लुट्

प्र० रोदिता रोदितारौ रोदितारः
म० रोदितासि रोदितास्थः रोदितास्थ
उ० रोदितास्मि रोदितास्वः रोदितास्मः

लृङ्

अरोदिष्यत अरोदिष्यताम् अरोदिष्यन्
अरोदिष्यः अरोदिष्यतम् अरोदिष्यत
अरोदिष्यम् अरोदिष्याव अरोदिष्याम

हन् = मारना

लट्

प्र० हन्ति हतः घ्नन्ति
म० हंसि हथः हथ
उ० हन्मि हन्वः हन्मः

लृट्

हनिष्यति हनिष्यतः हनिष्यन्ति
हनिष्यसि हनिष्यथः हनिष्यथ
हनिष्यामि हनिष्यावः हनिष्यामः

लिट्

प्र० जघान जघ्नतुः जघ्नुः

लोट्

हन्तु हताम् घ्नन्तु

म० जघनिथ जघ्नथुः जघ्न | जहि हतम् हत
उ० जघान जघ्निव जघ्निम | हनानि हनाव हनाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अहन् अहताम् अघ्नन्	हन्यात् हन्याताम् हन्युः
म० अहः अहतम् अहत	हन्याः हन्यातम् हन्यात
उ० अहनम् अहन्व अहन्म	हन्याम् हन्याव हन्याम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अवधीत् अवधिष्टाम् अवधिषुः	वध्यात् वध्यास्ताम् वध्यासुः
म० अवधीः अवधिष्टम् अवधिष्ट	वध्याः वध्यास्तम् वध्यास्त
उ० अवधिषम् अवधिष्व अवधिष्म	वध्यासम् वध्यास्व वध्यास्म

लुट्	लृङ्
प्र० हन्ता हन्तारौ हन्तारः	अहनिष्यत् अहनिष्यताम् अहनिष्यन्
म० हन्तासि हन्तास्थः हन्तास्थ	अहनिष्यः अहनिष्यतम् अहनिष्यत
उ० हन्तास्मि हन्तास्वः हन्तास्मः	अहनिष्यम् अहनिष्याव अहनिष्याम

स्वप्=सोना

लट्	लृट्
प्र० स्वपिति स्वपितः स्वपन्ति	स्वप्स्यति स्वप्स्यतः स्वप्स्यन्ति
म० स्वपिषि स्वपिथः स्वपिथ	स्वप्स्यसि स्वप्स्यथः स्वप्स्यथ
उ० स्वपिमि स्वपिवः स्वपिमः	स्वप्स्यामि स्वप्स्यावः स्वप्स्यामः

लिट्	लोट्
प्र० सुष्वाप सुषुपतुः सुषुपुः	स्वपितु स्वपिताम् स्वपन्तु
म० सुष्वपिथ सुषुपथुः सुषुप	स्वपिहि स्वपितम् स्वपित
उ० सुष्वाप सुषुपिव सुषुपिम	स्वपानि स्वपाव स्वपाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अस्वपीत् अस्वपिताम् अस्वपन्	स्वप्यात् स्वप्याताम् स्वप्युः
म० अस्वपीः अस्वपितम् अस्वपित	स्वप्याः स्वप्यातम् स्वप्यात्
उ० अस्वपम् अस्वपिव अस्वपिम	स्वप्याम् स्वप्याव स्वप्याम्

	लुङ्			आ० लिङ्		
प्र०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सुः	सुप्यात्	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः
म०	अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त	सुप्याः	सुप्यास्तम्	सुप्यास्त
उ०	अस्वाप्सम्	अस्वास्व	अस्वास्म	सुप्यासम्	सुप्यासाव	सुप्यासाम्

	लुट्			लृङ्		
प्र०	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्
म०	स्वप्तासि	स्वप्तास्थः	स्वतास्थ	अस्वप्स्यः	अस्वप्स्यतम्	अस्वप्स्यत
उ०	स्वप्तास्मि	स्वप्तास्व	स्वतास्म	अस्वप्स्यम्	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

वा = चलना

	लट्			लृट्		
प्र०	वाति	वातः	वान्ति	वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति
म०	वासि	वाथः	वाथ	वास्यसि	वास्यथः	वास्यथ
उ०	वामि	वावः	वामः	वास्यामि	वास्यावः	वास्यामः

	लिट्			लोट्		
प्र०	ववौ	ववतुः	ववुः	वातु	वाताम्	वान्तु
म०	वविथ	ववथुः	वव	वाहि	वातम्	वात
उ०	ववौ	वविव	वविम	वानि	वाव	वाम

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र०	अवात्	अवाताम्	अवुः	वायात्	वायाताम्	वायुः
म०	अवाः	अवातम्	अवात	वायाः	वायातम्	वायात
उ०	अवाम्	अवाव	अवाम	वायाम्	वायाव	वायाम

	लुङ्			आ० लिङ्		
प्र०	अवासीत्	अवासिष्टाम्	अवासिषुः	वायात	वायास्ताम्	वायासुः
म०	अवासीः	अवासिष्टम्	अवासिष्ट	वायाः	वायास्तम्	वायस्त
उ०	अवासिषम्	अवासिष्व	अवासिष्म	वायासम्	वायास्व	वायास्म

	लुट्			लृङ्		
प्र०	वाता	वातारौ	वातारः	अवास्यत्	अवास्यताम्	अवास्यन्
म०	वातासि	वातास्थः	वातास्थ	अवास्यः	अवास्यतम्	अवास्यत
उ०	वातास्मि	वातास्वः	वातास्मः	आवस्यम्	अवस्याव	अवस्याम

आत्मनेपद

शी = सोना

	लट्	लृट्
प्र०	शेते शयाते शेरते	शयिष्यते शयिष्येते शयिष्यन्ते
म०	शेषे शयाथे शेध्वे	शयिष्यसे शयिष्येथे शयिष्यध्वे
उ०	शये शेवहे शेमहे	शयिष्ये शयिष्यावहे शयिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	शिश्ये शिश्याते शिश्यिरे	शेताम् शयाताम् शेरताम्
म०	शिश्यिषे शिश्याथे शिश्यिध्वे	शेष्व शयाथाम् शेध्वम्
उ०	शिश्ये शिश्यिवहे शिश्यिमहे	शयै शयावहै शयामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अशेत अशयाताम् अशेरत	शयीत शयीयाताम् शयीरन्
म०	अशेथाः अशयाथाम् अशेध्वम्	शयीथाः शयीयाथाम् शयीध्वम्
उ०	अशयि अशेवहि अशेमहि	शयीय शयीवहि शयीमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अशयिष्ट अशयिषाताम् अशयिषत	शयिषीष्ठ शयिषीयास्ताम् शयिषरिन्
म०	अशयिष्ठाः अशयिषाथाम अशयिढ्वम्	शयिषीष्ठाः शयिषीयास्थाम् शयिषीढ्वम्
उ०	अशयिषि अशयिष्वहि अशयिष्महि	शयिषीय शयिषीवहि शयिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	शयिता शयितारौ शयितारः	अशयिष्यत अशयिष्येताम् अशयिष्यन्त
म०	शयितासे शयितासाथे शयिताध्वे	अशयिष्यथाः अशयिष्येथाम् अशयिष्यध्वम्
उ०	शयिताहे शयितास्वहे शयितास्महे	अशयिष्ये अशयिष्यावहि अशयिष्यामहि

अधि = अध्ययन करना

	लट्			लृट्		
प्र०	अधीते	अधीयाते	अधीयते	अध्येष्यते	अध्येषेते	अध्येष्यन्ते
म०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उ०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे

	लिट्			लोट्		
प्र०	अधिजगे	अधिजगाते	अधिजगिरे	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म०	अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ०	अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म०	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

	लुङ्			आ० लिङ्		
प्र०	अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत	अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्	अध्येषीरन्
म०	अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्	अध्येषीष्ठाः	अध्येषीयास्थाम्	अध्येषीढ्वम्
उ०	अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि	अध्येषीय	अध्येषीवहि	अध्येषीमहि

	लुट्			लृङ्		
प्र०	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः	अध्यैष्यत	अध्यैष्येताम्	अध्यैष्यन्त
म०	अध्येतासे	अध्येतासाथे	अध्येताध्वे	अध्यैष्यथाः	अध्यैष्येथाम्	अध्यैष्यध्वम्
उ०	अध्येताहे	अध्येतास्वहे	अध्येतास्महे	अध्यैष्ये	अध्यैष्यावहि	अध्यैष्यामहि

जुहोत्यादिगण परस्मैपद

भी = डरना

	लट्			लृट्		
प्र०	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म०	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ०	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

	लिट्			लोट्		
प्र०	बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
म०	बिभयिथ,	बिभ्यथुः	बिभ्य	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
उ०	बिभाय,	बिभ्यिव	बिभ्यिम	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

	लङ्			विधिलिङ्		
प्र०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
म०	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
उ०	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

	लुङ्			आ० लिङ्		
प्र०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः	भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासुः
म०	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट	भीयाः	भीयास्तम्	भीयास्त
उ०	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म	भीयासम्	भीयास्व	भीयास्म

	लुट्			लृङ्		
प्र०	भेता	भेतारौ	भेतारः	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्
म०	भेतासि	भेतास्थः	भेतास्थ	अभेष्यः	अभेष्यतम्	अभेष्यत
उ०	भेतास्मि	भेतास्वः	भेतास्मः	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

दिवादिगण परस्मैपद

नृत = नाचना

	लट्			लृट्		
प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लिट्	लोट्
प्र० ननर्त ननृततुः ननृतुः	नृत्यतु नृत्यताम् नृत्यन्तु
म० ननर्तिथ ननृतथुः ननृत	नृत्य नृत्यतम् नृत्यत
उ० ननर्त ननृतिव ननृतिम	नृत्यानि नृत्याव नृत्याम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अनृत्यत् अनृत्यताम् अनृत्यन्	नृत्येत् नृत्येताम् नृत्येयुः
म० अनृत्यः अनृत्यतम् अनृत्यत	नृत्येः नृत्येतम् नृत्येत
उ० अनृत्यम् अनृत्याव अनृत्याम	नृत्येयम् नृत्येव नृत्येम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अनर्तीत अनर्तिष्टाम् अनर्तिषुः	नृत्यात् नृत्यास्ताम् नृत्यासुः
म० अनर्तीः अनर्तिष्टम् अनर्तिष्ट	नृत्याः नृत्यास्तम् नृत्यास्त
उ० अनर्तिषम् अनर्तिष्व अनर्तिष्म	नृत्यासम् नृत्यास्व नृत्यास्म

लुट्	लृङ्
प्र० नर्तिता नर्तितारौ नर्तितारः	अनर्तिष्यत् अनर्तिश्यताम् अनर्तिष्यन्
म० नर्तितासि नर्तितास्थः नर्तितास्थ	अनर्निष्यः अनर्तिष्यताम् अनर्तिष्यत
उ० नर्तितास्मि नर्तितास्वः नर्तितास्मः	अनर्तिष्यम् अनर्तिष्याव अनर्तिष्याम

नश्=नष्ट होना

लट्	लृट्
प्र० नश्यति नश्यतः नश्यन्ति	नशिष्यति नशिष्यतः नशिष्यन्ति
म० नश्यसि नश्यथः नश्यथ	नशिष्यसि नशिष्यथः नशिष्यथ
उ० नश्यामि नश्यावः नश्यामः	नशिष्यामि नशिष्यावः नशिष्यामः

लिट्	लोट्
प्र० ननाश नेशतुः नेशुः	नश्यतु नश्यताम् नश्यन्तु
म० नेनिश नेशथुः नेश	नश्य नश्यतम् नश्यत
उ० ननाश नेशिव नेशिम	नश्यानि नश्याव नश्याम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अनश्यत् अनश्यताम् अनश्यन्	नश्येत् नश्येताम् नश्येयुः
म०	अनश्यः अनश्यतम् अनश्यत	नश्येः नश्येतम् नश्येत
उ०	अनश्यम् अनश्याव अनश्याम	नश्येयम् नश्येव नश्येम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अनशत् अनशताम् अनशन्	नश्यात् नश्यास्ताम् नश्यासुः
म०	अनशः अनशतम् अनशत	नश्याः नश्यास्तम् नश्यास्त
उ०	अनशम् अनशाव अनशाम	नश्यासम् नश्यास्व नश्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	नशिता नशितारौ नशितारः	अनशिष्यत् अनशिष्यताम् अनशिष्यन्
म०	नशितासि नशितास्थः नशितास्थ	अनशिष्यः अनशिष्यतम् अनशिष्यत
उ०	नशितास्मि नशितास्वः नशितास्मः	अनशिष्यम् अनशिष्याव अनशिष्याम

शुष्=सूखना

	लट्	लृट्
प्र०	शुष्यति शुष्यतः शुष्यन्ति	शोक्ष्यति शोक्ष्यतः शोक्ष्यन्ति
म०	शुष्यसि शुष्यथः शुष्यथ	शोक्ष्यसि शोक्ष्यथः शोक्ष्यथ
उ०	शुष्यामि शुष्यावः शुष्यामः	शोक्ष्यामि शोक्ष्यावः शोक्ष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	शुशोष शुशुषतुः शुशुषुः	शुष्यतु शुष्यताम् शुष्यन्तु
म०	शुशोषिथ शुशुषथुः शुशुष	शुष्य शुष्यतम् शुष्यत
उ०	शुशोष शुशुषिव शुशुषिम	शुष्याणि शुष्याव शुष्याम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अशुष्यत् अशुष्यताम् अशुष्यन्	शुष्येत् शुष्येताम् शुष्येयुः
म०	अशुष्यः अशुष्यतम् अशुष्यत	शुष्येः शुष्येतम् शुष्येत
उ०	अशुष्यम् अशुष्याव अशुष्याम	शुष्येयम् शुष्येव शुष्येम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अशुपन् अशुषताम् अशुषन्	शुष्यात् शुष्यास्ताम् शुष्यासुः
म०	अशुषः अशुषतम् अशुषत	शुष्याः शुष्यास्तम् शुष्यास्त
उ०	अशुषम् अशुषाव अशुषाम	शुष्यासम् शुष्यास्व शुष्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	शोष्टा शोष्टारौ शोष्टारः	अशोक्ष्यत् अशोक्ष्यताम् अशोक्ष्यन्
म०	शोष्टासि शोष्टास्थः शोष्टास्थ	अशोक्ष्यः अशोक्ष्यतम् अशोक्ष्यत
उ०	शोष्टास्मि शोष्टास्वः शोष्टास्मः	अशोक्ष्यम् अशोक्ष्याव अशोक्ष्याम

जन् = उत्पन्न होना

	लट्	लृट्
प्र०	जायते जायेते जायन्ते	जनिष्यते जनिष्येते जनिष्यन्ते
म०	जायसे जायेथे जायध्वे	जनिष्यसे जनिष्येथे जनिष्यध्वे
उ०	जाये जायावहे जायामहे	जनिष्ये जनिष्यावहे जनिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	जज्ञे जज्ञाते जज्ञिरे	जायताम् जायेताम् जायन्ताम्
म०	जज्ञिषे जज्ञाथे जज्ञिध्वे	जायस्व जायेथाम् जायध्वम्
उ०	जज्ञे जज्ञिवहि जज्ञिमहि	जायै जायावहै जायामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अजायत अजायेताम् अजायन्त	जायेत जायेयाताम् जायेरन्
म०	अजायथाः अजायेथाम् अजायध्वम्	जायेथाः जायेयाथाम् जायेध्वम्
उ०	अजाये अजायावहि अजायामहि	जायेय जायेवहि जायेमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अजनि अजनिषाताम् अजनिषत	जनिषीष्ट जनिषीयास्ताम् जनिषीरन्
म०	अजनिष्ठाः अजनिषाथाम्	जनिषीष्ठाः जनिषीयास्थाम् जनिषीध्वम्
उ०	अजनिषि अजनिष्वहि अजनिष्महि	जनिषीय जनिषीवहि जनिषीमहि

लुट्	लृङ्
प्र० जनिता जनितारौ जनितारः	अजनिष्यत अजनिष्येताम् अजनिष्यन्त
म० जनितासि जनितास्थः जनितास्थ	अजनिष्यथाः अजनिष्येथाम् अजनिष्यध्वम्
उ० जनितास्मि जनितास्वः जनितास्मः	अजनिष्ये अजनिष्यावहि अजनिष्यामहि

डीङ्=आकाश में उड़ना

लट्	लृट्
प्र० डीयते डीयेते डीयन्ते	डयिष्यते डयिष्येते डयिष्यन्ते
म० डीयसे डीयेथे डीयध्वे	डयिष्यसे डयिष्येथे डयिष्यध्वे
उ० डीये डीयावहे डीयामहे	डयिष्ये डयिष्यावहे डयिष्यामहे

लिट्	लोट्
प्र० डिड्ये डिड्याते डिड्यिरे	डीयताम् डीयेताम् डीयन्ताम्
म० डिड्यिषे डिड्याथे डिड्यिध्वे	डीयस्व डीयेथाम् डीयध्वम्
उ० डिड्ये डिड्यिवहे डिड्यिमहे	डीयै डीयावहै डीयामहै

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अडीयत अडीयेताम् अडीयन्त	डीयेत डीयेयाताम् डीयेरन्
म० अडीयथाः अडीयेथाम् अडीयध्वम्	डीयेथाः डीयेयाथाम् डीयेध्वम्
उ० अडीये अडीयावहि अडीयामहि	डीयेय डीयेवहि डीयेमहि

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अडयिष्ट अडयिषाताम् अडयिषत	डयिषीष्ट डयिषीयास्ताम् डयिषीरन्
म० अडयिष्ठाः अडयिषाथाम् अडयिढ्वम्	डयिषीष्ठाः डयिषीयास्थाम् डयिषीध्वम्
उ० अडयिषि अडयिष्वहि अडयिष्महि	डयिषीय डयिषीवहि डयिषीमहि

लुट्	लृङ्
प्र० डयिता डयितारौ डयितारः	अडयिष्यत अडयिष्येताम् अडयिष्यन्त

म०	डयितासे डयितासाथे डयिताध्वे	अडयिष्यथाः अडयिष्येथाम् अडयिष्यध्वम्
उ०	डयिताहे डयितास्वहे डयितास्महे	अडयिषि अडयिष्यावहि अडयिष्यामहि

स्वादि गण

परस्मैपद—आप्=पाना

	लट्	लृट्
प्र०	आप्नोति आप्नुतः आप्नुवन्ति	आप्स्यति आप्स्यतः आप्स्यन्ति
म०	आप्नोषि आप्नुथः आप्नुथ	आप्स्यसि आप्स्यथः आप्स्यथ
उ०	आप्नोमि आप्नुवः आप्नुमः	आप्स्यामि आप्स्यावः आप्स्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	आप आपतुः आपुः	आप्नोतु आप्नुताम् आप्नुवन्तु
म०	आपिथ आपथुः आप	आप्नुहि आप्नुतम् आप्नुत
उ०	आप आपिव आपिम	आप्नवानि आप्नवाव आप्नवाम

	लङ्	विधि लिङ्
प्र०	आप्नोत् आप्नुताम् आप्नुवन्	आप्नुयात् आप्नुयाताम् आप्नुयुः
म०	आप्नोः आप्नुतम् आप्नुत	आप्नुयाः आप्नुयातम् आप्नुयात
उ०	आप्नवम् आप्नुव आप्नुम	आप्नुयाम् आप्नुयाव आप्नुयाम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	आपत् आपताम् आपन्	आप्यात् आप्यास्ताम् आप्यासुः
म०	आपः आपतम् आपत	आप्याः आप्यास्तम् आप्यास्त
उ०	आपम् आपाव आपाम	आप्यासम् आप्यास्व आप्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	आप्ता आप्तारौ आप्तारः	आप्स्यत आप्स्यताम् आप्स्यन
म०	आप्तासि आप्तास्थः आप्तास्थ	आप्स्यः आप्स्यतम् आप्स्यत
उ०	आप्तास्मि आप्तास्वः आप्तास्मः	आप्स्यम् आप्स्याव आप्स्याम

शक्=सकना

	लट्	लृट्
प्र०	शक्नोति शक्नुतः शक्नुवन्ति	शक्ष्यति शक्ष्यतः शक्ष्यन्ति

म० शक्नोषि शक्नुथः शक्नुथ	शक्ष्यसि शक्ष्यथः शक्ष्यथ
उ० शक्नोमि शक्नुवः शक्नुमः	शक्ष्यामि शक्ष्यावः शक्ष्यामः

लिट्	लोट्
प्र० शशाक शेकतुः शेकुः	शक्नोतु शक्नुताम् शक्नुवन्तु
म० शेकिथ, शेकथुः शेक	शक्नुहि शक्नुतम् शक्नुत
उ० शशाक शेकिव शेकिम	शक्नवानि शक्नवाव शक्नवाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अशक्नोत् अशक्नुताम् अशक्नुवन्	शक्नुयात् शक्नुयाताम् शक्नुयुः
म० अशक्नोः अशक्नुतम् अशक्नुत	शक्नुयाः शक्नुयातम् शक्नुयात
उ० अशक्नवम् अशक्नुव अशक्नुम	शक्नुयाम् शक्नुयाव शक्नुयाम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अशकत् अशकताम् अशकन्	शक्यात् शक्यास्ताम् शक्यासुः
म० अशकः अशकतम् अशकत	शक्याः शक्यास्तम् शक्यास्त
उ० अशकम् अशकाव अशकाम	शक्यासम् शक्यास्व शक्यास्म

लुट्	लृङ्
प्र० शक्ता शक्तारौ शक्तारः	अशक्ष्यत् अशक्ष्यताम् अशक्ष्यन्
म० शक्तासि शक्तास्थः शक्तास्थ	अशक्ष्यः अशक्ष्यतम् अशक्ष्यत
उ० शक्तास्मि शक्तास्वः शक्तास्मः	अशक्ष्यम् अशक्ष्याव अशक्ष्याम

तुदादिगण-परस्मैपद

इष्—इच्छाकरना

लट्	लृट्
प्र० इच्छति इच्छतः इच्छन्ति	एषिष्यति एषिष्यतः एषिष्यन्ति
म० इच्छसि इच्छथः इच्छथ	एषिष्यसि एषिष्यथः एषिष्यथ
उ० इच्छामि इच्छावः इच्छामः	एषिष्यामि एषिष्यावः एषिष्यामः

लिट्	लोट्
प्र० इयेष ईषतुः ईषुः	इच्छतु इच्छताम् इच्छन्तु
म० इयेषिथ ईषथुः ईष	इच्छ इच्छतम् इच्छत
उ० इयेष ईषिव ईषिम	इच्छानि इच्छाव इच्छाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० ऐच्छत् ऐच्छताम् ऐच्छन्	इच्छेत् इच्छेताम् इच्छेयुः
म० ऐच्छः ऐच्छतम् ऐच्छत	इच्छेः इच्छेतम् इच्छेत
उ० ऐच्छम् ऐच्छाव एच्छाम	इच्छेयम् इच्छेव इच्छेम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० ऐषीत् ऐषीष्टाम् ऐषिषुः	इष्यात् इष्यास्ताम् इष्यासुः
म० ऐषीः ऐषीष्टम् ऐषिष्ट	इष्याः इष्यास्तम् इष्यास्त
उ० ऐषिषम् ऐषिष्व ऐषिष्म	इष्यासम् इष्यास्व इष्यास्म

लुट्	लृङ्
प्र० एषिता ऐषितारौ एषितारः	ऐषिष्यत् ऐषिष्यताम् ऐषिष्यन्
म० एषितासि ऐषितास्थः एषितास्थ	ऐषिष्यः ऐषिष्यतम् ऐषिष्यत
उ० एषितास्मि ऐषितास्वः एषितास्मः	ऐषिष्यम् ऐषिष्याव ऐषिष्याम

मृ—मरना

(लट्, लोट्, लिङ्, लङ् में आत्मने पदी, शेष लकारों में परस्मैपदी)।

लट्	लृट्
प्र० म्रियते म्रियेते म्रियन्ते	मरिष्यति मरिष्यतः मरिष्यन्ति
म० म्रियसे म्रियेथे म्रियध्वे	मरिष्यसि मरिष्यथः मरिष्यथ
उ० म्रिये म्रियावहे म्रियामहे	मरिष्यामि मरिष्यावः मरिष्यामः

लिट्	लोट्
प्र ममार मम्रतुः मम्रुः	म्रियताम् म्रियेताम् म्रियन्ताम्
म० ममर्थ मम्रथुः मम्र	म्रियस्व म्रियेथाम् म्रियध्वम्
उ० ममार मम्रिव मम्रिम	म्रियै म्रियावहै म्रियामहै

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अम्रियत अम्रियेताम् अम्रियन्त	म्रियेत म्रियेताम् म्रियेरन्
म० अम्रियथाः अम्रियेथाम् अम्रियध्वम्	म्रियेथाः म्रियेथाम् म्रियेध्वम्
उ० अम्रिये अम्रियावहि अम्रियामहि	म्रियेय म्रियेवहि म्रियेमहि

लुङ	आ० लिङ
प्र० अमृत अमृषाताम् अमृषत	मृषीष्ट मृषीयास्ताम् मृषीरन्

म० अमृथा अमृषाथाम् अमृढ्वम् मृषीष्ठाः मृषीयास्थाम् मृषीढ्वम्
उ० अमृषि अमृष्वहि अमृष्महि मृषीय मृषीवहि मृषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	मर्ता मर्तारौ मर्तारः	अमरिष्यत् अमरिष्यताम् अमरिष्यन्
म०	मर्तासि मर्तास्थः मर्तास्थ	अमरिष्यः अमरिष्यतम् अमरिष्यत
उ०	मर्तास्मि मर्तास्वः मर्तास्मः	अमरिष्यम् अमरिष्याव अमरिष्याम

लुभ्=लोभ करना (परस्मैपद)

	लट्	लृट्
प्र०	लुभति लुभतः लुभन्ति	लोभिष्यति लोभिष्यतः लोभिष्यन्ति
म०	लुभसि लुभथः लुभथ	लोभिष्यसि लोभिष्यथः लोभिष्यथ
उ०	लुभामि लुभावः लुभामः	लोभिष्यामि लोभिष्यावः लोभिष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	लुलोभ लुलुभतुः लुलुभुः	लुभतु लुभताम् लुभन्तु
म०	लुलोभिथ लुलुभथुः लुलुभ	लुभ लुभतम् लुभत
उ०	लुलोभ लुलुभिव लुलभिम	लुभानि लुभाव लुभाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अलुभत् अलुभताम् अलुभन्	लुभेत् लुभेताम् लुभेयुः
म०	अलुभः अलुभतम् अलुभत	लुभेः लुभेतम् लुभेत
उ०	अलुभम् अलुभाव अलुभाम	लुभेयम् लुभेव लुभेम

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	अलोभीत् अलोभिष्टाम् अलोभिषुः	लुभ्यात् लुभ्यास्ताम् लुभ्यासुः
म०	अलोभीः अलोभिष्टम् अलोभिष्ट	लुभ्याः लुभ्यास्तम् लुभ्यास्त
उ०	अलोभिषम् अलोभिष्व अलोभिष्म	लुभ्यासम् लुभ्यास्व लुभ्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	लोभिता लोभितारौ लोभितारः	अलोभिष्यत् अलोभिष्यताम् अलोभिष्यन्
म०	लोभितासि लोभितास्थः लोभितास्थ	अलोभिष्यः अलोभिष्यतम् अलोभिष्यत

उ०	लोभितास्मि लोभितास्वः लोभितास्मः	अलोभिष्यम् अलोभिष्याव अलोभिष्याम

षिच् = सींचना

	लट्	लृट्
प्र०	सिञ्चति सिञ्चतः सिञ्चन्ति	सेक्ष्यति सेक्ष्यतः सेक्ष्यन्ति
म०	सिञ्चसि सिञ्चथः सिञ्चथ	सेक्ष्यसि सेक्ष्यथः सेक्ष्यथ
उ०	सिञ्चामि सिञ्चावः सिञ्चामः	सेक्ष्यामि सेक्ष्यावः सेक्ष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	सिषेच सिषिचतुः सिषिचुः	सिञ्चतु सिञ्चताम् सिञ्चन्तु
म०	सिषेचिथ सिषिचथुः सिषिच	सिञ्च सिञ्चतम् सिञ्चत
उ०	सिषेच सिषिचिव सिषिचिम	सिञ्चानि सिञ्चाव सिञ्चाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	असिञ्चत् असिञ्चताम् असिञ्चन्	सिञ्चेत् सिञ्चेताम् सिञ्चेयुः
म०	असिञ्चः असिञ्चतम् असिञ्चत	सिञ्चेः सिञ्चेतम् सिञ्चेत
उ०	असिञ्चम् असिञ्चाव असिञ्चाम	सिञ्चेयम् सिञ्चेव सिञ्चेम

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	असिचत् असिचताम् असिचन्	सिच्यात् सिच्यास्ताम् सिच्यासुः
म०	असिचः असिचतम् असिचत	सिच्याः सिच्यास्तम् सिच्यास्त
उ०	असिचम् असिचाव असिचाम	सिच्यासम् सिच्यास्व सिच्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	सेक्ता सेक्तारौ सेक्तारः	असेक्ष्यत् असेक्ष्यताम् असेक्ष्यन्
म०	सेक्तासि सेक्तास्थः सेक्तास्थ	असेक्ष्यः असेक्ष्यतम् असेक्ष्यत
उ०	सेक्तास्मि सेक्तास्वः सेक्तास्मः	असेक्ष्यम् असेक्ष्याव असेक्ष्याम

आत्मने पद

	लट्	लृट्
प्र०	सिञ्चते सिञ्चेते सिञ्चन्ते	सेक्ष्यते सेक्ष्येते सेक्ष्यन्ते
म०	सिञ्चसे सिञ्चेथे सिञ्चध्वे	सेक्ष्यसे सेक्ष्येथे सेक्ष्यध्वे
उ०	सिञ्चे सिञ्चावहे सिञ्चामहे	सेक्ष्ये सेक्ष्यावहे सेक्ष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	सिषिचे सिषिचाते सिषिचिरे	सिञ्चताम् सिञ्चेताम् सिञ्चन्ताम्
म०	सिषिचिषे सिषिचाथे सिषिचिध्वे	सिञ्चस्व सिञ्चेथाम् सिञ्चध्वम्
उ०	सिषिचे सिषिचिवहे सिषिचिमहे	सिञ्चै सिञ्चावहै सिञ्चामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	असिञ्चत असिञ्चेताम् असिञ्चन्त	सिञ्चेत सिञ्चेयाताम् सिञ्चेरन्
म०	असिञ्चथाः असिञ्चेथाम् असिञ्चध्वम्	सिञ्चेः सिञ्चेयाथाम् सिञ्चेध्वम्
उ०	असिञ्चे असिञ्चावहि असिञ्चामहि	सिञ्चेय सिञ्चेवहि सिञ्चेमहि

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	असिचत असिचेताम् असिचन्त	सिक्षीष्ट सिक्षीयास्ताम् सिक्षीरन्
म०	असिचथाः असिचेथाम् असिचध्वम्	सिक्षीष्ठाः सिक्षीयास्थाम् सिक्षीध्वम्
उ०	असिचे असिचावहि असिचामहि	सिक्षीय सिक्षीवहि सिक्षीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	सेक्ता सेक्तारौ सेक्तारः	असेक्ष्यत असेक्ष्येताम् असेक्ष्यन्त
म०	सेक्तासे सेक्तासाथे सेक्ताध्वे	असेक्ष्यथाः असेक्ष्येथाम् असेक्ष्यध्वम्
उ०	सेक्ताहे सेक्तास्वहे सेक्तास्महे	असेक्ष्ये असेक्ष्यावहि असेक्ष्यामहि

रुधादिगण उभयपदी

भुज् = रक्षा करना, भोजन करना

परस्मैपद

	लट्	लृट्
प्र०	भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति	भोक्ष्यति भोक्ष्यतः भोक्ष्यन्ति
म०	भुनक्षि भुङ्क्थः भुङ्क्थ	भोक्ष्यसि भोक्ष्यथः भोक्ष्यथ
उ०	भुनज्मि भुञ्ज्वः भुञ्ज्मः	भोक्ष्यामि भोक्ष्यावः भोक्ष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	बुभोज बुभुजतुः बुभुजुः	भुनक्तु भुङ्क्ताम् भुञ्जन्तु
म०	बुभोजिथ बुभुजथुः बुभुज	भुङ्ग्धि भुङ्क्तम् भुङ्क्त
उ०	बुभोज बुभुजिव बुभुजिम	भुनजानि भुनजाव भुनजाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अभुनक् अभुङ्क्ताम् अभुञ्जन्	भुञ्ज्यात् भुञ्ज्याताम् भुञ्ज्युः
म०	अभुनक् अभुङ्क्तम् अभुङ्क्त	भुञ्ज्याः भुञ्ज्यातम् भुञ्ज्यात
उ०	अभुनजम् अभुञ्ज्व अभुञ्ज्म	भुञ्ज्याम् भुञ्ज्याव भुञ्ज्याम

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	अभौक्षीत् अभौक्ताम् अभौक्षुः	भुज्यात् भुज्यास्ताम् भुज्यासुः
म०	अभौक्षीः अभौक्तम् अभौक्त	भुज्याः भुज्यास्तम् भुज्यास्त
उ०	अभौक्षम् अभौक्ष्व अभौक्ष्म	भुज्यासम् भुज्यास्व भुज्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	भोक्ता भोक्तारौ भोक्तारः	अभोक्ष्यत् अभोक्ष्यताम् अभोक्ष्यन्
म०	भोक्तासि भोक्तास्थः भोक्तास्थ	अभोक्ष्यः अभोक्ष्यतम् अभोक्ष्यत
उ०	भोक्तास्मि भोक्तास्वः भोक्तास्मः	अभोक्ष्यम् अभोक्ष्याव अभोक्ष्याम

आत्मनेपद

	लट्	लृट्
प्र०	भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते	भोक्ष्यते भोक्ष्येते भोक्ष्यन्ते
म०	भुङ्क्षे भुञ्जाथे भुङ्ग्ध्वे	भोक्ष्यसे भोक्ष्येथे भोक्ष्यध्वे
उ०	भुञ्जे भुञ्ज्वहे भुञ्ज्महे	भोक्ष्ये भोक्ष्यावहे भोक्ष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	बुभुजे बुभुजाते बुभुजिरे	भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम् भुञ्जताम्
म०	बुभुजिषे बुभुजाथे बुभुजिध्वे	भुङ्क्ष्व भुञ्जाथाम् भुङ्ग्ध्वम्
उ०	बुभुजे बुभुजिवहे बुभुजिमहे	भुनजै भुनजावहै भुनजामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अभुङ्क्त अभुञ्जाताम् अभुञ्जत	भुञ्जीत भुञ्जीयाताम् भुञ्जीरन्
म०	अभुङ्क्थाः अभुञ्जाथाम् अभुङ्ग्ध्वम्	भुञ्जीथाः भुञ्जीयाथाम् भुञ्जीध्वम्
उ०	अभुञ्जि अभुञ्ज्वहि अभुञ्ज्महि	भुञ्जीय भुञ्जीवहि भुञ्जीमहि

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत	भुक्षीष्ट भुक्षीयास्ताम् भुक्षीरन्

म० अभुक्थाः अभुक्षाथाम् अभुग्ध्वम्
उ० अभुक्षि अभुक्ष्वहि अभुक्ष्महि

भुक्षीष्ठाः भुक्षीयास्थाम् भुक्षीध्वम्
भुक्षीय भुक्षीवहि भुक्षीमहि

लुट्

प्र० भोक्ता भोक्तारौ भोक्तारः
म० भोक्तासे भोक्तासाथे भोक्ताध्वे
उ० भोक्ताहे भोक्तास्वहे भोक्तास्महे

लृङ्

अभोक्ष्यत अभोक्ष्येताम् अभोक्ष्यन्त
अभोक्ष्यथाः अभोक्ष्येथाम् अभोक्ष्यध्वम्
अभोक्ष्ये अभोक्ष्यावहि अभोक्ष्यामहि

रुध्—रोकना

परस्मैपद

लट्

प्र० रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति
म० रुणत्सि रुन्द्ध रुन्द्ध
उ० रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः

लृट्

रोत्स्यति रोत्स्यतः रोत्स्यन्ति
[illegible] रोत्स्यथः रोत्स्यथ
रोत्स्यामि रोत्स्यावः रोत्स्यामः

लिट्

प्र० रुरोध रुरुधतुः रुरुधुः
म० रुरोधिथ रुरुधुथः रुरुधुथ
उ० रुरोध रुरुधिव रुरुधिम

लोट्

रुणद्धु रुन्द्धाम् रुन्द्धाम रुन्धन्तु
रुन्द्धि रुन्द्धम् रुन्द्ध
रुणधानि रुणधाव रुणधाम

लङ्

प्र० अरुणत्-द् अरुन्द्धाम अरुन्धन्
म० अरुणः अरुन्द्धम् अरुन्ध
उ० अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म

विधिलिङ्

रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम रुन्ध्युः
रुन्ध्याः रुन्ध्यातम् रुन्ध्यात
रुन्ध्याम् रुन्ध्याव रुन्ध्याम

लुङ्

प्र० अरुधत् अरुधताम् अरुधन्
म० अरुधः अरुधतम् अरुधत
उ० अरुधम् अरुधाव अरुधाम

आ० लिङ

रुन्ध्यात् रुन्ध्यास्ताम् रुन्ध्यासुः
रुन्ध्याः रुन्ध्यास्तम् रुन्ध्यास्त
रुन्ध्यासम् रुन्ध्यास्व रुन्ध्यास्म

लुट्

प्र० रोद्धा रोद्धारौ रोद्धारः

लृङ्

अरोत्स्यत् अरोत्स्यताम् अरोत्स्यन्

म०	रोद्धासि रोद्धास्थः रोद्धास्थ	अरोत्स्यः अरोत्स्यतम् अरोत्स्यत
उ०	रोद्धास्मि रोद्धास्वः रोद्धास्मः	अरोत्स्यम् अरोत्स्याव अरोत्स्याम

आत्मने पद

	लट्	लृट्
प्र०	रुन्धे रुन्धाते रुन्धते	रोत्स्यते रोत्स्येते रोत्स्यन्ते
म०	रुन्त्से रुन्धाथे रुन्द्ध्वे	रोत्स्यसे रोत्स्येथे रोत्स्यध्वे
उ०	रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे	रोत्स्ये रोत्स्यावहे रोत्स्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	रुरुधे रुरुधाते रुरुधिरे	रुन्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम्
म०	रुरुधिषे रुरुधाथे रुरुधिध्वे	रुन्त्स्व रुन्धाथाम रुन्द्धवम
उ०	रुरुधे रुरुधिवहे रुरुधिमहे	रुणधै रुणधावहै रुणधामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अरुन्द्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत	रुन्धीत रुन्धीयाताम रुन्धीरन्
म०	अरुन्द्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्द्धवम्	रुन्धीथाः रुन्धीयाथाम् रुन्धीध्वम्
उ०	अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि	रुन्धीय रुन्धीवहि रुन्धीमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अरुद्ध अरुत्साताम् अरुत्सत्	रुत्सीष्ट रुत्सीयास्ताम रुत्सीरन्
म०	अरुद्धाः अरुत्साथाम अरुद्धवम	रुत्सीष्ठाः रुत्सीयास्थाम् रुत्सीद्धवम्
उ०	अरुत्सि अरुत्स्वहि अरुत्स्महि	रुत्सीय रुत्सीवहि रुत्सीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	रोद्धा रोद्धारौ रोद्धारः	अरोत्स्यत् अरोत्स्येताम् अरोत्स्यन्त
म०	रोद्धासे रोद्धासाथे रोद्धाध्वे	अरोत्स्यथाः अरोत्स्येथाम् अरोत्स्यध्वम्
उ०	रोद्धाहे रोद्धास्वहे रोद्धास्महे	अरोत्स्ये अरोत्स्यावहि अरोत्स्यामहि

तनादिप्रकरण—(उभयपदी) परस्मैपद

तन्=फैलना, तनना

	लट्	लृट्
प्र०	तनोति तनुतः तन्वन्ति	तनिष्यति तनिष्यतः तनिष्यन्ति

म०	तनोषि तनुथः तनुथ	तनिष्यसि तनिष्यथः तनिष्यथ
उ०	तनोमि तनुवः तनुमः	तनिष्यामि तनिष्यावः तनिष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	ततान तेनतुः तेनुः	तनोतु तनुताम् तन्वन्तु
म०	तेनिथ तेनथुः तेन	तनु तनुतम् तनुत
उ०	ततान तेनिव तेनिम	तनवानि तनवाव तनवाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अतनोत् अतनुताम् अतन्वन्	तनुयात् तनुयाताम् तनुयुः
म०	अतनोः अतनुतम् अतनुत	तनुयाः तनुयातम् तनुयात
उ०	अतनवम् अतनुव अतुनुम	तनुयाम् तनुयाव तनुयाम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अतानीत् अतानिष्टाम् अतानिषुः	तन्यात् तन्यास्ताम् तन्यासुः
म०	अतीनीः अतानिष्टम् अतानिष्ट	तन्याः तन्यास्तम् तन्यास्त
उ०	अतानिषम् अतानिष्व अतानिष्म	तन्यासम् तन्यास्व तन्यास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	तनिता तनितारौ तनितारः	अतनिष्यत् अतनिष्यताम् अतनिष्यन्
म०	तनितासि तनितास्थः तनितास्थ	अतनिष्यः •अतनिष्यतम् अतनिष्यत
उ०	तनितास्मि तनितास्वः तनितास्मः	अतनिष्यम् अतनिष्याव अतनिष्याम

आत्मनेपद

मनु = मानना

	लट्	लृट्
प्र०	मनुते मन्वाते मन्वते	मनिष्यते मनिष्येते मनिष्यन्ते
म०	मनुषे मन्वाथे मनुध्वे	मनिष्यसे मनिष्येथे मनिष्यध्वे
उ०	मन्वे मनुवहे मनुमहे	मनिष्ये मनिष्यावहे मनिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	मेने मेनाते मेनिरे	मनुताम् मन्वाताम् मन्वताम्

म० मेनिषे मेनाथे मेनिध्वे — मनुष्व मन्वाथाम् मनुध्वम्
उ० मेने मेनिवहे मेनिमहे — मनवै मनवावहै मनवामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अमनुत अमन्वाताम् अमन्वत	मन्वीत मन्वीयाताम् मन्वीरन्
म०	अमनुथाः अमन्वाथाम् अमनुध्वम्	मन्वीथाः मन्वीयाथाम् मन्वीध्वम्
उ०	अमन्वि अमन्वहि अमन्महि	मन्वीय मन्वीवहि मन्वीमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अमनिष्ठ अमनिषाताम् अमनिषत	मनिषीष्ट मनषीयास्ताम् मनिषीरन्
म०	अमनिष्ठाः अमनिषाथाम् अमनिढ्वम्	मनिषीष्ठाः मनषीयास्थाम् मनषीध्वम्
उ०	अमनिषि अमनिष्वहि अमनिष्महि	मनिषीय मनिषीवहि मनिषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	मनिता मनितारौ मनितारः	अमनिष्यत अमनिष्येताम् अमनिष्यन्त
म०	मनितासे मनितासाथे मनिताध्वे	अमनिष्यः अमनिष्येथाम् अमनिष्यध्वम्
उ०	मनिताहे मनितास्वहे मनितास्महे	अमनिष्ये अमनिष्यावहि अमनिष्यामहि

क्र्यादिगण

ज्ञा = जानना

	लट्	लृट्
प्र०	जानाति जानीतः जानन्ति	ज्ञास्यति ज्ञास्यतः ज्ञास्यन्ति
म०	जानासि जानीथः जानीथ	ज्ञास्यसि ज्ञास्यथः ज्ञास्यथ
उ०	जानामि जानीवः जानीमः	ज्ञास्यामि ज्ञास्यावः ज्ञास्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	जज्ञौ जज्ञतुः जज्ञुः	जानातु जानीताम् जानन्तु
म०	जज्ञिथ जज्ञथुः जज्ञ	जानीहि जानीतम् जानीत
उ०	जज्ञौ जज्ञिव जज्ञिम	जानानि जानाव जानाम

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अजानात् अजानीताम् अजानन्	जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः
म०	अजानाः अजानीतम् अजानीत	जानीयाः जानीयातम् जानीयात
उ०	अजानाम् अजानीव अजानीम	जानीयाम् जानीयाव जानीयाम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अज्ञासीत् अज्ञासिष्टाम् अज्ञासिषुः	ज्ञायात् ज्ञायास्ताम् ज्ञायासुः
म०	अज्ञासीः अज्ञासिष्टम् अज्ञासिष्ट	ज्ञायाः ज्ञायास्तम् ज्ञायास्त
उ०	अज्ञासिषम् अज्ञासिष्व अज्ञासिष्म	ज्ञायासम् ज्ञायास्व ज्ञायास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	ज्ञाता ज्ञातारौ ज्ञातारः	अज्ञास्यत् अज्ञास्यताम् अज्ञास्यन्
म०	ज्ञातासि ज्ञातास्थः ज्ञातास्थ	अज्ञास्यः अज्ञास्यतम् अज्ञास्यत
उ०	ज्ञातास्मि ज्ञातास्वः ज्ञातास्मः	अज्ञास्यम् अज्ञास्याव अज्ञास्याम

उभयपदी

क्री = खरीदना

परस्मैपद

	लट्	लृट्
प्र०	क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति	क्रेष्यति क्रेष्यतः क्रेष्यन्ति
म०	क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ	क्रेष्यसि क्रेष्यथः क्रेष्यथ
उ०	क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः	क्रेष्यामि क्रेष्यावः क्रेष्यामः

	लिट्	लोट्
प्र०	चिक्राय चिक्रियतुः चिक्रियुः	क्रीणातु क्रीणीताम् क्रीणन्तु
म०	चिक्रियिथ चिक्रियथुः चिक्रिय	क्रीणीहि क्रीणीतम् क्रीणीत
उ०	चिक्राय चिक्रियिव चिक्रियिम	क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम

	लङ्	विधिलिङ्
उ०	अक्रीणान् अक्रीणीताम् अक्रीणन्	क्रीणीयात् क्रीणीयाताम् क्रीणीयुः
म०	अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत	क्रीणीयाः क्रीणीयातम् क्रीणीयात
उ०	अक्रुणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम	क्रीणीयाम् क्रीणीयाव क्रीणीयाम

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अक्रैषीत् अक्रैष्टाम् अक्रैषुः	क्रीयात् क्रीयास्ताम् क्रीयासुः

म०	अक्रैषीः अक्रैष्टम् अक्रैष्ट	क्रीयाः क्रीयास्तम् क्रीयास्त
उ०	अक्रैषम् अक्रैष्व अक्रैष्म	क्रीयासम् क्रीयास्व क्रीयास्म

	लुट्	लृङ्
प्र०	क्रेता क्रेतारौ क्रेतारः	अक्रेष्यत् अक्रेष्यताम् अक्रेष्यन्
म०	क्रेतासि क्रेतास्थः क्रेतास्थ	अक्रेष्यः अक्रेष्यतम् अक्रेष्यत
उ०	क्रेतास्मि क्रेतास्वः क्रेतास्मः	अक्रेष्यम् अक्रेष्याव अक्रेष्याम

आत्मनेपदी

	लट्	लृट्
प्र०	क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते	क्रेष्यते क्रेष्येते क्रेष्यन्ते
म०	क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे	क्रेष्यसे क्रेष्येथे क्रेष्यध्वे
उ०	क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे	क्रेष्ये क्रेष्यावहे क्रेष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	चिक्रिये चिक्रियाते चिक्रियिरे	क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम्
म०	चिक्रियिषे चिक्रियाथे चिक्रियिध्वे	क्रीणीष्व क्रीणीथाम् क्रीणीध्वम्
उ०	चिक्रिये चिक्रियिवहे चिक्रियिमहे	क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत	क्रीणीत क्रीणीयाताम् क्रीणीरन्
म०	अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम्	क्रीणीथाः क्रीणीयाथाम् क्रीणीध्वम्
उ०	अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि	क्रीणीय क्रीणीवहि क्रीणीमहि

	लुङ्	आ० लिङ्
प्र०	अक्रेष्ट अक्रेषाताम् अक्रेषत	क्रेषीष्ट क्रेषीयास्ताम् क्रेषीरन्
म०	अक्रेष्ठाः अक्रेषाथाम् अक्रेढ्वम्	क्रेषीष्ठाः क्रेषीयास्थाम् क्रेषीढ्वम्
उ०	अक्रेषि अक्रेष्वहि अक्रेष्महि	क्रेषीय क्रेषीवहि क्रेषीमहि

	लुट्	लृङ्
प्र०	क्रेता क्रेतारौ क्रेतारः	अक्रेष्यत अक्रेष्येताम् अक्रेष्यन्त
म०	क्रेतासे क्रेतासाथे क्रेताध्वे	अक्रेष्यथाः अक्रेष्येथाम् अक्रेष्यध्वम्
उ०	क्रेताहे क्रेतास्वहे क्रेतास्महे	अक्रेष्ये अक्रेष्यावहि अक्रेष्यामहि

ग्रह्=लेना

परस्मैपद

लट्

प्र० गृह्णाति गृह्णीतः गृह्णन्ति
म० गृह्णासि गृह्णीथः गृह्णीथ
उ० गृह्णामि गृह्णीवः गृह्णीमः

लृट्

ग्रहीष्यति ग्रहीष्यतः ग्रहीष्यन्ति
ग्रहीष्यसि ग्रहीष्यथः ग्रहीष्यथ
ग्रहीष्यामि ग्रहीष्यावः ग्रहीष्यामः

लिट्

प्र० जग्राह जगृहतुः जगृहुः
म० जग्रहिथ जगृहथुः जगृह
उ० जग्राह जगृहिव जगृहिम

लोट्

गृह्णातु गृह्णीताम् गृह्णन्तु
गृहाण गृह्णीतम् गृह्णीत
गृह्णानि गृह्णाव गृह्णाम

लङ्

प्र० अगृह्णात् अगृह्णीताम् अगृह्णत
म० अगृह्णाः अगृह्णीतम् अगृह्णीत
उ० अगृह्णाम् अगृह्णीव अगृह्णीम

विधिलिङ्

गृह्णीयात् गृह्णीयाताम् गृह्णीयुः
गृह्णीयाः गृह्णीयातम् गृह्णीयात
गृह्णीयाम् गृह्णीयाव गृह्णीयाम

लुङ्

प्र० अग्रहीत् अग्रहीष्टाम् अग्रहिषुः
म० अग्रहीः अग्रहीष्टम् अग्रहीष्ट
उ० अग्रहीषम् अग्रहीष्व अग्रहीष्म

आ० लिङ्

गृह्यात् गृह्यास्ताम् गृह्यासुः
गृह्याः गृह्यास्तम् गृह्यास्त
गृह्यासम् गृह्यास्व गृह्यास्म

लुट्

प्र० ग्रहीता ग्रहीतारौ ग्रहीतारः
म० गृहीतासि ग्रहीतास्थः ग्रहीतास्थ
उ० ग्रहीतास्मि ग्रहीतास्वः ग्रहीतास्मः

लृङ्

अग्रहीष्यत् अग्रहीष्यताम् अग्रहीष्यन्
अग्रहीष्यथाः अग्रहीष्यथाम् अग्रहीष्यध्वम्
अग्रहिष्ये अग्रहिष्यावहि अग्रहिष्यामहि

आत्मनेपद

लट्

प्र० गृह्णीते गृह्णाते गृह्णते

लृट्

ग्रहिष्यते ग्रहीष्येते ग्रहीष्यन्ते

म० गृह्णीषे गृह्णाथे गृह्णीध्वे	ग्रहीष्यसे ग्रहीष्येथे ग्रहीष्यध्वे
उ० गृह्णे गृह्णीवहे गृह्णीमहे	ग्रहीष्ये ग्रहीष्यावहे ग्रहीष्यामहे

लिट्	लोट्
प्र० जगृहे जगृहाते जगृहिरे	गृह्णीताम् गृह्णाताम् गृह्णताम्
म० जगृहिषे जगृहाथे जगृहिध्वे	गृह्णीष्व गृह्णाथाम् गृह्णीध्वम्
उ० जगृहे जगृहिवहे जगृहिमहे	गृह्णै। गृह्णावहै गृह्णामहै

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अगृह्णीत अगृह्णाताम् अगृह्णत	गृह्णीत गृह्णीयाताम् गृह्णीरन्
म० अगृह्णीथाः अगृह्णाथाम् अगृह्णीध्वम्	गृह्णीथाः गृह्णीयाथाम् गृह्णीध्वम्
उ० अगृह्णि अगृह्णीवहि अगृह्णीमहि	गृह्णीय गृह्णीवहि गृह्णीमहि

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अग्रहीष्ट अग्रहीषाताम् अग्रहीषत	ग्रहीषीष्ट ग्रहीषीयास्ताम् ग्रहीषीरन्
म० अग्रहीष्ठाः अग्रहीषाथाम् अग्रहीध्वम्	ग्रहीषीष्ठाः ग्रहीषीयास्थाम् ग्रहीषीध्वम्
उ० अग्रहीषि अग्रहीष्वहि अग्रहीष्महि	ग्रहीषीय ग्रहीषीवहि ग्रहीषीमहि

लुट्	लृङ्
प्र० ग्रहीता ग्रहीतारौ ग्रहीतारः	अग्रहीष्यत अग्रहीष्येताम् अग्रहीष्यन्त
म० ग्रहीतासे ग्रहीतासाथे ग्रहीताध्वे	अग्रहीष्यथाः अग्रहीष्येथाम् अग्रहीष्यध्वम्
उ० ग्रहीताहे ग्रहीतास्वहे ग्रहीतास्महे	अग्रहीषीय अग्रहीषीवहि अग्रहीषीमहि

चुरादिगण

चिन्त् = सोचना

परस्मैपद

लट्	लृट्
प्र० चिन्तयति चिन्तयतः चिन्तयन्ति	चिन्तयिष्यति चिन्तयिष्यतः चिन्तयिष्यन्ति
म० चिन्तयसि चिन्तयथः चिन्तयथ	चिन्तयिष्यसि चिन्तयिष्यथः चिन्तयिष्यथ

उ० चिन्तयामि चिन्तयावः चिन्तयामः	चिन्तयिष्यामि चिन्तयिष्यावः चिन्तयिष्यामः

लिट्	लोट्
प्र० चिन्तयामास चिन्तयामासतुः चिन्तयामासुः	चिन्तयतु चिन्तयताम् चिन्तयन्तु
म० चिन्तयामासिथ चिन्तयामासथुः चिन्तयामास	चिन्तय चिन्तयतम् चिन्तयत
उ० चिन्तयामास चिन्तयामासिव चिन्तयामासिम	चिन्तयानि चिन्तयाव चिन्तयाम

लङ्	विधिलिङ्
प्र० अचिन्तयत् अचिन्तयताम् अचिन्तयन्	चिन्तयेत् चिन्तयेताम् चिन्तयेयुः
म० अचिन्तयः अचिन्तयतम् अचिन्तयत	चिन्तयेः चिन्तयेतम् चिन्तयेत
उ० अचिन्तयम् अचिन्तयाव अचिन्तयाम	चिन्तयेयम् चिन्तयेव चिन्तयेम

लुङ्	आ० लिङ्
प्र० अचिचिन्तत् अचिचिन्तताम् अचिचिन्तन्	चिन्त्यात् चिन्त्यास्ताम् चिन्त्यासुः
म० अचिचिन्तः अचिचिन्ततम् अचिचिन्तत	चिन्त्याः चिन्त्यास्तम् चिन्त्यास्त
उ० अचिचिन्तम् अचिचिन्ताव अचिचिन्ताम	चिन्त्यासम् चिन्त्यास्व चिन्त्यास्म

लुट्	लृङ्
प्र० चिन्तयिता चिन्तयितारौ चिन्तयितारः	अचिन्तयिष्यत अचिन्तयिष्यताम् अचिन्तयिष्यन्
म० चिन्तयितासि चिन्तयितास्थः चिन्तयितास्थ	अचिन्तयिष्यः अचिन्तयिष्यतम् अचिन्तयिष्यत
उ० चिन्तयितास्मि चिन्तयितास्वः चिन्तयितास्मः	अचिन्तयिष्यम् अचिन्तयिष्याव अचिन्तयिष्याम

आत्मनेपद

	लट्	लृट्
प्र०	चिन्तयते चिन्तयेते चिन्तयन्ते	चिन्तयिष्यते चिन्तयिष्येते चिन्तयिष्यन्ते
म०	चिन्तयसे चिन्तयेथे चिन्तयध्वे	चिन्तयिष्यसे चिन्तयिष्येथे चिन्तयिष्यध्वे
उ०	चिन्तये चिन्तयावहे चिन्तयामहे	चिन्तयिष्ये चिन्तयिष्यावहे चिन्तयिष्यामहे

	लिट्	लोट्
प्र०	चिन्तयामास चिन्तयामासतुः चिन्तयामासुः	चिन्तयताम् चिन्तयेताम् चिन्तयन्ताम्
म०	चिन्तयामासिथ चिन्तयामासथुः चिन्तयामास	चिन्तयस्व चिन्तयेथाम् चिन्तयध्वम्
उ०	चिन्तयामास चिन्तयामासिव चिन्तयामासिम	चिन्तयै चिन्तयावहै चिन्तयामहै

	लङ्	विधिलिङ्
प्र०	अचिन्तयत अचिन्तयेताम् अचिन्तयन्त	चिन्तयेत चिन्तयेयाताम् चिन्तयेरन्
म०	अचिन्तयथाः अचिन्तयेथाम् अचिन्तयध्वम्	चिन्तयेथाः चिन्तयेयाथाम् चिन्तयेध्वम्
उ०	अचिन्तये अचिन्तयावहि अचिन्तयामहि	चिन्तयेय चिन्तयेवहि चिन्तयेमहि

	लुङ्	आ०लिङ्
प्र०	अचिचिन्तत अचिचिन्तेताम् अचिचिन्तन्त	चिन्तयिषीष्ट चिन्तयिषीयास्ताम् चिन्तयिषीरन्
म०	अचिचिन्तथाः अचिचिन्तेथाम् अचिचिन्तध्वम्	चिन्तयिषीष्ठाः चिन्तयिषीयास्थाम् चिन्तयिषीध्वम्
उ०	अचिचिन्ते अचिचिन्तावहि अचिचिन्तामहि	चिन्तयिषीय चिन्तयिषीवहि चिन्तयिषीमहि

लुट्	लृट्
प्र० चिन्तयिता चिन्तयितारौ चिन्तयितारः	अचिन्तयिष्यत अचिन्तयिष्येताम् अचिन्तयिष्यन्त
म० चिन्तयितासे चिन्तयितासाथे चिन्तयिताध्वे	अचिन्तयिष्यथाः अचिन्तयिष्येथाम् अचिन्तयिष्यध्वम्
उ० चिन्ताहे चिन्तास्वहे चिन्तास्महे	अचिन्तयिष्ये अचिन्तयिष्यावहि अचिन्तयिष्यामहि

संक्षिप्त धातु-संग्रह

नोट—निम्नाङ्कित धातुओं के रूप क्रमशः लट्, लङ्, लट, लोट् और विधि लिङ्, के प्र० पु० में दिये गये हैं :—

अस् (होना)—अस्ति आसीत् भविष्यति अस्तु स्यात्
अस् (फेंकना)—अस्यति आस्यत् असिष्यति अस्यतु अस्येत्
अर्च (पूजना)—अर्चति आर्चत् अर्चिष्यति अर्चतु अर्चेत्
अय् (जाना)—अयते आयत अयिष्यते अयताम् अयेत
अद् (खाना)—अत्ति आदत् अत्स्यति अत्तु अद्यात्
अश् (खाना)—अश्नाति आश्नात् अशिष्यति अश्नातु अश्नीयात्
असूय् (निन्दा)—असूयति आसूयत् असूयिष्यति असूयतु असूयेत्
आस् (बैठना)—आस्ते आस्त् आसिष्यते आस्ताम् आसीत्
आप् (पाना)—आप्नोति आप्नोत् आप्स्यति आप्नोतु आप्नुयात्
अधि+ई (पढ़ना)—अधीते अध्यैत् अध्येष्यते अधीताम् अधीयीत
इष् (इच्छा)—इच्छति ऐच्छत् एषिष्यति इच्छतु इच्छेत्
इण् (जाना)—एति ऐत् एष्यति एतु इयात्
ईह् (चाहना)—ईहते ऐहत् ईहिष्यते ईहताम् ईहेत्
ईर्ष्य् (डाह)—ईर्ष्यति ऐर्ष्यत् ईर्षिष्यति ईर्ष्यतु ईर्ष्येत्
कम्प् (कांपना)—कम्पते अकम्पत कम्पिष्यते कम्पताम् कम्पेत
कथ् (कहना)—कथयति अकथयत् कथयिष्यति कथयतु कथयेत्
कुर्द् (कूदना)—कूर्दते अकूर्दत कूर्दिष्यते कूर्दताम् कूर्देत
कॄ (बिखेरना)—किरति अकिरत् करिष्यति किरतु किरेत्
कृ (करना)—करोति अकरोत् करिष्यति करोतु कुर्यात्
कृष् (खींचना)—कर्षति अकर्षत् कर्क्ष्यति कर्षतु कर्षेत्
क्रन्द् (रोना)—क्रन्दति अक्रन्दत् क्रन्दिष्यति क्रन्दतु क्रन्देत्
क्री (खरीदना)—क्रीणाति अक्रीणात् क्रेष्यति क्रीणातु क्रीणीयात्
क्लिश् (दुःख पहुँचाना)—क्लिश्नाति अक्लिश्नात् क्लेशिष्यति क्लिश्नातु क्लिश्नीयात्
क्लिश् (दुःखी होना)—क्लिश्यते अक्लिश्यत क्लेशिष्यते क्लिश्यताम् क्लिश्येत

क्षम् (क्षमा करना)—क्षमते अक्षमत क्षमिष्यते क्षमताम् क्षमेत
क्षल् (धोना)—क्षालयति अक्षालयत् क्षालयिष्यति क्षालयतु क्षालयेत्
क्षि (नाश)—क्षयति अक्षयत् क्षेष्यति क्षयतु क्षयेत्
क्षिप् (फेंकना)—क्षिपति अक्षिपत् क्षेप्स्यति क्षिपतु क्षिपेत्
खण्ड् (खण्डन)—खण्डयति अखण्डयत् खण्डयिष्यति खण्डयतु खण्डयेत्
खन् (खोदना)—खनति अखनत् खनिष्यति खनतु खनेत्
गण् (गिनना)—गणयति अगणयत् गणयिष्यति गणयतु गणयेत्
गवेष् (खोजना)—गवेषयति अगवेषयत् गवेषयिष्यति गवेषयतु गवेषयेत्
गॄ (निगलना)—गिरति अगिरत् गरिष्यति गिरतु गिरेत्
ग्रस् (खाना)—ग्रसते अग्रसत ग्रसिष्यते ग्रसताम् ग्रसेत
ग्रह् (ग्रहण)—गृह्णाति अगृह्णात् ग्रहीष्यति गृह्णातु गृह्णीयात्
घुष् (घोषणा)—घोषयति अघोषयत् घोषयिष्यति घोषयतु घोषयेत्
चल् (चलना)—चलति अचलत् चलिष्यति चलतु चलेत्
चिन्त् (सोचना)—चिन्तयति अचिन्तयत् चिन्तयिष्यति चिन्तयतु चिन्तयेत्
चि (चुनना)—चिनोति अचिनोत् चेष्यति चिनोतु चिनुयात्
चेष्ट् (प्रयत्न)—चेष्टते अचेष्टत चेष्टिष्यते चेष्टताम् चेष्टेत
छिद् (काटना)—छिनत्ति अच्छिनत् छेत्स्यति छिनत्तु छिन्द्यात्
जप् (जपना)—जपति अजपत् जपिष्यति जपतु जपेत्
जन् (पैदा होना)—जायते अजायत जनिष्यते जायताम् जायेत
जि (जीतना)—जयति अजयत् जेष्यति जयतु जयेत्
जॄ (वृद्ध होना)—जीर्यति अजीर्यत् जरिष्यति जीर्यतु जीर्येत्
जीव् (जीना)—जीवति अजीवत् जीविष्यति जीवतु जीवेत्
ज्वल् (जलना)—ज्वलति अज्वलत् ज्वलिष्यति ज्वलतु ज्वलेत्
ज्ञा (जानना)—जानाति अजानात् ज्ञास्यति जानातु जानीयात्
डी (उड़ना)—डीयते अडीयत डयिष्यते डीयताम् डीयेत
तन् (फैलाना)—तनोति अतनोत् तनिष्यति तनोतु तनुयात्
तड् (पीटना)—ताडयति अताडयत् ताडयिष्यति ताडयतु ताडयेत्
तर्क् (सोचना)—तर्कयति अतर्कयत् तर्कयिष्यति तर्कयतु तर्कयेत्
तर्ज् (डाटना)—तर्जयते अतर्जयत तर्जयिष्यते तर्जयताम् तर्जयेत
तुल् (तोलना)—तोलयति अतोलयत् तोलयिष्यति तोलयतु तोलयेत्
तुष् (सन्तुष्ट होना)—तुष्यति अतुष्यत् तोक्ष्यति तुष्यतु तुष्येत्
तृप् (तृप्त करना)—तर्पयति अतर्पयत् तर्पयिष्यति तर्पयतु तर्पयेत्

तृप् (तृप्त होना)—तृप्यति अतृप्यत् तर्पिष्यति तृप्यतु तृप्येत्
तृ (तैरना)—तरति अतरत् तरिष्यति तरतु तरेत्
त्यज् (छोड़ना)—त्यजति अत्यजत् त्यक्ष्यति त्यजतु त्यजेत्
त्रप् (लजाना)—त्रपते अत्रपत त्रपिष्यते त्रपताम् त्रपेत
त्रै (रक्षा करना)—त्रायते अत्रायत त्रास्यते त्रायताम् त्रायेत
त्वर् (शीघ्रता करना)—त्वरते अत्वरत त्वरिष्यते त्वरताम् त्वरेत
दम् (दमन करना)—दाम्यति अदाम्यत् दमिष्यति दाम्यतु दाम्येत्
दण्ड् (दण्ड देना)—दण्डयति अदण्डयत् दण्डयिष्यति दण्डयतु दण्डयेत्
दह् (जलाना)—दहति अदहत् धक्ष्यति दहतु दहेत्
दिश् (कहना)—दिशति अदिशत् देक्ष्यति दिशतु दिशेत्
दिव् (जुआ खेलना)—दीव्यति अदीव्यत् देविष्यति दीव्यतु दीव्येत्
दीक्ष् (मन्त्र देना)—दीक्षते अदीक्षत दीक्षिष्यते दीक्षताम् दीक्षेत
दीप् (चमकना)—दीप्यते अदीप्यत दीपिष्यति दीप्यताम् दीप्येत
दुह् (दुहना)—दोग्धि अधोक् धोक्ष्यति दोग्धु दुह्यात्
दा (देना)—ददाति अददात् दास्यति ददातु दद्यात्
(आ)दृ (आदर करना)—आद्रियते आद्रियत आदरिष्यते आद्रियताम्
आद्रियेत
द्रुह् (द्रोह करना)—द्रुह्यति अद्रुह्यत् द्रोहिष्यति द्रुह्यतु द्रुह्येत्
धा (धारण करना)—दधाति अदधात् धास्यति दधातु दध्यात्
धृ (पहनना)—धारयति अधारयत् धारयिष्यति धारयतु धारयेत्
ध्यै (ध्यान करना)—ध्यायति अध्यायत् ध्यास्यति ध्यायतु ध्यायेत्
धाव् (दौड़ना)—धावति अधावत् धाविष्यति धावतु धावेत्
ध्वंस् (नाश होना)—ध्वंसते अध्वंसत् ध्वंसिष्यते ध्वंसताम् ध्वंसेत
नश् (नाश होना)—नश्यति अनश्यत् नशिष्यति नश्यतु नश्येत्
नम् (झुकना)—नमति अनमत् नंस्यति नमतु नमेत्
निन्द् (निन्दा करना)—निन्दति अनिन्दत् निन्दिष्यति निन्दतु निन्देत्
नी (लेजाना)—नयति अनयत् नेष्यति नयतु नयेत्
पच् (पकाना)—पचति अपचत् पक्ष्यति पचतु पचेत्
(सम्) पद् (करना)—संपद्यते समपद्यत सम्पत्स्यते सम्पद्यताम् सम्पद्येत
पाल् (रक्षा करना)—पालयति अपालयत् पालयिष्यति पालयतु पालयेत्
पा (रक्षा करना)—पाति अपात् पास्यति पातु पायात्
पा (पीना)—पिबति अपिबत् पास्यति पिबतु पिबेत्

पीड् (पीड़ित करना)—पीडयति अपीडयत् पीडयिष्यति पीडयतु पीड़येत्
पुष् (पोषण करना)—पुष्यति अपुष्यत् पोक्ष्यति पुष्यतु पुष्येत्
प्रथ् (फैलना)—प्रथते अप्रथत प्रथिष्यते प्रथताम प्रथेत
प्रेर् (प्रेरित करना)—प्रेरयति अप्रेरयत् प्रेरयिष्यति प्रेरयतु प्रेरयेत्
बन्ध (बांधना)—बध्नाति अबध्नात् भन्त्स्यति बध्नातु बध्नीयात्
बाध् (पीड़ित करना)—बाधते अबाधत बाधिष्यते बाधताम् बाधेत
बुध् (जानना)—बुध्यते अबुध्यत भोत्स्यते बुध्यताम् बुध्येत
ब्रू (बोलना)—ब्रवीति अब्रवीत् वक्ष्यति ब्रवीतु ब्रूयात्
भज् (सेवा करना)—भजति अभजत् भक्ष्यति भजतु भजेत्
भक्ष् (खाना)—भक्षयति अभक्षयत भक्षयिष्यति भक्षयतु भक्षयेत्
भाष् (बोलना)—भाषते अभाषत भाषिष्यते भाषताम् भाषेत
भास् (चमकना)—भासते अभासत भासिष्यते भासताम् भासेत
भा (चमकना)—भाति अभात् भास्यति भातु भायात्
भिक्ष् (मांगना)—भिक्षते अभिक्षत भिक्षिष्यते भिक्षताम् भिक्षेत
भिद् (तोड़ना)—भिनत्ति अभिनत् भेत्स्यति भिनत्तु भिन्द्यात्
भी (डरना)—बिभेति अबिभेत् भेष्यति बिभेतु बिभीयात्
भुज् (पालना)—भुनक्ति अभुनक् भोक्ष्यति भुनक्तु भुञ्ज्यात्
भुज् (खाना)—भुङ्क्ते अभुङ्क्त भोक्ष्यते भुङ्क्ताम् भुञ्जीत
भृ (पालन करना)—भरति अभरत् भरिष्यति भरतु भरेत्
भ्रम् (घूमना)-भ्रमति अभ्रमत् भ्रमिष्यति भ्रमतु भ्रमेत्
भ्रम् (घूमना)-भ्राम्यति अभ्राम्यत् भ्रमिष्यति भ्राम्यतु भ्राम्येत्
भ्रंश (गिरना)—भ्रंशते अभ्रंश भ्रंशिष्यते भ्रंशताम् भ्रंशेत
भ्राज् (चमकना)—भ्राजते अभ्राजत भ्राजिष्यते भ्राजताम् भ्राजेत
मण्ड् (मण्डन करना)— मण्डयति अमण्डयत् मण्डयिष्यति मण्डयतु मण्डयेत्
मथ् (मथना)—मथति अमथत् मथिष्यति मथतु मथेत्
मन् (मानना)—मन्यते अमन्यत मंस्यते मन्यताम् मन्येत
मन्त्र (सलाह करना)—मन्त्रयते अमन्त्रयत मन्त्रयिष्यते मन्त्रयताम् मन्त्रयेत
मन्थ् (मथना)—मथ्नाति अमथ्नात् मन्थिष्यति मथनातु मथ्नीयात्
मा (नापना)—माति अमात् मास्यति मातु मायात्
मुच् (छोड़ना)—मुञ्चति अमुञ्चत् मोक्ष्यति मुञ्चतु मुञ्चेत्
मुद् (प्रसन्न होना)—मोदते अमोदत मोदिष्यते मोदताम् मोदेत

मुष् (चुराना)—मुष्णाति अमुष्णात् मोषिष्यति मुष्णातु मुष्णीयात्
मुह् (मुग्ध होना)—मुह्यति अमुह्यत् मोहिष्यति मुह्यतु मुह्येत्
मूर्च्छ (मूर्च्छित होना)—मूर्च्छति अमूर्च्छत् मूर्च्छिष्यति मूर्च्छतु मूर्च्छेत्
मृ (मरना)—म्रियते अम्रियत मरिष्यति म्रियताम् म्रियेत
म्लै (मुरझाना)—म्लायति अम्लायत् म्लास्यति म्लायतु म्लायेत्
यज् (यज्ञ करना)—यजति अयजत् यक्ष्यति यजतु यजेत्
यत् (यत्न करना)—यतते अयतत यतिष्यते यतताम् यतेत
या (जाना)—याति अयात् यास्यति यातु यायात्
याच् (माँगना)—याचति अयाचत् याचिष्यति याचतु याचेत्
यापि (बिताना)—यापयति अयापयत् यापयिष्यति यापयतु यापयेत्
युज् (लगाना)—योजयति अयोजयत् योजयिष्यति योजयतु योजयेत्
युध् (लड़ना)--युध्यते अयुध्यत योत्स्यते युध्यताम् युध्येत
रक्ष् (रक्षा करना)—रक्षति अरक्षत् रक्षिष्यति रक्षतु रक्षेत्
रच् (बनाना)—रचयति अरचयत् रचयिष्यति रचयतु रचयेत्
रञ्ज (प्रसन्न होना)—रज्यति अरज्यत् रङ्क्ष्यति रज्यतु रज्येत्
रम् (रमण करना)—रमते अरमत रंस्यते रमताम् रमेत
(वि) रम् (विराम लेना)—विरमति व्यरमत् विरंस्यति विरमतु विरमेत्
राज् (चमकना)—राजति अराजत् राजिष्यति राजतु राजेत्
रुच् (अच्छा लगना)—रोचते अरोचत रोचिष्यते रोचताम् रोचेत
रुद् (रोना)—रोदिति अरोदीत् रोदिष्यति रोदितु रुद्यात्
रुध् (रोकना)—रुणद्धि अरुणत् रोत्स्यति रुणद्धु रुन्ध्यात्
रुह् (उगना)—रोहति अरोहत् रोक्ष्यति रोहतु रोहेत्
लङ्घ् (लाँघना)—लङ्घते अलङ्घत लङ्घिष्यते लङ्घताम लङ्घेत
लप् (बोलना)—लपति अलपत् लपिष्यति लपतु लपेत्
लभ् (पाना)—लभते अलभत लप्स्यते लभताम् लभेत
(अभि) लष (चाहना)—अभिलषति अभ्यलषत् अभिलषिष्यति अभिलषतु अभिलषेत्

लिप् (लीपना)—लिम्पति अलिम्पत् लेप्स्यति लिम्पतु लिम्पेत्
ली (लीन होना)—लीयते अलीयत लेष्यते लीयताम् लीयेत
लुप् (नष्ट करना)—लुम्पति अलुम्पत् लोप्स्यति लुम्पतु लुम्पेत्
लुभ् (लालच करना)—लुभ्यति अलुभ्यत् लोभिष्यति लुभ्यतु लुभ्येत्
लोक (देखना)—लोकयति अलोकयत् लोकयिष्यति लोकयतु लोकयेत्

लोच् (देखना)—लोचयति अलोचयत् लोचयिष्यति लोचयतु लोचयेत्
वद् (बोलना)—वदति अवदत् वदिष्यति वदतु वदेत्
वन्द् (वन्दना करना)—वन्दते अवन्दत वन्दिष्यते वन्दताम् वन्देत
वप् (बोना)—वपति अवपत् वप्स्यति वपतु वपेत्
वस् (रहना)—वसति अवसत् वस्यति वसतु वसेत्
वह् (ढोना)—वहति अवहत् वक्ष्यति वहतु वहेत्
वा (बहना)—वाति अवात वास्यति वातु वायात्
विद् (जानना)—वेत्ति अवेत वेदिष्यति वेत्तु विद्यात्
विद् (होना)—विद्यते अविद्यत वेत्स्यते विद्यताम विद्येत
विद् (पाना)—विन्दति अविन्दत् वेदिष्यति विन्दतु विन्देत्
विद् (कहना)—वेदयते अवेदयत वेदयिष्यते वेदयताम वेदयेत
विश् (प्रवेश करना)—विशति अविशत् वेक्ष्यति विशतु विशेत्
वृ (वरण करना)—वृणोति अवृणोत् वरिष्यति वृणोतु वृणुयात्
वृत् (होना)—वर्तते अवर्तत वर्तिष्यते वर्तताम वर्तेत
वृध् (बढ़ना)—वर्धते अवर्धत् वर्धिष्यते वर्धताम् वर्धेत्
वृष् (बरसना) वर्षति अवर्षत् वर्षिष्यति वर्षतु वर्षेत्
वे (बुनना)—वयति अवयत् वास्यति वयतु वयेत्
वेप् (कांपना)—वेपते अवेपत वेपिष्यते वेपताम् वेपेत
व्यथ् (दुःखित होना)—व्यथते अव्यथत व्यथिष्यते व्यथताम् व्यथेत
शक् (सकना) शक्नोति अशक्नोत् शक्ष्यति शक्नोतु शक्नुयात्
शंक् (शंका करना)–शंकते अशंकत शंकिष्यते शंकताम् शंकेत
शप् (शाप देना)—शपति अशपत् शप्स्यति शपतु शपेत्
शम् (शान्त होना)—शाम्यति अशाम्यत् शमिष्यति शाम्यतु शाम्येत्
शास् (सिखाना)—शास्ति अशात् शासिष्यति शास्तु शिष्यात्
शिक्ष् (सीखना)—शिक्षते अशिक्षत शिक्षिष्यते शिक्षताम् शिक्षेत
शी (सोना)—शेते अशेत शयिष्यते शेताम् शयीत
शुच् (शोक करना)—शोचति अशोचत् शोचिष्यति शोचतु शोचेत्
शुध् (शुद्ध होना)—शुध्यति अशुध्यत् शोत्स्यति शुध्यतु शुध्येत
शुभ् (शोभित होना)—शोभते अशोभत शोभिष्यते शोभताम् शोभेत
शुष् (सूखना)—शुष्यति अशुष्यत् शोक्ष्यति शुष्यतु शुष्येत्
श्रि (सहारा लेना)—श्रयति अश्रयत् श्रयिष्यति श्रयतु श्रयेत्
श्रु (सुनना)—शृणोति अशृणोत् श्रोष्यति शृणोतु शृणुयात्

श्लिष् (लपटाना)—श्लिष्यति अश्लिष्यत् श्लेषिष्यति श्लिष्यतु श्लिष्येत्
श्वस् (सांस लेना)—श्वसिति अश्वसीत् श्वसिष्यति श्वसितु श्वस्यात्
सह् (सहना)—सहते असहत सहिष्यते सहताम् सहेत
सान्त्व् (सान्त्वना)—सान्त्वयति असान्त्वयत् सान्त्वयिष्यति सान्त्वयतु सान्त्वयेत
सिच् (सींचना)—सिञ्चति असिञ्चत् सेक्ष्यति सिञ्चतु सिञ्चयेत्
सिव् (सीना)—सीव्यति असीव्यत् सेविष्यति सीव्यतु सीव्येत्
सु (निचोड़ना)—सुनोति असुनोत सोष्यति सुनोतु सुनुयात्
सृज् (बनाना)—सृजति असृजत् स्रक्ष्यति सृजतु सृजेत्
सृ (चलना)—सरति असरत् सरिष्यति सरतु सरेत्
सेव् (सेवा करना)—सेवते असेवत सेविष्यते सेवताम् सेवेत
सो (नष्ट होना)—स्यति अस्यत् सास्यति स्यतु स्येत्
स्तु (स्तुति करना)—स्तौति अस्तौत् स्तोष्यति स्तौतु स्तुयात्
स्था (ठहरना)—तिष्ठति अतिष्ठत् स्थास्यति तिष्ठतु तिष्ठेत्
स्ना (नहाना)—स्नाति अस्नात् स्नास्यति स्नातु स्नायात्
स्निह् (स्नेह करना)—स्निह्यति अस्निह्यत् स्नेहिष्यति स्निह्यतु स्निह्यत्
स्पन्द् (हिलना) स्पन्दते अस्पन्दत स्पन्दिष्यते स्पन्दताम स्पन्देत
स्पर्ध् (स्पर्धा)—स्पर्धते अस्पर्धत स्पर्धिष्यते स्पर्धताम स्पर्धेत
स्पृश् (छूना)—स्पृशति अस्पृशत् स्पर्क्ष्यति स्पृशतु स्पृशेत्
स्पृह् (चाहना)—स्पृहयति अस्पृहयत् स्पृहयिष्यति स्पृहयतु स्पृहयेत्
स्मृ (याद करना)—स्मरति अस्मरत् स्मरिष्यति स्मरतु स्मरेत्
स्रंस (गिरना)—स्रंसते अस्रंसत स्रंसिष्यते स्रंसताम स्रंसेत
(आ) स्वाद् (स्वाद लेना)—आस्वादयति आस्वादयत आस्वादयिष्यति आस्वादयतु आस्वादयेत्
स्वप् (सोना)—स्वपिति अस्वपत स्वप्स्यति स्वपितु स्वप्यात्
हन् (मारना)—हन्ति अहन् हनिष्यति हन्तु हन्यात
हा (छोड़ना)—जहाति अजहात् हास्यति जहातु जह्यात्
हु (यज्ञ करना)—जुहोति अजुहोत् होष्यति जुहोतु जुहुयात्
(आ) ह्वे (बुलाना)—आह्वयति आह्वयत् आह्वयिष्यति आह्वयतु आह्वयेत्
हृष् (प्रसन्न होना)—हृष्यति अहृष्यत् हर्षिष्यति हृष्यतु हृष्येत्
हृ (हरना)—हरति अहरत् हरिष्यति हरतु हरेत्

प्रत्ययं-परिचयं

क्तिन = ति

धातु	प्रत्ययान्त	धातु	प्रत्ययान्त	धातु	प्रत्ययान्त	धातु	प्रत्ययान्त
गम्	गतिः	गै	गीतिः	नम्	नतिः	वृध्	वृद्धिः
शम्	शान्तिः	छिद्	छित्तिः	ब्रू	उक्तिः	शुध्	शुद्धिः
क्रम्	कान्तिः	मुच्	मुक्तिः	यम्	यतिः	व्याप्	व्याप्तिः
कम्	क्रान्तिः	मन्	मतिः	रम्	रतिः	युज्	युक्तिः
क्षम्	क्षान्तिः	भी	भीतिः	वृत्	वृत्तिः	वृष्	वृष्टिः
जन्	जातिः	नी	नीतिः	शक्	शक्तिः	संसृ	संसृतिः
इष्	इष्टिः	दीप्	दीप्तिः	शुध्	शुद्धिः	संहृ	संहृतिः
कृष्	कृष्टिः	धृ	धृतिः	रुह्	रूढिः	पच्	पक्तिः
अधी	अधीतिः	पुष्	पुष्टिः	श्रु	श्रुतिः	कृ	कृतिः
ज्ञा	ज्ञातिः	दृश्	दृष्टिः	स्तु	स्तुतिः	नम्	नतिः
चि	चितिः	आप्	आप्तिः	स्वप्	सुप्तिः	ऋध्	ऋद्धिः
तृप्	तृप्तिः	भज्	भक्तिः	स्था	स्थितिः	श्रम्	श्रान्तिः
यज्	इष्टिः	प्री	प्रीतिः	स्मृ	स्मृतिः	भुज्	भुक्तिः
तुष्	तुष्टिः	भू	भूतिः	सृज्	सृष्टिः	कृ	कीर्त्तिः
भ्रम	भ्रान्तिः	पृ	पूर्त्तिः	सिध्	सिद्धिः	पा	पीतिः

यत् = य

(अर्थ—'चाहिए'चाहिए, रूप—तीनों लिङ्गों के अनुसार)

धातु	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
गै	गेयः	गेया	गेयम्
चि	चेयः	चेया	चेयम्
अधी	अध्येयः	अध्येया	अध्येयम्
हु	हव्यः	हव्या	हव्यम्
स्था	स्थेयः	स्थेया	स्थेयम्
श्रु	श्रव्यः	श्रव्या	श्रव्यम्

धातु	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
हा	हेयः	हेया	हेयम्
सु	सेव्यः	सेव्या	सेव्यम्
वि+धा	विधेयः	विधेया	विधेयम्
अनु+मा	अनुमेयः	अनुमेया	अनुमेयम्
आख्या	आख्येयः	आख्येया	आख्येयम्
भू	भव्यः	भव्या	भव्यम्
पा	पेयः	पेया	पेयम्
ध्यै	ध्येयः	ध्येया	ध्येयम्
नी	नेयः	नेया	नेयम्
क्री	क्रेयः	क्रेया	क्रेयम्
घ्रा	घ्रेयः	घ्रेया	घ्रेयम्
क्षि	क्षेयः	क्षेया	क्षेयम्
उप+मा	उपमेयः	उपमेया	उपमेयम्
प्र+मा	प्रमेयः	प्रमेया	प्रमेयम्
जि	जेयः	जेया	जेयम्
दा	देयः	देया	देयम्
ज्ञा	ज्ञेयः	ज्ञेया	ज्ञेयम्
ग्लै	ग्लेयः	ग्लेया	ग्लेयम्
पा	पेयः	पेया	पेयम्
धा	धेयः	धेया	धेयम्

ण्वुल् = अक

(अर्थ—'वाला' प्रयोग—तीनों लिङ्गों के रूप)

धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त	धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त
कृ	कारकः	पच्	पाचकः
पठ्	पाठकः	सेव्	सेवकः
लिख्	लेखकः	याच्	याचकः
दृश्	दर्शकः	युज्	योजकः
कृष्	कर्षकः	ध्वंस	ध्वंसकः
भू	भावकः	नश्	नाशकः
गम्	गमकः	पत्	पातकः

धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त	धातु	ण्वुल प्रत्ययान्त
जन्	जनकः	मुह्	मोहकः
दह्	दाहकः	बन्ध्	बन्धकः
ग्रह्	ग्राहकः	रञ्ज्	रञ्जकः
प्रेर्	प्रेरकः	स्था	स्थापकः
भक्ष्	भक्षकः	शास्	शासकः
रक्ष्	रक्षकः	स्मृ	स्मारकः
शिक्ष्	शिक्षकः	बुध्	बोधकः
निन्द्	निन्दकः	शुष्	शोषकः
क्रीड	क्रीडकः	भिद्	भेदकः
श्रु	श्रावकः	छिद्	छेदकः
धा	धायकः	पुष्	पोषकः
नी	नायकः	वृ	वारकः
धाव्	धावकः	नृत्	नर्तकः
गै	गायकः	पाल्	पालकः
पा	पायकः	साध्	साधकः
दा	दायकः	वह्	वाहकः
भज्	भाजकः	चल्	चालकः
भाष्	भाषकः	मुद्	मोदकः
हन्	घातकः	बाध्	बाधकः
हृष्	हर्षकः	तृ	तारकः
द्युत्	द्योतकः	धृ	धारकः
वृध्	वर्धकः	पूज्	पूजकः
प्र+सृ	प्रसारकः	रुध्	रोधकः
हृ	हारकः	गण्	गणकः
इष्	एषकः	चि	चायकः
मद्	मादकः	खाद्	खादकः
दिश्	देशकः	मुच्	मोचकः
आस्	आसकः	मुद्	मोदकः
गण	गणकः	वद्	वादकः
चिन्त	चिन्तकः	क्षिप्	क्षेपकः
चर्	चारकः	मुच्	मोचकः

धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त	धातु	ण्वुल् प्रत्ययान्त
दीप्	दीपक:	सिच्	सेचक:
द्रुह्	द्रोहक:	प्रच्छ्	प्रच्छक:
मुह्	मोहक:	तप्	तापक:
दुह्	दोहक:	वच्	वाचक:
शुध्	शोधक:	युध्	योधक:
रुच्	रोचक:	मृ	मारक:
शम्	शमक:	नि+सिध	निषेधक:
दम्	दमक:	ब्रू	वाचक:
वध्	वधक:	भुज्	भोजक:
द्विष्	द्वेषक:	प्र+विश्	प्रवेशक:
ध्यै	ध्यायक:	वि+धा	विधायक:
प्र+स्तु	प्रस्तावक:	वि+कस्	विकासक:

घञ्=अ

(अर्थ—'भाव', प्रयोग—नित्य पुंल्लिङ्ग)

धातु	घञ् प्रत्ययान्त	धातु	घञ् प्रत्ययान्त
पच्	पाक:	स्फुर्	स्फार:
स्फुल्	स्फाल:	शम्	शाम:
कम्	काम:	रञ्ज्	राग:
नि+चि	निचाय:	चर्	चार:
चल्	चाल:	तप्	ताप:
यज्	याग:	दह्	दाह:
कप्	कोप:	कृ	कार:
कृप्	कर्प:	क्षिप्	क्षेप:
उद्+ग्रह	उद् ग्राह:	सम्+ग्रह:	सङ्ग्रह:
नश्	नाश:	परि+नी	परिणय:
उप+शी	उपशय:	सम्+शी	संशय:
प्र+चि	प्रचय:	क्षुभ	क्षोभ:
गम्	गाम:	ग्रस्	ग्रास:
द्रुह्	द्रोह:	दिव्	देव:

धातु	घञ् प्रत्ययान्त	धातु	घञ् प्रत्ययान्त
चुर्	चोरः	जप्	जापः
दुह्	दोहः	नि+इ	न्यायः
वस्	वासः	पठ्	पाठः
पत्	पातः	पुष्	पोषः
जृ	जारः	सम्+यु	संयावः
सम्+द्रु	सन्द्रावः	सम्+दु	सन्दावः
श्रि	श्रायः	नी	नायः
भू	भावः	प्र+श्रि	प्रश्रयः
प्र+नी	प्रणयः	प्र+भू	प्रभवः
मृज	मार्गः	शुच्	शोकः
शुष्	शोषः	दम्	दमः
शप्	शापः	श्लिष्	श्लेषः
लभ्	लाभः	युज्	योगः।
लुभ्	लोभः	स्वप्	स्वापः
स्पृश्	स्पर्शः	सृज्	सर्गः
स्निह्	स्नेहः	लिख्	लेखः
भ्रस्	भावः	मुद्	मोदः
रुह्	रोहः	हन	घातः
दिश्	देशः	वद्	वादः
तुष्	तोषः	सिच्	सेकः
स्वप्	स्वापः	हस्	हासः
हृश्	हर्षः	वृष्	वर्षः
शप्	शापः	भुज्	भोगः
श्रु	श्रावः	श्रि	श्रायः

ल्युट्=यु=अन

(अर्थ—भाव। प्रयोग—नित्य—नपुंसकलिङ्ग)

धातु	ल्युडन्त	धातु	ल्युडन्त
भू	भवनम्	पठ	पठनम्
कृ	करणम्	गम्	गमनम्
अस्	भवनम्	अस्	असनम्

धातु	ल्युडन्त	धातु	ल्युडन्त
इ	जयनम्	इष्	एषणम्
ईक्ष्	ईक्षणम्	कथ्	कथनम्
कम्प	कम्पनम्	कूर्द	कूर्दनम्
कृप्	कल्पनम्	कृष्	कर्षणम्
क्रन्द्	क्रन्दनम्	क्रम्	क्रमणम्
क्री	क्रयणम्	क्रीड	क्रीडनम्
क्षिप्	क्षेपणम्	खन	खननम्
खाद्	खादनम्	गण	गणनम्
गर्ज	गर्जनम्	गै	गान म्
ग्रन्थ	ग्रन्थनम्	ग्रस्	ग्रसनम्
ग्रह	ग्रहणम्	घ्रा	घ्राणम्
चर्	चरणम्	चल्	चलनम्
चिन्त्	चिन्तनम्	अर्ज	अर्जनम्
अर्च	अर्चनम्	चि	चयनम्
छिद्	छेदनम्	जन्	जननम्
जीव्	जीवनम्	ज्ञा	ज्ञानम्
ज्वल्	ज्वलनम्	तप्	तपनम्
तुष्	तोषणम्	तृप्	तर्पणम्
तृ	तरणम्	त्यज्	त्यजनम्
त्रै	त्राणम्	दम्	दमनम्
शम्	शमनम्	दह्	दहनम्
दा	दानम्	दीप्	दीपनम्
दुह्	दोहनम्	दृश्	दर्शनम्
धाव्	धावनम्	ध्यै	ध्यानम्
ध्वंस्	ध्वंसनम्	नन्द्	नन्दनम्
निन्द	निन्दनम्	वस्	वसनम्
नी	नयनम्	नृत्	नर्तनम्
पच्	पचनम्	पत्	पतनम्
पा	पानम्	पाल्	पालनम्
पुष्	पोषणम्	पूज्	पूजनम्
हस्	हसनम्	प्रेर्	प्रेरणम्

धातु	ल्युडन्त	धातु	ल्युडन्त
प्रेष्	प्रेषणम्	बन्ध्	बन्धनम्
भक्ष्	भक्षणम्	भज्	भजनम्
भञ्ज्	भञ्जनम्	भाष्	भाषणम्
भिद्	भेदनम्	भुज्	भोजनम्
भृ	भरणम्	भ्रंश्	भ्रंशनम्
भ्रम्	भ्रमणम्	मन्	मननम्
मन्थ्	मन्थनम्	मा	मानम्
मुच्	मोचनम्	मिल्	मेलनम्
मुह्	मोहनम्	मुद्	मोदनम्
मुष्	मोषणम्	मृ	मरणम्
यज्	यजनम्	पत्	पतनम्
या	यानम्	याच्	याचनम्
युज्	योजनम्	रक्ष्	रक्षणम्
रम्	रमणम्	राज	राजनम्
रुच्	रोचनम्	रुद्	रोदनम्
रुध्	रोधनम्	लम्ब	लम्बनम्
लष्	लषणम्	लस्	लसनम्
लिख्	लेखनम्	लिह	लेहनम्
ली	लयनम्	लुभ	लोभनम्
लोक्	लोकनम्	लोच	लोचनम्
वच्	वचनम्	वञ्च्	वञ्चनम्
वद्	वदनम्	वन्द्	वन्दनम्
वप्	वपनम्	वर्ण	वर्णनम्
वह्	वहनम्	वृ	वरणम्
वृत्	वर्तनम्	वृध्	वर्धनम्
वृष्	वर्षणम्	वेप्	वेपनम्
शप्	शपनम्	शम्	शमनम्
दम्	दमनम्	शास्	शासनम्
अर्ज्	अर्जनम्	तर्ज्	तर्जनम्
शी	शयनम्	शुभ्	शोभनम्
शुष्	शोषणम्	साध्	साधनम्

धातु	ल्युडन्त	धातु	ल्युडन्त
सिच्	सेचनम्	सृ	सरणम्
सृज्	सर्जनम्	सेव	सेवनम्
स्तु	स्तवनम्	स्मृ	स्मरणम्
हन्	हननम्	स्वप्	स्वपनम्
स्था	स्थानम्	हृष्	हर्षणम्
हृ	हरणम्	हु	हवनम्

क्त्वा = त्वा

(अर्थ—'कर' या करके। प्रयोग-अनुपसर्ग धातुओं में तथा तीनों लिंगों में समान रूप)।

धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त	धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त
भू	भूत्वा	पठ्	पठित्वा
गम्	गत्वा	लिख्	लिखित्वा
कृ	कृत्वा	पा	पीत्वा
खाद्	खादित्वा	दृश्	दृष्ट्वा
श्रु	श्रुत्वा	हस्	हसित्वा
रुद्	रुदित्वा	प्रच्छ्	पृष्ट्वा
कृष्	कृष्ट्वा	वद्	उक्त्वा
स्ना	स्नात्वा	नी	नीत्वा
चल्	चलित्वा	मिल्	मिलित्वा
अर्च्	अर्चित्वा	कूर्द्	कूर्दित्वा
क्रन्द्	क्रन्दित्वा	क्रीड्	क्रीडित्वा
क्रुध्	क्रुद्ध्वा	क्षिप्	क्षिप्त्वा
क्षुभ्	क्षुभित्वा	खन्	खनित्वा
गण्	गणयित्वा	क्षम्	क्षमित्वा
ग्रह्	गृहीत्वा	चि	चित्वा
चुर्	चोरयित्वा	चिन्त्	चिन्तयित्वा
छिद्	छित्वा	जप्	जपित्वा
जीव	जीवित्वा	जन्	जनित्वा
घ्रा	घ्रात्वा	जि	जित्वा

धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त	धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त
ज्ञा	ज्ञात्वा	तन्	तनित्वा
तुष्	तुष्ट्वा	तृ	तीर्त्वा
ज्वल्	ज्वलित्वा	त्यज्	त्यक्त्वा
दह्	दग्ध्वा	दा	दत्वा
दिश्	दिष्ट्वा	दीप्	दीपित्वा
द्युत्	द्योतित्वा	धा	हित्वा
धाव्	धावित्वा	ध्यै	ध्यात्वा
नम्	नत्वा	नश्	नष्ट्वा
नृत्	नर्तित्वा	पच्	पक्त्वा
पत	पतित्वा	पाल्	पालयित्वा
पुष्	पुष्ट्वा	पूज्	पूजयित्वा
पृ	पूर्त्वा	बन्ध्	बद्ध्वा
बुध्	बुद्ध्वा	ब्रू	उक्त्वा
भक्ष्	भक्षयित्वा	भज्	भक्त्वा
भिद्	भित्वा	भाष्	भाषित्वा
भञ्ज्	भङ्क्त्वा	भी	भीत्वा
भू	भूत्वा	भ्रंश्	भ्रष्ट्वा
भ्रम्	भ्रमित्वा	मथ्	मथित्वा
मन्	मत्वा	मा	मित्वा
मिल्	मिलित्वा	मुच्	मुक्त्वा
मुह्	मुग्ध्वा	यज्	यष्ट्वा
याच्	याचित्वा	युज्	युक्त्वा
युध्	युद्ध्वा	रक्ष्	रक्षित्वा
रच्	रचयित्वा	रभ्	रब्ध्वा
रम्	रम्त्वा	रुध्	रुद्ध्वा
रुह्	रुढ्वा	लभ्	लब्ध्वा
लभ्	लब्ध्वा	लिह्	लीढ्वा
ली	लीत्वा	लुभ्	लुब्ध्वा
वद्	वदित्वा	वन्द्	वन्दित्वा
वप्	उप्त्वा	वस्	उषित्वा
वह्	ऊढ्वा	विद्	विदित्वा

धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त	धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त
विश्	विष्ट्वा	वृत्	वर्तित्वा
वृध्	वर्धित्वा	वृष्	वर्षित्वा
व्यध्	विद्ध्वा	शप्	शप्त्वा
शम्	शान्त्वा	शास्	शिष्ट्वा
शी	शयित्वा	शुष	शुष्ट्वा
श्रि	श्रित्वा	श्लिष्	श्लिष्ट्वा
श्वस्	श्वसित्वा	सह्	सहित्वा
साध्	साध्वा	सिच्	सिक्त्वा
सिध्	सिद्ध्वा	सृज्	सृष्ट्वा
सेव्	सेवित्वा	स्तु	स्तुत्वा
स्था	स्थित्वा	स्निह्	स्निग्ध्वा
स्पृश्	स्पृष्ट्वा	स्मृ	स्मृत्वा
स्वप्	सुप्त्वा	हन्	हत्वा
हा	हित्वा	हु	हुत्वा
हृ	हृत्वा	हृष्	हृषित्वा
ह्वे	हूत्वा	सी	सित्वा

ल्यप् = य

(अर्थ—'कर' या करके। प्रयोग—सोपसर्ग धातुओं में, तीनों लिंगों में समान रूप)।

धातु	ल्यबन्त	धातु	ल्यबन्त
सम्+भू	सम्भूय	आ+लिख्	आलिख्य
आ+गम्	आगत्य	नि+पा	निपाय
उप+कृ	उपकृत्य	प्र+दृश्	प्रदर्श्य
सम्+दुह	संदुह्य	वि+हस्	विहस्य
सम्+श्रु	संश्रुत्य	सम्+प्रच्छ	संपृच्छ्य
वि+रुद्	विरुद्य	अनु+वद्	अनूद्य
आ+कृष्	आकृष्य	आ=नी	आनीय
प्र+स्ना	प्रस्नाय	सम्+मिल्	सम्मिल्य
प्र+चल्	प्रचल्य	प्र+कूर्द्	प्रकूर्य
अभि+अर्च्	अभ्यर्च्य	सम्+क्रीड	संक्रीड्य

धातु	ल्यबन्त	धातु	ल्यबन्त
प्र+पठ्	प्रपठ्य	सम्+क्षिप	संक्षिप्य
आ+क्रन्द्	आक्रान्द्य	उत्+खन्	उत्खाय
सम्+क्रुध	संक्रुध्य	सम्+क्षम्	संक्षम्य
सम्+क्षुभ्	संक्षुभ्य	वि+गण्	विगण्य्य
सम्+चुर्	संचोर्य	वि+चिन्त्	विचिन्त्य
उत्+छिद्	उच्छिद्य	सम्+जप्	संजप्य
सम्+जीव्	संजीव्य	सम्+जन्	संजाय
आ+घ्रा	आघ्राय	वि+जि	विजित्य
वि+ज्ञा	विज्ञाय	वि+तन्	वितत्य
सम्+तुष्	सन्तुष्य	उत्+तॄ	उत्तीर्य
प्र+ज्वल्	प्रज्वल्य	परि+त्यज्	परित्यज्य
सम्+दह्	संदह्य	आ+दा	आदाय
उप+दिश्	उपदिश्य	उत्+दीप्	उद्दीप्य
वि+द्युत्	विद्युत्य	आ+धृ	आधृत्य
प्र+धाव	प्रधाव्य	सम्+ध्यै	संध्याय
प्र+नम्	प्रणम्य	वि+नश्	विनश्य
प्र+नृत्	प्रनृत्य	सम+पच्	संपच्य
नि+पत्	निपत्य	प्रति+पाल्	प्रतिपाल्य
सम्+पुष्	सम्पुष्य	सम्+पूज्	सम्पूज्य
आ+पॄ	आपूर्य	आ+बन्ध्	आबध्य
प्र+बुध्	प्रबुध्य	प्र+ब्रू	प्रोच्य
सम्+भक्ष्	संभक्ष्य	वि+भज्	विभज्य
वि+भिद्	विभिद्य	सम्+भाष्	संभाष्य
वि+भञ्ज्	विभज्य	सम्+भी	संभीय
सम्+भृ	संभृत्य	प्र+भ्रंश्	प्रभ्रश्य
परि+भ्रम्	परिभ्रम्य	प्र+मथ्	प्रमथ्य
अव+मन्	अवमत्य	प्र+मा	प्रमाय
सम्+मिल्	संमिल्य	वि+मुच्	विमुच्य
सम्+मुह्	संमुह्य	सम्+यज्	समिज्य
सम्+याच्	संयाच्य	प्र+युज्	प्रयुज्य
प्र+युध्	प्रयुध्य	सम्+रक्ष्	संरक्ष्य

धातु	ल्यबन्त	धातु	ल्यबन्त
वि+रच्	विरच्य	आ+रभ्	आरभ्य
वि+रम्	विरम्य	अव+रुध्	अवरुद्ध्य
आ+रुह्	आरुह्य	वि+लप्	विलप्य
उप+लभ्	उपलभ्य	आ+लिह्	आलिह्य
वि+ली	विलीय	प्र+लुभ्	प्रलुभ्य
अनु+वद्	अनूद्य	अभि+वन्द्	अभिवन्द्य
सम्+वप्	समुप्य	वि+लप्	विलप्य
प्र+वह्	प्रोह्य	सम्+विद्	संविद्य
प्र+विश्	प्रविश्य	नि+वृत्	निवृत्य
सम्+वृध्	संवर्ध्य	प्र+वृष्	प्रवृष्य
आ+व्यध्	आविध्य	अभि+शप्	अभिशप्य
प्र+शम्	प्रशम्य	अनु+शास्	अनुशास्य
सम्+शी	संशय्य	परि+शुष्	परिशुष्य
आ+श्रि	आश्रित्य	आ+श्लिष्	आश्लिष्य
वि+श्वस्	विश्वस्य	सम्+सह्	संसह्य
प्र+साध्	प्रसाध्य	अभि+सिच्	अभिषिच्य
नि+सिध्	निषिध्य	नि+सृज्	निसृज्य
नि+सेव्	निषेव्य	प्र+स्तु	प्रस्तुत्य
प्र+स्था	प्रस्थाय	उप+स्निह्	उपस्निह्य
सम्+स्पृश्	संस्पृश्य	वि+स्मृ	विस्मृत्य
सु+स्वप्	सुषुप्य	नि+हन्	निहत्य
वि+हा	विहाय	आ+हु	आहुत्य
आ+हृ	आहृत्य	सम्+हृष्	संहृष्य
आ+ह्वे	आहूय	अव+सो	अवसाय

तुमुन्=तुम्

(अर्थ—'के लिए' प्रयोग--तीनों लिङ्गों में समान रूप)

धातु	'तुमुन' प्रत्ययान्त	धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त
भू	भवितुम्	गम्	गन्तुम्
पठ्	पठितुम्	लिख्	लेखितुम्

धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त	धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त
कृ	कर्तुम्	हृ	हर्तुम्
वद्	वदितुम्	श्रु	श्रोतुम्
घ्रा	घ्रातुम्	पा	पातुम्
वच्	वक्तुम्	दृश्	द्रष्टुम्
हस्	हसितुम्	रुद्	रोदितुम्
स्पर्श	स्प्रष्टुम्	प्रच्छ्	प्रष्टुम्
स्वाद्	स्वादितुम्	भक्ष्	भक्षयितुम्
अद्	अत्तुम्	अर्च्	अर्चितुम्
आप्	आप्तुम्	आ+रभ्	आरब्धुम्
आ+रुह्	आरोढुम्	आह्वे	आह्वातुम्
इष्	एषितुम्	ईक्ष्	ईक्षितुम्
कथ्	कथयितुम्	कम्प	कम्पितुम्
कुप्	कोपितुम्	कूर्द	कूर्दितुम्
क्लृप्	कल्पितुम्	कृष्	कर्ष्टुम्
क्रन्द्	क्रन्दितुम्	क्री	क्रेतुम्
क्रीड्	क्रीडितुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्
क्षम्	क्षमितुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्
खन्	खनितुम्	खाद्	खादितुम्
गण्	गणयितुम्	गर्ज्	गर्जितुम्
गॄ	गर्तुम्	गै	गातुम्
ग्रस्	ग्रसितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्
चर्	चरितुम्	चल्	चलितुम्
चि	चेतुम्	चुर्	चोरयितुम्
चेष्ट्	चेष्ठितुम्	छिद्	छेत्तुम्
जन्	जनितुम्	जप्	जपितुम्
जि	जेतुम्	जीव्	जीवितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम्	ज्वल्	ज्वलितुम्
डी	डयितुम्	तप्	तप्तुम्
तृप्	तर्पितुम्	तृ	तरितुम्
त्यज्	त्यक्तुम्	त्रै	त्रातुम्
दह्	दग्धुम्	दा	दातुम्

धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त	धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त
दिश्	देष्टुम्	दुह्	दोग्धुम्
द्रुह्	द्रोग्धुम्	धाव्	धावितुम्
धृ	धर्तुम्	ध्यै	ध्यातुम्
ध्वंस्	ध्वंसितुम्	नम्	नन्तुम्
नश्	नष्टुम्	निन्द्	निन्दितुम्
नी	नेतुम्	नृत्	नर्तितुम्
पच्	पक्तुम्	पत्	पतितुम्
पुष्	पोषितुम्	पूज्	पूजयितुम्
प्रेर्	प्रेरयितुम्	बन्ध्	बन्धुम्
बाध्	बाधितुम्	बुध्	बोद्धुम्
भज्	भक्तुम्	भाष्	भाषितुम्
भिद्	भेत्तुम्	भुज्	भोक्तुम्
भृ	भर्तुम्	भ्रम्	भ्रमितुम्
मन्	मन्तुम्	मा	मातुम्
मिल्	मेलितुम्	मुच्	मोक्तुम्
मुद्	मोदितुम्	मृ	मर्तुम्
यज्	यष्टुम्	यत्	यतितुम्
या	यातुम्	याच्	याचितुम्
युज्	योक्तुम्	युध्	योद्धुम्
रक्ष्	रक्षितुम्	रच्	रचयितुम्
रम्	रन्तुम्	रुध्	रोद्धुम्
लभ्	लब्धुम्	आ+रभ्	आरब्धुम्
अप+लप्	अपलपितुम्	अभि+लष्	अभिलषितुम्
लिह्	लेढुम्	लुभ्	लोभितुम्
हृष्	हर्षितुम्	ब्रू	वक्तुम्
हिंस	हिंसितुम्	हा	हातुम्
हु	होतुम्	हृ	हर्तुम्
वन्द्	वन्दितुम्	वप्	वप्तुम्
वस्	वस्तुम्	वह्	वोढुम्
विद्	वेत्तुम्	विश्	वेष्टुम्
वृ	वारयितुम्	वृत्	वर्तितुम्

धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त	धातु	'तुमुन्' प्रत्ययान्त
वृध्	वर्धितुम्	वृष्	वर्षितुम्
वे	वातुम्	शक्	शक्तुम्
शंक्	शंकितुम्	शप्	शप्तुम्
शम्	शमितुम्	शिक्ष्	शिक्षितुम्
शी	शयितुम्	शुच्	शोचितुम्
शुभ्	शोभितुम्	श्रु	श्रोतुम्
सह	सोढुम्	सृज्	स्रष्टुम्
सेव्	सेवितुम्	श्रु	श्रोतुम्
स्था	स्थातुम्	स्ना	स्नातुम्
स्पर्ध्	स्पर्धितुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
स्मृ	स्मर्तुम्	हन	हन्तुम्

शतृ = अत्

(प्रयोग—परस्मैपदी । रूप तीनों लिङ्गों के अनुसार)

परस्मैपदी

धातु	शत्रन्त	धातु	शत्रन्त
अस्	सन्	भू	भवन्
कृ	कुर्वन्	पठ्	पठन्
लिख्	लिखन्	दृश्	पश्यन्
वद्	वदन्	कथ्	कथयन्
श्रु	शृण्वन्	घ्रा	जिघ्रन्
पा	पिबन्	चिन्त्	जिन्तयन्
स्पृश्	स्पृशन्	खाद्	खादन्
भक्ष्	भक्षयन्	हस्	हसन्
रुद्	रुदन्	अर्च्	अर्चन्
इष्	इच्छन्	कुप्	कुप्यन्
कृष्	कर्षन्	क्रीड्	क्रीडन्
क्रन्द्	क्रन्दन्	क्षिप्	क्षिपन्
क्रुध्	क्रुध्यन्	क्षम्	क्षाम्यन्
खन्	खनन्	गम्	गच्छन्
गण्	गणयन्	गै	गायन्

धातु	शत्रन्त	धातु	शत्रन्त
चल्	चलन्	चर्	चरन्
नृत्	नर्तन्	निन्द्	निन्दन्
नश्	नश्यन्	नम्	नमन्
ध्यै	ध्यायन्	धृ	धरन्
धाव्	धावन्	दुह्	दुहन्
दिश्	दिशन्	दिव्	दीव्यन्
दह्	दहन्	दण्ड्	दण्डयन्
त्यज्	त्यजन्	तृ	तरन्
तुष्	तुष्यन्	तप्	तपन्
ज्वल्	ज्वलन्	जीव्	जीवन्
जि	जयन्	जप्	जपन्
छिद्	छिन्दन्	चि	चिन्वन्
आप्	आप्नुवन्	अद्	अदन्
शम्	शाम्यन्	सृप्	सर्पन्
वृष्	वर्षन्	विश्	विशन्
वह्	वहन्	वस्	वसन्
लिह्	लिहन्	लष्	लषन्
रच्	रचयन्	रक्ष्	रक्षन्
मिल्	मिलन्	भ्रम्	भ्रमन्
भृ	भरन्	भिद्	भिन्दन्
भज्	भजन्	बन्ध्	बन्धन्
प्रेर्	प्रेरयन्	प्रच्छ्	पृच्छन्
पाल्	पालयन्	पत्	पतन्
ह्वे	ह्वयन्	हृ	हरन्
हु	जुह्वन्	हिंस्	हिंसनम्
हृष्	हृष्यन्	हा	जहन्
हन्	घ्नन्	स्वप्	स्वपन्
स्मृ	स्मरन्	स्था	तिष्ठन्
स्तु	स्तुवन्	सृज्	सृजन्
सिव्	सीव्यन्	सिच्	सिञ्चन्
शक्	शक्नुवन्	शप्	शपन्

शानच् = आन

प्रयोग—आत्मनेपदी में। तीनों लिंगों के अनुसार रूप होंगे।

आत्मनेपदी

धातु	शानजन्त	धातु	शानजन्त
वृत्	वर्तमानः	वृध्	वर्धमानः
व्यथ्	व्यथमानः	शङ्क्	शङ्कमानः
शिक्ष्	शिक्षमाणः	शी	शयानः
शुच्	शोचमानः	शुभ्	शोभमानः
सह्	सहमानः	सेव्	सेवमानः
मन्	मन्यमानः	मुद्	मोदमानः
वन्द्	वन्दमानः	लभ्	लभमानः
रुच्	रोचमानः	युध्	युध्यमानः
याच्	याचमानः	यत्	यतमानः
मृ	म्रियमाणः	स्मि	स्मयमानः

उभयपदी धातुयें

(शतृ, शानच्)

धातु	शत्रन्त	शानजन्त	धातु	शत्रन्त	शानजन्त
पच्	पचन्	पचमानः	ब्रू	ब्रुवन्	ब्रुवाणः
भुज्	भुञ्जन्	भुञ्जानः	मुच्	मुञ्चन्	मुञ्चमानः
यज्	यजन्	यजमानः	युज्	युञ्जन्	युञ्जानः
रुध्	रुन्धन्	रुन्धानः	वह्	वहन्	वहमानः
श्रि	श्रयन्	श्रयमाणः	हृ	हरन्	हरमाणः
नी	नयन्	नयमानः	धा	दधन्	दधानः
दा	ददन्	ददानः	तन्	तन्वन्	तन्वानः
ज्ञा	जानन्	जानानः	चुर्	चोरयन्	चोरयमाणः
चिन्त	चिन्तयन्	चिन्तयमानः	चि	चिन्वन्	चिन्वानः
ग्रह्	गृह्णन्	गृह्णानः	क्री	क्रीणन्	क्रीणानः
कृ	कुर्वन्	कुर्वाणः	कथ्	कथयन्	कथयमानः